स्वतंत्र दिल्ली

हिन्दी समिति ग्रन्थमाला—१३

स्वतंत्र दिल्ली

(११ मई १८५७–२० सितम्बर १८५७)

लेखक
डाक्टर सैयद् अतहर अब्बास रिज़वी,
एम. ए., पी-एच. डी.
यू० पी० एजूकेशनल सर्विस

प्रकाशन ब्यूरो, सूचना विभाग,
उत्तर प्रदेश
सर्वोदय साहित्य मंदिर,
कोठी, (बस स्टैण्ड,) हैदराबाद द.

प्रथम संस्करण

मूल्य
चार रुपये

मुद्रक
पं० पृथ्वीनाथ भार्गव,
भार्गव भूषण प्रेस, गायघाट, वाराणसी

बहादुर शाह, ज़फ़र

प्राक्कथन

"स्वतन्त्र दिल्ली" का प्रकाशन सामयिक भी है और ऐतिहासिक दृष्टि से बहुत महत्त्वपूर्ण भी। भारत सरकार ने जब यह निश्चय किया कि वह भारतीय जन-स्वातन्त्र्य युद्धों का इतिहास लिखवाना चाहती है और जब उसने प्रदेशीय सरकारों को यह इंगित किया कि प्रत्येक प्रदेश मे एतदर्थ समितियाँ बनाई जाँय और सामग्री संकलन का कार्य प्रारम्भ हो, उसी समय उत्तर प्रदेश शासन ने यह निश्चय किया कि इस कार्य को करते हुए उसको जो उत्तर प्रदेश में प्रभूत सामग्री मिलेगी और जिसका पूरा पूरा उपयोग संभवतः उक्त अखिल भारतीय इतिहास में होना कठिन है, उसके आधार पर उत्तर प्रदेश का एक अपना अलग बृहत् इतिहास तैयार किया जाय।

भारतीय जनान्दोलनों की दृष्टि से उत्तर प्रदेश का जो ऐतिहासिक महत्त्व रहा है उसी का यह प्रतिफल है कि भारत सरकार ने जब उक्त इतिहास के लिए, जिसका उल्लेख मैंने ऊपर किया है, निर्मित समिति का विघटन भी कर दिया और उत्तर प्रदेश के लिए भी यह संकेत मिल गया कि वह भी अपनी समिति का विघटन कर दे तब भी उत्तर प्रदेश शासन के लिए यह सम्भव न हो सका। उत्तर प्रदेश में इस कार्य के लिए जो समिति बनी थी और उसने जिस प्रकार सामग्री-संकलन का कार्य प्रारम्भ किया था तथा जिस प्रकार की सामग्री उपलब्ध होने लगी थी उसको देखते हुए इस बात की दृढ़ आशा बँध गई थी कि यह कार्य करणीय है और इसकी सफल परिसमाप्ति में ही न केवल उत्तर प्रदेश मे उपलब्ध होने वाली महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक सामग्री का संरक्षण निहित है वरन् ऐसे अमर शहीदों का पुण्य स्मरण भी होगा जिनसे आनेवाली पीढ़ी को सदा देश के लिए जीवन को होम करने की प्रेरणा मिलती रहेगी। यही कारण है कि हमारे प्रदेश में यह कार्य अब भी विधिवत् चल रहा है।

हमारे आदरणीय मुख्य मंत्री, डा० सम्पूर्णानन्दजी ने जब इस प्रदेश का संचालनसूत्र पहले-पहल अपने हाथ में लिया तो उन्होंने सहसा इस बात का निश्चय किया कि उत्तर प्रदेश में कुछ ऐसे स्मारक बनाये जायँ जो हमारे बलिदानों के, हमारे त्याग और तपस्या के, और उन शहीदों के, जिन्होंने इस देश की आजादी प्राप्त करने में अपने जीवन की बाजी हँसते हँसते लगा दी थी, साधारण जनता के लिए दृश्य प्रतीक बन सकें। निदान, मेरठ में सन् १८५७ की अमर क्रान्ति का, झाँसी में महारानी लक्ष्मीबाई का, बिठूर में नाना साहब का, कानपुर में तात्या टोपे का, इलाहाबाद में चन्द्रशेखर आज़ाद का, वाराणसी में महाराजा चेतसिंह का और लखनऊ में

उन समस्त ज्ञाताज्ञात शहीदों का, जो १८५७ से लेकर १९४२ तक के जनान्दोलनों में हुतात्मा हुए थे, स्मारक बनना प्रारम्भ हो गया। थोड़े ही समय बाद भारत सरकार ने जब १८५७ की शताब्दी मनाने का निश्चय किया तो उत्तर प्रदेश शासन ने जो कार्य-क्रम बनाया उसमें इन स्मारकों का निर्माण-कार्य शीर्षस्थान प्राप्त कर चुका था। यह कार्य द्रुतगति से अब भी चल रहा है और आशा यह की जाती है कि अगले कुछ ही महीनों में हमारी स्वतन्त्र आत्मा के यह प्रतीक उठ खड़े होंगे। लेकिन जिस स्वतन्त्रता का आज हम उपभोग कर रहे हैं और जो हमसे चाहे जिन भी कारणों से छीन ली गई थी, किन्तु जिसके हम सदा योग्य और समर्थ रहे, उसका परिचय भी इस अवसर पर जनता को मिले यह बहुत ही आवश्यक था। १९४७ में भी, जब हमने अपनी स्वतन्त्रता प्राप्त की, हमको यह प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से सुनाया गया था कि हम अपनी स्वतन्त्रता का उपभोग बहुत दिनों तक न कर सकेंगे किन्तु ऐसा कहनेवाले बाल-बुद्धि विरोधियों को हमने पिछले १० वर्षों में सतत् रूप से मुंहतोड़ जवाब दिया है और ऐसे ही हितेच्छुओं को हम यह भी बताना चाहते हैं कि १८५७ में जब हमने स्वतन्त्रता की पहली चेष्टा की तब भी हम स्वतन्त्रता का उपभोग करने में पूरी तरह समर्थ थे। दैव दुर्विपाक से उस समय हमारा वह मनोरथ सिद्ध नहीं हुआ किन्तु दिल्ली को स्वतन्त्र करके हमने अपनी शासन-व्यवस्था कायम करने का जो प्रयत्न किया उसका रोचक इतिवृत्त इस पुस्तक में मिलेगा, इसकी मुझे पूरी आशा है। डा० ए० ए० रिजवी, जो उत्तर प्रदेश के स्वातन्त्र्य संग्राम इतिहास के लिए निर्मित समिति के सचिव हैं स्वयं इतिहास के अच्छे जानकार हैं। उन्होंने यह पुस्तक को प्रस्तुत करने में जो परिश्रम किया है वह निश्चय ही सामान्य जनता को और इतिहास में रुचि रखने वाले विद्वानों को युगपत् रुचेगा, इसमें कोई सन्देह नहीं मालूम होता।

मैं परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ कि हमारी स्वतन्त्र दिल्ली केवल इतिहास के पृष्ठों में ही नहीं, भारतीय जनता के जीवन में भी चिरजीवी हो।

स्वतन्त्र दिल्ली अमर हो।

प्रस्तावना

किसी भी स्वतन्त्र राष्ट्र की स्वतन्त्र भावनाओं का प्रतीक तथा उसे राष्ट्रीयता की प्रेरणा देने वाली वस्तु उसका राष्ट्रीय इतिहास ही है। यह बात सर्वमान्य है कि एक राष्ट्र द्वारा दूसरे राष्ट्र को पराधीनता की बेड़ियों में बाँधे रखने के लिए प्रथम प्रयास यही है कि उस राष्ट्र का इतिहास विदेशी दृष्टिकोण से लिखा जावे। ब्रिटिश शासनकाल में लिखे गये भारतीय इतिहास इसके ज्वलन्त उदाहरण हैं। अंग्रेजों ने अपने हितों की रक्षा तथा भारतीयों की राष्ट्रीयता की भावना को नष्ट करने का साधन इतिहास को ही बनाया। हमारे भारतीय इतिहास के लेखक भी मूल सामग्री के अभाव तथा ब्रिटिश साम्राज्य के विद्यमान होने के कारण ऐतिहासिक तथ्यों पर वैज्ञानिक ढंग से उचित प्रकाश डालने में असमर्थ रहे।

इस पुस्तक में लेखक ने विस्तृत मूल सामग्री के प्रयोग करने का प्रयास किया है। वैसे तो १८५७ ई० के संघर्ष से सम्बंधित सैकड़ों पुस्तकों की रचना अंग्रेजों ने की है किन्तु उन पुस्तकों में भारतीय दृष्टिकोण का पूर्णतः अभाव है। लेखक की ग्रन्थ-सूची के अवलोकन से पता चलता है कि अब भी बहुत सी ऐसी सामग्री प्राप्य हैं जिसके आधार पर इस संघर्ष का इतिहास वैज्ञानिक ढंग से लिखा जा सकता है। मौलाना फजलेहक खैराबादी की अरबी पुस्तक 'सौरतुल हिन्दिया' तथा समकालीन समाचार-पत्र एवं विभिन्न मुकदमों की फाइलों से जो ऐतिहासिक तथ्य ज्ञात होता है उससे हमारे दृष्टिकोण में विशेष परिवर्तन हो जाता है। इस संघर्ष में भारतवर्ष की जनता के विभिन्न वर्ग कन्धे से कन्धा मिलाकर ब्रिटिश सत्ता को उखाड़ फेकने का प्रयत्न करते हुए दृष्टिगत होते हैं।

"स्वतन्त्र दिल्ली" नामक इस पुस्तक में क्रान्ति की पृष्ठभूमि प्रस्तुत करने के उपरान्त क्रान्ति के विस्फोट का जो दृश्य प्रस्तुत किया गया है उसमें समकालीन भारतीय लेखकों--जहीर देहलवी तथा जकरउल्लाह देहलवी एवं देहली उर्दू अखबार को विशेषरूप से अपने समक्ष रखते हुए अंग्रेज इतिहासकारों के विवरणों का परीक्षण करने का प्रयत्न हुआ है।

बहादुरशाह ने दिल्ली का शासन सुव्यवस्थित करने के लिए क्या-क्या प्रयत्न किये तथा उसे लोकतन्त्रात्मक रूप देने के हेतु क्या प्रयास किया, इसका उल्लेख मौलिक पत्रों

के आधार पर किया गया है। इस अध्याय में तथा हिन्दू मुस्लिम संघटन से सम्बन्धित अध्याय में जो सामग्री प्रस्तुत की गई है और जिस प्रकार क्रान्ति का यह पक्ष पेश किया गया है उससे हमारे राष्ट्रीय इतिहास को नये ढंग से अध्ययन करने की प्रेरणा प्राप्त होगी। स्वाधीनता की रक्षा, दरबारी षड्यन्त्र तथा द्वेष का हाल, जिसके फल-स्वरूप स्वाधीनता का अन्त हो गया, लेखक ने मूल अरबी तथा उर्दू समकालीन विवरणों के आधार पर लिखा है।

इस पुस्तक के लेखक डा० सैय्यद अतहर अब्बास रिजवी उत्तर प्रदेश एजूकेशनल सर्विस के एक अधिकारी हैं और कुछ समय तक अलीगढ़ विश्वविद्यालय में भी प्रवक्ता (लेक्चरर) रह चुके हैं। मध्यकालीन इतिहास पर उनके तीन ग्रन्थ "आदि तुर्क कालीन भारत", "खिल्जीकालीन भारत" तथा "तुग़लक कालीन भारत", जिनमें फारसी तथा अरबी की आधारभूत सामग्री हिन्दी में प्रस्तुत की गयी है, उत्तर प्रदेश सरकार तथा भारत सरकार द्वारा पुरस्कृत हो चुके हैं और "खिलजी कालीन भारत" को भारत सरकार १९५३ तथा १९५४ ई० का अपनी श्रेणी का सर्वश्रेष्ठ ग्रन्थ घोषित कर चुकी है। इन ग्रंथों की उच्चकोटि के समस्त इतिहासकारों ने बड़ी प्रशंसा की है। भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के इतिहास की योजना का कार्यभार इन्हें जनवरी १९५७ में सौंपा गया और लगभग चार मास में यह पुस्तक तथा "संघर्षकालीन नेताओं की जीवनियाँ" प्रकाशित हो रही हैं, और १९५७ ई० के संघर्ष की आधार-भूत सामग्री का पहला ग्रन्थ अगस्त १९५७ तक प्रकाशित हो जायगा। इस कार्य में डा० रिजवी को समय समय पर मुख्य मंत्री डा० सम्पूर्णानन्द तथा शिक्षा, गृह एवं सूचना मंत्री पंडित कमलापति त्रिपाठी द्वारा विशेष प्रोत्साहन प्राप्त होता रहा है। अत्यन्त कार्यव्यस्त होते हुए भी स्वतन्त्रता-संग्राम की योजना की ओर ध्यान देने के लिए समय निकाल लेना इन दोनों के उत्कट विद्याप्रेमी होने का परिचायक है जिसके लिए हम सब उनके बड़े कृतज्ञ हैं। हमें पूर्ण आशा है कि इस योजना को सर्वदा उनका संरक्षण तथा निर्देशन प्राप्त होता रहेगा।

विनोद चन्द्र शर्मा
आई० ए० एस०
शिक्षा सचिव
उत्तर प्रदेशीय सरकार

विधान भवन, लखनऊ।
२९-४-५७

आभार-प्रदर्शन

उत्तर प्रदेश के स्वतन्त्रता-संग्राम की योजना का कार्य भार मुझे १ जनवरी १९५७ को सौंपा गया। तब से अब तक के चार मास के अल्पकाल में १८५७ ई० की क्रान्ति से सम्बन्धित आधारभूत सामग्री के ग्रन्थ के संकलन, जिसको अगस्त में प्रकाशित किया जायगा, के साथ-साथ इस पुस्तक का प्रकाशन निःसन्देह मुख्य मंत्री डा० सम्पूर्णानन्द तथा सूचना एवं शिक्षा मंत्री पंडित कमलापति त्रिपाठी के प्रोत्साहन तथा आशीर्वाद के फलस्वरूप संभव हो सका। इन दोनों महानुभावों के प्रति जितनी भी कृतज्ञता प्रकट करूं कम है, पुस्तक के लिए नेशनल आरकाइव्ज देहली के बहुमूल्य पत्रों के फोटोस्टैट (फोटो प्रतिलिपियाँ) प्राप्त करने की समस्या का समाधान उत्तर प्रदेशीय सरकार के मुख्य सचिव श्री आदित्यनाथ झा, आई० सी० एस० के प्रयत्नों से हुआ। उन्होंने जिस उत्साह तथा परिश्रम से मेरी यह कठिनाई को दूर तथा मेरा पथप्रदर्शन किया, उसको आभारयुक्त शब्दों में व्यक्त करने में असमर्थ हूँ। इस काठिन्य-निवारण में उत्तर प्रदेशीय सरकार के शिक्षा सचिव श्री विनोद चन्द्र शर्मा का भी विशेष हाथ रहा है। इतिहास के प्रति उनकी रुचि का अनुभव करते हुए मैंने उनसे अनेकों बहुमूल्य सुझाव प्राप्त किये। पुस्तक के लिए भूमिका लिख कर उन्होंने मुझे और भी कृतार्थ किया है। सागर विश्वविद्यालय के भूतपूर्व उपकुलपति तथा उत्तर प्रदेशीय सरकार की हिन्दी समिति के अध्यक्ष डा० रामप्रसाद त्रिपाठी ने इस पुस्तक के कुछ अंशों को पढ़कर अपने विद्वत्तापूर्ण सुझाव प्रदान किये और मुझे आभार प्रदर्शित करने का अवसर दिया। रामपुर के जिलाधीश श्री शिवरामसिंह आई० ए० एस० ने इस पुस्तक के मुख्य नायक बहादुरशाह का युवावस्था का चित्र रज़ा लाईब्रेरी रामपुर से भिजवाया। इसके लिए मैं उनका अत्यन्त कृतज्ञ हूँ। अल्प समय में पुस्तक के प्रकाशन की व्यवस्था कराने का श्रेय सूचना संचालक श्री भगवतीशरण सिंह को है। उनके लाभदायक सुझाव भी इस पुस्तक में समाविष्ट किये गये हैं। पंडित लीलाधर शर्मा 'पर्वतीय', सहायक संचालक सूचना विभाग ने बड़ी संलग्नता से पुस्तक के प्रकाशन की व्यवस्था करायी। सूचना विभाग के यह दोनों ही अधिकारी मेरे धन्यवाद के पात्र हैं।

अलीगढ़ विश्वविद्यालय के लाइब्रेरियन श्री सैयद बशीरुद्दीन, लखनऊ, विश्वविद्यालय लाइब्रेरी के असिस्टेन्ट लाइब्रेरियन, अमीरुद्दौला पब्लिक लाइब्रेरी

के लाइब्रेरियन तथा सचिवालय लाइब्रेरी के लाइब्रेरियन श्री माणिकलाल घोष की उदार कृपा के कारण सम्बन्धित पुस्तकों की प्राप्ति में मुझे किसी कठिनाई का अनुभव ही नहीं हुआ। उनके प्रति आभार प्रकट करना मेरा परम कर्त्तव्य है। पुस्तक की तैयारी में इस योजना के मेरे साथियों ने विशेषकर डा० मोतीलाल भार्गव, ने मेरा बड़ा हाथ बटाया। उन सबके प्रति मैं कृतज्ञता प्रकट करता हूँ। भार्गव भूषण प्रेस वाराणसी के अधिकारी तथा कर्मचारीगण भी मेरे धन्यवाद के पात्र हैं क्योंकि उन्होंने अल्प समय में पुस्तक को सुन्दर ढंग से छाप दिया है।

अन्त में मैं उन सब लोगों के प्रति भी आभार प्रकट करता हूँ जिनसे मुझे इस पुस्तक की रचना में विशेष सहायता मिली है और जिनके नाम स्थानाभाव के कारण मैं नहीं दे सका हूँ। मुझे विश्वास है कि वे अपने प्रति मेरे विचारों से परिचित हैं।

सैयद अतहर अब्बास रिज़वी
एम. ए., पी. एच. डी.,
यू० पी० एजूकेशनल सर्विस

विधान भवन, लखनऊ
३० अप्रैल १९५७ ई०

प्रकाशकीय

भारत की राजभाषा के रूप में हिन्दी की प्रतिष्ठा के पश्चात् यद्यपि इस देश के प्रत्येक जन पर उसकी समृद्धि का दायित्व है, किन्तु इससे हिन्दी भाषा-भाषी क्षेत्रों के विशेष उत्तरदायित्व में किसी प्रकार की कमी नहीं आती। हमें संविधान में निर्धारित अवधि के भीतर हिन्दी को न केवल सभी राजकार्यों में व्यवहृत करना है, उसे उच्चतम शिक्षा के माध्यम के लिए भी परिपुष्ट बनाना है। इसके लिए अपेक्षा है कि हिन्दी में वाङमय के सभी अवयवों पर प्रामाणिक ग्रन्थ हों और यदि कोई व्यक्ति केवल हिन्दी के माध्यम से ज्ञानार्जन करना चाहे तो उसका मार्ग अवरुद्ध न रह जाय।

इसी भावना से प्रेरित होकर उत्तर प्रदेश शासन ने अपने शिक्षा विभाग के अन्तर्गत साहित्य को प्रोत्साहन देने और हिन्दी के ग्रन्थों के प्रणयन की एक योजना परिचालित की है। शिक्षा विभाग की अवधानता में एक हिन्दी समिति की स्थापना की गयी है। यह समिति विगत वर्षों में हिन्दी के ग्रंथों को पुरस्कृत करके साहित्यकारों का उत्साह बढ़ाती रही है और अब इसने पुस्तक-प्रणयन का कार्य आरम्भ किया है।

समिति ने वाङमय के सभी अंगों के सम्बन्ध में पुस्तकों का लेखन और प्रकाशन कार्य अपने हाथ में लिया है। इसके लिए एक पंच-वर्षीय योजना बनायी गयी है जिसके अनुसार ५ वर्षों में ३०० पुस्तकों का प्रकाशन होगा। इस योजना के अन्तर्गत प्रायः वे सब विषय ले लिये गये हैं जिन पर संसार के किसी भी उन्नतिशील साहित्य में ग्रन्थ प्राप्त हैं। इस बात का प्रयत्न किया जा रहा है कि इनमें से प्राथमिकता उसी विषय अथवा उन विषयों को दी जाय जिनकी हिन्दी में नितान्त कमी है।

प्रदेशीय सरकार द्वारा प्रकाशन का कार्य आरम्भ करने का यह आशय नहीं है कि व्यवसाय के रूप में यह कार्य हाथ में लिया गया है। हम केवल ऐसे ही ग्रन्थ

प्रकाशित करना चाहते हैं जिनका प्रकाशन कतिपय कारणों से अन्य स्थानों से नहीं हो पाता। हमारा विश्वास है कि इस प्रयास को सभी क्षेत्रों से सहायता प्राप्त होगी और भारती के भण्डार को परिपूर्ण करने में उत्तर प्रदेश का शासन भी किंचित योगदान देने में समर्थ होगा।

प्रस्तुत ऐतिहासिक ग्रन्थ उत्तर प्रदेश में स्वतन्त्रता संग्राम का इतिहास लिखने के लिए संघटित समिति की ओर से तैयार किया गया है। यह इस विषय की प्रथम पुस्तक है। अन्य ग्रन्थ भी इस क्रम में प्रकाशित होंगे।

भगवती शरण सिंह

सचिव, हिन्दी समिति

विषय-सूची

५. गोवध निषेध सम्बन्धी घोषणा।

६. गोवध निषेध सम्बन्धी घोषणा।

७. गोवध निषेध सम्बन्धी घोषणा पत्र।

८. गोवध निषेध सम्बन्धी आदेश।

९. कोर्ट का संविधान पृ० १ अ.

१०. कोर्ट का संविधान पृ० १ ब.

११. कोर्ट का संविधान पृ० २ अ.

१२. कोर्ट का संविधान पृ० २ ब.

१३. कोर्ट का संविधान पृ० ३ अ.

१४. कोर्ट के अधिकारियों का प्रार्थना पत्र शाहज़ादों के हस्तक्षेप के विरोध में।

१५. महाजनों का प्रार्थना पत्र कोर्ट के विरोध में।

१६. बादशाह का सैनिकों को आदेश।

१७. हिन्दू तथा मुसलमानों से स्वाधीनता की रक्षा-हेतु अपील। (१३-९-१८५७)

१८. एक जासूस की डायरी पृ० १ अ. (११ मई १८५७)

१९. एक जासूस की डायरी पृ० १ ब. (११ मई से १८ मई तक)

२०. एक जासूस की डायरी पृ० २ अ. (११ मई १८५७)

२१. एक जासूस की डायरी पृ० २ ब. (१२ मई १८५७)

२२. एक जासूस की डायरी पृ० ३ अ. (१३ मई १८५७)

२३. एक जासूस की डायरी पृ० ३ ब. (१४ मई १८५७)

२४. एक जासूस की डायरी पृ० ४ अ. (१५ मई १८५७)

२५. एक जासूस की डायरी पृ० ४ ब. (१५ मई १८५७)

२६. एक जासूस की डायरी पृ० ५ अ. (१६ मई १८५७)

२७. एक जासूस की डायरी पृ० ५ ब. (१७ मई १८५७)

२८. एक जासूस की डायरी पृ० ६ अ. (१७ मई १८५७)

२९. तिलिस्मे लखनऊ (१६ जनवरी १८५७)

३०. सिहरे सामरी लखनऊ, ९ मार्च १८५७ पृ० ६.
(मौलवी अहमदुल्लाह शाह का विवरण)

३१. सिहरे सामरी लखनऊ, ९ मार्च १८५७ पृ० ७. (महाराजा ग्वालियर का विवरण)

३२. सिराजुल अखबार देहली (१० मई व ११ मई १८५७)

३३. सिराजुल अखबार देहली (११ मई व १२ मई १८५७)

३४. सिराजुल अखबार देहली. (१२ मई १८५७)

३५. देहली उर्दू अखबार, १७ मई, १८५७ पृ० १. (११ मई के देहली के समाचार)

३६. देहली उर्दू अखबार, १७ मई १८५७ पृ० २ (११ मई के देहली के समाचार)

३७. देहली उर्दू अखबार, १७ मई १८५७ पृ० ३. (११ मई के देहली के समाचार)

३८. देहली उर्दू अखबार, १७ मई १८५७ पृ० ४. (११ मई के देहली के समाचार)

३९. देहली उर्दू अखबार, २४ मई १८५७ पृ० १.
(मौलाना मुहम्मद हुसैन आजाद की क्रान्ति के विषय में एक कविता)

४०. देहली उर्दू अखबार, २४ मई १८५७ पृ० ३. (अंग्रेजों की दुर्दशा)

४१. देहली उर्दू अखबार, २४ मई १८५७ पृ० ४. (विविध समाचार)

४२. देहली उर्दू अखबार, जुलाई ५, १८५७
(हिन्दू मुसलिम मतभेद उत्पन्न करने के प्रयत्नों का विफल करना)

४३. देहली उर्दू अखबार, जुलाई १२, १८५७ पृ० २
(बादशाह के दरबार के समाचार)

४४. देहली उर्दू अखबार, जुलाई १२, १८५७ पृ० ३ (बख्तखाँ के आदेश)

४५. देहली उर्दू अखबार, जुलाई १२, १८५७ पृ० ४ (इश्तिहार रद्दे न सारा)

४६. देहली उर्दू अखबार, अगस्त १७, १८५७ (विविध समाचार)

४७. सादिकुल अखबार, जुलाई ६, १८५७ (देहली के विविध समाचार)

४८. सादिकुल अखबार, जुलाई २०, १८५७ (स्वाधीनता की रक्षा)

४९. सादिकुल अखबार, जुलाई २७, १८५७ पृ० २ (अंग्रेजों के विरुद्ध एक कविता)

५०. सादिकुल अखबार, जुलाई २७, १८५७ पृ० ४.

चित्र-सूची

बहादुरशाह, ज़फर युवावस्था में (रामपुर—रज़ा लाइब्रेरी का चित्र)

विषय-प्रवेश

इस पुस्तक में १८५७ ई० की प्रसिद्ध भारतीय क्रान्ति का सविस्तार इतिहास नहीं अपितु देहली के उस अल्पकालीन राज्य की संक्षिप्त झाँकी दी गई है जिसमें हिन्दुओं तथा मुसलमानों ने अपनी दासता की बेड़ियाँ काटकर थोड़े समय के लिए स्वतन्त्रता का श्वास लिया था। वे कुचल दिये गये—कुछ अपनी कमियों के कारण और कुछ अंग्रेजों के कुचक्र एवं उनके गुप्तचरों के विस्तृत जाल के कारण। भारतीयों के साथ भारतीयों ही ने विश्वासघात किया और भारत-माता के चरणों में पुनः दासता की श्रृंखलाएँ डाल दी गईं किन्तु जिस प्रकार के स्वतंत्र राज्य का उस समय के लोगों ने स्वप्न देखा था, उसे इतिहास कभी न भूल सकेगा। जब कभी भी साम्प्रदायिकता पर प्रहार तथा भारतीय संघटन एवं राष्ट्र के गौरव के विषय में कोई बात चलेगी तो स्वतंत्रता के इन शहीदों के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करने में प्रत्येक भारतीय गर्व का अनुभव करेगा।

१८५७ ई० की क्रान्ति के अतिरिक्त आधुनिक काल के इतिहास के बहुत कम ऐसे अंश होंगे जो एक ही पक्ष के विवरणों पर आधारित हों। इस क्रान्ति के दमन में जिन अंग्रेजों ने भाग लिया उन्होंने स्वयं अपने विषय में पुस्तकें लिखीं, उनके पत्रों के संग्रह सम्पादित हुए और उनके विषय में उनके मित्रों ने भी पुस्तकों की रचनाएँ कीं। १८५७ ई० की क्रान्ति के इतिहास पर भी अंग्रेजी में पुस्तकों की बहुत बड़ी संख्या प्राप्य है जो अधिकांश अंग्रेजी राज्य को चिरस्थायी समझनेवालों द्वारा लिखी गई है। भारतीयों की भी पुस्तकें इस विषय पर मिल जाती हैं जिनमें से कुछ की रचना समकालीन लेखकों ने भी की थी किन्तु उनमें से अधिकांश अंग्रेजों के गुप्तचर तथा पक्षपाती थे। यही वे लोग थे जिन्होंने भारतीयों की पीठ में छुरी भोंकी और क्रान्ति को बहुत बड़ा धक्का पहुँचाया। ये लोग भी अंग्रेजों को देवता समझते थे अथवा देवता समझने पर विवश थे। क्रान्ति में भाग लेनेवाला प्रत्येक भारतीय उनके निकट विश्वासघाती तथा पिशाच था। यदि

इस सामग्री को सावधानी तथा कड़ी आलोचनात्मक दृष्टि से पढ़ा जाय तो इसमें भी झूठ के आवरण में कहीं-कहीं सत्य का रूप दृष्टिगत हो जाता है।

इन पुस्तकों के अतिरिक्त पार्लियामेंट को जो पत्र भेजे जाते थे उनका संग्रह भी प्राप्य है। इन पत्रों में यद्यपि अंग्रेजों ही का पक्ष पाया जाता है किन्तु बाद की सरकारी रिपोर्टों की अपेक्षा इनमें ऐतिहासिक तथ्य अधिक मात्रा में मिल जाता है। उन मुकदमों की फाइलें भी कहीं-कहीं मिल जाती हैं जो अंग्रेजों ने क्रान्तिकारियों पर चलाये थे। कुछ मुकदमे प्रकाशित भी हो चुके हैं किन्तु मुकदमों में अपराधियों तथा साक्षियों के विवरणों के आधार पर ऐतिहासिक तथ्य ढूंढ़ना बड़ा कठिन है। अधिकांश अपराधी अपनी बचत का प्रयत्न करते हैं अथवा स्थिति उन्हें ऐसा करने पर विवश कर देती है। साक्षियों के विवरण तो अधिकांश दोनों पक्ष की ओर से तैयार कराये ही जाते हैं। कहीं-कही इन मुकदमों की फाइलों के साथ-साथ कुछ ऐसी सामग्री भी मिल जाती है जिसके आधार पर अपराधियों को दोषी ठहराया जाता था। इस सामग्री को यदि आलोचनात्मक दृष्टि से देखा जाय तो इसमें काम की बहुत-सी बातें मिल जाती हैं। बहादुरशाह के मुकदमे के समय उस पर विद्रोह तथा अंग्रेजों की हत्या का अपराध सिद्ध करने के लिए शाही सचिवालय के पत्रों एवं अंग्रेजों के गुप्तचरों के विवरणों का एक बहुत बड़ा संग्रह नेशनल आरकाइव्ज देहली में वर्तमान है। इसमें विभिन्न तिथियों के पत्रों की बहुत बड़ी संख्या पाई जाती है। कुछ पत्रों का अंग्रेजी अनुवाद बादशाह बहादुरशाह के मुकदमे के विवरण में प्रकाशित हो चुका है। ये पत्र १८९१ ई० में कमिश्नर देहली के कार्यालय से इम्पीरियल रिकार्ड डिपार्टमेंट को प्रदान हुए थे। इनमें से कुछ पत्र फारसी में हैं किन्तु अधिकतर पत्र उर्दू में हैं। इन्हीं पत्रों के कुछ अंग्रेजी अनुवाद भी संग्रह में वर्तमान हैं। यह मुकदमा वास्तव में क्रान्ति के कारण तथा उसके संघटन का ज्ञान प्राप्त करने के लिए चलाया गया था, अन्यथा बादशाह के जीवनदान का आश्वासन उसके बन्दी बनाये जाने के समय ही दिया जा चुका था। इन पत्रों द्वारा दिल्ली के इस अल्पकालीन स्वतंत्र राज्य के संचालन तथा संघटन के विषय में प्रामाणिक ज्ञान प्राप्त होता है। केन्द्रीय शासन, कोर्ट आफ म्युटीनियर्स के प्रजातंत्रवादी रूप, पड़ोस के राजाओं तथा जमींदारों से सम्पर्क, बादशाह तथा शाहजादों और अन्य अधिकारियों के चरित्र, सैनिक संघटन, अभियानों के संचालन, शान्ति स्थापित रखने के प्रयत्न, धन की कठिनाइयाँ, अंग्रेजों के षड्यंत्र

तथा इस अल्पकालीन स्वतंत्र राज्य की अनेक महत्त्वपूर्ण बातों का ज्ञान इन पत्रों द्वारा हो जाता है।

इस संग्रह में कुछ समकालीन समाचारपत्र भी सम्मिलित हैं जिन्होंने इस स्वतंत्रता संग्राम में जी-जान से प्रयत्न किया और अंग्रेजों के षड्यंत्र के विरुद्ध लोहा लेते हुए भारतीय राष्ट्र का वह रूप प्रस्तुत किया जिस पर हम आज भी गर्व कर सकते हैं। इस प्रकार के न जाने कितने समाचारपत्र होंगे जो नष्ट हो गये। यदि वे मिल जाते तो हमारे राष्ट्रीय इतिहास की अनेक समस्याओं का समाधान हो जाता। इस संग्रह में निम्नांकित समाचारपत्र प्राप्य हैं –

१. सिराजुल अखबार देहली, मार्च १, १८५७ ई० से २१ अगस्त १८५७ ई० तक, १७ अंक।

२. देहली उर्दू अखबार देहली, मार्च ८, १८५७ ई० से सितम्बर १३, १८५७ ई० तक, १७ अंक।

३. तिलिस्मे लखनऊ, जनवरी १६, १८५७, केवल एक अंक।

४. सादिकुल अखबार देहली, १२ अंक।

• समाचारपत्र

इन समाचारपत्रों में सिराजुल अखबार शाही अखबार है और बादशाह की ओर से छपता था जिसमें बादशाह का दैनिक कार्यक्रम फारसी भाषा में प्रकाशित होता था। अन्य समाचारपत्र उर्दू में प्रकाशित होते थे।

ये पत्र २०१ बंडलों में संगृहीत हैं। ऐसा ज्ञात होता है कि ये बंडल इसी प्रकार से कमिश्नर देहली के कार्यालय से प्राप्त हुए थे। इन पत्रों की सूची इम्पीरियल रिकार्ड डिपार्टमेंट ने १९२१ ई० में प्रकाशित की। खेद है कि सूची तैयार करते समय पत्रों को किसी क्रम से नहीं लगाया गया अपितु जिस प्रकार बंडल प्राप्त हुए उनकी उसी प्रकार सूची तैयार कर दी गई। इससे सूची की उपयोगिता में बड़ी न्यूनता आ गई है।

१ प्रेस लिस्ट आफ म्युटिनी पेपर्स (कलकत्ता १९२१)।

यह इतिहास अधिकतर इन्हीं पत्रों तथा नेशनल आरकाइव्ज़ देहली के अन्य समकालीन सरकारी रिकार्डों पर आधारित है। कुछ महत्त्वपूर्ण पत्रों के फोटोस्टैट (फोटो प्रतिलिपि) भी मँगवा लिये गये हैं जो इस पुस्तक के अन्त में दिये जा रहे हैं। अन्य महत्त्वपूर्ण पुस्तकों का भी अध्ययन किया गया है और उनमें से कुछ आवश्यक पुस्तकों की सूची परिशिष्ट में दे दी गई है।

अध्याय १

क्रान्ति की पृष्ठभूमि

स्वतंत्रता की अभिलाषा प्राणियों का जन्मसिद्ध अधिकार है। इसकी आकांक्षा स्वाभाविक है। पिंजड़े में बन्द पक्षी से निकल भागने के प्रयत्न का कारण पूछना मूर्खता है, चाहे उसे सोने और चाँदी की प्यालियों में दाना-पानी भले ही मिल रहा हो। वह फड़फड़ायेगा, पंख तोड़ेगा और पिंजड़े की तीलियों से सिर फोड़ेगा। उसके सिर से प्रवाहित रक्त की धारा स्वतंत्रता के इतिहास में अमर रहेगी, चाहे बाहर से देखने वाले उसे पागल ही क्यों न समझें। १८५७ ई० की क्रान्ति भारत की पवित्र भूमि से विदेशी शासन को उखाड़ फेंकने का प्रयास थी। वर्षों की दबी हुई चिनगारी एकदम ज्वालामुखी बन गई। किसने उसे भड़काया, किस प्रकार यह अग्नि प्रज्वलित हुई, ये ऐसे प्रश्न हैं जो इतिहास में विवादास्पद हैं और सर्वदा रहेंगे। इनका एक कारण अथवा अनेक कारण ढूंढ़ना कठिन है। क्रान्ति के समय से ही इसका कारण तथा इसके संगठन एवं संचालन के विषय में ज्ञान-प्राप्ति का प्रयत्न होता रहा। क्रान्ति के अपराधियों के मुकदमों में अपराधियों तथा दोनों पक्षों के साक्षियों से बार-बार इस विषय पर पूछा जाता था। न्यायाधीशों के निर्णय में इस विषय पर दृष्टिपात किया गया है किन्तु उनके पढ़ने से क्रान्ति के वास्तविक कारण के ज्ञान में अधिक सहायता नहीं प्राप्त होती। कहीं-कहीं उन बातों को भी विशेष महत्त्व दे दिया गया है जिन पर साधारणतः कोई ध्यान भी न दिया जाता।

इतिहासकारों में से किसी ने इसे मुसल्मानों का विद्रोह लिखा, किसी ने इसे हिन्दुओं की संकीर्णता का फल बताया और किसी ने इसे केवल सिपाहियों का विद्रोह लिखा। किसी का विचार था कि हिन्दू दुष्ट थे, किसी का ख्याल था कि मुसल्मान पिशाच थे; किसी का विचार था कि दोनों ही पागल हो गये थे किन्तु इस बात की ओर ध्यान नहीं दिया गया कि वह कौन-सी शक्ति थी जिसने भारतवर्ष

के प्रत्येक नर-नारी, हिन्दू व मुसलमान को एक सूत्र में बांधकर अंग्रेजी राज्य के विरुद्ध खड़ा कर दिया। यह शक्ति थी भारतवर्ष के स्वातंत्र्य की अभिलाषा। स्वतंत्र भारत की क्या दशा होगी, यहाँ किसका राज्य होगा, हिन्दू शासन करेंगे या मुसलमान, मरहठों की सत्ता होगी अथवा मुगलों की, यहाँ की आर्थिक तथा राजनीतिक व्यवस्था क्या होगी, इस ओर सम्भव है कि थोड़े ही लोगों ने ध्यान दिया हो किन्तु स्वतंत्रता के भाव से उत्तरी भारत का अधिकांश भाग प्रेरित था और इसी भाव ने ब्रिटिश साम्राज्य को हिला दिया। यदि वे एक स्थान पर पराजित हो जाते तो दूसरे स्थान पर अपना मोरचा बना लेते किन्तु उनके उत्साह में कमी न होती। उन्हें अपने उद्देश्य की सफलता का विश्वास था। यद्यपि क्रान्ति के कुछ नेताओं की अपनी समस्याएँ थीं, जागीरदारी के झगड़े थे, इनमें से कुछ ने बड़ी-बड़ी भूलें भी कीं, कहीं-कहीं कमजोरी भी दिखाई किन्तु सामान्य रूप से उनके समक्ष जो लक्ष्य था, वह इतना उच्च तथा महान् था कि इन भूलों को वैज्ञानिक इतिहास भी अधिक महत्त्व नहीं दे सकता। कुछ क्रान्तिकारी समय के पूर्व अग्नि में कूद पड़े। कुछ योजनानुसार समय की प्रतीक्षा करते रहे। साधारण लोगों को उन पर क्रोध आता होगा। वे उन्हें कायर समझते होंगे किन्तु बिना योजना के सफलता मिलनी कठिन है, यह बात साधारण सैनिक न समझते थे। इसका विस्फोट किस समय होना था, यह उन्हें ज्ञात न था। वे तो केवल यह जानते थे कि यदि एक स्थान से क्रान्ति प्रारम्भ हो जाय तो प्रत्येक स्थान में उसका अनुसरण हो। क्रान्ति असफल हुई। अंग्रेजों की दमन नीति ने षड्यंत्र तथा सैनिक शक्ति के बल पर भारतीयों को कुचल दिया। बहुत से भारतीयों ने भी अंग्रेजों का साथ दिया। उनके साथ मिलकर अपने भाइयों के विरुद्ध लड़े। वे गुप्तचर बने, उन्होंने षड्यंत्र रचा, तथा गोलियाँ चलाईं किन्तु अग्नि किसी स्थान पर भी अत्याचार तथा गोलीकांड से शान्त न हो सकी। एक स्थान पर पराजित होकर वे दूसरे स्थान पर पहुँच जाते, दूसरे स्थान से तीसरे स्थान पर मोरचा बना लेते। सैनिक शक्ति तथा राज्य-सत्ता अंग्रेजों के हाथ में थी किन्तु फिरंगियों से भारत-भूमि को रिक्त कराने के उत्साह ने उन्हें अजेय बना दिया था।

उत्तरी भारत में अंग्रेजी राज्य

२३ जून १७५७ ई० को अंग्रेजों ने प्लासी का युद्ध जीत लिया और एक प्रकार से उत्तरी भारत में अपने कदम जमा लिये। अब उन्हें केवल साधारण

युद्ध करने थे और अपनी कूटनीति द्वारा भारतवर्ष के समकालीन राजाओं और नवाबों की फूट से लाभ उठाकर अपनी सत्ता को दृढ़ कर लेना था। लार्ड डलहौजी ने डाक्ट्रिन आफ लैप्स (अपहरण नीति) के कुचक्र से १८४८ ई० में सतारा, १८५० ई० में जैतपुर तथा संभलपुर, १८५३ ई० में नागपुर तथा १८५४ ई० में झांसी के राज्य अंग्रेजी अधिकार में कर लिये। १८५३ ई० में नाना साहब धून्धू पंत की ८,००,००० की पेंशन भी हड़प लेने का निर्णय हो गया। डलहौजी देहली के नाममात्र मुगल बादशाह के रहे-सहे अधिकारों पर भी हाथ साफ करना चाहता था किन्तु उसे अधिक सफलता प्राप्त न हुई और कोर्ट आफ डाइरेक्टर्स ने उसका साथ न दिया। १३ फरवरी १८५६ ई० को वह घोर अत्याचार हुआ जिससे सभ्यता कम्पित हो उठी। यह था अवध के राज्य का संसार के समस्त नियमों को त्याग कर अंग्रेजी राज्य में मिलाया जाना। "ह्वाइट मैन्स बर्डेन" तथा उपनिवेशवाद की बर्बरता चरम सीमा को पहुँच गई। अवध पर कुशासन का आरोप लगाया गया, यद्यपि अवध के दोषों का उत्तरदायित्व अंग्रेजों की ही नीति पर था। खदंगे गदर का समकालीन लेखक लिखता है कि अंग्रेज अपने विषय में चाहे जो भी विचार करें किन्तु भारतीय उन्हें अपहरणकर्ता समझते हैं। अवध के अंग्रेजी राज्य में मिलाये जाने के उपरान्त यह भावना और भी तीव्र हो गई[1]। लखनऊ का एक समाचारपत्र तिलिस्मे लखनऊ समकालीन अंग्रेजी अखबार इंग्लिशमैन तथा सुल्तानुल अखबार के आधार पर राजपूताना के समाचारों के सम्बन्ध में लिखता है कि "अखबार इंग्लिशमैन १९ दिसम्बर १८५६ ई० से ज्ञात हुआ है कि जितने राजा हैं सबने सर्व-सम्मति से यह पत्र लिखा है कि जो सरकार कम्पनी प्रतिज्ञापत्रों तथा इकरारनामों के विरुद्ध हिन्दुस्तान के रईसों से जबर्दस्ती रियासतें लेती है तो एक तो प्रजा बेकारी के कारण मरती है, दूसरे बसी-बसाई बस्तियाँ सरकार वीरान किये देती है। इस कारण हम संघटित होकर फसाद के लिए तैयार हुए हैं। हमारा मुल्क यदि वे लेंगे तो हमने जान देने का इरादा किया है। यदि प्रतिज्ञा तथा आश्वासन के विरुद्ध सरकार राज्य लेना चाहती है तो यहाँ भी मैदान में प्रत्येक व्यक्ति प्राण देने को तैयार है। जिस समय युद्ध प्रारम्भ होगा उस समय देखना तुम्हारा कैसा अपमान होगा। बड़े-बड़े बादशाहों को अपने वचन

---

१. खदंगे गदर पृ० ३१, रेड पंम्फलेट पृ० १२।

तथा अपने लेखों पर ध्यान देना आवश्यक है। विश्वासघात के कारण हुल्लड़ मचेगा।"[1]

इस समाचार से, जो अंग्रेजी तथा उर्दू दोनों ही समाचारपत्रों मे प्रकाशित हुआ था, पता चलता है कि अंग्रेजों के विरुद्ध भारतीयों के हृदय में क्या विचार थे। इस समाचार में कोई तथ्य हो अथवा न हो, राजपूताना के राजाओं ने कोई प्रार्थनापत्र दिया हो या न दिया हो किन्तु इससे पता चलता है कि भारतीयों ने किस प्रकार सोचना प्रारम्भ कर दिया था[2]। कानपुर के कमिश्नर मिस्टर ग्रीद्ड ने फरवरी १८५७ में लेफ्टिनेंट गवर्नर मिस्टर कार्लविन को लिखा कि राजपूताना मे अन्य राज्यों के अंग्रेजी राज्य में मिलाये जाने की सूचना ने जनता के मस्तिष्क को उत्तेजित कर दिया है[3]।

बड़े-बड़े तालुकेदारों तथा जमींदारों का विनाश भूमिकर के नवीन प्रबन्धों द्वारा किया गया। भारत की आर्थिक व्यवस्था का आधार यहाँ के ग्राम थे जिनकी सबसे बड़ी सम्पत्ति उनके हल-बैल तथा चर्खे-कर्घे थे। बंगाल में कम्पनी ने अपना राज्य स्थापित करते ही सर्वप्रथम यहाँ की धन-सम्पत्ति पर हाथ साफ किया। बंगाल का धन लूट-लूटकर इंग्लिस्तान पहुँचा दिया गया[4]। कम्पनी का प्रत्येक कर्मचारी

१. **तिलिस्मे लखनऊ** १६ जनवरी १८५७ ई० पृ० २६। अपने राज्य को बचाने के लिए महाराजा ग्वालियर के कलकत्ते जाने के समाचार ९ मार्च १८५७ ई० के सिहरे सामरी समाचारपत्र में प्रकाशित हुए और यह लिखा गया कि उन्हें सफलता मिलनी असम्भव है (**सिहरे सामरी, लखनऊ, ९ मार्च १८५७ ई०** पृ० ७)।

२. इसी समाचारपत्र में एक समाचार के सम्बन्ध में लिखा है—'इन दिनों इंग्लिस्तान में चोरी और ख्वेंरेजी की धूम है। जालसाजी और फरेब मशहूर था, अब यह खबर भी सबको मालूम है।' **तिलिस्मे लखनऊ** १६ जनवरी १८५७ ई० पृ० ७।

३. जे. डब्लू. के, **ए हिस्ट्री आफ दि सिप्वाए वार इन इंडिया**, भाग १, (लंदन १८७० ई०) पृ० ४८४।

४. १७७३ ई० में पार्लियामेंट में बताया गया कि बंगाल मे १३,०६६,७६१ पौंड प्राप्त हुए। ९,०२७,६०९ पौंड व्यय हुए और ४,०३९,१५२ पौंड इंग्लिस्तान भेज दिये गये (**इंडिया टुडे** पृ० १०१)।

बंगाल के धन से पूंजीपति बन बैठा'। उसके साथ-साथ ग्रामों की अर्थ-व्यवस्था पर आघात हुआ। यहां के घरेलू उद्योग-धंधे समाप्त कर दिये गये।

बंगाल के नवाब ने मई १७६२ ई० में कम्पनी के गवर्नर को अपने प्रार्थनापत्र में लिखा "वे प्रजा या व्यापारियों से जबर्दस्ती माल-असबाब चौथाई मूल्य देकर छीन लेते है और अपने १ रुपये के सामान के लिए ५ रुपया देने पर विवश करते है।" विलियम बोल्ट्स ने १७७२ ई० मे लिखा कि अंग्रेज अपने निश्चित किये हुए मूल्य पर कारीगरों को अपना सामान बेचने पर विवश करते है। बुनाई का कार्य करनेवालों की इच्छा का प्रश्न ही नही उठता, इसलिए कि कम्पनी के गुमाश्ते जिस पत्र पर चाहते है हस्ताक्षर करा लेते है। यदि वे ऐसा न करें तो उन्हें कठोर दंड दिये जाते है। बहुत से बुनाई का कार्य करनेवालों के नाम गुमाश्तों की पंजिकाओं मे लिखे हुए है और उन्हे किसी अन्य के लिए कार्य करने की अनुमति नहीं।' बुनाई का कार्य करनेवालो ने अपने उद्योग-धंधे छोड़ दिये। ढाके की मलमल, जो मध्यकालीन युग में समस्त संसार को आश्चर्य में डाल देती थी, समाप्त हो गई।

इंग्लिस्तान की औद्योगिक क्रान्ति को इसी धन की देन समझना चाहिये'। इस क्रान्ति के कारण अब अंग्रेजों को हिन्दुस्तान में बनी हुई सामग्री की इतनी आवश्यकता न रही जितनी कि अपने माल को बाहर खपाने तथा कच्चे माल के आयात की'। १८१३ ई० में भारतवर्ष के बुने हुए कपड़ों का व्यापार ७० प्रतिशत

१. क्लाइव जो स्वयं बड़ी दीन अवस्था में भारतवर्ष आया था लगभग ढाई लाख पौंड ले गया और २७,००० पौंड वार्षिक आय की सम्पत्ति भारत में इसके अतिरिक्त थी। (**इंडिया टुडे** पृ० १०१)।

२. विलियम बोल्ट्स, **कंसिडरेशन आन इंडियन अफेयर्स,** १७७२, पृ० १९१-१९४; **इंडिया टुडे** पृ० ९८।

३. डब्ल्यू कनिंघम, **ग्रोथ आफ इंगलिश इंडस्ट्री ऐंड कामर्स इन माडर्न टाइम्स** पृ० ६१०; **इंडिया टुडे** पृ० १०६।

४. ऐडम स्मिथ, **वेल्थ आफ नेशंस** (१७७६) भाग ४, अध्याय ७; भाग ५, अध्याय १; **इंडिया टुडे** पृ० १०९-११०; रमेश दत्त, **दी इकानामिक हिस्ट्री आफ इंडिया** (१९५०) पृ० ९९-१२३.।

तथा ८० प्रतिशत तक चुंगी लगाकर नष्ट कर दिया गया[1]। १८४० ई० में पार्लियामेंट्री इन्क्वाइरी के सम्बन्ध में मान्टोगोमरी मार्टिन ने अंग्रेजों को चेतावनी देते हुए कहा, "मैंने विस्तार से तथा वर्षों तक हिन्दुस्तान के व्यापार के सम्बन्ध में जांच-पड़ताल की है। ठीक निष्कर्ष पर आने के लिए मैंने ईस्ट इंडिया हाउस के सम्मानित डाइरेक्टरों के पत्रों का, जो उन्होंने अपनी उदारता से मुझे देखने को दिये, बड़े परिश्रम से अध्ययन किया है। मैं इस बात से प्रभावित हूं कि भारतवर्ष के व्यापार के साथ बड़ा अन्याय हुआ है। यह अन्याय स्वतंत्र व्यापार के शोर के कारण, केवल इंग्लिस्तान ही से व्यापार के सम्बन्ध में नहीं हुआ अपितु अन्य देशों से व्यापार के सम्बन्ध में भी, कारण कि स्वतंत्र व्यापार भारतवर्ष के लिए वर्जित था। सूरत, ढाका, मुर्शिदाबाद तथा अन्य स्थानों की देशी कारीगरी का पतन तथा विनाश ऐसा दुःखमय सत्य है जिसका वर्णन सम्भव नहीं। मेरा विचार है कि यह विनाश न्याययुक्त व्यापार द्वारा नहीं हुआ, अपितु मैं यह समझता हूँ कि यह शक्तिशाली के अपनी शक्ति को शक्तिहीन के मुकाबले में प्रयोग के कारण हुआ.....मैं यह नहीं स्वीकार कर सकता कि हिन्दुस्तान कृषि प्रधान देश है। भारतवर्ष उतना ही शिल्पजीवी है जितना कि कृषि-प्रधान। जो कोई उसे केवल कृषि-प्रधान बना देना चाहता है वह उसे सभ्यता की दृष्टि में नीचे गिरा रहा है। मैं नहीं समझता कि हिन्दुस्तान इंग्लिस्तान का फार्म बने। वह शिल्पजीवी है। वहाँ नाना प्रकार की शिल्पकला प्राचीन काल से वर्तमान है। उसका मुकाबला, जब कभी भी ईमानदारी बर्ती गई, कोई भी राष्ट्र न कर सका। मैं ढाके की मलमल तथा काश्मीर की शालों का उल्लेख नहीं करता, अपितु अनेक उन वस्तुओं का जो संसार का कोई भाग उसके मुकाबले में नहीं तैयार कर सका है। उसको अब कृषि-प्रधान अवस्था तक पहुँचा देना उसके साथ अन्याय होगा[2]।" बंगाल के समान भारतवर्ष के सभी भागों में कला-कौशल तथा उद्योग-धंधों का विनाश हो गया। १९वीं शताब्दी के प्रारम्भ तक भारतवर्ष के जहाज बनाने के कारखाने उन्नति पर थे, कारण कि इंग्लिस्तान-वाले इस कला में भारतीयों का मुकाबला नहीं कर सकते थे, परन्तु कानूनों द्वारा इसे भी धीरे-धीरे समाप्त कर दिया गया।

१. एच. एच. विल्सन, **हिस्ट्री आफ ब्रिटिश इंडिया**, भाग १, पृ० ३८५; **इंडिया टुडे** पृ० ११३।

२. रमेश दत्त, **दि इकानामिक हिस्ट्री आफ इंडिया** पृ० १११-११५।

१७६५ ई० मे कम्पनी को बंगाल, बिहार तथा उड़ीसा की दीवानी के अधिकार मिल जाने से लूट के नये द्वार खुल गये। १७६४-६५ ई० में भूमिकर ८१७,००० पौंड था। कम्पनी के प्रथम वर्ष के अधिकार में १७६५-६६ ई० में १,४७०,००० पौंड हो गया। १७७१-७२ तक २,३४१,००० पौंड तथा १७७५-७६ में २,८१८,००० पौंड और जब १७९३ ई० में लार्ड कार्नवालिस ने स्थायी बन्दोबस्त कराया तो भूमिकर ३,४००,००० पौंड हो गया। इस बीच कृषि की उन्नति के कोई साधन नही बढ़े। उन्नति के पुराने साधनों की ओर कोई ध्यान नहीं दिया गया किन्तु भूमिकर में वृद्धि होती रही।

१७७० ई० में बंगाल में घोर अकाल पड़ा। लगभग एक तिहाई जनसंख्या समाप्त हो गई किन्तु कम्पनी की कलकत्ता कौंसिल के अनुसार भूमिकर मे फिर वृद्धि हुई। लार्ड कार्नवालिस ने अपनी १८ सितम्बर १७८९ ई० की आख्या मे लिखा है कि "कम्पनी के राज्य का तिहाई भाग अब जंगल हो गया जिसमें केवल वन-पशु निवास करते हैं।"[1] जमीदारों का एक नया वर्ग बन गया जो अपनी उन्नति के लिए अंग्रेजों की चापलूसी करता तथा कृषकों का रक्त चूसता रहता। ऊपरी प्रान्त में, जिसे लगभग उत्तर प्रदेश के बराबर समझना चाहिये, बन्दोबस्त करते समय बड़ा अत्याचार हुआ। पुराने ताल्लुकेदारों के स्थान पर नया जमींदार वर्ग बड़े अन्यायपूर्ण ढंग से बनाया गया। के अनुसार सेटिलमेंट अफसर ताल्लुकेदारों को निकालना शेर के शिकार के समान एक बहुत बड़ा कार्य समझते थे।.....वे उनमें कोई न कोई दोष निकालकर उनका विनाश कर देते थे।[2] उन्होंने अपने अत्याचारों का नाम कृषकों का उद्धार रख छोड़ा था। डाइरेक्टर टुकर, जिसने सर्वप्रथम मिलाये हुए तथा जीते हुए प्रान्तों का बन्दोबस्त किया, लिखता है--"कृषकों को संतुष्ट करने अथवा उनकी दशा सुधारने का उपाय, मेरे विचार से बड़े-बड़े ताल्लुकदारों तथा जमींदारों को समाप्त करना नहीं। जिन लोगों को हम निकाल रहे हैं उनके हृदय से, मुझे भय है कि, उनके प्राचीन गौरव तथा आधुनिक दशा की यह स्मृति नहीं निकाल सकते कि वे किसी समय धन-धान्य-सम्पन्न थे और वे तथा उनकी सन्तान समझेगी कि अब उनकी वह दशा नहीं। वे चुप हैं, क्योंकि हिन्दुस्तानी सहनशील

---

१. इंडिया टुडे पृ० १०२-१०४।

२. सिप्वाए इन इंडिया भाग १, पृ० १६०-१६१।

होते हैं और अपने अधिकारियों की आज्ञा के समक्ष नतमस्तक हो जाते हैं किन्तु यदि कोई शत्रु हमारी पश्चिमी सीमा पर दृष्टिगत हो जाय या अभाग्यवश कोई अन्य विद्रोह उठ खड़ा हो तो हम लोग इन ताल्लुकदारों को बहुत बड़ा शत्रु तथा उनकी प्रजा को उनकी पताका के नीचे युद्ध करते पायेंगे'। बन्दोबस्त का उद्देश्य किसानों को अपने वश में रखना तथा स्थायी रूप से अधिक धन प्राप्त करना था। किसानों की दशा के सुधारने का प्रश्न बहुत कम उठता था। भूमि का स्वामी उन्हें नहीं अपितु अन्य छोटे-छोटे जमींदारों को बनाया गया जिनका शोषण तथा अत्याचार बड़े जमींदारों तथा ताल्लुकदारों से कम न था। दीवानी के मुकदमों ने शीघ्र ही जमींदारों को कष्टों के विकराल भँवर में फंसा दिया। उनके ऋण की डिगरियों द्वारा उनकी जमीनें नीलाम होती थी। उनके कष्टों का बहुत बड़ा भार उनके अधीन किसानों को सहन करना पड़ता। इस प्रकार १०० वर्ष के अंग्रेजी शासन ने भारतवर्ष की आर्थिक स्थिति चौपट कर दी। करों के भार ने भारतीयों की कमर तोड़ दी। "लार्ड डल्हौजी के राज्य के पूर्व सड़कें, मनुष्यों तथा पशुओं के लिए, खुली रहती थीं पर उन महानुभाव ने यात्रियों पर भी कर लगा दिया।"[२]

१८५७ ई० के प्रसिद्ध क्रान्तिकारी मौलाना फजलेहक खैराबादी ने क्रान्ति का दूसरा मुख्य कारण आर्थिक संकट बताया है। वे लिखते है कि अंग्रेजों ने दूसरा उपाय यह सोचा कि विभिन्न वर्गों को अपने वश मे इस प्रकार किया जाय कि भारत का अनाज कृषकों से लेकर नकद मूल्य अदा किया जाय और इन गरीबों को क्रय-विक्रय में कोई अधिकार प्राप्त न हो। इस प्रकार मूल्य के घटाने-बढ़ाने और मंडियों में अनाज पहुँचाने और न पहुँचाने का उत्तरदायित्व अपने ऊपर ले लिया। इसका उद्देश्य इसके अतिरिक्त और कुछ न था कि प्राणी विवश होकर उनके चरणों में आ पड़े तथा भोजन आदि के न मिलने पर उनके प्रत्येक आदेश तथा योजना की पूर्ति करे'।

१. टी. राइस होम्स, **ए हिस्ट्री आफ इंडियन म्युटिनी** पृ० २६.।

२. **रेड पेम्फलेट** पृ० १२.।

३. **सौरतुल हिन्दिया** पृ० ३५७-३५८.।

भारतवर्ष में ईसाई धर्म का प्रचार

१८१३ ई० तथा १८३३ ई० में कम्पनी को अंग्रेजी पार्लियामेंट द्वारा दिये गये आज्ञापत्रों द्वारा पादरियों को भारत में आने की विशेष सुविधाएँ मिली और वे अधिक संख्या में यहां आने लगे[1]। इंग्लैंड भी १८१५ ई० में नेपोलियन की हार के बाद भारत, यूरोप व दुनिया के अन्य क्षेत्रों में शक्तिशाली साम्राज्यवादी नीति का अनुसरण कर रहा था। फलतः भारत में पादरियों की विशेष समितियों ने धर्म-प्रचार का आन्दोलन जोरों में शुरू किया। पादरियों के नेता डा० एलेक्जेन्डर डफ की नीति थी कि आंग्ल शिक्षा का प्रचार करके भूमिका तैयार की जाय और कुलीन ब्राह्मणों तथा अन्य उच्च श्रेणी के लोगों को ईसाई बनाया जाय[2]।

सन् १८३३ से १८५३ ई० तक उपर्युक्त नीति का पालन किया गया। मैकाले, बैंटिक, आकलैंड आदि के प्रयत्नों से आंग्ल शिक्षा को प्रोत्साहन दिया गया यहां तक कि १८५८ ई० में कम्पनी के संचालकों ने कम्पनी कलकत्ता-शासन को केवल आंग्ल शिक्षा के प्रचार पर ही ध्यान देने का आदेश दिया[3]। कम्पनी के अधिकारियों ने सामाजिक एवं राजनीतिक क्षेत्र में अन्य सुधार-योजनाएं बनाईं जिनसे हिन्दू तथा मुसलमान धर्म की बहुत-सी रूढ़ियों में परिवर्तन हुआ। समस्त कम्पनी राज्य में रविवार (सण्डे) की छुट्टी अनिवार्य रूप से घोषित हुई। दशहरे आदि त्योहारों पर सेना का धार्मिक जलूसों में शामिल होना बन्द कर दिया गया था। मन्दिरों तथा मस्जिदों को दान में दिये गये ग्रामों से लगान वसूल करने का प्रयत्न किया गया[4]। जो ईसाई धर्म को अपना लेते थे उन्हें आदर दिया जाने लगा। साथ ही साथ उनके लिए पैतृक सम्पत्ति आदि प्राप्त करने में जो कानूनी रुकावटें आदि थीं वे नये कानून बनाकर दूर कर दी गयी।

१. १८३३ ईस्ट इंडिया कम्पनी को, अंग्रेजी पार्लियामेंट द्वारा प्रदत्त आज्ञापत्र।

२. जार्ज स्मिथ : **डा० डफ की जीवनी**।

३. १९ जुलाई १८५८ ई० का कम्पनी के संचालकों का प्रपत्र।

४. अंग्रेजी पार्लियामेंट द्वारा प्रकाशित **"ईस्ट इंडिया एफेयर्स"** १८४५ धार्मिक स्थानों, मंदिरों व मस्जिदों से सम्बद्ध सम्पत्ति का निरीक्षण।

सन् १८५४ ई० में भारत तथा इंग्लैंड में स्थित पादरियों के प्रयास से विशेष शिक्षा सम्बन्धी आज्ञापत्र भारत भिजवाया गया जिसके अन्तर्गत पादरियों द्वारा स्थापित स्कूलों को आर्थिक सहायता प्रदान करने का आदेश दिया गया। साथ ही साथ यह भी घोषणा की गई कि कम्पनी का शासन धीरे-धीरे सरकारी स्कूल खुलवायेगा। इस नीति से आगरा प्रान्त में १८५० ई० के बाद खुले हुए सहस्रों राजकीय ग्रामीण स्कूलों को जो "शिक्षाकर" द्वारा चलते थे बड़ा धक्का पहुँचा।[१] आर्थिक सहायता लेकर चलानेवाली संस्थाएँ आगरा व अवध में पादरियों के अतिरिक्त किसी अन्य की न थीं। उपर्युक्त नीति से तथा पादरियों की महत्वाकांक्षी योजनाओं से भयभीत होकर कलकत्ता और आगरा प्रान्तों के निवासियों ने पादरियों के स्कूलों से विद्यार्थियों को हटाने का विचार किया और शासन की शिक्षानीति का विरोध होने लगा। बिहार में तो जिला इंस्पेक्टर के दफ्तरों को ही "शैतानी का घर" कहा जाने लगा"।[२] अंग्रेजी पढ़ना, ईसाई बनने के बराबर समझा जाने लगा। इस प्रकार जनता में असन्तोष बढ़ता गया और वह राजनीतिक कारणों से मिलकर १८५७ ई० में महान् क्रान्ति के रूप में फूट निकला।

सेना

कम्पनी के राज्य का सबसे बड़ा आधार भारतीय सेना थी। इसी शक्ति के बल पर अंग्रेजों का राज्य स्थापित था। यही सैनिक अपनी गोलियों तथा संगीनों द्वारा अंग्रेजी राज्य के लिए बड़ी बड़ी शक्तियों को नतमस्तक कर देते थे। वे भारत के धन से वेतन पाते थे और अंग्रेजों के नमकख्वार कहलाते थे। वे अपने स्वामियों की आज्ञाओं के पालन हेतु सर्वदा कटिबद्ध रहते थे किन्तु धीरे धीरे उन्हें भी अनुभव होने लगा कि वे केवल बाहरी सत्ता के हाथ की कठपुतली हैं। भारत-माता के प्रति उनका भी कुछ कर्त्तव्य है।

चार्ल्स थ्योफिलस मेट्काफ ने लिखा है कि "मुट्ठी भर अंग्रेज एक महाद्वीप पर राज्य कर रहे थे, अपार सैनिक शक्ति के बल पर नहीं अपितु देशी लोगों के इस

१. अंग्रेजी पार्लियामेंट द्वारा प्रकाशित **"ईस्ट इंडिया एजूकेशन"** १८४९।

२. बंगाल के गवर्नर हैलीडे द्वारा लार्ड एलेनबरो के भारत कम्पनी के शासन को भेजे हुए २८ अप्रैल १८५८ के प्रपत्र के उत्तर में।

विचार के कारण कि अंग्रेज अजेय हैं। जैसे-जैसे समय व्यतीत होता गया हमारे राज्य के ढंग तथा साधनों के परिचय ने बहुतों की आँखें खोल दीं कि हमारी संख्या बहुत ही हीन है......यह स्पष्ट हो गया कि भारत देशी सेना के बल पर अधिकार में है। यदि वह शासन का साथ छोड़ दे तो इधर-उधर फैले हुए फिरंगी जो हर प्रकार के सहयोग तथा सहायता से दूर पड़े हुए हैं क्या कर सकते हैं। देशी लोगों के मस्तिष्क में यह विचार डालने के लिए किसी शिक्षा की आवश्यकता न थी। यह तथ्य प्रत्येक उस व्यक्ति पर स्पष्ट था जिसने क्षण भर भी इस ओर ध्यान दिया था।"[1] बंगाल की सेना के बहुत बड़े भाग में अवध के निवासी सम्मिलित थे। कहा जाता है कि अवध के मुसलमान राज्य के नष्ट होने से उन्हें कोई दुःख न हो सकता था। वाजिद अली शाह से उन्हें कोई प्रेम न था। अवध के अंग्रेजी राज्य से पृथक् रहने पर सैनिकों को विशेष सुविधाएँ प्राप्त थीं किन्तु अवध के अंग्रेजी राज्य में मिला लिये जाने के उपरान्त इन सुविधाओं का भी अन्त हो गया। अब वे भी साधारण प्रजा के समान हो गये। रेजीडेंट इसके पूर्व उनके भूमि आदि के झगड़ों का निर्णय उनके हित में करा दिया करता था किन्तु रेजीडेंसी के समाप्त होने के उपरान्त वे कम्पनी की प्रजा होकर कमिश्नर के अधीन हो गये।

•

बंगाल की सेना के असंतोष का यह कारण सभी अंग्रेज लेखकों तथा उनके अनुसरण करनेवाले अन्य लेखकों ने भी बताया है किन्तु सैनिकों की सुविधा के अन्त की यह गाथा काल्पनिक ही है। सैनिकों को अन्य सिविलियनों के मुकाबले में अंग्रेजी राज्य के अन्त तक विशेष सुविधाएँ प्राप्त थीं। अवध के राज्य के अन्त के उपरान्त उनकी सुविधाओं का अन्त न समझना चाहिये। इस प्रकार बंगाल की सेना पर स्वार्थी होने का दोष लगाकर उनके आन्दोलन को अंग्रेज लेखकों ने दूसरा ही रूप दे दिया। अवध की तबाही के उपरान्त यदि उनका घर नष्ट न भी हुआ हो तो भी वे अपने गाँव में प्रत्येक घर को नष्ट होते हुए देखते थे। अतः उनके हृदय में किस प्रकार असंतोष की भावनाएँ जाग्रत न होतीं और कब तक वे अँग्रेजों के संकेत पर कठपुतली के समान नाचा करते ?[2]

१. द नेटिव नैरेटिव्ज आफ दि म्युटिनी, पृ० ८।
२. देखो रेड पैम्फलेट पृ० ११-१२।

संघटन

आज से सौ वर्ष पूर्व किसी आन्दोलन का संचालन एवं संघटन बड़ा कठिन था। समस्त भारतवर्ष अंग्रेजों के अधीन था। यातायात के साधन रेल, डाक, तार सभी उनके हाथ में थे। देश गुप्तचरों तथा विश्वासघातियों से परिपूर्ण था। कोई भी पत्र, कोई भी संदेश तुरन्त पकड़ लिया जाता था किन्तु फिर भी कलकत्ते से पेशावर तक एक ही प्रकार की भावना जाग्रत हो उठी थी। यह भावना ईश्वर की शक्ति में अटूट विश्वास के कारण उत्पन्न हुई थी। अंग्रेजी राज्य १०० वर्ष से स्थापित था। १०० वर्ष बाद एक महान् परिवर्तन होना आवश्यक है—भारतीयों का ऐसा विश्वास था।[1] भारतवर्ष को जिस परिवर्तन की प्रतीक्षा थी, वह था अंग्रेजी राज्य का अन्त। अंग्रेजों के अत्याचार तथा स्वतन्त्रता की भावनाओं ने, जो जाग्रत हो चुकी थीं, भारतवर्ष के प्रत्येक नर-नारी को सचेत कर दिया और वे क्रान्ति के लिए तैयार हो गये। डिजराइली ने २७ जुलाई १८५७ ई० को बंगाल के क्रान्तिकारियों को लोकव्यापक असंतोष का प्रवक्ता बताते हुए कहा कि हमारे शासन का प्राचीन सिद्धान्त राष्ट्रीयता का सम्मान करना है किन्तु पिछले वर्षों से भारतीय सरकार ने लगभग प्रत्येक प्रभावशाली वर्ग को या तो विरोधी या चौकन्ना बना दिया है।[2]

जब सुप्रीम गवर्नमेंट ने एक विशेष कमिश्नर मिस्टर सी० विल्सन को क्रान्ति के असफल हो जाने के उपरान्त इस उद्देश्य से नियुक्त किया कि वे अपराधियों को दंड दें तथा अंग्रेजों के हितैषियों को पुरस्कृत करे तो उसने इस बात पर अपना पूर्ण विश्वास प्रकट किया कि सैनिकों ने निश्चित तिथि पर एक साथ विद्रोह करने की योजना बना ली थी। वह लिखता है—"मौखिक सूचनाओं तथा घटनाओं की सावधानी से परीक्षा करने के उपरान्त मैं संतुष्ट हूं कि रविवार ३१ मई १८५७ ई० विप्लव की तिथि निश्चित हुई थी।[3] उस दिन समस्त बंगाल सेना

१. **सिप्वाए वार इन इंडिया,** भाग १ पृ० ४८४–४८६।

२. जार्ज अर्ल बकल, **दी लाइफ आफ बेन्जमिन डिजराइली** भाग ४, १८५५-१८६८ (लन्दन १९१६) पृ० ८८।

३. (मुरादाबाद सरकारी नैरेटिव पृ० १) **कुछ लोगों के अनुसार २३ जून १८५७ ई० क्रान्ति की तिथि निश्चित हुई थी। किन्तु ऐतिहासिक तथ्य के आधार पर निश्चित तिथि का निर्णय कठिन है, फिर भी यह निश्चय है कि क्रान्ति का विस्फोट समय के पूर्व मेरठ से हो गया।**

विप्लव प्रारम्भ कर देती। प्रत्येक रेजीमेंट में तीन सदस्यों की एक समिति अपने कर्त्तव्य के संचालन हेतु नियुक्त हुई थी। समस्त सैनिकों को इस पूर्व निश्चित योजना का कोई ज्ञान न था किन्तु आपस में रेजीमेंटों ने यह संकल्प कर लिया था कि उनकी रेजीमेंटें भी अन्य रेजीमेंटों का अनुसरण करेंगी। समितियाँ आपस में पत्र-व्यवहार करती थीं और आन्दोलन की योजना बनाती थीं। वह इस प्रकार थी कि ३१ मई को विभिन्न दल समस्त यूरोपियन पदाधिकारियों की हत्या कर दें जिनमें से अधिकांश गिरजाघर में होंगे। खजानों पर अधिकार जमा लें जो उस समय रबी की किस्तों की प्राप्ति से बहुत बढ़ी हुई अवस्था में होंगे। बन्दियों को मुक्त करा दें जो २५००० से अधिक की संख्या में उत्तरी पश्चिमी प्रान्तों में विद्यमान थे। देहली तथा उसके आस पास की रेजीमेंटों को आदेश दिया गया था कि वे मैगजीन (शस्त्रागारों) तथा गढ़बन्दियों पर अधिकार जमा लें।" हत्याकाण्ड को पूर्ण करने तथा सफल बनाने के लिए और सरकारी विरोध को असफल बनाने के लिए यह निश्चय हुआ था कि समस्त अन्य ब्रिगेड तथा चौकियाँ अपने अपने स्थान पर ही रहें। महीनों से अपितु वर्षों से ये लोग समस्त देश के ऊपर अपनी साजिश का जाल फैला रहे थे। एक देशी दरबार से दूसरे दरबार तक, विशाल भारतीय महाद्वीप के एक सिरे से दूसरे सिरे तक, नाना साहब के दूत पत्र लेकर घूम चुके थे। इन पत्रों में होशियारी के साथ और शायद रहस्यपूर्ण शब्दों में भिन्न भिन्न जातियों तथा भिन्न भिन्न धर्मों के नरेशों तथा नेताओं को परामर्श तथा निमंत्रण दिया गया था कि आप लोग आगामी युद्ध में भाग लें।[1]

फैजाबाद के मौल्वी अहमदउल्लाह शाह भी क्रान्ति के संघटन हेतु कटिबद्ध हो गये थे। कर्नल जी० बी० मैलेसन लिखता है "उसके कारनामों के विषय में जो बातें सत्य प्रमाणित हो चुकी हैं, वे यह हैं कि अवध के अंग्रेजी राज्यमें तुरन्त मिलाये जाने के उपरान्त उसने उत्तरी पश्चिमी प्रान्तों में ऐसे उद्देश्य से भ्रमण करना प्रारम्भ किया जो यूरोपियन अधिकारियों के लिए रहस्यपूर्ण था। वह कुछ समय तक आगरे में ठहरा, देहली, मेरठ, पटना तथा कलकत्ता के चक्कर उसने लगाये। उस पर मुकदमा चला और उसे मृत्यु-दंड का आदेश हुआ किन्तु इसके पूर्व ही

१. **इंडियन म्युटिनी**, भाग १, पृ० २४।

विप्लव प्रारम्भ हो गया और वह लखनऊ पहुँचकर बेगम का विश्वस्त मित्र तथा विद्रोहियों का विश्वस्त नेता हो गया।..... मुझे लेश मात्र भी संदेह नहीं कि वह व्यक्ति विद्रोह का मस्तिष्क था। उसने अपनी यात्रा के समय चपाती की योजना निकाली।[1]

नाना साहब की यात्रा

धूंधू पंत, नाना साहब ने काल्पी, देहली तथा लखनऊ की यात्रा की। इस यात्रा का उद्देश्य अंग्रेजों को ज्ञात न हो सका। वे सम्भवतः इसे साधारण धार्मिक यात्रा अथवा भ्रमण समझते थे। १८ अप्रैल को नाना साहब ने लखनऊ के लिए प्रस्थान किया।[2] यह उनकी अन्तिम यात्रा रही होगी। अन्य स्थानों की यात्रा उन्होंने इससे पूर्व ही समाप्त कर ली होगी। वे अम्बाले तक भी गये।[3] यह समस्त यात्रा निरर्थक न थी। नाना साहब के दूत एक भारतीय दरबार से दूसरे भारतीय दरबार तक उनके रहस्यमय शब्दों में लिखे हुए पत्र लेकर घूम आये थे।[4] उन पत्रों के उत्तर भी प्राप्त होने लगे थे।[5] १८ अप्रैल को हेनरी लारेंस ने गवर्नर जनरल को एक बड़ा लम्बा चौड़ा पत्र लिखा जिसमें उसने यह दिखाया कि सेना, पुलिस तथा शहरवाले बड़े भयप्रद रूप से संघटित हो रहे हैं जिस से पता चलता है कि सभी मिलकर विद्रोह कर देंगे।[6]

नाना साहब लखनऊ में

मार्टिन रिचर्ड गब्बिन्स ने लिखा है कि बिठूर के नाना साहब अप्रैल में लखनऊ सैर के बहाने पहुँचे। उनके साथ उनका छोटा भाई तथा अत्यधिक परिजन थे।

१. सुन्दरलाल. **भारत में अंग्रेजी राज्य**, भाग ३. मौलवी अहमदुल्लाह शाह की क्रान्ति सम्बन्धी काररवाई, **सिहरे सामरी लखनऊ** ९ मार्च १८५७ ई० में पढ़िये। समाचार पत्र का समर्थन सरकारी अप्रकाशित रिकार्डों द्वारा भी होता है। मैलेसन, **इंडियन म्युटिनी** (लन्दन १८९४) पृ० १८। मलेसन के विवरण में अनेक अशुद्धियाँ हैं।

२. **सिप्वाए वार इन इंडिया**, भाग १, पृ० ५७६।

३. डब्लू एच रसल, **माई डायरी इन इंडिया** (लंदन १८६०) भाग १ पृ० १६८।

४. **सिप्वाए वार इन इंडिया**, भाग १, पृ० ५७८।

५. **सिप्वाए वार इन इंडिया**, भाग १, पृ० ५७९।

६. **सिप्वाए वार इन इंडिया**, भाग १, पृ० ५७६-५७७।

वे कानपुर के भूतपूर्व एक जज का परिचय-पत्र कैप्टेन हेस तथा गबिन्स के नाम लाये थे। गबिन्स ने उनके व्यवहार में बड़ी धृष्टता पाई और अपने गौरव तथा महत्व के प्रदर्शन हेतु वे अपने छः सात अनुचरों सहित गबिन्स के कमरे में प्रविष्ट हुए और उनके लिए कुर्सियाँ माँगी। उनके साथ उनका दूत अजीमुल्लाह भी था।[1]

रसल के अनुसार भी लखनऊ में नाना साहब की भेंट जिन यूरोपियनों से हुई उनके प्रति उनके व्यवहार में धृष्टता तथा अशिष्टता थी।[2] इस यात्रा में दोनों ने देहली में बहादुरशाह से भी अवश्य भेंट की होगी और इस प्रकार आगामी क्रान्ति का पूरा संघटन कर लिया होगा। लखनऊ के यूरोपियनों को नाना साहब के व्यवहार में धृष्टता अवश्य दृष्टिगत हुई होगी, कारण कि उनका व्यवहार अन्य भारतीयों की अपेक्षा जो अँग्रेजों की खुशामद में गर्व का अनुभव करते थे, भिन्न था। नाना साहब के हृदय में राष्ट्र का गौरव लहरें ले रहा था, अतः वे किस प्रकार अंग्रेजों की चाटुकारी करते। उन्होंने दिखा दिया कि भारतीय आपस में भाई भाई हैं और अंग्रेज अधिकारी को उनके सभी साथियों को कुर्सियाँ देनी पड़ेंगी। क्या यह चेतावनी अंग्रेजों के लिए पर्याप्त न थी? क्या नाना साहब के व्यवहार से यह पता नहीं चलता कि भारत जाग उठा था? वह संघटित हो रहा था, क्रान्ति के लिए, अंग्रेजों का राज्य समाप्त करने के लिए।[3]

प्रारम्भिक संकेत

क्रान्ति की सूचना का श्री गणेश अग्निकांड से हुआ। जनवरी १८५७ ई० में सरकारी छावनियाँ तथा अंग्रेजों के बंगले जलाये जाने लगे। इसकी सूचना उत्तरी भारत के एक सिरे से लेकर दूसरे सिरे तक पहुँच गई। प्रत्येक छावनी में इसी प्रकार की कारवाई ने इस विश्वास को कि अंग्रेजी शक्ति अजेय है तथा उनकी ओर कोई आँख उठाकर नहीं देख सकता, बड़ा धक्का

१. मार्टिन रिचर्ड गबिन्स, "**ऐन अकाउन्ट आफ़ दी म्युटिनीज़ इन अवध एँड आफ दी सीज आफ लखनऊ प्रेसीडेंसी** (लन्दन १८५८) पृ० ३०-३१।

२. डब्ल्यू. एच. रसल, **माई डायरी इन इंडिया**, भाग १ पृ० १६८।

३. अंग्रेज अधिकारियों की असावधानी के विषय में **रेड पैम्फ़लेट** पृ० १५, १६ का अवलोकन कीजिये।

पहुँचाया । प्रत्येक छावनी के निकट के ग्राम यह देखने तथा यह समाचार सुनते होंगे कि किस प्रकार अंग्रेज अपनी कोठियों तथा बंगलों को भस्म कर डालने वालों का भी पता नहीं चला सकते। उनके साम्राज्य की जड़े खोखली हैं। कितनी चमक दमक थी उस मुलम्मे में जो उनके राज्य की जर्जर दीवारों पर चढ़ा हुआ था। लोगों को सम्भवतः अपनी शक्ति का प्रथम बार अनुभव हुआ होगा। उन्हें अपनी दासता से घृणा होने लगी होगी। उन्होंने देखा होगा कि उनके ऊपर अत्याचार हो रहे हैं, उनका शोषण हो रहा है—क्यों ? इसीलिए न कि वे आत्मविश्वास खो चुके हैं, वे संघटित नहीं रह सकते।

कैप्टेन मार्टिन ने, जो उस समय अम्बाला में था, बहादुरशाह के मुकदमें में बताया कि लोग वार्तालाप करते थे कि यद्यपि सरकार ने आग लगाने वालों का पता बताने वालों को अत्यधिक पुरस्कार देने की घोषणा की है किन्तु कोई भी पता न बतायेगा और इसे बहुत बड़े असंतोष एवं विद्रोह का चिह्न समझा जाता था। मैंने इसकी सूचना अम्बाले की सेना के हेड क्वार्टर तथा कैप्टन सेपटिमस बेशर सेना के असिस्टेन्ट एडजुटेंट जनरल को भी दे दी थी[1]।

चपातियों का रहस्य

तत्पश्चात् गाँव-गाँव में चपातियाँ बाँटी गईं, इतने गुप्त ढंग से, इतने रहस्यमय साधनों से कि किसी अधिकारी को पता ही न चल सका कि वे कहाँ से आइ, किस प्रकार आइ और किसने उन्हें भेजा तथा उनका क्या उद्देश्य था। अधिकारियों ने इसके विषय में नाना प्रकार की बातों पर विश्वास कर लिया। किसी का ख्याल हुआ कि यह किसी रोग-निवारण का चिह्न है। कुछ लोगों का विचार था कि यह भारतीयों का अंध-विश्वास है। कुछ लोगों को बताया गया कि भारतीयों का विचार है कि इन्हें अंग्रेजों की ओर से बँटवाया जा रहा है। थोड़े से लोग यह समझ भी गये कि यह किसी बहुत बड़े खतरे का द्योतक है किन्तु वे कर भी क्या सकते थे ? भारतवर्ष जाग उठा था। वह यहाँ से फिरंगी राज्य का अंत करना चाहता था। छावनियों में कमल के फूल घुमाये गये। बर्दवान में बैंगन के फूल बाँटे गये।[2] फकीरों तथा साधुओं ने छावनियों एवं नगरों में अपने रहस्यमय आचरण

१. ट्रायल, पृ० १०१।
२. सिहरे सामरो ४ मई १८५७ ई०, पृ० ८।

तथा गुप्त वाणी से क्रान्ति का मंत्र फूंक दिया। कुछ लोग योजना के विषय में पहले से सब कुछ जानते थे। उन्होंने इसका ताना-बाना तैयार किया था। वे नष्ट हो गये, गोलियों का निशाना बन गये, उन्होने वकीलों की जिरह के अपमानजनक वाक्यों के प्रहार सहे, किन्तु क्रान्ति के संघटन के इस रहस्य के विषय में किसी को कुछ न बताया।

डब्लू. एच. केरी की पुस्तक "महमेडन रेबेलियन" १८५७ ई० में ही, जबकि क्रान्ति की अग्नि उत्तरी भारत के बहुत बड़े भाग में धधक रही थी, रुड़की से प्रकाशित हुई। उसने इस पुस्तक में क्रान्ति के प्रारम्भिक चिह्नों के विषय में इस प्रकार लिखा है "२३ जनवरी को रानीगंज छावनी में आग लगा दी गई। उसके दो तीन संध्या उपरान्त, सारजेन्ट मेजर का बगला भी फूंक दिया गया। २५ तारीख को बारकपुर का तारघर भी जला दिया गया। इस प्रकार अग्नि-देवता संकेत करने लगे कि उत्तरी पश्चिमी प्रान्त की अन्य छावनियों के भाग्य में भी क्या लिखा हुआ है।"

फरवरी में दूसरे प्रकार की कार्रवाई ने कुछ समय के लिए चौकन्ना कर दिया। फिर वह यूरोपियनों में घृणा तथा उपहास का विषय बन गई। हमारा संकेत चपाती की कार्रवाई की ओर है।

•

इस बात का पता लगाया जा चुका है कि चौकीदार फर्रुखाबाद तथा गुड़गाँव में वादे तक, गेहूँ की छोटी छोटी रोटियां बांटने में बड़े जोरों से लग गये। उनके वितरण की कहीं कहीं पटवारियों के हाथ की लिखी हुई रसीदें भी ली जाती थीं। उनके वितरण का ढंग इस प्रकार था -- एक चौकीदार अपने समीप के ग्राम में दो चपातियां लेकर जाता था जो वह अपने दूसरे चौकीदार भाई को इस आदेश के साथ दे देता था कि वह छः अन्य चपातियां बनाकर दो दो चपातियां समीप के गाँव में भेज दे और उन्हें समझा दे कि वे भी उसी प्रकार आचरण करें। प्रत्येक चौकीदार दो चपातियां हाकिम के समक्ष अथवा जब उनसे मांगी जायें उस समय प्रस्तुत करने के लिए अपने पास रखे।

•

गुड़गाँव के मजिस्ट्रेट के पत्र से पता चलता है कि किस प्रकार एक जिले का चौकीदार पास वाले जिले में यह संदेश प्राप्त करता था।

"मथुरा की सीमा के ग्रामों के चौकीदारों ने आटे की छोटी छोटी रोटियां इस आदेश के साथ प्राप्त की हैं कि उन्हें समस्त जिले में बांट दिया जाय।

एक चौकीदार इनमें से एक रोटी प्राप्त करके पांच अथवा छः अन्य रोटियां पकाता है और इस प्रकार वे एक ग्राम से दूसरे ग्राम में बँट रही है। इस आदेश का इतनी शीघ्रता से पालन किया गया कि वह संदेश समस्त ग्रामों में पहुँच गया।

आज इस प्रकार की रोटियां प्राप्त हुई है और गुड़गांव के ग्रामों में बांट दी गई हैं। यह विचार बड़े परिश्रम से प्रसारित किया जा रहा है कि सरकार ने यह आदेश दिया है"।[1]

१२ अप्रैल १८५७ ई० को देहली उर्दू अखबार मे प्रकाशित हुआ कि "मेजर डब्लू असंकिन साहब कमिश्नर जिला आगरा की रिपोर्ट से भी मालूम हुआ है कि आटे की छोटी छोटी पूरियां जिला गुड़गांव के समान जिला सागर, दमोह, जबलपुर तथा नरसिंहपुर में बांटी गई है। मेजर साहब उनके वितरण मे कोई आपत्ति नहीं समझते और इसका कारण लोगो का भ्रम समझते है।"[2]

इस समाचार से पता चलता है कि उत्तरी भारत के समान मध्य भारत में भी इन चपातियों का वितरण प्रारम्भ हो गया था और इस प्रकार यह संकेत देश के एक बहुत बड़े भाग मे प्रसारित हो गया था। बहादुर शाह के मुकदमे तथा अन्य मुकदमों में इसके विषय मे विशेष जानकारी प्राप्त करने का प्रयत्न किया गया। इन साक्षियों मे अधिकांश अँग्रेजों के गुप्तचर थे जो गवाही के लिए तैयार करके भेजे जाते थे किन्तु फिर भी उनके बयानों से इस रहस्य के विषय में साधारण लोगों के विचारों का पता चलता है। बहादुर शाह के मुकदमे में जाटमल गवाह से, जो अंग्रेजों का गुप्तचर था, इस प्रकार प्रश्न किये गये।

प्रश्न—क्या तुमने कभी सुना कि विद्रोह के कुछ मास पूर्व ग्रामों में रोटियां बांटी गई? यदि ऐसा किया गया तो उसका क्या उद्देश्य था?

उत्तर—हां, मैने इसके विषय में सुना था। कुछ लोग कहते थे कि किसी आगामी संकट के निवारण हेतु इनका वितरण हो रहा है। कुछ लोग कहते थे कि इन्हें सरकार की ओर से यह दिखाने को बँटवाया जा रहा है कि समस्त

१. डब्लू. एच. केरी, **मुहमेडन रेबेलियन** (रुड़की, १८५७ ई०) पृ० ९-१०।
२. **देहली उर्दू अखबार,** अप्रैल १२, १८५७ ई०, पृ० ४।

देश के जनसमूह को वही भोजन करने पर विवश किया जायेगा जो ईसाई करते है और इस प्रकार उन्हें विधर्मी कर दिया जायेगा। कुछ लोग कहते थे कि चपाती इस उद्देश्य से बटवाई जा रही हैं कि सरकार लोगों का भोजन भ्रष्ट करके इस देश पर ईसाई धर्म लादने पर तुली हुई है और इस प्रकार उन्हें सचेत किया जाता था कि वे इसके निरोध हेतु उद्यत हो जायें।

प्रश्न—क्या इस प्रकार की वस्तुओं को ग्रामों में भेजने की हिन्दुओं अथवा मुसलमानों में कोई प्रथा है कि बिना स्पष्टीकरण के इसका अर्थ तुरन्त समझ में आ जाता ?

उत्तर—नहीं, इस प्रकार की कोई प्रथा नहीं। मैं ५० वर्ष का हो गया हूँ। मैंने इस प्रकार की कोई चीज इसके पूर्व नहीं सुनी।

प्रश्न—क्या तुमने कभी सुना कि चपातियों के साथ कोई संदेश भी भेजा जाता था ?

उत्तर—नहीं, मैंने यह बात कभी नहीं सुनी।

प्रश्न—क्या यह चपातियाँ मुख्य रूप से हिन्दुओं अथवा मुसलमानों में बाँटी जाती थीं ?

उत्तर—वे बिना किसी भेद भाव के दोनों धर्म के किसानों को ग्रामों में बाँटी जाती थीं।[1]

चपातियों के विषय में सर थ्योफिलस मेटकाफ ने जो बयान बहादुर शाह के मुकदमें में दिया वह भी बड़ा ही महत्त्वपूर्ण है। उसने कहा—"इनके विषय में केवल अनुमान ही किया जा सकता है। हिन्दुस्तानियों का प्रथम विचार यह था कि वे किसी व्यापक रोग के सम्बन्ध में बाँटी जा रही हैं किन्तु स्पष्टतया यह भूल थी क्योंकि मैंने इनके विषय में पता लगाने का कष्ट उठाया तो मुझे पता चला कि ये चपातियाँ किसी भी देशी रियासत में नहीं भेजी गई अपितु केवल अंग्रेजी राज्य के ग्रामों में बाँटी जाती थीं। वे देहली के इलाके के केवल पाँच ग्रामों में बाँटी जा सकीं। तत्पश्चात् उनका वितरण सरकार की ओर से तुरन्त रोक दिया गया और वे आगे देहातों में नहीं बढ़ सकीं। मैंने उन लोगों को, जो उसे बुलन्दशहर जिले से लाये थे, बुलवाया। उन्होंने बताया कि उनका विचार था कि उनका वितरण अंग्रेजी सरकार के आदेश से हो रहा है। उन्हें वे अन्य स्थानों से प्राप्त हुई थीं और वे उन्हें केवल

१. ट्रायल पृ० ७४।

आगे बढ़ा रहे थे। मेरा विश्वास है कि चपातियों का अर्थ देहली जिले में नहीं समझा जाता था क्योंकि वे उन लोगों के लिए थीं जो एक प्रकार का भोजन एक साथ मिलकर कर लेते हों, उन लोगों के विपरीत जो भिन्न प्रकार से रहते हों और भिन्न प्रथाओं का पालन करते हों। मेरा विचार है कि इन चपातियों का प्रारम्भ लखनऊ में हुआ और निस्संदेह ये लोगों को चौकन्ना तथा तैयार करने का चिह्न थी। इनके द्वारा लोगों को इस बात की चेतावनी दी जाती थी कि वे खतरे के समय संघटित रहें।"[1]

इसी मुकदमें में चुन्नी जासूस से जो प्रश्नोत्तर हुए उनसे भी पता चलता है कि चपातियों का वितरण आगामी खतरे का सामना करने के लिए कटिबद्ध हो जाने का द्योतक था।

प्रश्न—क्या तुम्हें गांव-गांव में चपातियों के वितरण के विषय में कुछ स्मरण है?

उत्तर—हाँ, मैंने उसके विषय में विप्लव के पूर्व सुना था।

प्रश्न—क्या इस विषय पर देशी समाचार पत्रों में वाद-विवाद होता था? यदि होता था, तो इसका क्या अर्थ समझा जाता था?

उत्तर—हाँ, इसका उल्लेख होता था। इनके विषय में विचार किया जाता था कि ये किसी आगामी अशान्ति की द्योतक हैं। इसके अतिरिक्त इनके विषय में समझा जाता था कि ये देश के समस्त जन समूह के लिए इस बात का निमंत्रण हैं कि वे किसी गुप्त उद्देश्य हेतु जो बाद में बताया जाने वाला था तैयार हो जायें।

प्रश्न—क्या तुम्हें ज्ञात है कि ये कहाँ से प्रारम्भ हुईं अथवा जन साधारण के अनुसार इनका उद्गम कहाँ से बताया जाता था?

उत्तर—मुझे इस बात का कोई ज्ञान नहीं कि वे सर्व प्रथम कहाँ से प्रारम्भ हुईं किन्तु साधारणतः ऐसा समझा जाता था कि वे कर्नाल तथा पानीपत से आई हैं।[2]

अग्निकांड तथा चपातियों के विषय में मुईनुद्दीन ने खदंगे-गदर में इस प्रकार लिखा है 'जनवरी १८५७ ई० में रानीगंज में एक यूरोपियन का घर

१. ट्रायल पृ० ८१।
२. ट्रायल पृ० ८५।

तथा तारघर जला दिया गया। यह संघटन की सूचना थी। यह विचार किया जाता था कि तारघर के जलाये जाने की सूचना कलकत्ते से पंजाब तक पहुँच जायगी। जो लोग गुप्त कार्य में संलग्न हैं, इसे सुनकर समझ जायेंगे कि उन्हें भी घरों में आग लगानी चाहिये। अग्निकांड की सूचना का चारों ओर बड़ा प्रचार किया गया। कहा जाता है कि एक पल्टन से दूसरी पल्टन में इसी प्रकार के कार्य करने के लिए पत्र भेजे गये।

फरवरी मास में चपाती के चारों ओर वितरण द्वारा दूसरा संकेत दिया गया। यह अपशकुन का चिह्न था। मैं उस समय पहाड़गंज थाने का, जो देहली नगर के बाहर है, थानेदार था। एक दिन प्रातःकाल इन्द्रप्रस्थ के गाँव के चौकीदार ने मुझे आकर सूचना दी कि सराय फ़र्रुख खाँ का चौकीदार मुझे एक चपाती (जिसे उसने मुझे दिखाया) दे गया है और यह कह गया है कि इसी प्रकार की पाँच पाँच चपातियाँ पकाकर निकट के पाँच ग्रामों में बाँट देना। उसने यह भी बताया है कि उन्हें यह आदेश दे दिया जाय कि वे इसी प्रकार की पाँच चपातियाँ पका कर बाँट दें। चपाती जौ तथा गेहूँ के आटे की होती थी और मनुष्य की हथेली के बराबर थी। वह दो तोले की थी। मुझे आश्चर्य हुआ किन्तु मैंने अनुभव किया कि चौकीदार सत्य कहता है। इसका कोई न कोई महत्त्व अवश्य है। इससे समस्त भारतीय देश भर में बुरी तरह चौकन्ने हो जायेंगे। फिर यह प्रसिद्ध हुआ कि २६ फरवरी को बैरमपुर की १९वीं प्यादा पल्टन ने कारतूस, जो उन्हें दिये गये, लेना अस्वीकार किया और यह कि ३४वीं रेजीमेंट ने भी इसी प्रकार व्यवहार किया और उस पल्टन की सातवीं रेजीमेंट पदच्युत कर दी गई। जब मैंने यह सुना तो मुझे सन्देह हुआ कि संकट-काल प्रारम्भ होने वाला है। उस समय अम्बाले में एक भारतीय समाचारपत्र प्रकाशित होता था। उसने विभिन्न पल्टनों के कार्यों की ओर भी प्रसारित किया। इन सब कारवाइयों में किसी न किसी महत्त्व के संदेह में मैंने अपने समस्त थाने में कुछ लोगों को इस बात के लिए नियुक्त किया कि वे इस बात का पता लगायें कि अन्य ग्रामों में भी चपातियाँ पहुँच गईं अथवा नहीं और उनका वितरण रोक दें।

मेरा छोटा भाई मिर्जा महमूद हुसैन खाँ बद्रपुर थाने का, जो देहली से १६ मील है, थानेदार था। जिस दिन मुझे पहाड़गंज में चपातियों के वितरण का पता चला, उसी दिन मेरे भाई के पास से एक अश्वारोही द्वारा यह सूचना मिली कि उसके

इलाके में एक ग्राम से दूसरे ग्राम में चपातियों का वितरण हो रहा है। उसके साथ साथ बकरी का मांस भी बांटा जा रहा है। उसने मुझ से पूछा कि इस दशा में क्या करना चाहिये। मैंने उसे तुरन्त उत्तर दिया कि वह अपना प्रभाव डालकर वितरण रोक दे और अधिकारियों को सूचना दे दे।

कुछ दिन तक मुझे कोई आदेश प्राप्त न हुआ। बाद में उनके वितरण के विषय में पूँछ तांछ करके यह सूचना भेजने का आदेश आया कि इसका तात्पर्य क्या है। इसी बीच में अलीपुर तथा शिवपुर के थानेदारों के पास से पत्र प्राप्त हुए जिनमें मुझ से सलाह पूछी गयी थी कि क्या करना चाहिये।

इसके उपरान्त मुझे आदेश मिला कि वितरण रोक दो। इसी बीच मेरे भाई को अलीगढ़ तथा मथुरा यह पता लगाने के लिए भेजा गया कि क्या वितरण देश भर में हुआ है। मुझे उसके द्वारा ज्ञात हुआ कि उसने देहली के बहुत बड़े भाग में यात्रा की और जहां कहीं भी वह गया, उसे पता चला कि चपातियां किसी स्थान से पूर्व की ओर से आई हैं। उससे इस विषय में प्रश्न किये जाते किन्तु कोई यह न बता सकता था कि संकेत कहां से आया, इसका उद्गम कहां से है और इसका अभिप्राय क्या है।

मेरे भाई ने यह प्रस्ताव रखा कि अन्य जिलों के सिविल अधिकारियों को इस बात का पता लगाने के लिए भेजा जाय, अन्यथा उसके मूल कारण के विषय में पूंछ तांछ करने का आदेश दिया जाय किन्तु उसे आज्ञा नहीं दी गई। फिर सर थ्योफिलस मेटकाफ देहली के ज्वाइन्ट मजिस्ट्रेट ने मुझे लिखा जिसमे मुझे व्यक्तिगत रूप से इस विषय में अपने विचार व्यक्त करने के लिए लिखा गया। मैंने लिखा कि मैंने अपने पिता से सुना था कि मरहटों के पतन के समय मकई की टहनी तथा रोटी का टुकड़ा गांव-गांव बांटा गया था। मुझे विश्वास है कि रोटियों का यह वितरण किसी बहुत बड़े विद्रोह का चिह्न है। इसके उपरान्त मुझसे इस विषय पर कोई सरकारी पत्र-व्यवहार नहीं हुआ और न कोई आदेश मिला।'[1]

कुछ अंग्रेज इनके विषय में जानकारी प्राप्त करने का प्रयत्न करते थे और कुछ इनकी ओर घृणा की दृष्टि से देखते थे किन्तु उन्होंने भी यह तथ्य

१. **सवंगे सबर**, पृ० ३८-४१।

स्वीकार किया है कि चपातियों को रहस्यमयी अशान्ति फैलाने में बड़ी सफलता प्राप्त हुई।

फतेहपुर के मजिस्ट्रेट तथा कलेक्टर जे. डब्लू शेरेर ने अपने जिले में चपातियों के वितरण के संबन्ध में लिखा है "हमारे जिले में भी प्रसिद्ध चपातियाँ आईं किन्तु मेरा तो विचार यही है कि इन्हें आवश्यकता से अधिक महत्व दिया जाता है। गाँव के चौकीदार अथवा इसी प्रकार के लोग इन्हें लेकर जैसा उनको आदेश होता उसे आगे बढ़ा देते किन्तु इस बात से सभी सहमत हैं कि चौकीदारों को इसकी वास्तविकता के विषय में कुछ ज्ञान न होता था। यदि इन चपातियों के वितरण का उद्देश्य एक रहस्यमयी अशान्ति उत्पन्न करना था तो यह उद्देश्य पूरा हो गया, किन्तु यदि ये एक संघटित युद्ध का चिह्न थीं तो ये असफल रहीं और इनका अन्त गड़बड़ी के साथ हुआ क्योंकि कोई संघटित युद्ध न हो सका"।[1]

यद्यपि शेरेर ने चपातियों के वितरण के महत्व को घटाने का बड़ा प्रयत्न किया है किन्तु जिस प्रकार इनके द्वारा अशान्ति उत्पन्न कराने में सफलता मिली उसे वह भी स्वीकार करता है। एक अन्य विदेशी लेखक संघटन की प्रशंसा इस प्रकार करता है : "जिस आश्चर्यजनक गुप्त ढंग से यह समस्त षड्यंत्र चलाया गया, जितनी दूरदर्शिता के साथ योजनाएँ तैयार की गईं, जिस सावधानी के साथ इस संघटन के विविध समूह एक दूसरे के साथ काम करते थे, एक समूह का दूसरे समूह के साथ सम्बन्ध रखने॰ वाले लोगों का किसी को पता न चलता था और इन लोगों को केवल इतनी ही सूचना दी जाती थी जितनी उनके कार्य के लिए आवश्यक होती थी. इन सब बातों का बयान कर सकना कठिन है। और ये लोग एक दूसरे के साथ आश्चर्यजनक वफादारी का व्यवहार करते थे"।[2]

कुछ लोगों का विचार था कि चपातियों द्वारा एक गाँव से दूसरे गाँव में पत्र भेजे जाते थे। कप्तान कीटिंज लिखता है कि चपातियाँ जनवरी १८५७ ई० में

१. जे० डब्लू० शेरेर, लाइफ ड्यूरिंग दी इंडियन म्युटिनी (लन्दन १९१०) पृ० ७-८।

२. सर जार्ज ली ग्रांड जैकब, वेस्टर्न इंडिया, सुन्दर लाल 'भारत में अंग्रेजी राज्य' तीसरी जिल्द (१९३८) पृ० १०६०।

होता था। तदुपरान्त वे सिपाहियों में फैल गये तो उनका प्रचार अधिक विस्तृत हो गया और उनका पता लगाना सरल था। वे साधारण शब्दों में लिखे जाते थे और रहस्यपूर्ण संकेतों पर बड़ा ही हल्का आवरण होता था। घटनाओं की साधारण गति-विधि के निष्कर्ष तथा देहली की घोषणा द्वारा इनकी पुष्टि होती है"।[१]

अप्रैल के अन्त में यह काररवाई अधिक तीव्र हो गई और पत्र पकड़े भी जाने लगे। जब लखनऊ में ३ मई की रात्रि में मूसा बाग़ के पदातियों की दो रेजीमेंटों ने विद्रोह किया तो ऐसे पत्र भी पकड़े गये जिनमें उन्होंने पदातियों की रेजीमेंट नं० ४८ को विद्रोह करने के लिए प्रोत्साहित किया था।[२]

बनारस में रेजीमेंट ३७ के एक सिपाही ने एक पत्र रेजीमेंट ३४ के एक हवलदार को लिखा जो रीवाँ के राजा के नाम था और उसमें यह लिखा था कि यदि आप अंग्रेजों से युद्ध करने के लिए बलवा करें तो दो हजार मनुष्य आपका साथ देने के लिए सन्नद्ध हैं। एक भारतीय अफ़सर ने भी रीवाँ के राजा को एक पत्र बारकपुर से लिखा और वह गिरफ्तार हुआ।[३] यह दोनों समाचार, अंग्रेजी अखबारों के हवाले से १० मई १८५७ ई० के समाचारपत्र में प्रकाशित हुए थे। इन घटनाओं की कोई तिथि नहीं दी गई है किन्तु ये अप्रैल के अन्त अथवा मई के प्रथम सप्ताह से सम्बन्धित होंगी।

आन्दोलन के प्रारम्भ होने का समय जैसे-जैसे निकट आता गया गुप्त प्रचार और भी तीव्र गति से होने लगा। ऐसे विचित्र साधनों का प्रयोग किया जाने लगा जिससे बहुत बड़ी संख्या में लोगों को इसके विषय में ज्ञान प्राप्त हो जाय और वे सचेत हो जायँ। न्यायालयों में पत्र भेजे जाने लगे और समाचार पत्रों में विचित्र समाचार प्रकाशित होने लगे।

सर थ्योफ़िलस मेटकाफ़ ने बताया कि विद्रोह के १५ दिन पूर्व प्रसिद्ध था कि मजिस्ट्रेट को एक नामरहित पत्र प्राप्त हुआ है जिसमें यह लिखा है कि नगर का-कश्मीरी द्वार अंग्रेजों के हाथ से छीन लिया जायेगा। इसका कारण यह था कि यह द्वार नगर में हमारा एक दृढ़ स्थान था और देहली की छावनी से इसका विशेष

१. इनेस, बी० सी०, "**दी सिप्वाए रिवोल्ट, ए क्रिटिकल नैरेटिव** (लन्दन १८९७)।
२. **देहली उर्दू अख़बार** १० मई १८५७ ई० पृ० ४।
३. **देहली उर्दू अख़बार** १० मई १८५७ ई० पृ० १।

सम्बन्ध था, अतः नगर में विप्लव की अवस्था में स्वाभाविक रूप से वही स्थान ऐसा था जिस पर सर्वप्रथम अधिकार स्थापित होता और यही वह अकेला द्वार था जिस पर सैनिक पहरा रहता था। सैन्य-संचालन के दृष्टिकोण से उसका महत्त्व सभी को ज्ञात था। यह प्रार्थनापत्र कभी प्राप्त नहीं हुआ किन्तु उसके विषय में जो समाचार प्रसिद्ध थे उनसे ज्ञात होता है कि उस समय देशी लोग किस प्रकार सोचा करते थे।[१] १३ अप्रैल के सादिकुल अखबार में यह समाचार प्रकाशित हुआ था कि मजिस्ट्रेट के न्यायालय में कई प्रार्थनापत्र प्रस्तुत हुए हैं जिनमें लिखा है कि आज से एक मास उपरान्त कश्मीर पर आक्रमण किया जायेगा।[२]

बहादुरशाह का मुकदमा

बहादुरशाह के मुकदमे में कैप्टेन टाइटलर, सारजेन्ट फ्लेमिंग तथा मिसेज फ्लेमिंग के बयान से पता चलता है कि सेनावाले तथा अन्य लोग इस क्रान्ति की ओर संकेत करने लगे थे। कैप्टेन टाइटलर ने बताया कि एक आदमी जो हमारे वंश की सेवा में २६ वर्ष से था क्रान्ति के १० दिन पूर्व अवकाश पर जाने लगा और जब मैंने उससे लौटने पर जोर दिया तो उसने कहा कि लौट आऊँगा, किन्तु आप लोग मुझे सेवा देने के योग्य हुए तब।[३] सारजेन्ट फ्लेमिंग ने बताया कि मेरा पुत्र, शाहज़ादा जवाँबख्त के साथ घोड़े की सवारी किया करता था। उसने अप्रैल १८५७ ई० के अन्त में मुझे बताया कि वह एक दिन प्रातःकाल जवाँबख़्त के पास गया। उसने मेरे पुत्र से कहा कि "तुम फिर कभी न आना, मैं किसी काफ़िर अंग्रेज का मुंह नहीं देखना चाहता और मैं शीघ्र ही उनकी हत्या करके उन्हें पददलित कर दूंगा।" मेरे पुत्र ने मिस्टर फ़्रेजर को इस बात की सूचना दी तो उसने उत्तर दिया कि वह (जवाँ-बख़्त) मूर्ख है और उसे इन वाहियात बातों की ओर कोई ध्यान न देना चाहिये। २ मई १८५७ ई० को जवाँबख्त ने उसे और भी फटकारा और कहा कि "मैं कुछ ही दिन में तुम्हारा सिर काट डालूंगा"।[४] मिसेज फ्लेमिंग ने बताया कि जवाँबख्त ने मेरी पुत्री सले से अंग्रेजों के विनाश के विषय में वार्तालाप किया था।[५]

---

१. ट्राएल पृ० ८०।

२. ट्राएल पृ० १२२,१२३, कश्मीर का अर्थ बाद में कश्मीरी द्वार लगाया गया।

३. ट्राएल पृ० ९९।

४. ट्राएल पृ० १००।

५. ट्राएल पृ० १०१।

ईरान के युद्ध का प्रभाव

१८५६ ई० में ईरान से अंग्रेजों का युद्ध छिड़ गया।[१] अंग्रेजों को परेशान करने तथा भारतवर्ष से सहायता के द्वार बन्द करने के लिए ईरान के बादशाह ने अपने गुप्तचर देहली भेजे। भारतवर्ष के समाचार पत्रों में ईरान की विजय की बड़ी आशाएँ प्रकट की जाती थीं और यह प्रसिद्ध किया जाता था कि फारस की खाड़ी में अंग्रेज बुरी तरह पराजित हुए हैं। यह बात भी प्रसिद्ध हुई कि अंग्रेजों को भ्रम है कि उन्होंने अमीर दोस्त मुहम्मद खाँ को मित्र बना लिया है किन्तु वास्तव में वह ईरान के अधीन है।[२] क्रीमिया के युद्ध का भी भारतवर्ष पर बड़ा प्रभाव पड़ा। भारतीयों ने समझ लिया कि अंग्रेज अजेय नहीं।[३] सेबैस्टोपोल के आक्रमण में अंग्रेजों तथा फ़्रांसीसियों की पराजय के उपरान्त कुस्तुनतुनियाँ में जब अज़ीमुल्लाह खाँ की टाइम्स के विशेष संवाददाता डा० रसल से वार्ता हुई तो उसने क्रीमिया जाकर उन रुस्तमों (रूसियों) को देखने की इच्छा प्रकट की जिन्होंने फ़्रांसीसियों तथा अंग्रेजों को पराजित कर दिया था।[४]

सर थ्योफ़िलस मेट्काफ़ भी बहादुरशाह के मुकदमे का एक साक्षी था। उसने बयान किया कि ईरान के हिरात की ओर अग्रसर होने की भारतीयों में बड़ी चर्चा होती थी और विशेष कर रूसियों के भारतवर्ष पर आक्रमण के सम्बन्ध में। प्रत्येक देशी समाचार पत्र का संवाददाता काबुल में रहता था और इस प्रकार उत्तर की ओर से निरंतर समाचार प्रेषित किये जाया करते थे। प्रत्येक समाचारपत्र में वहाँ के समाचारों का साप्ताहिक विवरण होता था। विद्रोह के छः या सात सप्ताह पूर्व सैनिकों की लाइनों में ये समाचार बड़े

१. परसी साइक्स, **ए हिस्ट्री आफ़ परशिया**, भाग २, (लन्दन १९५१) पृ० ३४९–३५०।

२. **सादिकुल अखबार** जनवरी २६,१८५७ पृ० २८; मार्च १६, १८५७ ई० पृ० ८२-८४।

३. **सिप्वाए वार इन इंडिया**, भाग १, पृ० ३४२–३४३।

४. डब्लू. एच. रसल, **माई डायरी इन इंडिया** (लन्दन १८६०) भाग १ पृ० १६८।
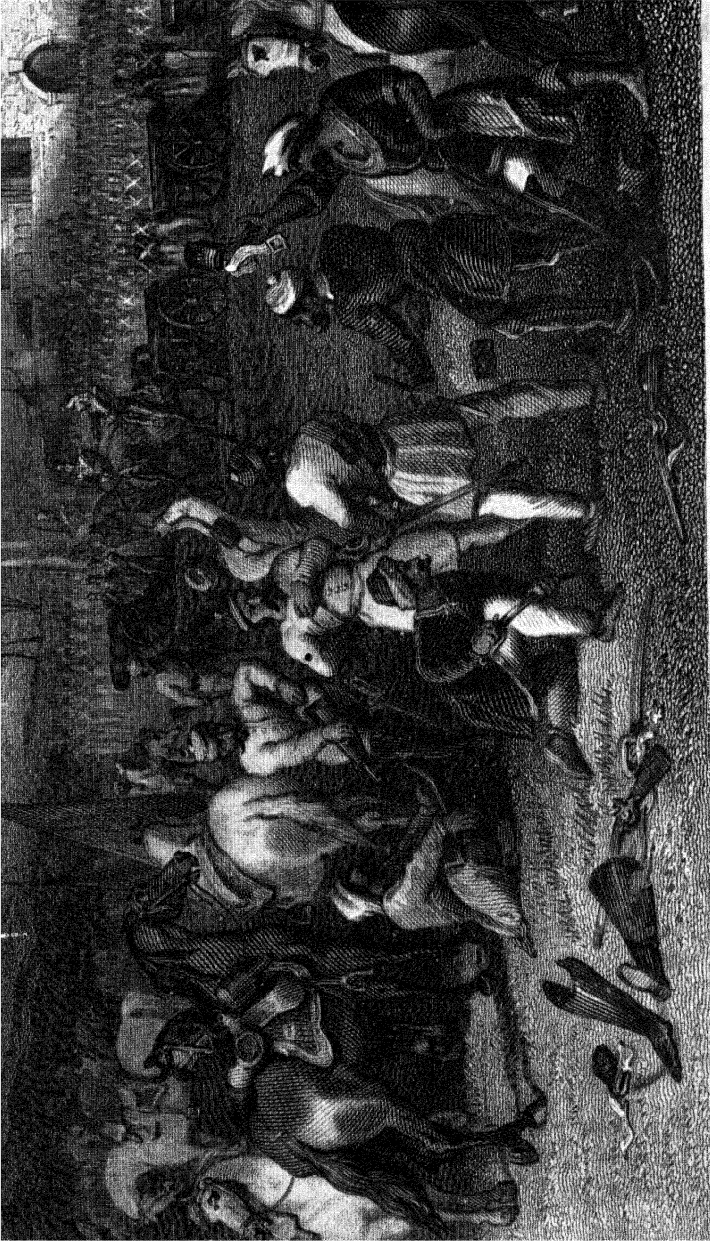
बरहामपुर में ११वीं अश्वारोही के अस्त्र शस्त्र लिये जाने का दृश्य

प्रसिद्ध थे और उन पर वाद-विवाद भी होता था कि एक लाख रूसी उत्तर से आ रहे हैं और कम्पनी का राज्य नष्ट हो जायेगा।

सर थ्योफ़िलस मेट्काफ़ के बयान के अनुसार विद्रोह के छः सप्ताह पूर्व जामा मस्जिद की दीवार पर एक विज्ञापन चिपका हुआ पाया गया जिसके दाहिनी ओर तलवार तथा बाईं ओर ढाल थी। इसमें लिखा था कि ईरान का बादशाह शीघ्र ही इस देश में आनेवाला है और उसने समस्त मुसलमानों से अंग्रेज काफिरों को निकालने का आग्रह किया है।[1] सादिकुल अखबार ने समाचार को अत्यधिक प्रसिद्धि प्रदान की और इस विज्ञापन को अपने समाचार पत्र में टिप्पणी सहित प्रकाशित किया। विज्ञापन इस प्रकार था "मैं शीघ्र ही हिन्दुस्तान के राजसिंहासन पर आरूढ़ होता हूँ और वहाँ के बादशाह तथा प्रजा को प्रसन्न करता हूँ। जिस प्रकार अंग्रेजों ने उन्हें रोटियों का मुहताज किया है वैसे ही मैं उनकी सम्पन्नता का प्रयत्न करूँगा। मुझे किसी के धर्म से कोई विरोध नहीं।" अखबार के सम्पादक ने इस विज्ञापन पर टिप्पणी करते हुए लिखा कि "शाह ईरान के हिन्द पर अधिकार से हिन्दियों को क्या प्रसन्नता ? इस विज्ञापन से ज्ञात होता है कि (ईरान का बादशाह) स्वयं भारतवर्ष के राजसिंहासन पर आरूढ़ होगा। वे तो तब प्रसन्न हों कि जब हमारे सुल्तान को सिंहासनारूढ़ करके अब्बासशाह सफ़वी[2] के समान व्यवहार करे। आखिर ईरानियों को तैमूर ही ने राज्य प्रदान किया है और इसी को दृष्टि में रखकर अब्बासशाह[2] ने हुमायूं की सहायता की ?"।[3] सम्पादक की टिप्पणी से यह पूर्णतः स्पष्ट हो जाता है कि भारतीय उस समय अंग्रेजों के स्थान पर किसी दूसरे राष्ट्र को अपने सिर पर नहीं बैठा लेना चाहते थे। अंग्रेजों के पतन तथा रूस अथवा ईरान की कथित सफलता से उन्हें इस कारण प्रसन्नता होती थी कि इस उपाय से वे स्वयं स्वतंत्र हो जायेंगे। सादिकुल अखबार ईरान के आक्रमण के समाचार फैलाने में सब से आगे था। वह शीआ समाचार पत्र भी ज्ञात होता है किन्तु वह भारतवर्ष में ईरान के शीआ राज्य

१. ट्राएल पृ. ८०–८१।
२. शाह तहमास्प सफ़वी होना चाहिये।
३. सादिकुल अखबार १९ मार्च १८५७ ई० पृ० ८७।

को भी नहीं सहन कर सकता था। बहादुरशाह के राज्य में उसे भारतवर्ष की स्वतंत्रता के स्वप्न की सफलता दृष्टिगत होती थी, मुसलमानों के राज्य का पुनरुद्धार नहीं।

आटे में हड्डियाँ

सर्व साधारण को उत्तेजित करने के लिए आटे में पिसी हुई हड्डियों के मिलाये जाने की किंवदंती ने भी बड़ा काम किया। बारकपुर से अम्बाले तक सभी लोगों का विश्वास था कि आटे में पिसी हुई हड्डियाँ मिलाई जाती हैं। अंग्रेजों की कोठियों के नौकर भी यही विश्वास करते थे।[१] मार्च में मेरठ से २०० मन आटा सरकार की किराये की नौकाओं पर कानपुर पहुंचा। वह कुछ सस्ता होने के कारण तुरन्त बिक गया किन्तु बाद में यह प्रसिद्ध हो गया कि आटे में गाय की पिसी हुई हड्डियाँ मिली हुई हैं। लोगों ने बाजार का आटा मोल लेना बन्द कर दिया।[२] प्रत्येक के हृदय में सरकार के प्रति घृणा तथा नैराश्य आरूढ़ हो गया और लोग क्रान्ति की प्रतीक्षा करने लगे।

कारतूस

इसी बीच में चिकने कारतूसों का झगड़ा भी खड़ा हो गया। भारतीयों को मूर्ख एवं संकीर्णवादी सिद्ध करने के लिए कारतूसों को ही क्रान्ति का मुख्य कारण बताया जाता है किन्तु चिकने कारतूसों को क्रान्ति के विस्फोट का सुगम साधन ही कहा जा सकता है। इस प्रश्न ने सुलगती हुई आग को ज्वालामुखी बना दिया। लोग समय के पूर्व ही भड़क उठे और पूर्व निश्चित योजना मे विघ्न पड़ गया।

१८५६ ई० के अन्त में एनफ़ील्ड राइफ़लों का प्रयोग भारतवर्ष में प्रारम्भ होना निश्चय हुआ। उनके लिए विलायत से चिकने कारतूस आये और यह

१. डब्लू. एच. नारमन, तथा मिसेज़ कीथ यंग, **देहली १८५७** पृ० १७–१८।

२. डब्लू. एच. केरी, **दी मुहमेडन रेबेलियन** पृ० २७–२८, **सिप्वाए वार इन इंडिया** भाग १, पृ० ५६७–५७०, ६३९–६४१।

आदेश दिया गया कि इसी प्रकार के कारतूस कलकत्ते तथा मेरठ के आर्डिनेंस डिपार्टमेंट बनायें।

अभी इन कारतूसों का आम प्रयोग प्रारम्भ भी न हुआ था कि यह प्रसिद्ध होने लगा कि इनमें गाय तथा सुअर की चर्बी का प्रयोग होता है।[1] २७ जनवरी १८५७ ई० को सरकारी आदेश हो गया कि भारतीय सेना को जो कारतूस दिये जायँ उनमें सैनिक जो चीज़ उचित समझें प्रयोग कर सकते हैं। तत्पश्चात् मेजर जनरल हेयरसे कमानडिंग प्रेसीडेंसी डिवीजन के लिखने पर यह सुविधा दे दी गई कि मोम तथा तेल से कारतूस चिकनाये जा सकते हैं और नया कागज़ उन्हीं मसालों से तैयार किया जा सकता है जो इससे पूर्व प्रयोग में आते थे।[2]

यदि कारतूसों का ही झगड़ा होता तो यहीं बात समाप्त हो जानी चाहिये थी, किन्तु वास्तव में भारतीय अब अंग्रेजों की किसी बात पर विश्वास नहीं करना चाहते थे। उन्होंने अगणित संधि-पत्र देखे थे जो बात की बात में समाप्त कर दिये गये थे। जब उन लिखित संधि-पत्रों का कोई विश्वास नहीं तो फिर इन आदेशों का क्या विश्वास किया जा सकता था जो आज एक परिस्थिति में दे दिये गये और कल फिर दूसरी परिस्थिति में उनका खंडन हो सकता था। मोम और तेल के प्रयोग की सुविधा केवल कागज ही पर रहेगी और जब बड़ी संख्या में इनका प्रयोग होगा तो फिर यह बात कहाँ तक चलेगी, यह बात किसी की समझ में न आती थी। फरवरी में बारकपुर में एक सैनिक न्यायालय ने कारतूसों तथा उनपर लपेटे जानेवाले कागजों के विषय में पूछ-ताँछ कराई[3]। जनरल हेयरसे ने इस न्यायालय को रिपोर्ट भेजने के उपरान्त सरकार को लिखा कि "हम बारकपुर में एक सुरंग पर बैठे हैं जो शीघ्र उड़ने

१. **अपेंडिक्स टु पेपर्स रेलेटिव टु दी म्यूटिनीज इन दी ईस्ट इंडीज** (लन्दन १८५७ ई०) पृ० २–४।

२. सिक्रेटरी गवर्नमेंट आफ़ इंडिया का तार ऐडजुटेंट जनरल के नाम, कलकत्ता जनवरी २७, १८५७ ई०।

३. **स्टेट पेपर्स**, भाग १, पृ० ७–१४।

वाला है।"[१] भारतीय सैनिकों का उसे बड़ा अनुभव था। वह उनकी भावनाओं को समझ गया था। वह उनके नेत्रों में स्वतंत्रता की महत्त्वाकांक्षा की चमक देखता था किन्तु सम्भवतः वह यही समझता था कि लोगों को भय है कि उन्हें जबर्दस्ती ईसाई बनाया जाने वाला है। यह समझना उसके लिए असम्भव था कि भारतीय, अंग्रेजी राज्य ही का अन्त करके स्वतंत्र होना चाहते हैं। उसने ९ फरवरी १८५७ ई० को परेड पर सैनिकों को समझाया और उनकी शंकाओं के समाधान का प्रयत्न किया[२] किन्तु कारतूसों के विषय में दूर-दूर तक पत्र-व्यवहार होने लगा था और लोग क्रान्ति के लिए तैयार हो रहे थे।[३] आग बड़ी तेजी से अम्बाले तथा सियालकोट तक फैल गई।[४]

बारकपुर से १०० मील पर बरहामपुर की छावनी थी। वहाँ भी वही आग सुलग रही थी। २५ फरवरी को बारकपुर से ३४वीं रेजीमेंट के कुछ सैनिक बरहामपुर में आये। उनसे सम्पर्क में आने पर, बरहामपुर की नं० १९ रेजीमेंट ने भी नये कारतूस स्वीकार न करने का संकल्प कर लिया। कर्नल मिचेल ने २६ फरवरी की परेड पर नये कारतूसों के अभ्यास का आदेश दिया। सैनिकों ने नये कारतूसों को स्वीकार न करना निश्चय कर लिया था। जब कर्नल मिचेल को यह ज्ञात हुआ तो उसने भारतीय कमीशन्ड अफसरों को धमकाया कि वे अपनी कम्पनी के सैनिकों को समझा दें कि यदि उन्होंने आज्ञा की अवहेलना की तो उन्हें कठोर दंड दिये जायँगे। रात्रि में १० और ११ के बीच में सैनिकों ने वह घर, जिसमें सैनिकों के हथियार तथा सामान रहते थे, तोड़ डाला किन्तु भारतीय अफसरों की सहायता से मिचेल ने ३ बजे तक सबको शान्त कर लिया। प्रातःकाल की परेड पर भी कुछ न हुआ[५] किन्तु इस पल्टन को दंड देने तथा भारतीयों को दहलाने के

---

१. **स्टेट पेपर्स** पृ० २४।

२. **स्टेट पेपर्स** पृ० २७।

३. **रेड पैम्फ़लेट** पृ० १९।

४. **रेड पैम्फ़लेट** पृ० २०।

५. **स्टेट पेपर्स** भाग १ पृ० ४१-४२, ड्यूक आफ़ अरगेल, **इंडिया अण्डर डलहौजी ऐंड केनिंग** (लन्दन १८६५) पृ०, ८१।

लिए २९ मार्च १८५७ ई० को मध्याह्न में ५३वीं गोरा रेजीमेंट के ५० सैनिक नदी के मार्ग से कलकत्ते पहुँचे। बरहामपुर की १९वीं रेजीमेंट के बारकपुर बुलाये जाने के आदेश दिये जा चुके थे। गोरा पल्टन के पहुँचने के समाचार से मंगल पाँडे का रक्त खौल उठा। उसने अपने साथियों को युद्ध के लिए ललकारा किन्तु अभी युद्ध का समय नहीं आया था। सैनिक शान्त रहे। अंग्रेज अधिकारियों ने उसकी हत्या करनी चाही किन्तु जब वह घेर लिया गया तो उसने अंग्रेजों द्वारा मारे जाने की अपेक्षा आत्महत्या कहीं अच्छी समझकर स्वयं गोली मार ली। वह मरा नहीं किन्तु घायल हो गया और चिकित्सालय भेज दिया गया।[1] ३१ मार्च को १९वीं भारतीय पैदल रेजीमेंट को बारकपुर में बुलाकर उसे भंग कर दिया गया।[2] सैनिकों ने अपमानित होकर भी कुछ न कहा और कलकत्ते के अंग्रेज, जो अत्यन्त भयभीत थे, संतुष्ट हो गये। ८ अप्रैल को मंगल पाँडे को फाँसी दे दी गई।[3] २१ अप्रैल को जमादार ईश्वरी पाँडे को भी, जिसने मंगल पाँडे को गिरफ्तार करने से मना कर दिया था, फाँसी दे दी गई।[4] ३४वीं रेजीमेंट की सात कम्पनियाँ भी भंग कर दी गई। बारकपुर में ३४वीं रेजीमेंट के विषय में पूछताछ के उपरान्त जो निर्णय हुआ, उसमें सिक्खों तथा मुसलमानों की खूब पीठ ठोंकी गई और उन्हें राजभक्त तथा हितैषी एवं हिन्दुओं को विद्रोही सिद्ध किया गया।[5] एक अधिकारी, मुसलमान सैनिकों से वास्तविक बात का पता लगाने के लिए, नियुक्त हुआ किन्तु इस अधिकारी को कोई सफलता प्राप्त न हुई और अप्रैल के अन्त से पूर्व लार्ड कैनिंग को विश्वास हो गया कि एशियाई राष्ट्रों की पारस्परिक शत्रुता से, जो सर्वदा से ब्रिटिश सत्ता का बहुत बड़ा आधार समझी जाती है, कोई लाभ नहीं हो सकता। "हमारे विरुद्ध हिन्दू तथा मुसलमान दोनों संघटित हो गये हैं।"[6]

---

१. **स्टेट पेपर्स** भाग १, पृ० १०९–११३।
२. **स्टेट पेपर्स** भाग १, पृ० १००–१०३।
३. **स्टेट पेपर्स** भाग १, पृ० १२७।
४. **स्टेट पेपर्स** भाग १, पृ० २११।
५. **स्टेट पेपर्स** भाग १, पृ० १६९।
६. **सिप्वाए वार इन इंडिया**, भाग १ पृ० ५६४-५६५।

मार्च के अन्त में कारतूसों का प्रश्न पंजाब में भी पहुँच गया और सियालकोट के सैनिकों को बारकपुर के भाइयों का अनुसरण करने के लिए प्रेरित किया जाने लगा। १६ अप्रैल को अम्बाले में कई बँगलों में आग लगा दी गई। १८ अप्रैल को अम्बाले की दो भारतीय पल्टनों ने कारतूस लेने से इनकार कर दिया। लखनऊ में भी कुछ समय से क्रान्ति के विषय में गोष्ठियाँ होने लगी थीं।[१] अवध इररेगुलर इन्फेन्ट्री की ७वीं रेजीमेंट ने मई के आरम्भ में नये कारतूसों का विरोध प्रारम्भ कर दिया और ३ मई को लखनऊ, मूसाबाग में विद्रोह के चिह्न पाये गये किन्तु तोपें रेजीमेंट के सामने लगा दी गई और उनसे हथियार ले लिये गये। दूसरे दिन हेनरी लारेंस ने गवर्नर जनरल को लिखा कि "कहा जाता है कि ७वीं रेजीमेंट पर जो आघात हुआ, उसका नगरमें बड़ा प्रभाव हुआ। लोग मुझसे यहाँ तक कहते हैं कि यदि ७वीं रेजीमेंट खड़ी रह जाती तो ४८वीं रेजीमेंट उस पर गोली न चलाती।[२]

१. **रेड पैम्फलेट** पृ० ३०।

२. **सिप्वाए वार इन इंडिया** भाग १, पृ० ५८७–५९०।
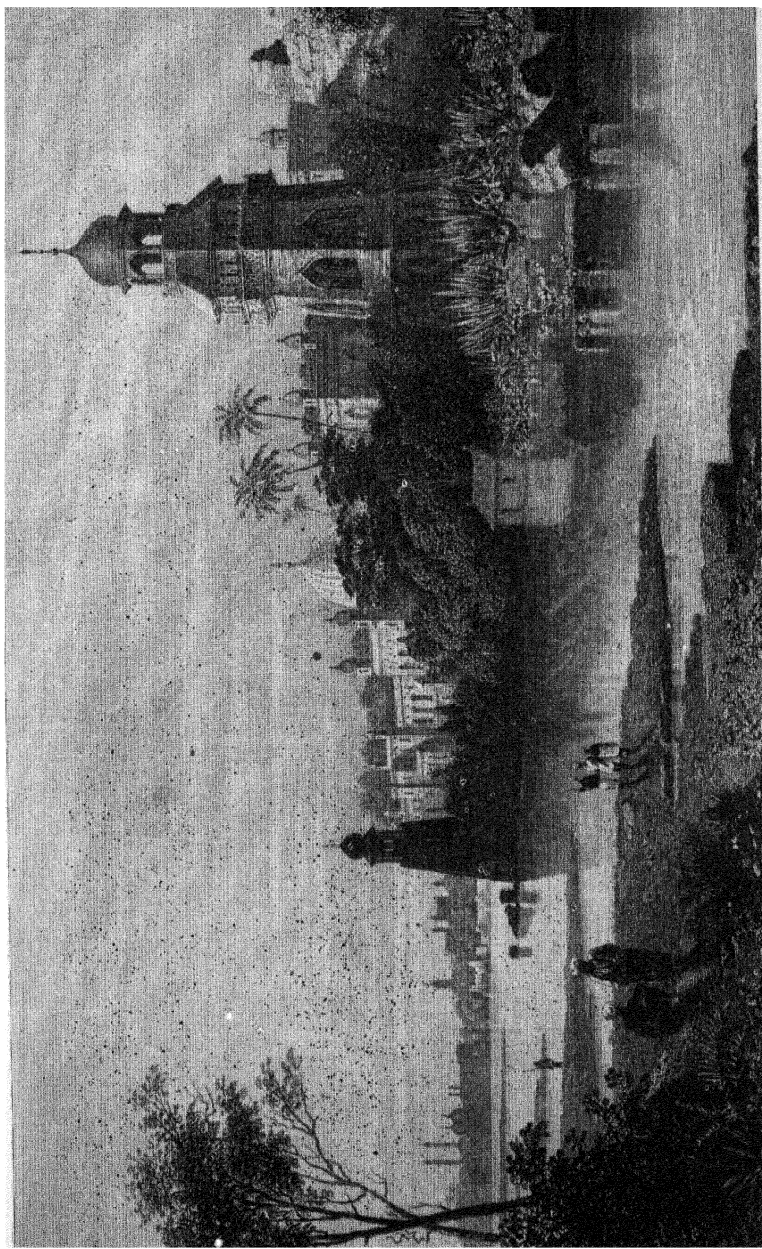
नदी से बादशाह के महल का एक दृश्य

अध्याय २

क्रान्ति का विस्फोट

मेरठ

मेरठ की छावनी भारतवर्ष की एक बहुत बड़ी छावनी समझी जाती थी। यहाँ यूरोपियन तथा भारतीय दोनों ही सैनिक निवास करते थे। पैदल पल्टनों में हिन्दू तथा अश्वारोहियों में मुसलमान अधिक संख्या में थे। वहाँ के विषय में कई बार किंवदंती उठ चुकी थी कि सैनिकों ने विद्रोह कर दिया और यूरोपियनों द्वारा उन्हें दबा दिया गया। उत्तरी भारत की समस्त छावनियों की दृष्टि इस ओर लगी हुई थी। लोगों को इस ओर से अनिश्चित आशाएँ थीं। लोग एक दूसरे से मेरठ के समाचार पूछा करते थे और समाचारपत्रों में रहस्यमय शीर्षकों की प्रतीक्षा किया करते थे। अप्रैल के इस मास में मेरठ की भरी हुई छावनियों तथा बाजारों में लोग किसी आगामी अनिश्चित भय से चौकन्ने थे। नित्य लोगों की उत्तेजना में वृद्धि होती रहती, कारण कि रोज कोई-न-कोई नई कहानी प्रसारित होती और लोगों का विश्वास अंग्रेजों के कुचक्र के सम्बन्ध में और भी दृढ़ हो जाता।

चिकने कारतूसों के विषय में जितनी रुचि मेरठ में ली जाती थी उतनी किसी अन्य स्थान पर नहीं।[1] अप्रैल के अन्त में वह उत्तेजना, जो कुछ सप्ताह से दृढ़ हो रही थी, क्रान्ति के रूप में फूट पड़ी। तीसरी अश्वारोही पल्टन सर्वप्रथम आज्ञाओं के उल्लंघन पर उद्यत हो गई। उन्हें केवल कारतूसों को कड़ाबीन में प्रयोग करते समय काटने के स्थान पर फाड़ने का अभ्यास कराया जाने वाला था। २४ अप्रैल के प्रातःकाल की परेड में इस परिवर्तन का अभ्यास

१. जे. डब्लू. के '**ए हिस्ट्री आफ दी सिप्वाए वार इन इंडिया**' भाग १ (लंदन १८७०) पृ० ५६५–५६७।

निश्चित हुआ था। २३ अप्रैल को सायंकाल में ही सैनिकों ने संकल्प कर लिया कि वे कारतूसों को हाथ न लगायेंगे। २४ अप्रैल को परेड हुई। ९० में से केवल ५ ने अपने अधिकारियों के आदेश का पालन किया।[1]

८५ सैनिकों को कोर्ट मार्शल का आदेश दे दिया गया। ९ मई १८५७ ई० को वे परेड पर लाये गये। यूरोपियन तथा भारतीय सैनिक तैयार खड़े थे, सैनिकों के सामने उनकी वर्दियाँ उतरवाई गईं। उनको हथकड़ियाँ पहना दी गईं। जिस हवलदार ने कारतूस स्वीकार करने से मना किया था, उसे तथा उसी के समान सैनिकों को १० वर्ष और अन्य सैनिकों को ५ वर्ष के कारावास का दंड दे दिया गया।[2]

भारतीय सैनिकों ने यह अपमान सहन कर लिया। किस कारण? निश्चित समय न आया था किन्तु साधारण लोग यह कब जानते थे। वे उन्हें कायर समझने लगे, ऐसे कायर जो इतने बड़े अपमान पर भी चुप थे। स्त्रियाँ उन लोगों को ताने देती थीं[3] और वे अधिक समय तक शान्त न रह सके। उनका रक्त भी उबल रहा था। १० मई रविवार के दिन यों तो शान्ति थी किन्तु यूरोपियन बारिकों में भारतीयों ने हड़ताल कर दी। उनके समस्त बैरे आदि चल दिये। सैनिक, बाजारवाले, यहाँ तक कि गाँववाले तक, बड़े उत्तेजित थे। बच्चा-बच्चा समझ रहा था कि कुछ होने वाला हैं। अंग्रेजों के प्रति घृणा तथा प्रतिशोध की भावनाओं के कारण किसी को किसी बात की सुध-बुध न रही।[4] सायंकाल में लाइट कैवेलरी की तीसरी रेजीमेंट के सवार बन्दीगृह पर टूट पड़े। वहाँ मानो लोग उनकी प्रतीक्षा ही कर रहे थे। उनका

१. **स्टेट पेपर्स** भाग १, पृ० २३०—२३७, **मुहमेडन रेबेलियन** पृ० ३६-३७, **ए हिस्ट्री आफ दी सिप्वाए वार इन इंडिया** भाग २, पृ० ४३-५२।

२. **स्टेट पेपर्स** भाग, १, पृ० २४७—२४८, **मुहमेडन रेबेलियन** पृ० ३६-६७, **सिप्वाए वार इन इंडिया**, भाग २, पृ० ४३-५२।

३. जे. सी. विल्सन, **नैरेटिव आफ इवेन्ट्स आफ मुरादाबाद** पृ० २, जहीर देहलवी, **दास्ताने गदर** पृ० ४८।

४. **सिप्वाए वार इन इंडिया** भाग २, पृ० ५४—५५।

किसी प्रकार का विरोध नहीं हुआ। एक लोहार ने तुरन्त ८५ क्रान्तिकारियों की बेड़ियाँ काट दीं। सवार अपने साथियों को छुड़ा ले गये। अन्य व्यक्तियों को उन्होंने मुक्त न कराया।[1]

११ नं० की तथा २० नं० की भारतीय पदातियों की पल्टनों ने उनका साथ दिया और यूरोपियनों की हत्या प्रारम्भ कर दी। साथ ही साथ सदर बाजार तथा आसपास के गाँववालों एवं नगरवासियों ने चारों ओर से एकत्र होकर अंग्रेजों के बंगलों में आग लगानी तथा अंग्रेजों की हत्या प्रारम्भ कर दी। उन्होंने बन्दीगृह पर छापा मारकर लगभग १४०० बन्दियों को मुक्त करा दिया। सैनिकों ने छावनियों में आग लगा कर देहली की ओर प्रस्थान किया।[2] अंग्रेज यद्यपि वहाँ पर्याप्त संख्या में थे किन्तु सैनिकों तथा सर्वसाधारण के संघटित विद्रोह से भौचक्के हो गये और कुछ न कर सके।

देहली तथा क्रान्तिकारी

देहली को भारतवर्ष के इतिहास में सर्वदा से बड़ा महत्त्व प्राप्त रहा है। क्रान्तिकारी यह जानते थे कि देहली का जो गौरव नष्ट हो चुका है, उसका पुनरुत्थान परमावश्यक है। सम्भवतः क्रान्तिकारियों के नेताओं को यह ज्ञात होगा कि देहली के बादशाह बहादुरशाह को स्वतंत्र भारत में पुनः सिंहासनारूढ़ किया जायगा। ऐसी ही योजना बनाई गई थी किन्तु इसकी सफलता के लिए प्रत्येक स्थान से सेनाओं का देहली पहुँचना निश्चय नहीं हुआ होगा अपितु प्रत्येक स्थान पर प्रत्येक सैनिक तथा अन्य लोगों को निश्चित तिथि पर ब्रिटिश सत्ता का जुआ उतार फेंकना था। किन्तु मेरठ के क्रान्तिकारी अपने उत्साह में इस बात के महत्त्व को भूल गये। कानपुर के क्रान्तिकारियों ने भी सर्वप्रथम कानपुर से देहली की ओर प्रस्थान करना निश्चय किया था किन्तु ताना साहब के योग्य नेतृत्व के कारण उन लोगों ने कानपुर ही में मोर्चा बनाकर अंग्रेजों के विरुद्ध युद्ध किया। यदि मेरठ के क्रान्तिकारी भी ऐसा ही करते तो सम्भवतः इस क्रान्ति के परिणाम का रूप दूसरा ही होता।

---

१. **सिप्वाए वार इन इंडिया** भाग २, पृ० ५८।

२. **स्टेट पेपर्स** भाग १, पृ० २४९, २५०, **मुहमेडन रेबेलियन** पृ० ४०–४३।

क्रान्तिकारी देहली में

रविवार को मध्याह्नोत्तर में क्रान्तिकारियों ने देहली की ओर प्रस्थान करने के विषय में निश्चय करके अपनी योजना की सूचना देहली की छावनी में भेज दी कि ११ मई अथवा १२ मई को उनकी प्रतीक्षा की जाय।[१] १० मई को ही रात्रि में, जब कि मेरठ की अंग्रेजी सेना परेड के बड़े मैदान में पड़ी हुई थी, तीसरी अश्वारोही सेना चाँदनी रात्रि में घोड़ों को सरपट भगाती हुई देहली की ओर चल दी और पदाती भी उनके पीछे-पीछे लम्बे-लम्बे पग रखते हुए रवाना हुए। उनके हृदय में एक उत्साह था, एक महत्त्वाकांक्षा थी और यह सब था फिरंगियों से अपने देश को स्वतंत्र कराने के लिए। वे यह भूल गये थे कि बिना योजना के किसी क्रान्ति का सफल होना असम्भव है; बिना संघटन के बड़े-बड़े राज्यों का विनाश नहीं हो सकता; केवल उत्साह मात्र से स्थायी विजय नहीं प्राप्त होती किन्तु वे फिर भी बढ़े चले जा रहे थे और प्रातःकाल ही उन्हें यमुना के पवित्र जल के दर्शन हुए। देहली में भी क्रान्ति की एक लहर दौड़ गई। वहाँ के निवासी भी उनके स्वागतार्थ मानो तैयार बैठे थे। जकाउल्लाह ने व्यंगपूर्ण ढंग से लिखा है कि "जब सवार जाते थे तो वे 'दीन दीन' पुकारते जाते थे इसलिए उनके साथ मुसलमानों की भीड़ होती जाती थी। धर्मात्मा हिन्दू भी उनको ओलों तथा बतासों का शर्बत लुटियों में पिलाते जाते थे।"

सवारों के देहली की ओर प्रस्थान करने की सूचना साइमन फ्रेजर चीफ कमिश्नर देहली को रात्रि में ही दे दी गई थी किन्तु वे उसे बिना पढ़े ही सो गये। प्रातःकाल ही उन्होंने कलक्टर देहली को सूचना कर दी और शहर के द्वारों को बन्द करने का तथा यमुना की नौकाओं से पुल तुड़वाने का प्रबन्ध किया। खान बहादुर जकाउल्लाह साहब लिखते हैं कि 'मैंने स्वयं देखा कि साइमन फ्रेंजर साहब कमिश्नर दो घोड़ों की बग्घी में सवार तथा पीछे अर्दली और झज्झर के सवारों के साथ चले जाते हैं। कमिश्नर साहब ने अपनी बग्घी को मैगजीन के पास रोका। वहाँ तिलंगों की कम्पनी वर्दी पहने खड़ी थी। उसके सूबेदार को कमिश्नर ने बुलाकर कुछ बातें कीं जो मैंने नहीं सुनी किंतु

१. रेड पैम्फलेट पृ० ३६।

२. उरूजे अहदे सल्तनते इंग्लिशिया पृ० ४११।

लोगों ने जब सूबेदार से पूछा कि क्या बातें हुईं तो उसने कहा कि साहब कमिश्नर ने कहा कि 'हमारे साथ हो?' हमने कहा— 'हम अपने धर्म के साथी हैं।' कम्पनी ने कमिश्नर साहब को सलामी प्रथानुसार नहीं दी।"[1]

कमिश्नर की इस काररवाई की सूचना सम्भवतः अन्य अंग्रेज अधिकारियों को न थी। मेरठ के सवारों के समाचार से मानो उन पर वज्रपात हो गया हो। देहली उर्दू अखबार लिखता है—

"११ मई १८५७ ई० को ग्रीष्म ऋतु के कारण प्रातःकाल से कचहरी हो रही थी। मजिस्ट्रेट साहब न्यायालय में हुकूमत कर रहे थे और सब हाकिम लोग अपने अपने विभागों में आदेश निकालने में संलग्न थे। कारागार तथा शारीरिक दंड एवं अपराधियों को बुलाने के सम्बन्ध में आदेश दिये जा रहे थे कि सात बजे के उपरान्त मीर बहरी अर्थात् दारोगये पुल[2] ने आकर सूचना दी कि प्रातःकाल कुछ तुर्क सवार छावनी मेरठ के पुल से उतर कर आये और हम लोगों पर अत्याचार करने लगे और जो कुछ कर द्वारा धन प्राप्त हुआ था, उसे लूटना चाहा। मैंने उन्हें किसी-न-किसी युक्ति से बातों में लगाया और पुल के किनारे की नाव के ताले खोल दिये जिससे वे आगे न आ सकें। जो लोग आये थे उन्होंने मार्ग का चुंगीघर तथा सड़क के साहब का बँगला, जो मुस्लिमपुर[3] की सड़क पर स्थित है, फूँक दिया। साहब को सुनकर दुःख हुआ और वे उठकर ज्वाएन्ट मजिस्ट्रेट के पास, जो दूसरे कमरे में इजलास करता था, चले गये और कुछ 'गिटपिट' करके खजाने के कमरे में गये और खजाने के अधिकारी से परामर्श करके उस गारद को जो खजाने पर नियुक्त थी, सशस्त्र हो जाने का आदेश दिया। उन्होंने आदेशानुसार तुरन्त बन्दूकों में गोलियाँ भर लीं और तैयार हो गये। एक-एक सशस्त्र पहरेदार कचहरी के द्वार पर भी खड़ा हो गया और समस्त कचहरी एवं अमले में खलबली पड़ गई। मजिस्ट्रेट साहब के सम्बन्ध में ज्ञात हुआ कि कमिश्नर के पास गये।"

---

१. तारीखे उरूजे अहदे सल्तनते इंग्लिशिया पृ० ४०९।

२. पुल का प्रबन्ध करनेवाला अधिकारी।

३. सलीमपुर।

इसी बीच में सुना गया कि तुर्क सवार शुभ किले के नीचे झरोखे के सामने एकत्र हुए और देहली के किले में प्रविष्ट होने की अनुमति चाही। इतने में मजिस्ट्रेट साहब भी आ गये और अपनी मेम तथा बच्चों को कोठी से, जो कचहरी की दीवार के नीचे थी, बुलवा लिया और थोड़ी देर उपरान्त आधी गारद कश्मीरी दरवाजे में जहाँ लोग सशस्त्र हो गये थे भेजवा दी। इसी बीच में लीबास साहब सेशन जज भी आ गये और कुछ देर तक कचहरी के चारों ओर चक्कर लगाकर कोठी में चले गये और कचहरी के विसर्जन का आदेश दे दिया। उधर किलेदार[१] हजरत ज़िल्ले सुभानी (बादशाह) की सेवा में आदेशानुसार उपस्थित हुआ। वहाँ का समस्त हाल सुनकर और सवारों तथा सिपाहियों की भीड़ देखकर उन लोगों को किले के नीचे जाकर डराना और धमकाना निश्चय किया किन्तु बादशाह ने दया तथा कृपा के कारण, जो उनके हृदय में थी, उसे जाने की अनुमति न दी। अन्त में किलेदार आज्ञा लेकर चला गया और थोड़ी देर में सुना कि किलेदार बड़े साहब व डाक्टर साहब तथा मेम आदि द्वार में मारे गये और सवार किले से चले आये।

हुज़ूरे अकदस (बादशाह) भी पगड़ी बाँधकर तथा कमर में तलवार लगाकर दरबार में उपस्थित हुए। नगर में सर्वप्रथम थोड़े से सवार आये और दरियागंज के अंग्रेजों को मारते हुए तथा दो बँगले जलाते हुए किले के नीचे अस्पताल के समक्ष पहुँच गये और डाक्टर को भी वास्तविक चिकित्सालय में पहुँचा दिया।[२] कहते हैं कि बड़े साहब व किलेदार तथा डाक्टर आदि कुछ अंग्रेज कलकत्ता दरवाजे पर खड़े हुए दूरबीन लगाये मेरठ की सड़क के विषय में पता लगा रहे थे कि दो सवार वहाँ भी पहुँच गये। उनमें से एक ने अपना तमंचा चलाया और एक अंग्रेज को मार गिराया। जो बचकर आये वे किले के द्वार में प्रविष्ट होने के उपरान्त मारे गये। फिर और लोग भी आ पहुँचे और शहर में गुल हो गया कि अमुक अंग्रेज वहाँ मारा गया तथा अमुक अंग्रेज वहाँ पड़ा है।

---

१. कैप्टेन डलगस किलेदार अथवा किले का रक्षक था।

२. मार डाला।

सिकन्दर साहब की कोठी के नीचे पहुँचकर बन्दूकों की बाढ़ की एक आवाज सामने से सुनाई दी। जब देहली उर्दू अखबार का संवाददाता आगे चला तो उसने देखा कि साहब बहादुर जी पैदल हाथ में नंगी तलवार लिये परेशान तथा बदहवास बेतहाशा भागे चले आते हैं और उनके पीछे पीछे कुछ तिलंगे बन्दूकें चलाते आ रहे हैं। शहर की जनता भी, किसी के हाथ में लकड़ी और किसी के हाथ में पलंग की पट्टी, किसी के हाथ में बाँस का टोटा, उसके पीछे-पीछे चली आती है और शहर के कुछ मनुष्य साहस करके दूर से मार भी बैठते हैं। वे लोग अंग्रेजों का पीछा करते हुए उन्हें जीनत बाड़े की ओर से नहर की तरफ ले चले। नसीरगंज के मैदान की ओर फखरुल मसाजिद के आगे बीस पचीस तिलंगे इधर-उधर खड़े थे और लोग मस्जिद की ओर संकेत करते थे।[1] संक्षेप में, कुछ तिलंगे मस्जिद में गये और निरन्तर बन्दूकें चलाकर सब की हत्या कर दी। आगे बढ़कर गिरजाघर के सामने और काकिन्स साहब की कोठी के नीचे २०० तुर्क सवार और तिलंगे खड़े थे। उनमें से १०० पृथक् होकर इधर-उधर फैलते जाते थे और प्रश्न करते जाते थे कि "बतलाओ अंग्रेज कहाँ हैं?" और जो कोई पता-निशान बतलाता उनमें से दो-चार सिपाही तुरन्त उसके साथ हो लेते थे और थोड़ी देर में जिधर देखो दो-तीन अंग्रेज अथवा किरानी (भारतीय ईसाई) मरे हुए पाये जाते। एक-एक कोठी में घुस-घुसकर अंग्रेजों की सपरिवार हत्या की गई और जो कोई कहीं छिप रहा वह बच गया। समस्त कोठियों की धन-सम्पत्ति लूट ली गई। मस्जिद नवाब हामिद अली खाँ से आगे बढ़कर देखा कि फिकसन साहब[2] कमिश्नरी के कार्यालय के अध्यक्ष का मृतक शरीर पड़ा है और किसी मसखरे ने एक बिस्कुट भी उसके मुँह के पास रख दिया है।

देहली कालेज—टेलर साहब की हत्या

११ मई १८५७ ई० को प्रातःकाल ६ बजे से ८।। बजे तक कालेज खुला रहा। उसके उपरान्त ८, ७ लाला भागते और हाँपते हुए कक्षाओं में गये और

---

१. **देहली उर्दू अखबार** १७ मई १८५७ ई०, पृ० २, ३ ।

२. यह नाम स्पष्ट नहीं।

उन्होंने अपने बालकों से कहा कि "शीघ्र घर चलो। अंग्रेजों की तो सवार हत्या कर रहे हैं।" यह सुनते ही लड़के तो भागने लगे। प्रिंसिपल साहब को सूचना हुई। वे बड़े आश्चर्य चकित हुए। इतने में मैगजीन का चपरासी, मैगजीन के अधिकारी का पत्र लाया कि "भय अधिक है। आप अपने अंग्रेजी अध्यापकों सहित मैगज़ीन के भीतर आ जायें।" इस पत्र के पढ़ते ही प्रिंसिपल साहब ने कालेज में छुट्टी कर दी। इस समय कालेज में मिस्टर एफ. टेलर प्रिंसिपल थे और तीन अंग्रेज अध्यापक थे। वे चारों मैगजीन में चले गये। बारह बजे के पश्चात् कालेज का पुस्तकालय लुटने लगा। लुटेरे अरबी, फारसी, उर्दू आदि की पुस्तकों के गट्ठर बाँधकर पुस्तक-विक्रेताओं, मौलवियों तथा विद्यार्थियों के पास बेचने के लिए ले गये। इनमें से किसी पुस्तक को नष्ट नहीं किया। कुछ विद्यार्थी भी लूट में सम्मिलित थे और अच्छी-अच्छी पुस्तकें छाँटकर ले गये। मैगजीन के विनाश के उपरान्त मिस्टर टेलर अपने कालेज के बूढ़े खानसामाँ की कोठरी में पहुँचे। उसने इन्हें उनके प्राचीन मित्र मौलवी मुहम्मद बाकर के घर पहुँचा दिया। मौलवी साहब ने अपने इमाम बाड़े[1] के तहखाने में एक रात्रि उन्हें रक्खा किन्तु जब लोगों को इस बात का पता चल गया तो उन्होंने उन्हें भारतीय वेश-भूषा में घर के बाहर कर दिया। मार्ग में लोगों ने पहचानकर उनकी हत्या कर दी।[2] देहली उर्दू अखबार का सम्पादक लिखता है कि सुना गया है कि टेलर साहब प्रिंसिपल मदरसा भी यहीं (मैगजीन में) बन्द था। उस दिन तक कुछ जीवन शेष था और कुछ दिन तक दुनिया की हवा खानी थी। दूसरे दिन मंगलवार को मध्याह्न के निकट उसी थाने के इलाके में मारा गया। यह बड़ा कट्टर ईसाई था और अधिकांश अनभिज्ञ लोगों को बहकाया करता था। डाक्टर चमनलाल[3] का रक्त उसी की गर्दन पर है। ईश्वर की विचित्र लीला है। वह बड़ा ही धनी व्यक्ति था। उसका लगभग दो लाख रुपया कलकत्ते तथा देहली बैंक में जमा था और कुछ बँगले आदि, बड़े-बड़े किराये के, छावनी में थे। यह रुपया उसने इतने प्रयत्न से एकत्र किया था कि केवल डेढ़ आने अथवा छः पैसे

---

१. वह स्थान जहाँ मुसलमान इमाम हुसेन की स्मृति में गोष्ठियाँ करते हैं।

२. **तारीखे उरूजे अहदे सल्तनते इंग्लिशिया** पृ० ४२६, ४२७।

३. सम्भवतः चमनलाल, टेलर के ही प्रभाव से ईसाई हुआ होगा।

प्रतिदिन अपने ऊपर भोजन में व्यय करता था और शेष सब बैंक में जमा करता था। रात-दिन जब अवकाश मिलता बैंक के उसी हिसाब-किताब में व्यतीत करता। वस्त्र भी केवल आवश्यक तथा सभाओं के लिए धारण करता था किन्तु तुच्छ संसार का हाल शिक्षा ग्रहण करने के योग्य है। इतनी अपार धन सम्पत्ति के होते हुए भी दिन भर मृतक शरीर धूल तथा रक्त में नग्न पड़ा रहा। दर्शकगण कहते थे कि भिखारियों के वस्त्र थे, मुँह पर धूल मली हुई थी।[1]

देहली बैंक का लूटा जाना तथा मैनेजर की हत्या

देहली बैंक शमरू की बेगम के उद्यान में एक ऊँची कोठी में था।[2] इस बैंक का मैनेजर बेरेस्फोर्ड था। वह मैगजीन में पहुँच गया था किन्तु अंग्रेजों के चेतावनी देने पर भी कोठी तथा बैंक के खजाने के प्रबन्ध हेतु तथा इस आशय से कि मेम तथा बच्चों को लेकर लौट आये, वहाँ स्वयं गया। कोठी में जाकर एक अन्य अंग्रेज से वार्तालाप कर रहा था कि खानसामाँ ने जाकर उसे क्रान्तिकारियों के पहुँचने की सूचना दी। उसने पूछा—"कितने सवार आये हैं?" उसने कहा "अभी तो २०, २५ सुने गये है।" क्रोध में आकर उससे कहा"—'ओ, हम जानता है, अपने वास्ते खराबी लायेगा। हमारा क्या कर सकता है और अपने भाई-बन्धुओं का नुकसान करेगा।" यह कहकर कि "अच्छा खजाने का प्रबन्ध करो" सब कुंजियाँ आदि लेकर मेमों के साथ, जिनमें कुछ युवतियाँ तथा छोटी-छोटी बालिकाएँ थीं, ऊपर कोठे के कमरे में चला गया और खानसामाँ से कह दिया कि "यदि कोई पूछे तो कुछ न बतलाना कि साहब कहाँ गया है।" अन्त में कुछ योद्धाओं ने उन सबको मार डाला और बैंक की कोठी लूटकर उसमें आग लगा दी।[3]

१. **देहली उर्दू अखबार** १७ मई १८५७ ई०, पृ० ३।

२. जकाउल्लाह, **तारीखे उरूजे अहदे सल्तनते इंग्लिशिया** पृ० ४१४।

३. **देहली उर्दू अखबार** १७ मई १८५७ ई० जहीर देहलवी, **दास्ताने गदर** (लाहौर) पृ० ७४, ७५।

देहली गजट मुद्रणालय

देहली गजट मुद्रणालय भी बैंक के समान लूट लिया गया। प्रातःकाल ही मुद्रणालय में तार पर यह समाचार प्राप्त हुआ था कि मेरठ के विद्रोही देहली को जा रहे हैं और शीघ्र नगर में प्रविष्ट हो जायेंगे। इस समाचार को उन्होंने एक असाधारण गजट में छापा किन्तु क्रान्तिकारियों ने वहाँ पहुँचकर उन ईसाइयों की भी हत्या कर दी,[१] कारण कि वे भी अंग्रेजी शासन का अंग थे।

मैगजीन

मैगजीन नगर ही में राजप्रासाद के निकट था। लेफ्टिनेंट जार्ज विलोबाई इसका अध्यक्ष था। उसमें ९ अंग्रेज तथा अन्य भारतीय कर्मचारी थे। अंग्रेज, मेरठ से सहायता की आशा में दृढ़तापूर्वक मैगजीन की रक्षा करते रहे। इसी बीच में बादशाह की ओर से मैगजीन समर्पित कर देने के संदेश प्राप्त होने लगे और कहलाया गया कि यदि द्वार न खोले गये तो किले से सीढ़ियाँ भेज-कर मैगजीन पर अधिकार जमा लिया जायेगा किन्तु द्वार न खुलने पर भार-तीयों ने एक तीव्र आक्रमण किया। सफलता तथा सहायता से निराश होकर विलोबाई ने मैगजीन नष्ट कर देने का आदेश दे दिया। बारूद में आग लगते ही विलोबाई तथा तीन अंग्रेज जान बचाकर भाग खड़े हुए।[२]

देहली उर्दू अखबार का सम्पादक इस घटना का हाल इस प्रकार लिखता है :—

थोड़ी देर के उपरान्त यह तुच्छ मैगजीन की ओर गया तो मस्जिद नवाब हामिद अली खाँ से आगे बढ़कर देखा कि मैगजीन की बैरक में मुजा-हिदों का अधिकार हो गया है और सुना कि मैगजीन के भीतर कुछ अंग्रेज कुछ खलासियों के साथ द्वार बन्द किये बैठे हैं। संक्षेप में, शिक्षा की दृष्टि से यह सब देखता हुआ यह तुच्छ अपने निवासस्थान पर पहुँचा। प्रत्येक समय

---

१. **सिप्वाए वार इन इंडिया** भाग २, पृ० ८१–८२।
२. **सिप्वाए वार इन इंडिया** भाग २ पृ० ८७–९०।

चारों ओर से बन्दूक की आवाजें चली आती थीं। तीन बजे के पश्चात् एक तोप की आवाज आई। जो लोग एकत्र थे उन्हें चिन्ता हुई कि दूसरी आवाज आई। यह तुच्छ पता लगाने के लिए तुरन्त कोठी पर गया। अचानक एक बहुत कड़ा भूकम्प आया और इतना भयंकर कि मैं समझा कि हजरत इसराफील ने कयामत के लिए नरसिंघा फूँक दिया हो।[1] 'संक्षेप में, देखा तो ज्ञात हुआ कि मैगजीन उड़ गया। आकाश तक अंधकार छा गया। उसमें दीवार के पत्थर पक्षियों एवं वृक्षों के पत्तों की भाँति उड़ते हुए ज्ञात होते थे। यह तुच्छ इस भय से कि सम्भवतः पत्थर उसके यहाँ भी गिरें और हानि हो, शुभ नामों का जाप करता हुआ नीचे उतर आया। अन्त में ज्ञात हुआ कि बीस-पचीस अंग्रेजों की, जो सपरिवार भीतर बन्द थे, हत्या हेतु पल्टन के गाजी सीढ़ी आदि द्वारा मैगजीन की दीवार पर शहरपनाह की ओर से चढ़े। भीतर से जो लोग घिरे थे उन्होंने भी गोलियाँ चलायीं और इसी बीच में उन्होंने ताककर दो फायर गर्राब के मारे किन्तु इस कारण कि अफसर लोग कानून तथा नियम के अतिरिक्त (किसी बात में) कुशल तथा दक्ष नहीं होते, उनसे कुछ अधिक काम न निकला। अन्त में जब द्वार पर तोपें लगा दीं और द्वार तोड़ने का विचार किया गया तो उन लोगों ने, जो घिरे हुए थे, इस बीच में दीवार की ओर जो सुरंग लगा रखी थी, उसमें आग लगा दी। कुछ सिपाही भी उनमे नष्ट हुए और इसी शोर-गुल में जो लोग घिरे हुए थे, भाग निकले। कुछ मारे गये और शेष भाग गये। जो लोग इधर-उधर भाग गये थे, वे भी अवश्य ही मार डाले गये होंगे।"[2]

मैगजीन के विनाश के सम्बन्ध में यह विचार न करना चाहिये कि क्रान्तिकारियों को यहाँ से कुछ प्राप्त ही नहीं हुआ। यद्यपि प्राणों की बड़ी हानि

---

१. मुसलमानों का विश्वास है कि एक दिन संसार नष्ट हो जायगा और कयामत आ जायगी। उसकी घोषणा इसराफील फरिश्ता अपना नरसिंघा फूंककर करेगा।

२. **देहली उर्दू अखबार १७ मई १८५७ ई०** पृ० ३। जहीर देहलवी, **दास्ताने गदर** (लाहौर) पृ० ७७।

हुई और कुछ सामान लुटा भी किन्तु सिपाहियों ने इसका प्रबन्ध कर लिया और उसका सामान अन्त तक काम में लाते रहे।[१]

मेटकाफ साहब

"यह आठ बजे के समय कचहरी में आया था और तत्पश्चात् नगर में प्रबन्ध हेतु गया। उस समय अन्य अंग्रेज मैगज़ीन में शरण लेते थे। सब ने उसको भी साथ बन्द कर लेना चाहा था और समझाया किन्तु मृत्यु सिर पर खड़ी होने के कारण जबर्दस्ती 'प्रबन्ध, प्रबन्ध' कहता हुआ निकल गया। नगमबूंद दरवाजे तक पहुँचकर अन्त में लोगों से शरण हेतु हाथ जोड़ने लगा। एक-एक के घर में घुसता था कि आखिर को एक सवार एजंटी से घोड़ा माँगकर सीधा भागा और एक तुर्क सवार, जो उसके प्राण का इजराईल[२] था, बाग उठाकर पीछे हुआ। कहते हैं कि उस समय वह नंगे सिर था और बेतहाशा भागा जाता था और पीछे उसके प्राणों का प्यासा उससे भी १०० पग आगे बढ़ने का आकांक्षी था। अन्त में अजमेरी दरवाजे पर पहुँचकर उसने एक नजीब की टोपी सिर पर रख ली और द्वार बन्द किये जाने का आदेश देकर भाग गया। इसी बीच में यह तुर्क सवार भी जा पहुँचा और जाते ही नजीब को तमंचा दिखाया तो उसने तुरन्त द्वार खोल दिया। अन्त में पहाड़ी धीरज पर जाकर अपनी अन्तिम मंजिल को पहुँच गया। कुछ लोग कहते हैं कि जीवित निकल गया।[३]"

जहीर देहलवी द्वारा क्रान्ति का विवरण

जहीर देहलवी, जिसे किले तथा बहादुरशाह के विषय में अधिक जानकारी

१. **तारीखे उरूजे अहदे सल्तनते इंग्लिशिया** पृ० ४२१।

२. मौत का फ़रिश्ता, जो मुसलमानों के अनुसार, लोगों के प्राण लेने के लिए नियुक्त है।

३. **देहली उर्दू अखबार १७ मई १८५७ ई०** पृ० ३। खदंगे गदर में थ्योफ़िलस मेटकाफ के भागने का हाल विस्तार से दिया हुआ है। खदंगे गदर के लेखक मुईनुद्दीन ने उसकी रक्षा का बड़ा प्रयत्न किया था। (**खदंगे गदर पृ०** ४३-४८, ५७, ७६)

थी, इस घटना के विषय में इस प्रकार लिखता है--"इधर बागी सवार नौकाओं के पुल से उतरकर सलीमगढ़ के नीचे होते हुए झरोखे के नीचे पहुँचे। उधर आने-जानेवाले भागकर कलकत्ता द्वार में प्रविष्ट हुए और द्वारवालों को सूचना दी कि द्वार बन्द कर दो......बादशाह ने हकीम एहसनुल्लाह खाँ को आदेश दिया कि उन लोगों से पूछो कि तुम कौन हो, कहाँ से आते हो और किसके नौकर हो। उन लोगों ने अपना हाल बताकर कहा कि हम लोगों ने निश्चय किया है कि एक दिन तथा एक तिथि पर संघटित होकर समस्त भारतवर्ष में विद्रोह कर दें, फिर देखो वे क्या कर सकते हैं। बादशाह सलामत हमारे सिर पर हाथ रक्खें और न्याय करें। हम 'दीन' पर बिगड़कर आये हैं।" बादशाह की ओर से उन्हें समझाने के लिए उत्तर दिया गया, "सुनो भाई मुझे बादशाह कौन कहता है। मैं तो फकीर हूँ....एकान्तवासी हूँ। मुझे कष्ट देने क्यों आये? मेरे पास खजाना नहीं कि मैं तुमको वेतन दूँ। मेरे पास सेना नहीं जो तुम्हारी सहायता करूँ। मेरे पास राज्य नहीं, जो धन प्राप्त करके तुम्हें नौकर रक्खूँ। मैं कुछ नहीं कर सकता। मुझसे किसी सहायता की आशा मत करो। तुम जानो, ये लोग जानें। हाँ एक बात मेरे अधिकार में है। वह सम्भव है। मैं तुम्हारे बीच में पड़कर अंग्रेजों से तुम्हारी सफाई करा सकता हूँ।".....इतने में साइमन फ्रेजर साहब तथा कप्तान डगलस साहब हकीम एहसनुल्लाह खाँ एवं महबूब अली खाँ के साथ बादशाह के समक्ष पहुँचे। बादशाह ने फ्रेजर साहब से पूछा कि "यह धार्मिक झगड़ा कैसे उठ खड़ा हुआ? धार्मिक पक्षपात बड़ी बुरी बात है। इस उपद्रव की शीघ्र रोक-थाम होनी चाहिये, अन्यथा समस्त भारतवर्ष में उपद्रव के कारण लाखों प्राणियों की हत्या हो जायेगी।" फ्रेजर साहब ने कहा, "हुजूर, दास के पास रात्रि में ११ बजे सवार ने पत्र लाकर दिया, मैं उस समय नींद के कारण उसे साधारण पत्र समझकर जेब में रखकर सो रहा। इस समय पत्र पढ़ा तो हाल ज्ञात हुआ। हुजूर कुछ भय न करें।".....यह कहकर फ्रेजर साहब[1] क्रान्तिकारियों को समझाने लगे।

---

१. डगलस होना चाहिये।

रेज़ीडेन्ट (फ्रेजर)—क्यों बाबा लोग, यह तुम लोगों ने क्या उपद्रव खड़ा कर दिया ? हम लोगों ने तुम लोगों को रूमाल से पोंछकर तैयार किया है। हमारा यह दावा था कि यदि रूस भारतवर्ष की ओर पाँव बढ़ायेगा तो हम सीमा पर उसका सिर तोड़ेंगे और यदि ईरान अग्रसर हुआ तो उसको हम वहीं पराजित कर देंगे। यदि कोई राज्य भारतवर्ष की ओर मुंह करेगा तो उसका मुँहतोड़ जवाब देंगे। यह सूचना न थी कि हमारी सेना हमसे ही युद्ध को तैयार हो जायेगी। क्यों बाबा लोग, नमकख्वारी इसी का नाम है कि आज हमसे युद्ध को तैयार हो ? हमने तुम्हें इसी कारण सैंकड़ों रुपया व्यय करके तैयार किया था ?

क्रान्तिकारी—हुजूर सच कहते हैं। इसमें कोई संदेह नहीं कि सरकार ने हमारा पालनपोषण इसी प्रकार किया है कि हम सरकार के नमक का हक न भूलेंगे किन्तु हम लोगों ने आज तक सरकार की कोई नमकहरामी नहीं की। जहाँ सरकार ने हमको झोंक दिया हम आँखें बन्द करके आग-पानी में कूद पड़े। कुछ भी प्राणों का भय न किया। सिर कटवाने में संकोच नहीं किया। काबुल पर हमीं लोग गये। लाहौर हमीं लोगों ने जीता। कलकत्ते से काबुल तक हमीं लड़ने-भिड़ने, सिर कटवाने, प्राण देने गये और नमक का हक अदा किया। अब, जब कि समस्त भारतवर्ष पर सरकार का अधिकार हो गया तो सरकार हमारे धर्म के पीछे पड़ गई। क्रिस्टान बनाना चाहा। हमसे टोटा[1] कटवाने को कहा तो हम लोग अपने बाप-दादों का धर्म छोड़कर किस प्रकार बेधर्म हो जायँ। हमको मर जाना स्वीकार है किन्तु धर्म से बेधर्म न होंगे। अब सरकार जो चाहे हमारा करे। हम सब मरने को तैयार हैं और अपने आपको उस समय से मृतक शरीर के समान समझ चुके जब से बन्दीगृह तोड़कर अधिकारियों को निकाला।

रेजीडेंट—सुनो सुनो बाबा लोग, तुम इस विचार को जाने दो और हमें मारने से बाज आओ। अब तुमको कोई नहीं मारेगा। हम बीच में पड़े हैं और जमानत

---

१. कारतूस।
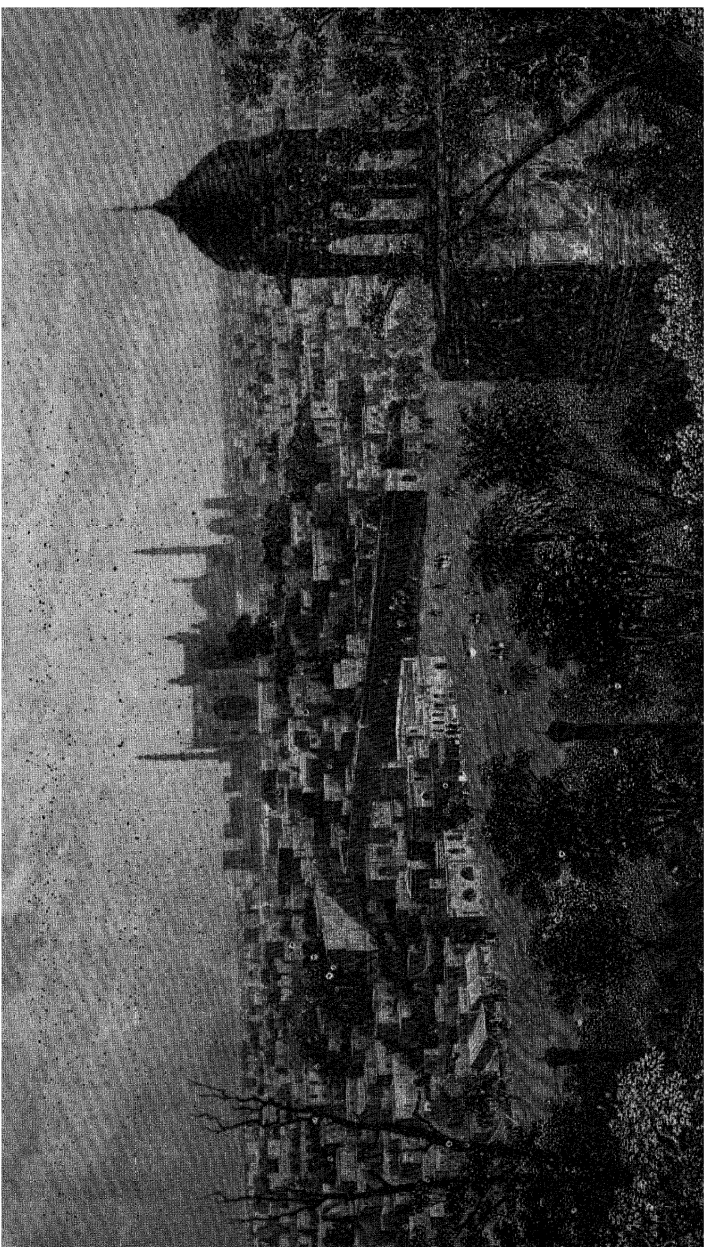
महल के द्वार से देहली का एक दृश्य

करते हैं तथा ईश्वर की शपथ लेकर कहते हैं कि हम तुमसे विश्वासघात न करेंगे और तुम्हारे विषय में न्याय करेंगे और उन लोगों को दंड दिलवायेंगे जिन्होंने यह उपद्रव खड़ा किया है.....अब तुम मार-काट बन्द करो तथा लूट-मार से बाज आओ और बादशाह सलामत का भी यही आदेश है। तुमने धर्म के कारण विद्रोह किया है, हम तुम्हारे धर्म का प्रबन्ध करेंगे। तुम लोगों की हत्या करना छोड़ दो। बादशाह साहब स्वयं बीच में पड़े हैं।

क्रान्तिकारी—गरीबपरवर, हमें सरकार की बात का विश्वास नहीं। सरकार ने बहुत से स्थानों पर विश्वासघात करके राज्य प्राप्त किया है। आज तो हम सरकार के आदेशों का पालन कर लें, कल सरकार हमको पकड़कर फाँसी पर खींच दे। ऐसी दशा में हमको भंगी के हाथ से फाँसी खाने की अपेक्षा तलवार के मुँह मरना बेहतर मालूम होता है।

रेजीडेंट—नहीं-नहीं, तुम लोग ऐसा विचार कदापि न करो। हम इंजील पर हाथ रखकर कहते हैं कि हम तुमसे कदापि विश्वासघात न करेंगे और बादशाह साहब का भी यही आदेश है।

इस बात पर उन लोगों में मतभेद हो गया। कुछ लोग कहते थे कि साहब का आदेश स्वीकार कर लेना चाहिये। कुछ विरोध करते थे। इसी बीच में एक सैनिक ने साहब बहादुर पर गोली चला दी किन्तु बन्दूक की गोली साहब बहादुर तथा हकीम एहसनुल्लाह खाँ के बराबर से निकल गई।

फ्रेजर साहब तथा डगलस साहब कलकत्ता दरवाजे पर पहुँचे। द्वार बन्द था। क्रान्तिकारियों ने राजघाट दरवाजे की ओर प्रस्थान किया और राजघाट दरवाजे पर पहुँचे। द्वार बन्द था। यमुना में स्नान करनेवाले प्रतीक्षा कर रहे थे कि द्वार खुले तो हम जाकर स्नान करें। लगभग ५०० मनुष्य एकत्र थे और द्वार के रक्षकों से वाद-विवाद कर रहे थे कि द्वार खोल दो तो हम जाकर स्नान करें। उनके मना करने पर उन्होंने द्वार का ताला जबर्दस्ती खोल दिया और क्रान्तिकारी राजघाट द्वार से नगर में प्रविष्ट हुए। मार्ग में उन्होंने एक पादरी का बँगला जला डाला। लाल डिग्गी के अन्त पर चिकित्सालय में प्रविष्ट होकर डाक्टर चमनलाल की, जो ईसाई हो गये थे, हत्या कर डाली। जब सवारों को ज्ञात हुआ कि अंग्रेज कलकत्ते

द्वार पर एकत्र हैं तो ५ सवार घोड़ा दौड़ाते हुए उधर पहुँचे। मव लोग इतने भयभीत हुए कि भाग खड़े हुए[1]।

११ बजे दिन के उपरान्त कुछ सवारों ने शाही कर्मचारियों से दुकानें खुलवाने का आग्रह किया और इस बात का आश्वासन दिलाया कि वे लूटमार न होने देंगे। तदनुसार नगर में घोषणा करा दी गई कि "खल्क खुदा की, मुल्क बादशाह का, हुक्म बादशाह का, कोई किसी पर अत्याचार न करने पाये। यदि कोई लूटमार करेगा तो दंड का पात्र होगा"। हलवाइयों तथा बनियों की दुकानें खुल गई और उन पर पुरबियों के पहरे बैठ गये। कुछ दुकानें और खुल गई। हलवाइयों ने घी के बड़े-बड़े कढ़ाव चढ़ा दिये। पूरियाँ तली जाने लगीं। बनियों ने दुकानें खोल दीं। जो लोग रोजा रखे थे वह भोजन-सामग्री ले जाने लगे। उस समय हकीम एहसनुल्लाह खाँ ने जहीर देहलवी तथा सूफी मजहरुल्लाह बेग रिसालदार बादशाही को आदेश दिया कि तुम जाकर देखो कि नगर का क्या हाल है। अब तो लूटमार नहीं होती? वे लोग फतेहपुरी की मस्जिद तक पहुँचे तो शान्ति थी। कहीं लूटमार न थी। इधर-उधर दुकानें खुली थीं। दुकानों पर पहरे लगे थे। क्रय-विक्रय हो रहा था। सैनिक मूल्य अदा करके सामान मोल लेते थे[2]।

•

इतने अल्प समय में इस प्रकार की शान्ति स्थापित हो जाना तथा दुकानें खुल जाना केवल सैनिकों के अनुशासन का बहुत बड़ा प्रमाण ही नहीं, अपितु नागरिकों के बादशाह तथा अपने भाइयों के प्रति पूर्ण विश्वास का द्योतक है और यह सिद्ध करता है कि वे अनुशासन तथा शान्तिपूर्वक जीवन व्यतीत करने का संकल्प करके नगर में प्रविष्ट हुए थे।

सिराजुल अखबार द्वारा क्रान्ति का विवरण

किले के सरकारी फारसी अखबार "सिराजुल अखबार" में इस घटना का उल्लेख इस प्रकार है—८ बजे प्रातःकाल बादशाह के समक्ष निवेदन किया गया

१. जहीर देहलवी, **दास्ताने गदर** (लाहौर) पृ० ४५—५५।
२. जहीर देहलवी, **दास्ताने गदर** (लाहौर) ६९—७०।

कि अश्वारोही तथा पदाती, जो कि सरकार अंग्रेजों के सेवक थे, मेरठ से अपने अधिकारियों की आज्ञा का उल्लंघन करके तथा अपने अधिकारियों की हत्या करके विभिन्न टोलियों में झरोखे के नीचे उपस्थित हो रहे हैं तथा अन्य लोग चले आ रहे हैं और झरोखे के नीचे शोर मचा रहे हैं। बादशाह न तुरन्त सैफुद्दौला बहादुर को बुलाकर कहा कि किलेदार बहादुर को इस घटना की सूचना कर दो। शाही वकील ने बादशाह के आदेशानुसार किलेदार बहादुर को उपस्थित कर दिया। उस वीर ने दीवानेखास की छत से सवारों तथा प्यादों की भीड़ से, जो झरोखे के नीचे एकत्र थी, कहा कि हुजूर को कष्ट न दो और इस स्थान से किसी अन्य स्थान को चले जाओ। यह आवाज सुनकर वे राजघाट की ओर चल दिये। बादशाह ने किले के द्वारों को बन्द कराने का आदेश दे दिया।

इसी बीच में किलेदार बहादुर ने झरोखे के नीचे जाकर उस अपार भीड़ की रोकथाम करने की अनुमति माँगी। बादशाह तथा हकीम एहसनुल्लाह खाँ ने उसे रोक दिया और उस वीर को इस भय से उसके घर भेज दिया कि कहीं उन लोगों के हाथों से उसकी हत्या न हो जाय। किलेदार हकीम एहसनुल्लाह के आग्रह पर अपने घर चला गया और दो पालकियाँ मेमों को भेजने के लिए तथा दो तोपों के लिए निवेदन कर गया। बादशाह ने आदेश दिया कि तुरन्त उन चीजों को उसके साथ कर दिया जाय। जब दोनों पालकियाँ तथा तोपें भेजी जानेवाली थीं तो यह निवेदन किया गया कि अमीनुद्दौला बहादुर, किलेदार बहादुर के घर पहुँचे। किलेदार उनकी बग्घी पर सवार होकर सवारों के साथ कलकत्ते द्वार पहुँचा और वहाँ से लौटकर किले पहुँचा। मार्ग में दो-एक तुर्क सवारों ने उससे युद्ध किया। किले में पहुँचकर बग्घी से उतरकर एक अन्य अंग्रेज के साथ लाहौरी दरवाजे के छत्ते में पहुँचकर हाथ में तलवार लिये हुए टहलने लगा और उस द्वार को भी बन्द रखने का आदेश दे दिया। इसी बीच में एक दो तुर्क सवारों तथा तिलंगों ने उन सिपाहियों से मिलकर जो द्वार पर नियुक्त थे, उस वीर की हत्या कर दी। तत्पश्चात् उन तिलंगों ने जो किले के दोनों द्वारों पर नियुक्त थे द्वार खोल दिये, साथ ही शहर-पनाह के भी द्वार खोल दिये और उन लोगों ने चींटियों तथा टिड्डियों के समान प्रत्येक द्वार से प्रविष्ट होकर किलेदार की मेमों की हत्या कर दी और उसके घर को लूट लिया। समस्त अंग्रेज सैनिक तथा असैनिक मार डाले गये और उनके बँगलों में आग लगा दी गयी।

बादशाह इस भयानक समाचार को सुनकर बड़े दुखी तथा परेशान हुए और कहा कि ईश्वर के प्रदान किये हुए प्राणों के विनाश से बड़ा कष्ट होता है और इस्लाम की आज्ञा के बिना मुझे उनकी हत्या पसन्द नहीं। इस उपद्रव तथा मूर्खतापूर्ण उत्पात के कारण सैकड़ों प्राणियों की हत्या हो गई।]

मध्याह्न के निकट उन लोगों के अनेक समूह बादशाह की सेवा में उपस्थित हुए और निवेदन किया कि बादशाह अपने पुत्रों को हमारा अफसर नियुक्त कर दे, जिससे हम लोग उन शाहजादों की सहायता से शहर का प्रबन्ध करें। बादशाह आश्चर्यचकित होकर सोच-विचार करते रहे किन्तु इस बात की अनुमति न दी, परन्तु जब तक शाहजादों द्वारा गली-कूचों का उचित प्रबन्ध न होता उस समय तक वे लोग प्रजा की हत्या करते रहते। यदि इस ओर शीघ्र ध्यान न दिया जाता तो शहर तथा शहर के बाहर की प्रजा का विनाश हो जाता। विवश होकर बादशाह ने शाहजादों में से जहीरुद्दीन बख्त बहादुर तथा मिर्जा अब्दुल्लाह बहादुर को इस कार्य के लिए चुना और उन लोगों का अफसर बना दिया ताकि शहर में शान्ति स्थापित हो सके[१]।

जीवनलाल के अनुसार उसी दिन दोनों सूबेदार, जो कैप्टेन डगलस की उपस्थिति में बादशाह के समक्ष आये थे, पुनः सैनिकों के प्रतिनिधि के रूप में उपस्थित हुए और सैनिकों की सेवाएँ उसको समर्पित कीं। उन्हें आदेश हुआ कि वे हकीम एहसनुल्लाह खाँ द्वारा आज्ञा प्राप्त करें। उन्होंने उसे खोजकर अपना संदेश सुनाया।

कहा जाता है कि एहसनुल्लाह खाँ की समझ में न आता था कि वह क्या उत्तर दे। वह इस क्रान्ति को चलती-फिरती छाँह समझता था। उसने उत्तर दिया, "तुम लोग अंग्रेजी राज्य के अधीन बहुत समय से नियमपूर्वक वेतन पाने के आदी बन चुके हो। बादशाह के पास कोई खजाना नहीं। वह तुमको वेतन कहाँ से देगा।" उन अधिकारियों ने उत्तर दिया—"हम समस्त राज्य की मालगुजारी आपके खजाने में पहुँचा देंगे।" तत्पश्चात् हकीम ने क्रान्तिकारियों का ब्योरा माँगा[२]।

---

१. **सिराजुल अखबार**, जिल्द १३, नं० ८, पृ० २–४।
२. **जीवनलाल**, पृ० ८३।

बहादुरशाह की कठिनाइयाँ

समय के पूर्व एक स्थान से क्रान्ति के विस्फोट के दुष्परिणाम से बादशाह भली-भाँति परिचित था। क्रान्ति इस प्रकार किस तरह सफल हो सकती है, वह खूब जानता था किन्तु मेरठ के सैनिक समय के पूर्व बहुत आगे बढ़ चुके थे। बादशाह उनका साथ दे अथवा न दे, यह बड़ी कठिन समस्या थी। इस समस्या का समाधान करने वाला कोई न था। उसन सैनिकों तथा अंग्रेजों के बीच में संधि भी करानी चाही किन्तु यह बात किसी प्रकार सम्भव न हो सकी। हकीम एहसनुल्लाह खाँ के परामर्श से बादशाह ने आगरे के लेफ्टिनेन्ट गवर्नर के नाम एक पत्र भी भेजा[1]। सम्भवतः उसने देश-व्यापी क्रान्ति की प्रतीक्षा में थोड़े से क्रान्तिकारियों का बलिदान भी स्वीकार कर लिया था। अंग्रेज शान्ति स्थापित करने में असमर्थ थे। उन्हें किसी बाहरी सहायता की आशा न थी। देहली के भारतीय सिपाहियों में से जो छावनी में थे एक सैनिक भी ऐसा न था जो अंग्रेजों का साथ देने के लिए अपनी बन्दूक का घोड़ा चढ़ाता अथवा तलवार चलाता[2]। वे सम्भवतः समझते होंगे कि क्रान्ति का समय आ गया। भारतमाता को स्वतंत्रता प्राप्त होने ही वाली है। नगरवाले भी यही समझते होंगे कि जिस घड़ी की प्रतीक्षा की जाती थी वह यही है। उन्हें कौन रोक सकता था? लोगों के हृदय में बादशाह का पूर्ण सम्मान आरूढ़ था। ढिंढोरा पिटवानेवाले नित्य खल्क खुदा की, मुल्क बादशाह का, हुक्म कम्पनी बहादुर का चिल्लाया करते थे। अंग्रेजों के देहली से समाप्त हो जाने के उपरान्त अब कम्पनी कहाँ और उसका हुक्म कैसा? वे अपहरणकर्त्ता थे। बादशाह तो बहादुरशाह पहिले ही से था अतः उसको नियमपूर्वक बादशाह घोषित करने की आवश्यकता ही क्या थी? यह प्रश्न तो अंग्रेजों ने बहादुरशाह के मुकदमे में उठाया था। कारण कि वे उसे कम्पनी का सेवक समझते थे[3]। भारतीयों का यह विचार न था। किन्तु बहादुरशाह इस समय बड़े असमंजस में था। निश्चित तिथि के पूर्व जब कि अन्य स्थानों को कोई सूचना ही न थी, किसी स्थान पर कोई तैयारी ही न थी, देहली की

---

१. **जीवनलाल** पृ० ८३। इस पत्र का उल्लेख मिद्धालविन ने गवर्नर जनरल को जो तार १४ मई को भेजा था, उसमें किया है। (**फ्राम लन्दन टू लखनऊ**, भाग १ पृ. १३२)

२. '**सिप्वाए वार इन इंडिया**' भाग २ पृ० ७७।

३. **ट्राएल** पृ० ७४।

स्वतंत्रता चिरस्थायी न रह सकती थी; परन्तु अब हो ही क्या सकता था ? लोग उबल पड़े थे। यदि उनका नेतृत्व न किया जाता तो सब कुछ स्वाहा हो जाता अतः बादशाह ने स्वतंत्र देहली में शान्ति स्थापित करने के लिए अपने पुत्रों को क्रान्तिकारियों के साथ कर दिया और उनके नेतृत्व के लिए उद्यत हो गया।[१]

छावनी में क्रान्ति

८ बजे प्रातःकाल जब नगर में हलचल हो रही थी तो एक तिलंगा छावनी से पत्र लिये हुए कचहरी में आया। देहली उर्दू अखबार के संवाददाता ने उससे छावनी के विषय में पूछा तो उसने कहा--"वहाँ भी लोग सशस्त्र हो रहे हैं।' उससे पूछा गया कि वे लोग अंग्रेजों से संतुष्ट है अथवा असन्तुष्ट ? उसने घबड़ाकर कहा--"अरे नहीं। संतुष्ट तो क्या हैं।" जब संवाददाता ने उसके विषय में पूछा तो उसने मुस्कराकर कहा, "जब सब फिर गये तो हम अकेले क्या करेंगे।" संक्षेप में कचहरी के तिलंगों को जो देखा गया तो उन्हें भी प्रसन्न पाया गया। एक ने यह भी कहा कि "गोलियाँ उन्होंने भरवा दी हैं। देखना हम भी किसको मारते हैं।"[२]

छावनी नगर से दो मील की दूरी पर स्थित थी और उसके एक ओर पहाड़ी थी। १० मई को मध्याह्नोत्तर में एक गाड़ी भारतीयों से भरी हुई छावनी में आई थी। यद्यपि वे तिलंगों की वर्दी धारण किये हुए न थे किन्तु यह प्रसिद्ध था कि मेरठ से तिलंगे आये हैं।[३] उनके आगमन से छावनी में क्रान्ति की लहर दौड़ गई होगी। उस समय वहाँ ३८वीं, ५४वीं तथा ७४वीं रेजीमेंट एवं भारतीय तोपखाना था। जब प्रातःकाल मेरठ के क्रान्तिकारियों के देहली पहुँचने की सूचना मिली तो छावनी

---

१. **प्रेस लिस्ट नं०** ३९, पृ० २ अ। इसमें ११ मई से १७ मई तक की घटनाओं का विवरण है और सम्भवतया यह अंग्रेजी जासूस चुन्नी की डायरी का भाग है।

"तत्पश्चात् रिसाला सवारान व दो पल्टनें तिलंगों की, जो मेरठ छावनी से आई थीं, तथा तीन देहली की पल्टनें बादशाह की सेवा में पहुँचीं और कहा हमारी सहायता कीजिये। हम समस्त देश में आपका शासन करा देंगे। बादशाह ने कहा, परवरिश तुम्हारी दिल व जान से मंजूर है।"

२. **देहली उर्दू अखबार,** १७ मई १८५७ ई० पृ० ४।

३. **ट्रायल** पृ० ९८, ९९।

के अंग्रेज अधिकारियों ने इसे कोई महत्त्व न दिया। उन्हें इतनी बड़ी क्रान्ति का विश्वास भी न था। वे समझते थे कि मेरठ के बन्दीगृह से भागे हुए बन्दी आये होंगे[1]।

कर्नल रिपले दो कम्पनियों को इस आशय से छोड़कर कि वे तोपखाना लायें, कश्मीरी दरवाजे की ओर बढ़ा। छावनी से यह अत्यधिक निकट था। इस द्वार के एक ओर गार्ड रहता था जिसमें ३८वीं रेजीमेंट के कुछ सैनिक थे। वे हृदय से क्रान्तिकारियों का स्वागत करने के लिए तैयार थे। दूसरी ओर से तीसरी कैवलरी के सवार शहर के मनुष्यों की भीड़-भाड़ लिये चले आते थे। ५४वीं रेजीमेंट को, जो कर्नल रिपले के अधीन थी, बन्दूक भरने का आदेश हुआ। ३८वीं रेजीमेंट के उस दिन के फील्ड आफिसर कैप्टेन वालेस ने अपने अधीन सैनिकों को गोली चलाने का आदेश दिया किन्तु किसी ने भी अपनी बन्दूकें न छतियाईं। ५४वीं रेजीमेंट ने हवा में बन्दूकें छोड़ दीं और कुछ ने अफसरों पर गोली चला दी। कर्नल रिपले के शरीर के टुकड़े-टुकड़े कर दिये। कुछ अन्य अंग्रेज अफसरों की भी हत्या कर दी।

जब तोपखाना तथा दो कम्पनियाँ, जो पीछे रह गई थीं, कश्मीरी दरवाजे के निकट आई तो कैप्टेन वालेस ने क्रान्ति की सूचना देकर उन लोगों से शीघ्र आगे बढ़ने को कहा। पैटर्सन ने तोपें शीघ्र भरकर कश्मीरी दरवाजे की ओर बढ़ने का आदेश दिया किन्तु उस समय तक क्रान्तिकारी वहाँ से जा चुके थे। मेजर ऐबट क्रान्ति की सूचना पाकर अपनी ७४वीं रेजीमेंट को लेकर मध्याह्न के निकट मेजर पैटर्सन के पास पहुँच गये। इनको आशा थी कि मेरठ से सहायता आती ही होगी किन्तु शहर से भागे हुए अंग्रेजों तथा क्रान्तिकारियों के शोर-गुल, बन्दूक और तोप की आवाजों एवं अंग्रेजों के जलते हुए बँगलों के अतिरिक्त कुछ भी दृष्टिगत न होता था। ४ बजे के निकट विलोबाई, मैगजीन में आग लगवाकर फारेस्ट सहित वहीं पहुँच गया।

उधर छावनी में भी ब्रिगेडियर ग्रेव्ज तथा अन्य अंग्रेज अधिकारी मेरठ से सहायता की आशा कर रहे थे। छावनी के भारतीय राष्ट्रीयता के भाव से उत्तेजित हो रहे थे और बड़ी कठिनाई से अपने आपको रोके हुए थे। मैगजीन के विनाश के

---

१. **सिप्वाए वार इन इंडिया** भाग २, पृ० ८४।

उपरान्त भारतीय सैनिकों ने समझ लिया कि अंग्रेजों का राज्य पूर्णतः समाप्त हो गया। स्वतंत्रता, जिसकी अभिलाषा भारतवर्ष के समस्त नर-नारी किया करते थे, प्राप्त हो गई। ३८वीं रेजीमेंट ने गोलियाँ चलानी प्रारम्भ कर दीं। कुछ अंग्रेज अधिकारी मारे गये, कुछ भाग गये। कश्मीरी दरवाजे में जो मेमें थीं, वे भी उनके साथ भाग गई। छावनी में भी भारतीय सैनिकों ने क्रान्तिकारियों का साथ देना निश्चय कर लिया और तोपें अपने अधिकार में कर लीं। भागने के अतिरिक्त अंग्रेजों के लिए अब कोई अन्य उपाय न था। सिपाहियों ने उनकी गाड़ियाँ मँगवा दीं। उनका सामान लदवा दिया और बिना किसी प्रकार की हानि पहुँचाए हुए उन्हें बिदा कर दिया। नगर तथा छावनी में कोई अंग्रेज न रहा और यदि कोई मिल जाता तो साधारण लोग उसकी हत्या कर डालते[1]।

देहली उर्दू अखबार में ३१ मई को प्रकाशित हुआ कि "अब तक भी अंग्रेज दिन-रात में एक-दो छिपे-छिपाये निकल आते हैं और अपनी सजा को पहुँचा दिये जाते हैं। नित्य तथा क्षण-क्षण पर शिक्षा प्राप्त करनेवाली आँखों को शिक्षा प्राप्त होती रहती है। ईश्वर की लीला दृष्टिगत होती रहती है। एक व्यक्ति एक खरबूजा बेचनेवाले की दूकान पर मुँह लपेटकर खरबूजा मोल लेने लगा। दो-चार अन्य मोल लेनेवाले भी खड़े थे। एक दूसरे के आगे बढ़ते थे। वह अचानक बोल उठा, "तुम चुप रहेगा।" यह वाक्य सुनते ही सब लोग चौकन्ने हो गये कि यह अंग्रेज है। तुरन्त बाजार के बालकों ने चारों ओर से मार गिराया। देखनेवाले कहते हैं कि वह अंग्रेज ऐसा भारी-भरकम तथा बलवान् था कि यदि एक बार दो मनुष्यों से भी लिपट जाता तो अवश्य ही दबा बैठता किन्तु यह बात ईश्वर के कोप का एक उदाहरण है कि उसे लेशमात्र भी दम मारने अथवा उँगली हिलाने का साहस न हुआ[2]।

ईसाइयों की हत्या का कारण

ईसाइयों से क्रान्तिकारियों को धार्मिक शत्रुता न थी। वे जानते थे कि भारत-माता की गोद अपने सभी पुत्रों के लिए खुली रहती है। भारतीय ईसाइयों से उन्हें

---

१. **स्टेट पेपर्स** पृ० २६३-२६७; **सिप्वाए वार इन इंडिया** भाग २, पृ० ८४-९८।

२. **देहली उर्दू अखबार** ३१ मई १८५७ ई० पृ० १।

कोई विरोध था ही नहीं। उनका युद्ध अंग्रेजी राज्य तथा अंग्रेज अधिकारियों से था जो भारतवर्ष को दास बनाये रखना चाहते थे। साधारण ईसाइयों, स्त्रियों तथा बालकों की जहाँ भी हत्या हुई उसका कारण राजनीतिक था। किन्तु फिर भी इस प्रकार के हत्याकाण्ड का समस्त समकालीनों ने विरोध किया और कड़े शब्दों में इसकी निन्दा की[१]। ईसाई मिशनरी के समकालीन प्रमुख नेता डा० अलेक्जेण्डर डफ लिखते हैं कि मिशनरियों के विषय में सभी प्रकार के भ्रम का खण्डन करने के लिए यह बात निश्चयपूर्वक ध्यान में रखनी चाहिये कि विद्रोहियों ने किसी स्थान पर भी इनके प्रति विशेष शत्रुता अथवा विरोध-भाव प्रकट नहीं किया। वे इससे बहुत दूर थे। जो लोग उनके मार्ग में आ गये उनके प्रति उसी प्रकार का व्यवहार किया गया जिस प्रकार अन्य यूरोपियनों से। वे शासक-वर्ग से सम्बन्धित थे अतः उनका विनाश होना ही था ताकि देशी मुसलमान राजाओं के लिए मार्ग साफ हो जाय। इसी उद्देश्य में देशी ईसाइयों, उनके मित्रों तथा उन लोगों का विनाश हुआ जिनके विषय में यह समझा जाता था कि वे अंग्रेजी शासन के मित्र होंगे।.......संक्षिप्त में मेरा विश्वास है कि यह भयंकर विद्रोह मुख्यतः राजनीतिक तथा अप्रधान रूप से धार्मिक था[२]।

---

१. **सौरतुल हिन्दिया** पृ०. ३६० ।

२. जार्ज स्मिथ **"दि लाइफ आफ अलेक्जेंडर डफ"** भाग २ (लंदन) पृ० ३५१-३५२।

अध्याय ३

शासन-प्रबन्ध

प्रारम्भिक शासन-प्रबन्ध

बादशाह के लिए सर्वप्रथम शान्ति स्थापित करना तथा नगरवासियों को सान्त्वना देना परमावश्यक था। यद्यपि सैनिकों ने अपने प्रयत्न तथा अनुशासन से दुकानें खुलवा ली थीं किन्तु बादशाह ने अपनी ओर से सभी का तुष्टीकरण अनिवार्य समझकर १२ मई को मिर्जा मुगल को आदेश दिया कि तिलंगों की एक कम्पनी ले जाकर लूट-मार करनेवालों की रोक-थाम करो। मिर्जा मुगल हाथी के ऊपर सवार होकर कोतवाली चबूतरे पर पहुँचा और नगर में ढिंढोरा पिटवा दिया कि "जो कोई लूटेगा उसकी नाक काटी जायेगी और जो कोई अपनी दूकान नहीं खोलेगा और रसद आदि सैनिकों को न देगा उसे दण्ड दिया जायेगा।" तत्पश्चात् बादशाह स्वयं बाजार की दूकानें खुलवाने के लिए हाथी पर सवार हुआ। उसके साथ तिलंगों की दो पल्टनें और कुछ तोपें थीं। बादशाह ने मिर्जा जवाँबख़्त को अपने साथ बिठाया और चाँदनी चौक के बाजार के मध्य में पहुँचकर दुकानदारों को दुकानें खोलने तथा सेना को रसद आदि देने का आदेश दिया।[१]

---

१. **प्रेस लिस्ट** ३९ पृ० २ ब, ३ अ : **जीवनलाल** पृ० ८६। जीवनलाल ने लिखा है कि बादशाह के आदेशों का पालन भली भाँति नहीं हुआ किन्तु उपर्युक्त डायरी में इसका उल्लेख नहीं। जकाउल्लाह ने जीवनलाल के आधार तथा अपनी सूचना के अनुसार इस घटना का उल्लेख इस प्रकार किया है। 'उसकी सवारी के आगे मामूली जुलूस था। सैकड़ों तिलंगे धोती बाँधे हुए और अपनी पतकियाँ कंधों पर धरे हुए बादशाह की सवारी के हाथी के आगे सारे बाजार में बहादुरशाह की जय पुकारते जाते थे और उसको दीन-दुनिया का गुसैयाँ कहते जाते थे।" (**तारीख उरूजे** अहदे **सल्तनते इंग्लिशिया** पृ० ६६२)

१२ मई को ही उसने शहर के कुछ मोदियों को आदेश दे दिया कि वे ५०० रु० का हर रोज आटा, दाल, चना आदि पाँचों पल्टनों तथा तुर्क सवारों के रिसाले को पहुँचाते रहें। मिर्जा अमीनुद्दीन खाँ को नगर का सूबेदार नियुक्त किया और आदेश दिया कि वह कोतवाली चबूतरे पर पहुँच जाय और प्रजा को लूट-मार न करने दे। उसके साथ एक सेना कर दी। पल्टनों के सूबेदारों को बुलाकर बादशाह ने आदेश दिया कि एक-एक कम्पनी नगर के समस्त १२ द्वारों पर भेज दो। मुझे यह पसन्द नहीं कि प्रजा को लूटा जाय।[1] १३ मई को मिर्जा अमीनुद्दीन खाँ ने नगर में ढिंढोरा पिटवा दिया कि जिस किसी को नौकरी करनी हो, वह सशस्त्र होकर उपस्थित हो। उसने प्रबन्ध हेतु २०० सिपाही नौकर रक्खे। बादशाह ने उसी दिन तिलंगों की प्रत्येक पल्टन को चार-चार सौ रु० भोजन के लिए प्रदान किये और चौधरियों तथा बनियों को आदेश दिया कि अनाज का मूल्य ठीक करके अनाज की कोठियाँ खुलवाकर बेचना प्रारम्भ कर दें। उसी दिन शहर के दो प्रसिद्ध दुष्ट गामी खाँ तथा सरफराज खाँ बन्दी बना लिये गये।

१४ मई को बादशाह ने दीवानी तथा फौजदारी अदालतों का प्रबन्ध करना निश्चय किया। मौलवी सद्रुद्दीन खाँ को आदेश हुआ कि वह दीवानी तथा फौजदारी अदालतों का प्रबन्ध किया करें किन्तु मौलवी साहब ने क्षमा-याचना की। तत्पश्चात् सालिकराम खजानची को बुलवाकर पूछा गया कि "बड़े खजाने में कितना धन है?" उसने उत्तर दिया कि "मुझे ज्ञात नहीं।" बादशाह ने उसे आदेश दिया कि वह अपना एक एजेंट खजाने पर भेज दे। उसी दिन नवाब अब्दुर्रहमान खाँ झज्झर के अधिकारी, बहादुरजंग खाँ दादरी के अधिकारी, अकबरअली खाँ पटौदी के अधिकारी, नाहरसिंह बल्लभगढ़ के अधिकारी, हसनअली खाँ दुजाने के अधिकारी तथा नवाब अहमदअली खाँ फर्रुखनगर के अधिकारी को बादशाह की ओर से आदेश भेजा गया कि वे शीघ्र सेवा में उपस्थित हों। यह पता चला कि चंद्रावली के गूजरों ने रात्रि में सब्जीमंडी की दुकानों, तेलीबाड़ा तथा मदरसा नवाब सफदर जंग लूट लिया।

बादशाह ने मिर्जा अबू बक्र को आदेश दिया कि तुम गूजरों का प्रबन्ध करो। मिर्जा तुर्क सवारों को लेकर पहुँच गया और तोपें लगा दीं। गूजर गाँव छोड़कर भाग गये।

---

१. **प्रेस लिस्ट**, ३९, पृ० २।

मिर्ज़ा अमीनुद्दीन खाँ तथा मिर्ज़ा जियाउद्दीन खाँ को आदेश हुआ कि तुम लोग परगना झरका फ़ीरोजपुर तथा जिला गुड़गाँवा का प्रबन्ध करो।[१] १६ मई को पटियाला, जयपुर, अलवर, जोधपुर, कोटा, बूंदी, मालियर कोटला तथा फ़रीद कोटला के राजाओं को आदेश भेजा गया कि वे तुरन्त उसकी सेवा में उपस्थित हों।[२] गूजरों तथा मेवातियों की लूट-मार को रोकने के लिए प्रबन्ध का प्रयत्न किया गया और मालागढ़ के अधिकारी वलीदाद खाँ को विशेष रूप से गूजरों का प्रबन्ध करने का आदेश दिया गया।[३]

उस समय बादशाह के पास योग्य अधिकारियों की बड़ी कमी थी। जिन लोगों को वह अधिकार प्रदान करता वे या तो अंग्रेजों के गुप्तचर सिद्ध होते या पूर्णतः अयोग्य। सर्वप्रथम खदंगे गदर का लेखक मुईनुद्दीन हसन खाँ कोतवाल नियुक्त हुआ। वह दो-एक दिन ही में अत्याचार के कारण पदच्युत हुआ।[४] तत्पश्चात् काजी फैजुल्लाह १५ मई को कोतवाल नियुक्त हुआ;[५] किन्तु उसने भी त्यागपत्र दे दिया और सैयिद मुबारकशाह रामपुर-निवासी कोतवाल नियुक्त हुआ। क्रान्ति के अन्त तक वही कोतवाल रहा।[६]

नजफगढ़, महरोली, शाहदरा, पहाड़गंज, बद्रपुर जहाँ-जहाँ थाने थे, वहाँ थानेदार नियुक्त हुए[७] किन्तु उन लोगों में योग्य तथा बादशाह के हितैषी बहुत कम थे।[८] मौलवी मुहम्मद बाकर, जो एक मुद्रणालय के स्वामी थे, प्रारम्भ में समस्त कार्यों के लिए अपनी सेवाएँ प्रस्तुत करते थे किन्तु वे भी अंग्रेजों के हितैषी थे। शाहजादों में से मिर्ज़ा अबू बक्र को बादशाह ने १५ मई को ही पदच्युत कर दिया।[९] १७ मई को मिर्ज़ा

---

१. **प्रेस लिस्ट** नं० ३९ पृ० ३ ब, ४ अ।

२. **प्रेस लिस्ट** नं० ३९ पृ० ६ अ। इनके अतिरिक्त भी अन्य लोगों को पत्र लिखे गये।

३. **प्रेस लिस्ट** नं० ३९ पृ० ५ ब

४. **तारीखे उरूजे अहदे सल्तनते इंग्लिशिया** पृ० ६८८।

५. **प्रेस लिस्ट** नं० ३९ पृ० ४ ब।

६. **तारीखे उरूजे अहदे सल्तनते इंग्लिशिया** पृ० ६८८।

७. **तारीखे उरूजे अहदे सल्तनते इंग्लिशिया** पृ० ६८९।

८. **प्रेस लिस्ट** नं० ३९ पृ० ५ ब।

९. **प्रेस लिस्ट** नं० ३९ पृ० ४ अ।

मुगल का एक सेवक अंग्रेजों को समाचार पहुँचाने के अपराध में पकड़ा गया किन्तु मिर्जा के आदेशानुसार वह छोड़ दिया गया।[1] बादशाह स्वयं वयोवृद्ध हो चुका था और योग्य अधिकारियों के बिना सफलता मिलनी असम्भव थी। उसके परामर्शदाता उससे विश्वासघात करते थे किन्तु इस अल्प समय में राष्ट्र के हित के लिए जो योजनाएँ उसने बनाई तथा जो आदेश उसने दिये वे सर्वदा स्मरणीय तथा प्रशंसनीय रहेंगे।

बादशाह की ओर से प्रजा को आश्वासन

८ जून १८५७ ई० को दूरबीन नामक समाचार-पत्र तथा १० जून १८५७ ई० को सुल्तानुल अखबार नामक समाचार-पत्र में बहादुरशाह के शासन की ओर से एक घोषणा-पत्र छापा गया जो सम्भवतः सिंहासनारूढ़ होने के कुछ ही दिन उपरान्त प्रकाशित कराया गया होगा। घोषणापत्र इस प्रकार था—

समस्त हिन्दुओं तथा मुसलमानों और देहली एवं मेरठ के अंग्रेजी शासन के कर्मचारियों और अधिकारियों को ज्ञात होना चाहिये कि समस्त यूरोपियन इस बात पर संघटित हैं कि सबसे पहले सेना को धर्म से वंचित कर दिया जाय, तत्पश्चात् समस्त प्रजा को जबर्दस्ती ईसाई बनाया जाय। वास्तव में गवर्नर जनरल का यह आदेश है कि गाय तथा सूअर की चर्बी के बने हुए कारतूस सेना को दिये जायँ। यदि १० हजार व्यक्ति तक इसका विरोध करें तो उन्हें तोप से उड़ा दिया जाय। यदि ५० हजार व्यक्ति विरोध करें तो सेनाएँ भंग कर दी जायँ।

इस बात को दृष्टि में रखते हुए हमने धर्म की रक्षा हेतु प्रजा को संघटित किया है और इस स्थान के किसी भी काफिर (अंग्रेज) को जीवित नहीं छोड़ा है और देहली के बादशाह को इस बात पर तैयार कर लिया है कि जो सेना भी समस्त यूरोपियन अधिकारियों की हत्या करके उसकी अधीनता स्वीकार कर लेगी उसे दुगुना वेतन दिया जायगा।[2] सैकड़ों तोपें और अपार धन-सम्पत्ति प्राप्त हो चुकी

१. **प्रेस लिस्ट** नं० ३९ पृ० ५ ब।

२. लखनऊ में वाजिदअली शाह के राज्य के अपहरण के उपरान्त क्रान्तिकारियों ने सैनिकों को संघटित करने के लिए इसी प्रकार का आश्वासन दिया था। (**रेड पैम्फलेट** पृ० ३०)।

है। यह आशा की जाती है कि जो ईसाई नहीं होना चाहता, वह सेना का साथ दे, साहस से कार्य करे और किसी स्थान पर भी शैतान (अंग्रेजों) का कोई चिह्न शेष न रहने दे।

प्रजा में से जिस किसी को भी सेना के लिए जो कुछ भी खर्च करना पड़े उसकी वह उस सेना के अधिकारी से रसीद प्राप्त कर ले और उसे अपने पास सुरक्षित रखे। उसे उसके बदले में बादशाह की ओर से दुगुना धन दिया जायगा........।

समस्त हिन्दुओं और मुसलमानों के लिए आवश्यक है कि वे इस संघर्ष में दिलोजान से एक हो जायँ और अपनी रक्षा का उस स्थान के किसी योग्य व्यक्ति के नेतृत्व में प्रबन्ध कर लें। यदि वह प्रबन्ध अच्छा होगा और जिस किसी के द्वारा भी किया जायगा, उसे उस स्थान पर उच्च पद प्रदान होगा।

इस घोषणापत्र की प्रतिलिपियाँ प्रत्येक स्थान में प्रसारित की जायँ और इस कार्य को युद्ध करने से कम महत्त्व का न समझा जाय। घोषणा-पत्र मुख्य स्थानों पर चिपका दिया जाय ताकि समस्त हिन्दू तथा मुसलमान इस विषय में ज्ञान प्राप्त करके तैयार हो जायँ। यदि इस समय कोई काफिर (अंग्रेज) नरमी का प्रदर्शन करता है तो केवल इस आशा से कि वह अपने प्राणों की रँक्षा करना चाहता है। जो कोई भी उसके जाल में फँस जायेगा, उसे पछताना होगा। हमारा राज्य स्थापित रहेगा। देहली में जो नयी सेना भरती की जायेगी उसमें ३० रुपये एक अश्वारोही को और १० रुपये एक पदाती को प्रदान किये जायँगे।[१]

केवल धर्म के नाम पर ही लोगों को संघटित करने का प्रयत्न नहीं किया गया अपितु प्रजा को सुख-सम्पन्नता का भी आश्वासन दिलाया गया। देहली उर्दू अखबार में भारतीयों की आर्थिक दशा में परिवर्तन की इस प्रकार आशा प्रकट की गई--

"अंग्रेजों के राज्य में समस्त बड़े-बड़े पद, जिनमें अधिक की कोई सीमा नहीं, कम से कम सैकड़ों रुपया मासिक (वेतन) वाले सब आपस में अपने रंगवालों को दिये

१. **बंगाल हरकारू** तथा **इंडिया गजट**, १३ जून, १८५७ ई० पृ० ५५८; **दूरबीन** ८ जून १८५७ तथा **सुल्तानुल अखबार** १० जून १८५७ से अनूदित।

जाते थे, जैसा कि प्रसिद्ध है "अंधा बाँटे रेवड़ियाँ, फिर-फिर अपने को दे"। यह धन वे बड़ी कंजूसी से व्यय करते थे। हजारों और लाखों रुपये बचाते थे और अपने देश को ले जाते थे। उनका धन किसी प्रकार हमारे भारतवर्ष में न फैलता था और न उससे हमें कुछ लाभ होता था। जिन भारतीयों को सेवा प्राप्त होती थी, उनमें से बहुत थोड़े से १०० रुपया वेतन पाते थे। अब ईश्वर ने चाहा तो शीघ्र ही जिलों का प्रबन्ध होगा। तुम देखना कि इतने इलाके होंगे कि विद्वान् तथा योग्य लोग ढूंढ़ने पर भी न मिलेंगे। नया राज्य अभी-अभी स्थापित हुआ है अतः इसमें कुछ दिनों तुम्हारे लिए कठिनाई है।[२]

समाचारपत्र की यही आशाएं बहादुरशाह के २५ अगस्त १८५७ ई० के घोषणा-पत्र में भी व्यक्त की गयी हैं।

जमींदारों, सैनिकों तथा शिल्पकारों को आश्वासन

जमींदार

यह बात सभी लोगों को ज्ञात है कि ब्रिटिश सरकार ने बन्दोबस्त करते समय जमींदारों के ऊपर बहुत भारी मालगुजारी लाद दी है और बहुत-से जमींदारों को, उनकी मालगुजारी शेष रह जाने पर, उनकी जमीन नीलाम करके नष्ट कर दिया है। यहाँ तक कि किसी साधारण प्रजा, नौकरानी अथवा दास के अभियोग चलाने पर सम्मानित जमींदारों को न्यायालय में बुलवाया जाता है और उनको बन्दी बनाकर बन्दीगृह में अपमानित करके डाल दिया जाता है। जमींदारों को मुकदमों में टिकटों के ऊपर अत्यधिक धन व्यय करना पड़ता है। इसके साथ ही इन समस्त कार्यों में बड़ी धूर्तता का व्यवहार किया जाता है। एक-एक मुकदमा वर्षों तक चलता रहता है और मुकदमेबाज दीन तथा दरिद्र हो जाता है। इसके अतिरिक्त जमींदारों से प्रत्येक वर्ष पाठशालाओं, चिकित्सालयों तथा मार्गों के लिए चंदा लिया जाता है। बादशाह के राज्य-काल में इस प्रकार से धन प्राप्त न किया जायगा। इसके विपरीत मालगुजारी बहुत कम होगी और जमींदारों के सम्मान की रक्षा की जायगी और उन्हें अपनी जमींदारी का पूर्ण अधिकार प्राप्त होगा।

---

२. **देहली उर्दू अखबार**, २१ जून १८५७ ई० पृ० ३।

सैनिक

अंग्रेजों की सेना में भारतीयों को अपने जीवन का बहुत बड़ा भाग सेवा में व्यतीत कर लेने के उपरान्त अधिक से अधिक सूबेदार का पद प्राप्त हो जाता था जिसका वेतन ६० या ७० रुपये प्रतिमास होता था। सेना के अतिरिक्त अन्य सेवाओं में अधिक से अधिक ५०० रुपये प्रतिमास का सदरआला का पद प्राप्त हो सकता था किन्तु न तो उन्हें कोई अधिकार प्राप्त होता था और न उन्हें किसी प्रकार की जागीर अथवा उपहार मिलते थे। बादशाही राज्य में कर्नल, जनरल, कमाण्डर-इन-चीफ के पद के समान, जो इस समय अंग्रेजों को प्राप्त हैं, भारतीयों को पंजसदी, पंजहजारी, हफ्तहजारी तथा सिपहसालारी के पद प्रदान किये जायंगे। अन्य सेवाओं में कलक्टर, मजिस्ट्रेट, जज, सदर जज, सिक्रेटरी तथा गवर्नर के पद, जो आजकल यूरोपियनों को प्रदान किये जाते हैं, उन्हीं के समान भारतीयों को वजीर, काजी, सफीर, सूबा, नाजिम तथा दीवान के पद प्रदान किये जायँगे। उन्हें लाखों रुपयों का वेतन प्राप्त होगा और जागीर, खिलअत, इनाम तथा अधिकार प्रदान होगा।

शिल्पकार

यह सभी लोग जानते हैं कि यूरोपियनों द्वारा भारतवर्ष में अंग्रेजी चीजों के व्यापार से बुनाई करनेवालों, बढ़ई, लोहारों तथा मोचियों का व्यापार समाप्त हो चुका है और किसी के पास कोई कार्य नहीं रहा है। फलतः प्रायः प्रत्येक कारीगर भीख माँगने के लिए विवश हो गया है किन्तु बादशाह के राज्य में केवल भारतीय कारीगरों को ही सेवाएँ प्रदान की जायँगी और बादशाहों, राजाओं तथा धनी लोगों की सेवा करने के कारण वे अवश्य ही धन-धान्य-सम्पन्न हो जायँगे।

बहादुरशाह के २५ अगस्त, १८५७ ई० के इस घोषणा-पत्र पर टिप्पणी करते हुए फ्रेंड आफ इंडिया नामक समाचार-पत्र ने लिखा कि यह पहला पत्र है जिसमें भारतीयों की शिकायतों का उल्लेख है और धर्म के अतिरिक्त अन्य बातों की ओर ध्यान दिलाकर जनता को उत्तेजित किया गया है। इसमें प्रत्येक वर्ग की चर्चा की गई है और उनके कष्ट दूर करने का आश्वासन दिलाते हुए पुराने राज्य के विरुद्ध युद्ध

करने के लिए प्रेरित किया गया है। यह बात कदापि स्वीकार नहीं की जा सकती कि इस प्रकार का घोषणा-पत्र बिना किसी अधिकार के प्रकाशित हो।[1]

कोर्ट

सर विलियम हावर्ड रसल "टाइम्स" का विशेष संवाददाता क्रान्ति के विषय में लिखता है कि 'वह ऐसा युद्ध था जिसमें लोग अपने धर्म के नाम पर, अपनी कौम के नाम पर, बदला लेने के लिए और अपनी आशाओं को पूरा करने के लिए उठे थे। उस युद्ध में समस्त राष्ट्र ने अपने ऊपर से विदेशियों का जूआ उतार फेंककर उसके स्थान पर देशी नरेशों की पूर्ण सत्ता और देशी धर्मों का पूर्ण अधिकार पुनः स्थापित करने का संकल्प कर लिया था।'[2]

मेरठ से क्रान्तिकारियों ने देहली पहुँचकर बहादुरशाह को सिंहासनारूढ़ कर दिया किन्तु यह मुगल साम्राज्य का पुनरुत्थान न था। मुगल राज्य तो कब का समाप्त हो चुका था। अकबर ने जो स्वप्न देखा था वह तो पूर्ण रूप से सफल न हो सका था किन्तु भारतीय राष्ट्र की नींव जिस प्रकार उसने दृढ़ कर दी थी उसको समय के कुचक्र द्वारा भी धक्का न पहुँच सका था। हिन्दुओं तथा मुसलमानों को एक करके भारतीय राष्ट्र की नींव १५ वीं तथा १६ वीं शताब्दी ईसवी के साधुओं, संतों तथा सूफियों ने रखी थी, उसे कौन धक्का पहुँचा सकता था? इस कृषि को दारा शिकोह तथा उसके साथियों ने अपने रक्त से सींचकर अमर बना दिया था। साम्प्रदायिकता राष्ट्रीय भावनाओं से टकराती रही, उसे दबाती रही, उसकी पराजय की चेष्टा करती रही किन्तु जब जब समय मिलता यही अजेय रहती। मेरठ के मुट्ठी भर सिपाहियों ने इसका बिगुल ११ मई १८५७ ई० को देहली पहुँचकर बजा दिया। नाना साहब तथा उसके समस्त सहयोगियों का समर्थन इसे पहिले से ही प्राप्त था। देहली के निवासियों ने इसका स्वागत किया और बहादुरशाह बादशाह घोषित कर दिया गया। बहादुरशाह प्रारम्भ ही से जानता था कि जो उत्तरदायित्व उसको सौंपा गया है वह सरल नहीं। उसके विचार तथा

१. **फ्रेंड आफ इंडिया**, ७ अक्तूबर १८५७ पृ० ९३९।
२. डब्लू० एच० रसल, **माई डायरी इन इंडिया** पृ० १६४।

उसकी भावनाएँ शाहजादों तथा अन्य दरबारियों से, जो समझते थे कि "घर बैठे बिठाये राज्य आ गया", पूर्णतः पृथक् थीं। अंग्रेजों से युद्ध की कठिनाइयाँ तो थीं ही, सबसे बड़ी कठिनाई नये शासन-प्रबन्ध तथा शान्ति स्थापित करने की थी। कुछ लोगों का पूर्ण विश्वास था कि अंग्रेजों का राज्य अजेय है और वे समझते थे कि अंग्रेजी शासन शीघ्र पुनः स्थापित हो जायगा। वे अंग्रेजों से मिलकर षड्यंत्र रचते, उनको समाचार पहुँचाते तथा नाना प्रकार की अफवाहें उड़ाते थे। बहादुरशाह को भली भाँति ज्ञात था कि नया राज्य जनता द्वारा स्थापित हुआ है और जनता ही इसे चला सकती है। नये राज्य का ढाँचा मुगलों के प्राचीन केन्द्रीय तथा प्रान्तीय शासन से भिन्न दूसरे ही ढंग का होना चाहिये जिसमें शासन का भार जनता पर हो।

इस उद्देश्य से उसने एक कोर्ट आफ ऐडमिनिस्ट्रेशन अर्थात् 'जल्सये इन्तिजामे फौजी व मुल्की' (सेना तथा राज्य की प्रबन्धकारिणी समिति) की स्थापना कराई जिसमें सेना तथा सिविल दोनों विभागों के अध्यक्ष सदस्य के रूप में नियुक्त किये जाते थे। राज्य का सर्वोच्च अधिकारी बादशाह था। युद्ध के समय शासन-प्रबन्ध में सेनावालों को प्रधानता देना आवश्यक था अतः इस कोर्ट में भी बहुमत सेनावालों का था। सदस्यों को नियुक्ति के समय ईमानदारी तथा परिश्रम से कार्य करने की शपथ लेनी पड़ती थी। कोर्ट के सदस्य विभागों द्वारा चुने जाते थे और अनुभव के साथ योग्यता तथा कार्यकुशलता को अधिक महत्त्व दिया जाता था। कोर्ट के प्रस्ताव लोकतन्त्रवादी ढंग से प्रस्तुत किये जाते थे और सदस्यों को अपने विचार प्रकट करने तथा प्रस्ताव में संशोधन करने की पूर्ण स्वतन्त्रता थी।

कोर्ट का संविधान

"विभागों में अनुशासनहीनता तथा सेना एवं राज्य के कुशासन के निवारण हेतु एक संविधान का निश्चित होना तथा संविधान के संचालन हेतु जिसमें सुशासन में सुविधा हो एक कोर्ट की नियुक्ति आवश्यक है। उसके लिये निम्नांकित नियम निश्चित किये जाते हैं--

(१) एक कोर्ट स्थापित किया जाय और उसका नाम "कोर्ट आफ ऐडमिनिस्ट्रेशन" अर्थात् जलसये इन्तिजामे फौजी व मुल्की (सेना तथा राज्य की प्रबन्धकारिणी समिति) रखा जाय।

(२) इस समिति में दस व्यक्ति (सदस्य) नियुक्त किये जायें। इनमें से छः सेना से तथा चार मुल्की प्रशासन से। सेना में से दो पदातियों की पल्टन से, दो सवारों के रिसालों से और दो तोपखाने के विभाग से चुने जायें।

(३) इन सब लोगों में से एक सर्व सम्मति से "प्रेसीडेन्ट" अर्थात् सद्रे जलसा (सभापति) तथा एक व्यक्ति वाइस प्रेसीडेन्ट अर्थात् नायब सद्रे जलसा (उपसभापति) नियुक्त हो। सद्रे जलसा (सभापति) का मत दो मतों के बराबर समझा जायेगा। प्रत्येक विभाग में आवश्यकतानुसार सिकत्तर (सचिव) नियुक्त किये जायें।

(४) उन व्यक्तियों की नियुक्ति के समय इन बातों की शपथ ली जाय। 'काम लेंगे दियानत और अमानत से बिला रू-रियायत पूर्ण परिश्रम तथा ग़ौर व फिक्र से, शासन-प्रबन्ध सम्बन्धी बातों की पूर्ति में लेश मात्र भी कोई बात उठा न रखेंगे। किसी बहाने से अथवा खुल्लमखुल्ला किसी के साथ किसी प्रकार का पक्षपात तथा किसी तरह की रियायत कोर्ट के कार्यों का संचालन करते समय न करेंगे, अपितु सर्वदा इस बात का प्रयत्न करते रहेंगे और शासन-प्रबन्ध से सम्बन्धित ऐसे कार्यों के संचालन में संलग्न रहेंगे जिनसे राज्य को दृढ़ता तथा प्रजा को सुख एवं शान्ति प्राप्त हो।'

(५) कोर्ट के सदस्यों का चुनाव इस प्रकार होगा। बहुमत से दो सदस्य पदातियों की पल्टन से, दो सदस्य सवारों की पल्टन से, और दो तोपखाने के विभाग से। ये लोग ऐसे व्यक्ति होंगे जो दीर्घकाल से सेवा कर रहे हों, होशियार, अनुभवी तथा योग्य हों। यदि कोई ऐसा व्यक्ति हो जो बड़ा होशियार, बुद्धिमान्, समझदार तथा कोर्ट का कार्य करने योग्य हो और अधिक समय से कार्य करने की शर्त उसमें न पाई जाती हो तो ऐसी दशा में उसे कोर्ट का सदस्य नियुक्त होने से वंचित न किया जा सकेगा। इसी प्रकार राज्य से चार सदस्यों की नियुक्ति की जायेगी।

(६) दस सदस्यों के नियुक्त हो जाने के उपरान्त यदि कोर्ट की प्रबन्धकारिणी समिति की साधारण बैठक में कोई किसी कार्य के सम्बन्ध में दयानत तथा अमानत के विरुद्ध मत दे अथवा किसी का पक्षपात करते हुए मत दे तो उसे कोर्ट के बहुमत से पृथक् किया जायेगा और धारा ५ के अनुसार उसके स्थान पर दूसरा सदस्य नियुक्त किया जायेगा। शासन-प्रबन्ध सम्बन्धी जो कार्य आयेंगे सर्व-

प्रथम वे कोर्ट में स्वीकार होंगे और साहब आलम[1] बहादुर की स्वीकृति के पश्चात् कोर्ट के मत की सूचना के साथ बादशाह की सेवा में प्रस्तुत होते रहेंगे।

(७) शासन-प्रबन्ध सम्बन्धी कार्य कोर्ट में बहुमत से स्वीकार होने के पश्चात् हुजूर साहब आलम बहादुर की सेवा में प्रस्तुत होंगे। कोर्ट साहब आलम बहादुर के अधीन रहेगा। युद्ध तथा राज्य सम्बन्धी कोई कार्य कोर्ट के प्रस्ताव तथा साहब आलम की स्वीकृति एवं बादशाह को सूचना दिये बिना लागू न हो सकेगा। साहब आलम बहादुर तथा कोर्ट की राय में विरोध होने की दशा में कोर्ट के प्रस्ताव के पश्चात् वह प्रस्ताव साहब आलम द्वारा बादशाह की सेवा में प्रस्तुत होगा और बादशाह का आदेश मान्य होगा।

(८) कोर्ट की बैठक में उपर्युक्त सदस्यों, साहब आलम बहादुर तथा बादशाह के अतिरिक्त कोई अन्य व्यक्ति सम्मिलित तथा उपस्थित न हो सकेगा। जब कोर्ट के सदस्यों में से कोई सदस्य किसी उचित तथा स्वीकृति-योग्य कारण से कोर्ट की बैठक में उपस्थित न हो सकेगा तो जो लोग कोर्ट में उपस्थित हैं उनका बहुमत समस्त कोर्ट के मत के समान समझा जायेगा।

(९) जब कोई सदस्य बिना किसी कारण के अपना प्रस्ताव कोर्ट में प्रस्तुत करना चाहे तो वह सर्वप्रथम दूसरे सदस्य से उसका समर्थन कराये। तत्पश्चात् वह अपना प्रस्ताव दो सदस्यों की पुष्टि से प्रस्तुत करे।

(१०) जिस समय कोर्ट में कोई प्रस्ताव धारा ९ के अनुसार प्रस्तुत हो तो सर्वप्रथम प्रस्तुत करनेवाला कोर्ट में अपना वक्तव्य देगा। जब तक उसका वक्तव्य समाप्त न हो कोई सदस्य उसमें हस्तक्षेप न करे। कोर्ट के सदस्यों में यदि किसी को कुछ विरोध करना हो तो सर्वप्रथम अपना विरोध प्रकट करे। जब तक वह अपना वक्तव्य समाप्त न कर ले, कोई उसमें हस्तक्षेप न करे। यदि कोई तीसरा सदस्य उसमें संशोधन सम्बन्धी अथवा कमी-बेशी के लिए भाषण दे और कोर्ट वाले मौन रहें तो कोर्ट के सदस्यों में से प्रत्येक अपना पृथक् मत उसके अवलोकन के उपरान्त देगा और धारा ८ के अनुसार उसका पालन होगा। स्वीकृति के उपरान्त उसे प्रत्येक विभाग के सचिव के पास भेज दिया जायेगा।

१. सम्भवतः मिर्जा मुगल।

(११) सेना के प्रत्येक विभाग से जो लोग धारा २ के अनुसार चुने जायँ वही लोग उस विभाग के प्रबन्धक तथा आयोजक नियुक्त किये जायँ और उनके अधीन चार सदस्यों की एक कमेटी धारा ४ के अनुसार नियुक्त की जाय और आवश्यकतानुसार इस कमेटी में सचिव नियुक्त किये जायँ और जो प्रस्ताव उस कमेटी में बहुमत से स्वीकार हों, वे प्रस्ताव उन्हीं सदस्यों के द्वारा, जो कमेटी के अफसर हैं, कोर्ट में प्रस्तुत किये जायँ और कोर्ट से धारा ७ के अनुसार कार्यान्वित कराये जायँ और यह नियम सेना तथा राज्य के प्रत्येक विभाग में लागू किया जाय।

(१२) कोर्ट को हर समय आवश्यकतानुसार इस संविधान की धाराओं में बहुमत से संशोधन का अधिकार दिया जाय।"[1]

निश्चित रूप से यह कहना कि इस कोर्ट की स्थापना कब हुई, कठिन है किन्तु जब जनरल बख्त खाँ बरेली से देहली पहुँचा तो कोर्ट की स्थापना हो चुकी थी और उसे इसका संचालन सौंप दिया गया था। सम्भवतः इसकी स्थापना मई में ही हो गई होगी। सामान्य रूप से दैनिक शासन-प्रबन्ध तथा सेना का समस्त कार्य कोर्ट के अधिकार में था। विशेष परिस्थितियों में बादशाह स्वयं आदेश देता था किन्तु कोर्ट से अवश्य परामर्श किया जाता था।

सेनापति के एक पत्र से पता चलता है कि प्रत्येक अधिकारी को आदेश दे दिया गया था कि वह अपने अधीनस्थ कर्मचारियों की पंजिका कोर्ट के समक्ष प्रस्तुत करे।[2] इस प्रकार कोर्ट का नियंत्रण सभी विभागों पर हो गया था किन्तु ऐसा ज्ञात होता है कि आरम्भ में बादशाह ने मालगुजारी तथा ऋण प्राप्त करने का कार्य अपने ही हाथ में रखा किन्तु बाद में यह कार्य भी कोर्ट को सौंप दिया गया।

कोर्ट द्वारा मालगुज़ारी का प्रबन्ध

८ जुलाई १८५७ ई० को बादशाह ने मिर्जा मुगल का ध्यान धन की न्यूनता तथा आय के अभाव की ओर आकर्षित करते हुए लिखा कि कोर्ट की बैठक शीघ्र बुलाकर उससे इस विषय में परामर्श करो और खजाने में धन एकत्र करने के सम्बन्ध में योजना बनवाकर कल हमारे समक्ष प्रस्तुत करो। १० जुलाई को कोर्ट के सदस्यों ने बादशाह की सेवा में इस बात पर निम्नांकित प्रस्ताव रखे--

---

१. **प्रेस लिस्ट** ५७ नं० ५३९-५४१।

२. **प्रेस लिस्ट,** ५७ नं० ५४६-५४७।

पहला उपाय—किसी महाजन से ब्याज पर ऋण लिया जाय और जब शान्ति स्थापित हो जाय तो ऋण ब्याज-सहित अदा कर दिया जाय।

दूसरा उपाय—१५०० पदाती, ५०० अश्वारोही तथा दो तोपें ग्रामों में पुलिस के थाने, मालगुजारी के कार्यालय तथा डाक का प्रबन्ध करने के लिए भेजी जायँ ताकि बादशाह के राज्य की स्थापना के विषय में लोगों को ज्ञान प्राप्त हो जाय। इस सेना को इस बात का अधिकार दिया जाय कि राज्य की मालगुजारी का धन जहाँ कहीं भी एकत्र हो उसे, अथवा जो स्वेच्छा से धन प्रदान करे उसे वह अपने अधिकार में कर ले। उन लोगों को भली भाँति चेतावनी दे दी जाय कि यदि वे लूट-मार अथवा अत्याचार करेंगे तो उन्हें कठोर दंड दिया जायगा।

हमारी प्रथम प्रार्थना यह है कि धन एकत्र करने के लिए उपर्युक्त लिखे हुए दोनों सुझाव स्वीकार कर लिये जायँ।

हमारी द्वितीय प्रार्थना यह है कि बादशाह के अमीरों में से किसी को जिसकी सत्यता के विषय में बादशाह को पूर्ण विश्वास हो, सेना के साथ इस आशय से भेजा जाय कि वह देश में सिविल प्रबन्ध स्थापित करे। हमारी तीसरी प्रार्थना यह है कि जो अमीर भेजा जाय उसे कोर्ट की ओर से भी यह चेतावनी दे दी जाय कि यदि वह बाहर जाकर किसी गरीब जमींदार अथवा मालगुजारी वसूल करनेवाले अधिकारियों के अधीन कर्मचारियों पर अत्याचार करेगा, घूस अथवा नजराना लेगा तो उसे कोर्ट के निर्णयानुसार दंड दिया जायेगा। जमींदारों के स्वामित्व के अधिकार का निम्नांकित प्रकार से निर्णय किया जाय—

प्रत्येक मुकदमे में यह देख लिया जाय कि वादी का नाम भूमि के स्वामित्व के सम्बन्ध में कानूनगो अथवा गाँव के पटवारी की पंजिकाओं में है अथवा नहीं। वादी पिछली मालगुजारी की रसीदें प्रस्तुत करे जिससे पता चल सके कि उसने मालगुजारी अदा कर दी है और यह प्रमाणित हो सके कि वह भूमि बन्दोबस्त में उसके नाम निर्धारित की गई है। उसके दस्तावेजों के निरीक्षण अथवा साक्षियों के प्रमाण पर, उदाहरणार्थ कानूनगो या पटवारी की पंजिकाओं से या उस स्थान के सम्मानित व्यक्तियों क कथन पर, वादी के वास्तविक जमींदार होने के प्रमाण मिल जायँ तो बन्दोबस्त उसके नाम समझा जायेगा, अन्यथा उस स्थान के किसी मुख्य आदमी तथा अनेक

मुख्य आदमियों के नाम पर जिनसे राजकीय कर्मचारी परिचित हों पूरे गाँव अथवा उसके किसी भाग का बन्दोबस्त कर दिया जायेगा। यदि बाद में कोई अन्य वादी उपस्थित हो जायेगा तो उसका प्रार्थना-पत्र ले लिया जायेगा और उस पर यह आदेश लिख दिया जायेगा कि अन्तिम निर्णय जाँच के उपरान्त होगा किन्तु सर्व-प्रथम उस व्यक्ति को लम्बरदार तथा गाँव की मालगुजारी का उत्तरदायी बनाया जायेगा जो इसके पूर्व यह कार्य कर चुका हो।

हमारी चौथी प्रार्थना यह है कि जो अमीर (अधिकारी) मालगुजारी का बन्दोबस्त करने के लिए नियुक्त किया जाय, वह पूर्ण रूप से इन आदेशों का पालन न करे तो जमींदार को इस बात का अधिकार होगा कि वह अपनी शिकायत कोर्ट के समक्ष प्रस्तुत करे। यदि पूर्ण जाँच के उपरान्त यह पता चला कि अमीर के आदेशों को उलट दिया जाय तो उन्हें रद्द कर दिया जायेगा और वास्तविक अधिकारी को उसका अधिकार प्रदान कर दिया जायेगा।

प्रार्थी—कोर्ट के सदस्य—ज्यु राम सूबेदार मेजर बहादुर, शिवराम मिश्र सूबेदार मेजर, तहनियत खाँ सूबेदार मेजर, हितराम सूबेदार मेजर, बेनीराम सूबेदार मेजर[१]।

बादशाह ने उनके सुझाव स्वीकार करते हुए कोर्ट को लिखा कि उत्साह तथा ईमानदारी से कार्य करना परमावश्यक है। तुम लोग काफिरों से युद्ध करके उन पर विजय प्राप्त करने का तथा नगर एवं प्रजा की रक्षा का उत्तम प्रवन्ध करो। तुम्हारे विरुद्ध किसी भी स्वार्थी दल का कोई प्रार्थना-पत्र न सुना जायेगा। कोर्ट के आदेशों में न तो शाही सेवक और न शाहजादे किसी प्रकार का हस्तक्षेप करेंगे। जो धन तुम नगर के व्यापारियों तथा प्रतिष्ठित व्यक्तियों से एकत्र करोगे वह कोर्ट में जमा होगा और सेना के वेतन तथा मैगजीन की आवश्यकताओं पर व्यय होगा। जब देहातों में मालगुजारी वसूल हो जाय तो सर्वप्रथम महाजनों का ऋण ब्याज-सहित चुका दिया जाय[२]। ३१ अगस्त १८५७ ई० को कोर्ट ने यह घोषणा करा दी कि शाहजादों को कोई धन न दिया जाय[३]।

---

१. ट्राएल पृ० ३९-४०।
२. ट्राएल पृ० ४३।
३. जीवनलाल पृ० २१५।

शाहजादों के हस्तक्षेप का विरोध

कोर्ट के सदस्य अपने कार्य-क्षेत्र में शाहजादों, अमीरों तथा अन्य शाही अधिकारियों का हस्तक्षेप भी पसन्द नहीं करते थे। उन्होंने अपने कार्य की सूचना देते हुए ९ अगस्त १८५७ ई० को बादशाह को लिखा कि "समस्त सेना के अधिकारी तथा कोर्ट के सदस्य हृदय से शासन-प्रबन्ध में संलग्न हो गये हैं। यहाँ से शहर के साहूकारों को बुलाने के लिए आदेश भेजे गये। इस प्रकार कुछ साहूकारों से ऋण लिया गया किन्तु इस समय चाँदनी चौक के थानेदार के पत्र तथा कोतवाल शहर की रिपोर्ट से ज्ञात हुआ है कि नवाब मुहम्मद हसन खाँ ने, जो मिर्जा खिज्र सुल्तान का कर्मचारी है, इस विषय में हस्तक्षेप किया है। शाही आदेश तथा कोर्ट के हुक्म के विरुद्ध साहूकारों आदि को जबर्दस्ती बन्दी बनाकर धन वसूल करता है। इस प्रकार वे पूर्णतः अव्यवस्था एवं प्रजा के विनाश का कारण बनते हैं अतः प्रार्थना की जाती है कि समस्त शाहजादों, अन्य बादशाही कर्मचारियों तथा कोतवाल शहर को आदेश दे दिया जाय कि वे कोर्ट के आदेशों में किसी प्रकार का हस्तक्षेप न करें। कोर्ट के अफसरों की भी यही प्रार्थना है और शाही आदेश भी है कि प्रजा पर किसी प्रकार का अत्याचार न हो।

प्रार्थी––समस्त कोर्ट के अफसर, २८ जिलहिज्जा (९ अगस्त १८५७ ई०)"[१]

कोर्ट के अधिकार-क्षेत्र में बादशाह का हस्तक्षेप न करना

बादशाह स्वयं कोर्ट के अधिकारक्षेत्र में हस्तक्षेप न करना चाहता था। देशी पैदल रेजीमेंट नं० ११ के अधिकारियों ने जनरल बख्त खाँ से महाबतसिंह के विषय में १६ जुलाई को शिकायत की कि वह पहरे पर सोता पाया गया और उसने अपना अपराध कोर्ट के समक्ष स्वीकार कर लिया है अतः उसके लिये दंड का निर्णय किया जाय। वह पत्र सम्भवतः बादशाह की सेवा में प्रस्तुत कर दिया गया। बादशाह ने आदेश दिया कि कोर्ट को हुक्म दिया जाता है कि "वह स्वयं दंड का निर्णय करे और तदनुसार दंड दे। उसका निर्णय स्वीकार किया जायेगा।"[२]

---

१. **प्रेस लिस्ट** ५७ नं० ३५२

१. **ट्राएल** पृ० ५५

३१ अगस्त को एक व्यापारी ने गंधक के अभाव तथा इस विषय में नबाब फर्रुखाबाद आदि को पत्र लिखने के सम्बन्ध में बादशाह से निवेदन किया तो बादशाह ने उत्तर दिया कि इस बात का उत्तरदायित्व कोर्ट पर है, अतः इसे कोर्ट ही से कहा जाय[1]। एक आदेश द्वारा पता चलता है कि बादशाह ने कोर्ट को हुक्म दिया कि सैनिक तथा महावत, शाही एवं शहर वालों के उद्यानों को हानि न पहुँचायें।[2] किन्तु बादशाह अधिकांश अपनी असुविधाएँ कोर्ट के समक्ष ही प्रस्तुत करता था। २२ जुलाई १८५७ ई० को उसने मिर्जा मुगल को लिखा कि 'इससे पूर्व कुछ अश्वारोही हयात बख्श तथा महताब बाग में निवास करने लगे थे। फिर शाही आदेशानुसार उन्हें इस कारण हटा दिया गया था कि बागों को हानि पहुँचती थी। अब नं० ५४ प्यादा रेजीमेंट के लगभग २०० सैनिक तथा एक डाक्टर सपरिवार वहाँ रहने लगे हैं। जब तक वे वहाँ से न हटेंगे तब तक पहले की भाँति हमारे बागों को हानि होती रहेगी। इसके अतिरिक्त जब हमारी सवारी उधर से निकलती है तो उस अवसर पर बड़ी कठिनाई होती है। अतः तुम कोर्ट के अधिकारियों से इस विषय पर बात करो और उन सैनिकों तथा डाक्टर को बाग से हटवा दो।"[3] जब सैनिकों ने हकीम एहसनुल्लाह की धन-सम्पत्ति लूट ली तो लूटनेवालों के दंड के विषय में बादशाह ने सब कुछ कोर्ट पर छोड़ दिया[4]। यद्यपि बादशाह हकीम का बहुत बड़ा पक्षपाती था और उसने हकीम के कारण राज्य त्याग देने की भी धमकी दी और उसे मुक्त करा लिया तथा उसकी धन-सम्पत्ति भी नष्ट न होने दी किन्तु उसने अपराधियों के दंड के विषय में हस्तक्षेप नहीं किया।

बादशाह के पास नियुक्तियों के सम्बन्ध में जो प्रार्थना-पत्र प्राप्त होते उनमें भी वह कोर्ट के सदस्यों से परामर्श करता था।

जमुनादास जमींदार मथुरा-निवासी ने १४ जुलाई १८५७ ई० को बादशाह को पत्र लिखा कि उसे देहली से मथुरा और वहाँ से आगरा तक का प्रबन्ध करने का फर्मान प्राप्त हो जाय क्योंकि वह मथुरा का निवासी है और पूरे जिले से भली

---

१. **जीवनलाल,** पृ० २१४-२१५।
२. **प्रेस लिस्ट,** ५७ नं० ५७३।
३. **ट्राएल** पृ० १७।
४. **ट्राएल** पृ० २२।

भाँति परिचित है अतः वह ईश्वर की दया से बादशाह के अधीन बड़ा उत्तम प्रबन्ध कर लेगा। वह उस जिले में २०० मनुष्यों से परिचित है जो बन्दूक चलाना जानते हैं। उसे केवल बादशाह के आदेश की आवश्यकता है। तदुपरान्त वह प्रत्येक नगर में देहली से मथुरा तक डाक तथा रसद आदि का प्रबन्ध कर लेगा। मथुरा पहुँचने के दसवें अथवा पन्द्रहवें दिन शाही खजाने में दस लाख रुपया राज्य के व्यय हेतु भेज देगा। कुछ सेना, बारूद, गोली तथा तोपखाना प्रदान हो जाय जिससे वह इस कार्य हेतु रवाना हो जाये। जिले में पहुँचते ही ईश्वर की कृपा से दास पर्याप्त रूप से प्रबन्ध कर लेगा और बादशाह का राज्य दृढ़तापूर्वक स्थापित हो जायेगा। बिना बादशाह की आज्ञा के कछ सम्भव नहीं। तदुपरान्त जो कुछ होगा वह बादशाह को ज्ञात हो जायेगा ।[१]

बादशाह ने इस प्रार्थना-पत्र पर कोई आदेश न दिया। उसे संदेह था कि कोई इतना बड़ा कार्य किस प्रकार कर सकता है। बादशाह को धन की आवश्यकता थी, सुप्रबन्ध की जरूरत थी किन्तु प्रत्येक व्यक्ति की प्रार्थना पर उसे पूर्ण अधिकार नहीं प्रदान किया जा सकता था। उसने मिर्जा मुगल को लिखा कि "सर्वप्रथम इस बात की खोज की जाय कि वह किस प्रकार अपनी योजना को सफल बनायेगा और जो बातें वह कहता है उन्हें किस प्रकार सिद्ध करेगा। तुम सेना के मुख्य अधिकारियों की एक बैठक कराओ और इस विषय में उनसे वार्तालाप तथा परामर्श करो। तदुपरान्त प्रत्येक बात के विषय मेंह में सविस्तार सूचना दो कि वह सम्भव है अथवा नहीं और जो कुछ वह कहता है उसमें उसे सफलता प्राप्त हो सकती है या नहीं। यदि वह सफल हो सकता है तो वह किस प्रकार कार्य करेगा। यह भी लिखा जाय कि सेना के अधिकारियों का इस विषय में क्या मत है। क्या उसमें इस कार्य की योग्यता भी है अथवा नहीं या वह केवल मनमाने ढंग से लूट-मार करेगा। उसकी योजना तथा साधन से सम्बन्धित सभी बातों की जाँच की जाये और पूर्ण विवरण भेजा जाये। तदुपरान्त आदेश दिया जायेगा।.........दूसरे उससे यह भी पूछा जाय कि क्या वह कहीं से १० लाख रुपया का भूमि में दबा हुआ खजाना खोदना चाहता है अथवा उसे किसी ऐसे खजाने का ज्ञान है जहाँ यह धन एकत्र है या वह किसी को लूटकर यह धन लाने का विचार रखता है ?[२]

१. ट्राएल पृ० १३।
२. ट्राएल पृ० १५।

जब मिर्जा मुगल, जनरल बख्त खाँ तथा अन्य मुख्य अधिकारियों के झगड़े बहुत बढ़ गये तो २३ अगस्त को बादशाह ने आदेश दे दिया कि अधिकारी वर्ग में से कोई भी कोर्ट के अतिरिक्त किसी की बात न सुने[१]।

सितम्बर के शंका, भय तथा नैराश्य से परिपूर्ण समय में कोर्ट ने बड़े उत्साह से कार्य किया और समस्त प्रजा का सहयोग प्राप्त करने का बड़ा प्रयत्न किया। ९ सितम्बर को कोर्ट ने कई आदेश निकाले जिनमें सेना के अधिकारियों को प्रोत्साहन देते हुए बादशाह की ओर से उन्हें पुरस्कृत किये जाने तथा उनकी संतान की पूर्णरूपेण देखभाल का आश्वासन दिलाया।[२] कोर्ट ने बादशाह से सैनिकों को इस प्रकार का आश्वासन दिलाने की प्रार्थना की क्योंकि अंग्रेज कुदसिया बाग पर आक्रमण की योजना बना रहे थे।[३] अंग्रेजों को अग्रसर होते हुए देखकर ११ सितम्बर १८५७ ई० को कोर्ट ने अफसरों तथा अन्य व्यक्तियों से आग्रह किया कि वे उनका मुकाबला करें।[४] १२ सितम्बर को कोर्ट ने ब्रिगेडियर मेजर को कश्मीरी दरवाजे के पहरे को दृढ़ बनाने का आदेश दिया।[५]

महाजनों की शिकायत

महाजन कोर्ट के प्रबन्ध से संतुष्ट न थे। सम्भवतः वे उसके द्वारा धन एकत्र करने का कार्य अधिक कठोर समझते थे और चाहते थे कि यह कार्य बादशाह द्वारा नियुक्त कर्मचारियों के अधीन हो जाय किन्तु बादशाह ने कोई उत्तर न दिया। उन्होंने लिखा कि बादशाह साहब, महाजनों से तथा धनी लोगों से यह कहते हैं कि हमको सेना के व्यय हेतु धन दो। जितना दोगे उससे सवाया हमसे ले लो और यदि इससे संतुष्ट नहीं होते तो हमसे इलाका लिखवा लो। महाजनों का उत्तर यह है कि हमने दो बार रुपया दिया। मालूम नहीं होता कि वह रुपया क्या हो गया और जो हमने इस विषय में छानबीन की तो पता चला कि वास्तव में जो रुपया जिसके हाथ

१. **जीवनलाल** पृ० २०५।
२. **प्रेस लिस्ट** ५७ नं० ४२६-२७, ४२९, ४३१, ४३३, ४३७, ४४३–४४४।
३. **प्रेस लिस्ट** ५७ नं० ४४५।
४. **प्रेस लिस्ट** ५७ नं० ४७०।
५. **प्रेस लिस्ट** ५७ नं० ४८९।

लगा वह उसे अपने अधिकार में ले आया और जो वास्तविक उद्देश्य था उसमें व्यय न किया गया अपितु अव्यवस्था का कारण बन गया। उन लोगों से यह भी नहीं होता कि यदि वे यह कार्य नहीं कर सकते तो दूसरों को आदेश दे दें कि वे उसका संचालन करें। यह कोर्ट इस कारण स्थापित नहीं हुआ है कि इसमें बैठकर खायें पियें; अपितु उद्देश्य यह है कि शासन-प्रबन्ध के लिए दिन-रात परिश्रम करते रहें। हमें संदेह है कि इस कोर्ट में कोई व्यक्ति अंग्रेजों की ओर से सम्मिलित है। इसी कारण कोई कार्य अथवा व्यवस्था ठीक नहीं होती। यदि इसी प्रकार की अव्यवस्था रहेगी तो किसी न किसी दिन ऐसा होगा कि सबकी हत्या हो जायगी और कुछ बस न चल सकेगा। यदि किसी के हृदय में यह दुर्भावना हो कि अंग्रेजों के अधिकार से हमें कोई हानि न होगी तो यह पूर्णतः असत्य है। वे दुष्ट (अंग्रेज) एक एक व्यक्ति के शत्रु हैं। हुजूर, यह जरूरी है कि चार व्यक्ति जो हम पर प्रबन्ध हेतु नियुक्त हुए हैं बुद्धिमान् तथा समझदार हों। उनको आप भी पसन्द करके आज्ञा दीजिये कि वे भली भाँति प्रबन्ध करें (सभी कार्यों का अर्थात् राज्य सम्बन्धी एवं सेना सम्बन्धी)। इनके अतिरिक्त किसी अन्य व्यक्ति का उसमें हस्तक्षेप न हो और हुजूर चैन तथा आराम से बैठे रहें, समस्त कार्य सम्पन्न होता रहेगा।[1]

बादशाह की सेवा में साधारण लोगों के सुझाव

साधारण लोग भी बादशाह तक राज्य के हित के लिए अपने सुझाव भेज सकते थे और बादशाह उचित सुझावों को स्वीकार भी करता था। २३ अगस्त १८५७ ई० को भवानी सिंह देसी प्यादा रेजीमेंट नं० ३३ ने बादशाह को लिखा कि "जिन लोगों को मैगजीन में सेवा प्रदान की जाय उनमें से प्रत्येक से उसके निवास-स्थान का पता पूछकर उस स्थान से उसके विषय में जाँच करा ली जाय अथवा उससे जमानत ले ली जाय। उसके विषय में पूर्ण विवरण तैयार किया जाय और उसको कार्यालय में रखा जाय। तत्पश्चात् उसे सेवा प्रदान की जाय। यदि इसी प्रकार सावधानी बर्ती जायेगी तो मैगजीन की रक्षा के सम्बन्ध में कोई भय नहीं। यदि बिना जाँच के लोग भर्ती कर लिये जायेंगे तो शत्रु के जासूस भी प्रविष्ट होकर अत्यधिक

---

१. प्रेस लिस्ट, ६० नं० ७७१ ।

हानि पहुँचा सकते हैं। इसके अतिरिक्त एक अधिकारी कर्णिक-सहित मजदूरों की भर्ती तथा निरीक्षण हेतु नियुक्त कर दिया जाये। प्रातःकाल तथा सायंकाल इस बात की जाँच होती रहे कि कोई अन्य व्यक्ति अथवा शत्रु का गुप्तचर तो प्रविष्ट नहीं होता। दास ने यह प्रार्थना-पत्र अपने उत्साह के कारण प्रस्तुत किया है और उसे बादशाह की दया से आशा है कि मैगजीन की रक्षा का उत्तम प्रबन्ध किया जायेगा।"

बादशाह ने मिर्जा मुगल को आदेश दिया कि "आवश्यक प्रबन्ध शीघ्र किये जायँ। इस विषय में अन्य बातों की अपेक्षा अधिक सावधानी की आवश्यकता है।" मिर्जा मुगल ने भी प्रबन्ध करने के लिए तुरन्त आदेश दे दिया।[१]

मालगुजारी का प्रबन्ध

कोई भी राज्य बिना धन के नहीं चल सकता; विशेष कर युद्ध के समय अपार धनराशि की आवश्यकता होती है। क्रान्तिकारियों ने संभवतः अपने उत्साह में इस ओर विशेष ध्यान न दिया था। किन्तु बहादुरशाह ने राज्य सँभालते ही मालुगजारी तथा धन एकत्र करने का प्रबन्ध प्रारम्भ कर दिया। उसने मुहम्मद अली बेग, देहली के दक्षिणी भाग के मालगुजारी के मातहत कलक्टर को, १४ मई १८५७ ई० को आदेश भेजा कि वह आदेश पाते ही तुरन्त उपस्थित हो और जो मालगुजारी उसने एकत्र की हो, उसे लेता आये। इसके अतिरिक्त उसे आदेश दिया गया कि वह अपने इलाके को सुशासित रखे।[२]

मालगुजारी के प्रबन्ध की दूसरी बड़ी आवश्यकता योग्य कर्मचारियों की नियुक्ति थी। कम्पनी के सभी पुराने कर्मचारियों को यह कार्य सौंप देना सम्भव भी न था। नये योग्य कर्मचारी इतने शीघ्र किस प्रकार भर्ती हो सकते थे। मालगुजारी के प्रबन्ध में विलंब भी नहीं किया जा सकता था।

मालगुजारी की वसूली के सम्बन्ध में परामर्श देते हुए देहली उर्दू अखबार ने २४ मई १८५७ ई० के अंक में लिखा कि यदि इस समय परगनों मे मालगुजारी

१. ट्राएल पृ० ५९।
२. ट्राएल पृ० ४।

की बसूली का प्रवन्ध हो जाय तो रुपया पटवारी तथा जमींदारों के पास सुरक्षित समझा जाता है। विलम्ब हो जाने से कठिनाई होगी। कहा जाता है कि योग्य अधिकारियों में एहतरामुद्दौला बहादुर सैकड़ों अपितु हजारों बीमारों के बीच में एक अनार के समान है। उसी सदाचारी पर राज्य के समस्त कार्यों का उत्तरदायित्व है; किस-किस कार्य की देख-रेख वह करे। फिर भी आशा है कि समस्त कार्य ठीक हो जायेंगे। रुपये के व्यय का प्रबन्ध केवल जनाब मोतबरुद्दौला बहादुर पर निर्भर है। इन दोनों उपकारियों का रहना बहुत बड़ी बात है। मालगुजारी की वसूली में मिर्जा मुहम्मद अली बेग को भी बहुत समझना चाहिये। डिप्टी कलक्टरी हेतु ऐसा पदाधिकारी नहीं प्राप्त हो सकता। प्रत्येक कार्य के प्रबन्ध हेतु पिछले पदाधिकारियों का बुलाया जाना बादशाह के लिए लाभदायक होगा, विशेष रूप से मुंशी लाला नत्थू साहब मरिश्तेदार कलक्टरी तथा उनके पुत्र लाला रामजीदास नायब सरिश्तेदार को, जो मालगुजारी के कार्य में दक्ष है, बुलाकर उच्च पद प्रदान करना बादशाह के लिए लाभदायक होगा।[1]

विभिन्न स्थानों के किसान तथा जमींदार भी बादशाह की सेवा में मालगुजारी भेजने के लिए सैनिक सहायता माँगते थे। किन्तु ऐसा ज्ञात होता है कि बादशाह के आदेश पर भी सेना न पहुँच पाती थी। जवाहर सिंह सिपाही मेरठ-निवासी, रोशन सिंह जमींदार ब्रझरी तथा चाँदी राम ने बादशाह को लिखा कि "दो दिन पूर्व बाबूगढ़ तथा अलीगढ़ के प्रबन्ध के सम्बन्ध में प्रार्थनापत्र भेजा था किन्तु अभी तक सरकार की ओर से सेना नहीं भेजी गई। भय है कि उपर्युक्त जिलों का प्रबन्ध शीघ्र न होने पर राज्य की हानि हो जाय। इसके अतिरिक्त बाबूगढ़, अलीगढ़ तथा चतौर एवं अन्य स्थानों पर जो खजाना है उसकी भी हानि हो सकती है। बाबूगढ़ में २४ सैनिक २०,००० रुपया सुरक्षित किये हुए हैं। चतौर में २० लाख रुपया मर्दान खाँ के अधीन है। उसके साथ ६०० जाट उसकी रक्षा कर रहे हैं। रेगुलर इन्फैन्टरी की तीन कम्पनियाँ अलीगढ़ का खजाना शीघ्र पहुँचा देंगी। इनके अतिरिक्त बाबूगढ़ में १५०० घोड़े तथा उनके व्यय हेतु धन है। यदि उपर्युक्त स्थानों में सैनिकों को भेजने तथा शान्ति स्थापित करने में शीघ्रता से

---

१. देहली उर्दू अखबार २४ मई १८५७ ई० पृ० ४।

कार्य किया जायेगा तो विश्वास है कि समस्त सामान सुरक्षित रूप से अधिकार में आ जाये किन्तु एक-दो दिन के विलम्ब में निस्संदेह यह सब सामान नष्ट हो जायेगा।.........६० ग्रामों के क्षत्री निवासी बादशाह के लिए अपने प्राणों की बलि देने को उद्यत हैं। गंगा पार के लोगों का दास पर विश्वास नहीं किन्तु जब ये जमींदार थोड़ी-सी बादशाही सेना तथा फर्मान दास के पास स्वयं देख लेंगे तो वे भी बादशाह के लिए जान देने को तैयार हो जायेंगे। अतः दास को फर्मान तथा पैदल एवं सवारों की सेना भर्ती करने की अनुमति दी जाय। विलम्ब में बादशाह की हानि का भय है। मेरठ जिले के मुकीमपुर ग्राम के जमींदार केहर सिंह जिसके अधीन ८४ ग्राम हैं तथा भूमिरट्टी के किसान देवी सिंह जिसके साथ ८७ ग्राम हैं बादशाह के लिए प्राण त्याग देने का निश्चय कर चुके हैं। वहाँ के समस्त लोग एक हृदय होकर दास के साथ हैं। वे सेना तथा बादशाह का फर्मान देखकर तुरन्त प्राणों की बलि देने को तैयार हो जायेंगे। दास ने बादशाह के हित के उत्साह में यह प्रार्थना-पत्र प्रस्तुत किया है क्योंकि विलम्ब के कारण अत्यधिक हानि का भय है।" बादशाह ने मिर्जा मुगल को आदेश दिया कि तुरन्त पैदल सेना के अधिकारियों को आदेश दे दिया जाय कि वे रवाना होकर जवाहर सिंह की प्रार्थना के अनुसार प्रबन्ध करें।[१]

इसी प्रकार मालगुजारी वसूल करने के लिए सैनिक सहायता के सम्बन्ध में अन्य स्थानों से भी पत्र प्राप्त होते रहते थे।

एक पत्र के उत्तर में बादशाह ने २१ अगस्त १८५७ ई० को बागपत के मालगुजारी के मातहत कलक्टर तथा बागपत के जमींदारों को पत्र लिखा कि सेना के लिए तुम्हारे प्रार्थना-पत्र के उत्तर में तुम्हें सूचना दी जाती है कि मिर्जा मुहम्मद शाह तथा मिर्जा हाजी के पुत्र तुम्हारे साथ हैं। तुम यथाशक्ति रसद भेजने का जोरदार प्रयत्न करो। तुम लोग सेना के आज्ञाकारी रहो और मालगुजारी तथा अपनी व्यक्तिगत आर्थिक सहायता अपने विश्वस्त दूतों तथा सेना के हाथ भेजते रहो।

उसी दिन सोनपत, पानीपत, नजफगढ़, बहादुरगढ़ तथा मेवात के ग्रामों के मुख्य कृषकों, सरदारों, जमींदारों तथा किसानों को बादशाह की ओर से पत्र लिखा गया

---

१. ट्राएल पृ० ६३।

कि तुम मिर्जा अब्दुल्लाह बहादुर पुत्र मिर्जा शाहरूख बहादुर जो हमारा पोता है और लार्ड गवर्नर जनरल मुहम्मद बख्त खाँ बहादुर की सेना के प्रति जो उस ओर जा रही है पूर्ण अधीनता तथा सम्मान प्रदर्शित करो। उस शाहजादे तथा उस सेना के अधिकारियों के आदेशानुसार रसद का आवश्यक प्रबन्ध करो। इसके अतिरिक्त तुम्हें आदेश दिया जाता है कि तुम मालगुजारी की आय तथा अपनी अधीनता सम्बन्धी उपहार अपने विश्वस्त आदमियों तथा शाहजादे की सेना को गारद के हाथ भेज दो। इस धन को अन्य लोगों को न सौंपा जाव और बड़ी सावधानी से कार्य किया जाय।[1]

बादशाह तथा अन्य अधिकारी भी सेना को मालगुजारी वसूल करने तथा अन्य आवश्यक कार्यों के लिए देहली के बाहर भेजना परमावश्यक समझते थे किन्तु अधिकारियों में पारस्परिक सहयोग के अभाव के कारण यह सम्भव न हो पाता था। २१ अगस्त को बादशाह ने यह भी कहा कि यदि सैनिक नगर छोड़ दें और मालगुजारी वसूल करने का कार्य करने लगें तो मैं उनको वेतन भी दे सकूँगा और शहरवालों के प्राणों तथा सम्पत्ति की रक्षा भी कर सकूँगा।[2]

बादशाह के कर्मचारियों को मालगुजारी एकत्र करने में बड़ी कठिनाई होती थी। किन्तु अंग्रेजों ने गाजियाबाद के निकट अधिकार स्थापित करते ही जिस ध्वंसात्मक नीति से मालगुजारी इकट्ठी करनी प्रारम्भ की इससे पता चलता है कि अंग्रेज किस प्रकार प्रजा को आतंकित करके धन प्राप्त करते थे। और क्रान्तिकारियों के समय में रुपये के अत्यधिक अभाव पर भी बादशाह प्रजा को कष्ट न पहुँचाना चाहता था। गाजियाबाद के कर्नल अहमद खाँ ने अपने पत्र दिनांक ९ सितम्बर १८५७ ई० में लिखा कि यूरोपियनों ने जाटों से मिलकर पिलखुआ तथा तीन-चार आस-पास के ग्रामों को लूटकर जला डाला है। वे वहीं ठहरे हुए हैं और चारों ओर के किसान उसी प्रकार के ध्वंस के भय से तथा अपनी निस्सहाय दशा को देख-कर मालगुजारी अदा कर रहे हैं।[3]

१. **ट्राएल** पृ० ११८।
२. **जीवनलाल** पृ० २०३।
३. **ट्राएल** पृ० ११९।

आय के अन्य साधन

व्यापारिक कर

भूमि-कर के अतिरिक्त विभिन्न प्रकार के व्यापारिक कर भी आय का अन्य मुख्य साधन हो सकते थे किन्तु अशान्ति के कारण जब भूमिकर ही नहीं प्राप्त हो रहा था तो व्यापारिक कर किस प्रकार वसूल होता। यह कहना भी बड़ा कठिन है कि उस समय कौन-कौन से व्यापारिक कर वसूल करने का प्रयत्न किया गया किन्तु जीवनलाल की डायरी से पता चलता है कि नमक तथा शक्कर पर से कर इस दृष्टि से हटा दिया गया था कि प्रजा को कष्ट न हो।[1] खान बहादुर जकाउल्लाह ने भी अपने इतिहास में इस बात की चर्चा की है।[2]

ऋण

बड़े-बड़े सुव्यवस्थित राज्यों को भी युद्ध तथा अन्य संकट के समय ऋण की आवश्यकता पड़ जाती है और राज्य-संचालन बिना ऋण के असम्भव हो जाता है। बादशाह ने १५ जुलाई को सेना के व्यय हेतु एक रुपया प्रतिशत ब्याज की दर से ऋण प्राप्त करने का आदेश दिया।[3] २८ जुलाई को बादशाह ने पंजाबियों तथा अन्य व्यापारियों से बिना ब्याज के अस्थायी ऋण लेने की योजना बनाई[4] किन्तु ऋण प्राप्त करने में अधिक सफलता न होती थी। शान्ति तथा राज्य के सुव्यवस्थित न होने के कारण महाजनों और व्यापारियों को ऋण अदा करने में संकोच होता होगा। शाहजादों तथा भ्रष्ट सैनिकों एवं अधिकारियों के कारण स्थिति और भी खराब हो जाती थी और महाजनों तथा व्यापारियों को बन्दी बनाने की भी आवश्यकता पड़ जाती थी।[5]

---

१. **जीवनलाल** पृ० १५२।

२. **तारीखे उरूजं अह्दे सल्तनते इंग्लिशिया** पृ० ६८२।

३. **ट्राएल** पृ० ४०।

४. **ट्राएल** पृ० ४१। सम्भवतः यह प्रबन्ध उन मुसलमानों से किया गया था जो ब्याज न लेते थे।

५. **ट्राएल** पृ० ४५।

हिन्दुओं तथा मुसलमानों से धन के लिए अपील

११ अगस्त १८५७ ई० को बादशाह ने समस्त हिन्दुओं तथा मुसलमानों के नाम एक अपील प्रकाशित की कि "फलकुद्दीन शाह, जो सेना तथा माल के मामलों का संचालक है, गाजियों तथा ईश्वर द्वारा प्रदान की हुई सेना के लिए, जो चारों ओर से आ गई है तथा शाही चौखट पर ईसाइयों के विनाश हेतु इकट्ठा हो गई है और जिसने सहस्रों अंग्रेज सैनिकों को नरक भेज दिया है, धन एकत्र करने जा रहा है। तुम्हारे लिए यह आवश्यक है कि तुम अपने लाभ के विषय में सोच-विचार कर शाही खजाने में जितना धन वह माँगे भेज दो। इसके साथ-साथ तुम अपने एजेंट भी दरबार में भेजो। वह ईसाइयों के विनाश हेतु तथा मार्ग का प्रबन्ध करने के लिए जो सेना माँगे उसे प्रदान करो। जो लोग धर्म के लिए उसकी सहायता करेंगे वे सम्मानित किये जायेंगे और जो लोग ईसाइयों का साथ देंगे वे अपने प्राणों तथा धन-सम्पत्ति सहित नष्ट हो जायँगे।

सूची

१.	रईस छतारी ७ तोपें तथा	५०,००० रुपया
२.	रईस परावी	१०,००० ,,
३.	रईस धर्मपुर	५,००० ,,
४.	रईस दानपुर	५,००० ,,
५.	रईस पहासू	५,००० ,,
६.	रईस सादाबाद	५,००० ,,
७.	रईस दतौली	२,००० ,,
८.	रईस बेगमपुर	१०,००० ,,
९.	रईस बदायूँ	१०,००० ,,
१०.	रईस कस्बा जैरू	५,००० ,,
११.	मथुरा नगर के व्यापारी	५०,००० ,,
१२.	राजा बल्लभ गढ़	१००,००० ,,
१३.	रईस गुलाम हुसेन, अतरौली	२०,००० ,,
१४.	राजा भरतपुर[1]	५००,००० ,,

---

१. ट्राएल पृ० ६५।

नगर-निवासियों को भी सेना की आवश्यकताओं तथा धन के अभाव का ज्ञान था और वे ऐसे समय सेना की सहायता भी करना चाहते थे। मिर्ज़ा मुगल के ६ अगस्त १८५७ ई० के एक प्रार्थना-पत्र से ज्ञात होता है कि नगर के अधिकांश निवासियों को सेना के लिए चन्दा देने में भी कोई आपत्ति न थी। मिर्जा मुगल ने बादशाह को लिखा कि यह उचित होगा कि धनी, निर्धन हिन्दुओं तथा मुसलमानों से चन्दा दोनों धर्मों के प्रतिष्ठित व्यक्तियों के द्वारा प्राप्त किया जाय। इस प्रकार अत्यधिक धन एकत्र हो जायेगा। अतः नगर-निवासियों का यह प्रस्ताव स्वीकार कर लिया जाय और प्रतिष्ठित व्यक्तियों को, जिनकी सूची अलग से दी जाती है, आदेश दे दिया जाय.........हिन्दुओं को विश्वास हो जायेगा कि बादशाह हिन्दू तथा मुसलमान सबके साथ समान व्यवहार करता है और सेना भी देख लेगी कि समस्त निवासी चाहे वे हिन्दू हों अथवा मुसलमान, उसके व्यय हेतु चन्दा दे रहे हैं। बादशाह ने इस प्रबन्ध को न्याययुक्त कहकर स्वीकृति प्रदान कर दी।[1]

सेना का प्रबन्ध

वेतन की कठिनाई

सेना में दो प्रकार के सिपाही थे। कुछ के पास अत्यधिक धन-सम्पत्ति थी जो सम्भवतः उन्होंने देहली आते समय मार्ग में एकत्र की होगी।[2] कुछ को मासिक वेतन मिलता था और कुछ को दैनिक भत्ता प्रदान होता था। खजाने में धन की कमी के कारण सिपाही दैनिक भत्ते की अधिक आकांक्षा करते थे।[3] मासिक वेतन पानेवालों में से कुछ लोगों का वेतन कभी-कभी शेष रहता था। कुछ सैनिक तो लूट मार द्वारा अपनी आवश्यकताएँ पूरी कर लेते थे किन्तु कुछ सैनिकों को बिना वेतन के बड़ी कठिनाई का अनुभव करना पड़ता था। मिर्जा मुहम्मद अजीम के प्रार्थनापत्र से पता चलता है कि जो सेना हाँसी तथा हिसार से आई थी उसे २ मास तथा २० दिन का वेतन न मिल सका था, यद्यपि वे जो धन लाये थे उसे उन्होंने शाही खजाने में जमा कर दिया था। उसने इस बात पर खेद प्रकट किया कि समस्त सेना को तो वेतन मिल

१. ट्राएल पृ० ४२।
२. तारीखे उरूजे अहदे सल्तनते इंगिलशिया पृ० ६७७।
३. ट्राएल पृ० ४८, ४६।

गया और इन लोगों को कुछ न मिला अतः उनके एक मास के वेतन का भुगतान करा दिया जाय।[1] सेना को इस बात का पूर्ण आश्वासन दिया जाता था कि शान्ति स्थापित होने तथा मालगुजारी प्राप्त होने पर और शत्रु के पूर्ण रूप से पराजित होते ही उन्हें वेतन तथा उन्नति प्रदान की जायेगी।[2] इसमें संदेह नहीं कि बादशाह ने राज्य पर अधिकार जमाने के पूर्व उन्हें भली भाँति बता दिया था कि उसके पास धन नहीं और वह उनके वेतन का प्रबन्ध करने में असमर्थ है किन्तु सेना तथा अन्य कर्मचारियों के प्रति वह अपना उत्तरदायित्व कभी न भूला और आरम्भ से ही वेतन प्रदान करने की चिन्ता में तल्लीन रहने लगा।

धन की न्यूनता तथा सेना को वेतन देने का प्रबन्ध न होने के कारण बादशाह आवश्यकता होने पर भी सेना की भर्ती में संकोच करने लगा। वह जानता था कि बिना भोजन का प्रबन्ध किये सेना किस प्रकार युद्ध करेगी और बिना धन के उसका भर्ती कर लेना उचित नहीं। उसने बाद में सेना में लोगों की भर्ती भी धन की कमी के कारण बन्द कर दी। उसने मिर्जा मुगल के एक प्रार्थनापत्र के उत्तर में लिखा—[3] बहुत-से वीर पुरुषों के प्रार्थनापत्र, जो समुचित सेवाएँ कर चुके हैं, अश्वारोहियों तथा पदातियों की सेना में भर्ती होने के लिए तुम्हारे प्रार्थनापत्र के साथ प्राप्त हुए। खजाने में धन के अभाव तथा जिलों के विभिन्न भागों में मालगुजारी प्राप्त करने की यथेष्ट आशा न होने से तथा किसी सेना का यह प्रबन्ध करने के लिए प्रस्थान न करने के कारण, राजधानी के निकट लूट-मार की अधिकता तथा नगर की अत्यधिक सुव्यवस्थित सेना देश के विभिन्न भागों से एकत्र होने के कारण और उनके अपने दैनिक व्यय हेतु अपर्याप्त धन लाने के कारण इन लोगों को नौकर रखने की अनुमति नहीं प्रदान की जा सकती, कारण कि उनके व्यय हेतु वेतन कहाँ से प्रदान किया जायेगा। ऐसी अवस्था में ऐसे लोगों को जिनके घर यहाँ से बहुत दूर हैं किसी प्रकार की आशा दिलाना न्यायोचित नहीं, अतः तुम्हें ऐसा आदेश दिया जाता है कि इन प्रार्थियों तथा इसके बाद जो लोग प्रार्थनापत्र दें उन्हें भी स्पष्ट रूप से सूचना दे दो कि जो लोग एक या दो मास तक बिना किसी आर्थिक सहायता के रह सकते हैं, वे ठहरें। जब शान्ति स्थापित हो जायेगी तथा

---

१. ट्राएल पृ० ४८।
२. ट्राएल पृ० ४७।
३. ट्राएल पृ० ६२, ६३, देखो पृ० ६४, ६५।

देहातों से मालगुजारी वसूल होने लगे तो उन्हें उनकी योग्यतानुसार पद प्रदान किये जायेंगे और यह भी उस दशा में होगा जब व्यवस्थित सेना के पिछले वेतन आदि चुका दिये जायेंगे। इस प्रकार बादशाह सेना को तथा किसी अन्य व्यक्ति को किसी भ्रम में नहीं रखना चाहता था।

सेना के लिए केवल जीवनयापन ही कठिन न था अपितु मोर्चों पर भी भोजन न मिलता था। पहली अगस्त को बख्त खाँ के कार्यालय से बादशाह को एक पत्र प्राप्त हुआ कि कल से २०,००० सेना वर्षा की अधिकता तथा भोजन के अभाव के कारण कष्ट उठा रही है अतः कोतवाल शहर को आदेश दे दिया जाय कि बुसी पुल के दूसरी ओर के शिविर में १०० मन भुने हुए चने भेज दिये जायें, अन्यथा सेना के उपवास का यह दूसरा दिन है।[१]

सेना को सुविधाएँ प्रदान करने की बादशाह को बड़ी चिन्ता थी। उसने २४ जून १८५७ ई० को मिर्ज़ा मुगल को लिखा कि अश्वारोहियों तथा पदातियों को मोर्चों में राशन उसी प्रकार बराबर भेजा जाय जिस प्रकार गोली बारूद; और कोई भी मार्ग में राशन में किसी प्रकार का हस्तक्षेप न करने पाये। सेना को राशन पहुँचाना बड़ा ही महत्त्वपूर्ण कार्य है। राशन के लिए तुम्हें जिन वस्तुओं की आवश्यकता हो उनके विषय में शीघ्र लिख भेजो, उन्हें तुरन्त प्रेषित कर दिया जायेगा।[२]

सेना के निवासस्थान की समस्या

बाहर से आनेवाली सेना अधिकांश शहर ही में ठहरना चाहती थी। कुछ सवारों की इच्छा थी कि वे बाजारों के सामने घोड़े बाँधें तथा निवास करें, किन्तु नगर की शान्ति के लिहाज से यह सम्भव न था। बादशाह ने १२ मई को ही आदेश दे दिया था कि पल्टनें नगर के बाहर रहें और केवल एक पल्टन नगर में रहे।[३] २३ मई को हकीम एहसानुल्लाह खाँ ने पल्टनों के नगर के बाहर

१. ट्राएल पृ० ५६।
२. ट्राएल, पृ० ५२।
३. जीवनलाल।

रहने पर बड़ा जोर दिया।[१] इस प्रकार के अनेक पत्र मिलते हैं जिनमें नागरिकों की इस शिकायत पर बादशाह तुरन्त ध्यान देता था। १६ जुलाई १८५७ ई० को बादशाह ने मिर्ज़ा मुगल को लिखा कि साहबाबाद के बागों के दारोगा रतनचन्द्र द्वारा ज्ञात हुआ है कि जोधपुर से जो सवार आये हैं उन्होंने दुकानों के सामने घोड़े बाँध दिये हैं और बहुत सी दुकानों पर अधिकार जमा लिया है। बहुत-से दुकानदार दुकानें छोड़कर भाग गये और जो रह गये हैं वे भी भागनेवाले हैं। अतः तुम्हें आदेश दिया जाता है कि उन्हें हटाकर दूसरे स्थान पर ठहरा दो।[२]

इसी प्रकार १८ जुलाई १८५७ ई० को चौधरी इमामबख्श तथा अन्य बरफवालों ने बादशाह से प्रार्थना की कि 'हाल में जो सेना आई है उसने गुलामों के घर के पास ही शिविर लगा दिये हैं और ये बरफ के खत्तों से मिले हुए हैं जो तुर्कमान द्वार के समक्ष हैं।' बादशाह ने उसी दिन प्रार्थनापत्र पर उचित प्रबन्ध करने का आदेश दे दिया।[३] इसके विपरीत बहुत से नागरिकों ने अपने घर सेना के निवास हेतु अपनी इच्छा से प्रदान कर दिये थे।[४]

लूटमार की रोकथाम

क्रान्तिकारियों द्वारा देहली की लूट का हाल अंग्रेजों ने अपने इतिहासों में बड़ी अतिशयोक्ति के साथ लिखा है। उनके इतिहासों द्वारा क्रान्तिकारी लुटेरों के रूप ही में प्रकट होते हैं। इसमें संदेह नहीं कि अंग्रेजों को निकालने अथवा हानि पहुँचाने के विचार से सैनिकों ने अंग्रेजों की धन-सम्पत्ति खूब लूटी। किन्तु अन्य समाज-द्रोहियों तथा दुष्टों ने शहर के धनी लोगों पर भी हाथ साफ किया। समकालीन देहली उर्दू अखबार लिखता है कि "कुछ लोगों ने यह कार्य आरम्भ कर दिया है कि तिलंगों का भेस बनाकर नगर को लूटते हैं। इस प्रकार उन्होंने बन्दूकें आदि एवं मैगजीन के अस्त्र-शस्त्र अंग्रेजों की कोठियों से लूटकर अपने आपको तिलंगों के भेस में प्रकट करके लूटना प्रारम्भ कर दिया है। कल ऐसे पाँच मनुष्य बन्दी बनाये गये। अन्त में ज्ञात हुआ कि इनमें से एक साइमन साहब का कहार है और एक अहीर

---

१. **जीवनलाल** ।
२. **ट्राएल** पृ० १४।
३. **ट्राएल** पृ० १५ ।
४. **प्रेस लिस्ट** १०३ नं० २१२।

और एक चमार है जो छावनी में मुंडे बनाता था और दो अन्य चमार थे। उन लोगों ने अपने आपको जिस पल्टन का सिपाही बताया था उन्हें उस पल्टन में पहुँचा दिया गया। जब झूठ तथा जाल खुल गया तो सूबेदार तथा सिपाहियों ने खूब जूते मारे, अब वे कैद हैं।"[1]

खान बहादुर जकाउल्लाह के इतिहास से भी पता चलता है कि लूट-मार तिलंगों के नाम पर गुण्डों द्वारा ही की जाती थी। वे लिखते हैं "शहर के लुच्चे शुहदे हिन्दू-मुसलमान तिलंगों को साथ लेकर हर रोज किसी भलेमानुस का घर लूटते थे। गामी खाँ पंजाबी शहर का एक प्रसिद्ध बदमाश था। उसने अपने ही भाई-बन्दों, वली-मुहम्मद व हुसेन बख्श तथा कुतुबुद्दीन की दुकानों को तिलंगों को साथ ले जाकर लुटवा दिया। सबसे बड़े पंजाबी व्यापारी देहली में यही तीन थे। जब एक घर लुटता था तो सारे मुहल्ले के लुटने की सूचना नगर में प्रसारित हो जाती थी। अगर दस रुपये का माल लुटता था तो हजार रुपये का मशहूर होता था। ग़रज़ जैसी उस लूट-मार की शहर में प्रसिद्धि थी उसका सौवाँ हिस्सा भी ठीक न होता था। सैकड़ों मुहल्ले थे जिनमें एक कौड़ी का भी माल न लुटता था।"[2]

खान बहादुर साहब ने इसी पुस्तक में लूट-मार के सम्बन्ध में एक अन्य स्थान पर लिखा है "खारी बावली, चाँदनी चौक, दरीबा चावडी में दुकानें बन्द हो गई, यद्यपि उनमें से बहुत थोड़ी लुटी थीं। दरीबे में सर्राफ की एक दुकान लुटी थी जिस पर सब सर्राफ़ों ने अपना सोना, गहना तथा रुपया घर चलता किया और अपनी दुकानों के सामने विलाप करने को खड़े हो गये कि हाय हम लुट गये, यद्यपि गली कूचों में इस लूट का कोई प्रभाव न था। सब सौदा सुलुफ उसी प्रकार बिक रहा था। यदि कोई बदमाश गली कूचे के दुकानदार से 'टिर फिस' करता तो मुहल्लेवाले उसको ठीक कर देते। अपने प्राचीन दुकानदारों पर जरा भी अत्याचार न होने देते।[3]

बहादुरशाह लूट-मार की रोक-थाम का कार्य अत्यन्त दृढ़तापूर्वक करता था। वह पूर्ण शान्ति चाहता था और प्रजा पर किसी प्रकार का अत्याचार सहन न कर सकता।

१. **देहली उर्दू अखबार** २४ मई १८५७ ई० पृ० ३।
२. **तारीखे उरूजे अहदे सल्तनते इंग्लिशिया** पृ० ६६५, ६६६।
३. **तारीखे उरूजे सल्तनते इंग्लिशिया** पृ० ६६१।

था। वह इस विचार से संतुष्ट न होना चाहता था कि लूट-मार केवल गुण्डों द्वारा हो रही है और थोड़े-से समाज-द्रोहियों ने यह अत्याचार कर रखा है। उसका विचार था कि यदि जनता पर अंग्रेजी राज्य के समान अत्याचार होता है तो उसका राज्य व्यर्थ है। स्वतंत्रता का सुख शान्ति में है अतः इस सम्बन्ध में उसके आदेश बड़े कठोर होते थे। मिर्जा मुग़ल को १८ जून १८५७ ई० को उसने बड़ी कठोरता से लिखा कि कल पुराने किले के निवासियों के प्रार्थनापत्र पर हमारे खास हस्ताक्षर से आदेश दिया गया था कि लूट-मार की रोक-थाम की जाय। तदुपरान्त प्रार्थना-पत्र तुमको भेज दिया गया था। खेद है कि तुमने अभी तक कोई प्रबन्ध नहीं किया और तुमने कुछ सवारों को भेजकर उन लोगों की रोक-थाम नहीं की। सेना का कार्य रक्षा करना है, ध्वंस तथा लूट-मार नहीं। सेना के अधिकारियों को चाहिये कि वे अपने आदमियों को इन अनुचित कार्यों से रोक दें। क्योंकि शत्रुओं के आने के समाचार असत्य थे अतः इन स्वेच्छाचारी सैनिकों को अब पुराने किले में न रखा जाय और इनके लिए ५-६ मील की दूरी पर खाइयाँ खोदी जायें और उन्हें वहीं रखा जाय ताकि हमारी प्रजा को अत्याचार से मुक्ति प्राप्त हो जाय।[१]

सेना को लूट-मार की रोकथाम में असफल होते देखकर बादशाह का क्रोध बढ़ता जाता था। उसका एक अन्य आदेश उपर्युक्त आदेशों से भी कठोर है जिसमें उसने यह कार्य नगर की पुलिस तथा अपने विशेष सैनिकों को सौंपना निश्चय कर लिया था। २७ जून १८५७ ई० को उसने मिर्जा मुगल तथा मिर्जा खैर सुल्तान को लिखा कि "तुम्हारा प्रार्थनापत्र प्राप्त हुआ जिसमें लिखा था कि चार या पाँच दुष्टों ने, जो कम्पनी के प्यादों के वेश में है, शहर में लूट-मार मचा रखी है और अब वे ग्रामों की ओर गये हैं। तुमने प्रार्थना की है कि ऐसी काररवाइयों की तुरन्त रोक-थाम की जाय। खेद है कि चार-पाँच व्यक्तियों के उत्पात के कारण नगर में इतनी लूट-मार तथा प्रजा का विनाश हो रहा है और केवल उनके बन्दी बनाये जाने पर शान्ति निर्भर है। सेना के आने तथा शहर में निवास करने के उपरान्त कोई दिन भी ऐसा व्यतीत नहीं होता जब नगर-निवासी पदातियों के अत्याचार की शिकायत न करते हों जिनके विषय में किसी भेस बदलने का संदेह नहीं हो सकता। कोई दिन ऐसा नहीं व्यतीत होता जिस दिन तुम्हें सेना द्वारा इस अत्याचार की रोकथाम का आदेश न दिया जाता हो। इन सब बातों को देखते हुए अब

१. ट्राएल पृष्ठ ८।

ऐसा प्रतीत होता है कि जब तक सेना नगर में रहेगी शान्ति स्थापित नहीं हो सकती। तुम्हें अब आदेश दिया जाता है कि तुम लोग कुछ ऐसे व्यक्तियों को हमारे पास भेज दो जो उन दुष्टों को पहचान सकें ताकि शाही सवार तथा प्यादे उनके साथ भेजे जायँ और शहर के कोतवाल को आदेश दिया जाय कि ये लोग जिन्हें पहिचानें उन्हें गिरफ्तार करके लाया जाय। जिन लोगों पर अत्याचार सिद्ध होगा उन्हें उचित दंड दिया जायगा किन्तु तुम लोगों को इस बात का सुदृढ़ प्रयत्न करना चाहिये कि सेनावाले लूट-मार न करें।"[1]

बादशाह ने केवल इतना ही नहीं किया अपितु एक बड़ा मार्मिक लेख भी प्रकाशित कराया। "कभी-कभी तलवारवाले (सैनिक) तथा शक्तिशाली लोग शहर की प्रजा तथा शाही नमक द्वारा पले हुए लोगों को बहुत कष्ट देते हैं। इसके पूर्व अंग्रेज मनमाने आदेश निकाला करते थे और हमारी प्रिय प्रजा सर्वदा व्यथित तथा व्याकुल रहती थी। अब तुम लोग उसे कष्ट पहुँचाते हो और लूटते हो। यदि तुम्हारी यही दशा है तो इस अन्तिम अवस्था में हमको राज्य तथा धन की कोई इच्छा नहीं। ख्वाजा साहब की ओर प्रस्थान कर जायँगे। हमारी प्रजा भी सब अपने अन्नदाता के साथ चली जायगी, या हम मक्के को चले जायँगे ताकि शेष जीवन हर प्रकार से ईश्वर की उपासना में व्यतीत हो जाय।" समाचार पत्र के अनुसार जब यह लेख पढ़ा गया तो उस लेख के समस्त श्रोतागणों की आँखों में आँसू भर आये।[2]

४ अगस्त को बादशाह ने सेना के समस्त अफसरों को बुलाया और उनसे कहा कि "मैंने मिर्जा मुगल तथा बख्त खाँ को तुम्हारा कमांडर-इन-चीफ नियुक्त किया था। इन दोनों में से जिसको चाहो चुनकर अपना जनरल नियुक्त करो। मैं तुम्हारे चुनाव को पसन्द करूँगा किन्तु यह पसन्द नहीं कर सकता कि नगर लुटे। उसके निवासी हैरान परेशान मारे मारे फिरें। अंग्रेज तो नष्ट न हों किन्तु अपने ही देशवाले नष्ट हो जायँ। सिपाही अपनी शेखी बघारा करें कि हम नगर से बाहर अंग्रेजों को नष्ट करने जाते हैं, किन्तु वे पुनः नगर के भीतर आ जाते हैं। नगर की चहार-दीवारी उनकी रक्षक है, जो उनको सुरक्षित रखती है। मुझे यह स्पष्ट दृष्टिगत होता

---

१. ट्राएल पृष्ठ ९।

२. देहली उर्दू अखबार २४ मई १८५७ ई० पृ० ३-४।

था। वह इस विचार से संतुष्ट न होना चाहता था कि लूट-मार केवल गुण्डों द्वारा हो रही है और थोड़े-से समाज-द्रोहियों ने यह अत्याचार कर रखा है। उसका विचार था कि यदि जनता पर अंग्रेजी राज्य के समान अत्याचार होता है तो उसका राज्य व्यर्थ है। स्वतंत्रता का सुख शान्ति में है अतः इस सम्बन्ध में उसके आदेश बड़े कठोर होते थे। मिर्जा मुग़ल को १८ जून १८५७ ई० को उसने बड़ी कठोरता से लिखा कि कल पुराने किले के निवासियों के प्रार्थनापत्र पर हमारे खास हस्ताक्षर से आदेश दिया गया था कि लूट-मार की रोक-थाम की जाय। तदुपरान्त प्रार्थना-पत्र तुमको भेज दिया गया था। खेद है कि तुमने अभी तक कोई प्रबन्ध नहीं किया और तुमने कुछ सवारों को भेजकर उन लोगों की रोक-थाम नहीं की। सेना का कार्य रक्षा करना है, ध्वंस तथा लूट-मार नहीं। सेना के अधिकारियों को चाहिये कि वे अपने आदमियों को इन अनुचित कार्यों से रोक दें। क्योंकि शत्रुओं के आने के समाचार असत्य थे अतः इन स्वेच्छाचारी सैनिकों को अब पुराने किले में न रखा जाय और इनके लिए ५-६ मील की दूरी पर खाइयाँ खोदी जायँ और उन्हें वहीं रखा जाय ताकि हमारी प्रजा को अत्याचार से मुक्ति प्राप्त हो जाय।[१]

सेना को लूट-मार की रोकथाम में असफल होते देखकर बादशाह का क्रोध बढ़ता जाता था। उसका एक अन्य आदेश उपर्युक्त आदेशों से भी कठोर है जिसमें उसने यह कार्य नगर की पुलिस तथा अपने विशेष सैनिकों को सौंपना निश्चय कर लिया था। २७ जून १८५७ ई० को उसने मिर्जा मुगल तथा मिर्जा खैर सुल्तान को लिखा कि "तुम्हारा प्रार्थनापत्र प्राप्त हुआ जिसमें लिखा था कि चार या पाँच दुष्टों ने, जो कम्पनी के प्यादों के वेश में है, शहर में लूट-मार मचा रखी है और अब वे ग्रामों की ओर गये हैं। तुमने प्रार्थना की है कि ऐसी कारवाइयों की तुरन्त रोक-थाम की जाय। खेद है कि चार-पाँच व्यक्तियों के उत्पात के कारण नगर में इतनी लूट-मार तथा प्रजा का विनाश हो रहा है और केवल उनके बन्दी बनाये जाने पर शान्ति निर्भर है। सेना के आने तथा शहर में निवास करने के उपरान्त कोई दिन भी ऐसा व्यतीत नहीं होता जब नगर-निवासी पदातियों के अत्याचार की शिकायत न करते हों जिनके विषय में किसी भेस बदलने का संदेह नहीं हो सकता। कोई दिन ऐसा नहीं व्यतीत होता जिस दिन तुम्हें सेना द्वारा इस अत्याचार की रोकथाम का आदेश न दिया जाता हो। इन सब बातों को देखते हुए अब

१. ट्राएल पृष्ठ ८।

ऐसा प्रतीत होता है कि जब तक सेना नगर में रहेगी शान्ति स्थापित नहीं हो सकती। तुम्हें अब आदेश दिया जाता है कि तुम लोग कुछ ऐसे व्यक्तियों को हमारे पास भेज दो जो उन दुष्टों को पहचान सकें ताकि शाही सवार तथा प्यादे उनके साथ भेजे जायँ और शहर के कोतवाल को आदेश दिया जाय कि ये लोग जिन्हें पहिचानें उन्हें गिरफ्तार करके लाया जाय। जिन लोगों पर अत्याचार सिद्ध होगा उन्हें उचित दंड दिया जायगा किन्तु तुम लोगों को इस बात का सुदृढ़ प्रयत्न करना चाहिये कि सेनावाले लूट-मार न करें।"[1]

बादशाह ने केवल इतना ही नहीं किया अपितु एक बड़ा मार्मिक लेख भी प्रकाशित कराया। "कभी-कभी तलवारवाले (सैनिक) तथा शक्तिशाली लोग शहर की प्रजा तथा शाही नमक द्वारा पले हुए लोगों को बहुत कष्ट देते हैं। इसके पूर्व अंग्रेज मनमाने आदेश निकाला करते थे और हमारी प्रिय प्रजा सर्वदा व्यथित तथा व्याकुल रहती थी। अब तुम लोग उसे कष्ट पहुँचाते हो और लूटते हो। यदि तुम्हारी यही दशा है तो इस अन्तिम अवस्था में हमको राज्य तथा धन की कोई इच्छा नहीं। ख्वाजा साहब की ओर प्रस्थान कर जायँगे। हमारी प्रजा भी सब अपने अन्नदाता के साथ चली जायगी, या हम मक्के को चले जायँगे ताकि शेष जीवन हर प्रकार से ईश्वर की उपासना में व्यतीत हो जाय।" समाचार पत्र के अनुसार जब यह लेख पढ़ा गया तो उस लेख के समस्त श्रोतागणों की आँखों में आँसू भर आये।[2]

४ अगस्त को बादशाह ने सेना के समस्त अफसरों को बुलाया और उनसे कहा कि "मैंने मिर्जा मुगल तथा बख्त खाँ को तुम्हारा कमांडर-इन-चीफ नियुक्त किया था। इन दोनों में से जिसको चाहो चुनकर अपना जनरल नियुक्त करो। मैं तुम्हारे चुनाव को पसन्द करूँगा किन्तु यह पसन्द नहीं कर सकता कि नगर लुटे। उसके निवासी हैरान परेशान मारे मारे फिरें। अंग्रेज तो नष्ट न हों किन्तु अपने ही देशवाले नष्ट हो जायँ। सिपाही अपनी शेखी बघारा करें कि हम नगर से बाहर अंग्रेजों को नष्ट करने जाते हैं, किन्तु वे पुनः नगर के भीतर आ जाते हैं। नगर की चहार-दीवारी उनकी रक्षक है, जो उनको सुरक्षित रखती है। मुझे यह स्पष्ट दृष्टिगत होता

---

१. ट्राएल पृष्ठ ९।

२. देहली उर्दू अखबार २४ मई १८५७ ई० पृ० ३-४।

है कि अंत में अंग्रेज नगर पर विजय प्राप्त कर लेंगे और मेरी हत्या कर डालेंगे।" बादशाह की इस बात से अधिकारी बड़े प्रभावित हुए। उनको कुछ लज्जा आई। उन्होंने कहा कि "हुजूर हमारे सिर पर हाथ रखें। हम अवश्य विजयी होंगे।" बादशाह ने अफसरों के सिर पर हाथ रखा और आशीर्वाद दिया और कहा, "शीघ्र जाओ और पहाड़ी को विजय करो।"[१] इस प्रकार बादशाह ने अपनी नीति पूर्णतः स्पष्ट कर दी थी कि वह लूट-मार तथा अपनी प्रजा पर किसी प्रकार अत्याचार न होने देगा। वह बादशाह रहे अथवा न रहे किन्तु उसके राज्य में प्रजा को किसी प्रकार का कष्ट न हो।

बादशाह प्रजा के किसी धन को सेना की उचित सैनिक आवश्यकता पर भी व्यय करने की अनुमति न देता था। २४ जुलाई १८५७ ई० को मिर्जा मुगल ने बादशाह को सूचना दी कि "१४ मध्यम श्रेणी के घोड़े प्राप्त हुए हैं। यदि बादशाह की अनुमति हो तो उन्ह शाही तोपखाने में भेज दिया जाय। इनमें से कुछ तोप खींचने के योग्य हैं। यदि बादशाह का आदेश हो तो ये घोड़े जाँच की समाप्ति तक यहाँ रख लिये जायँ।" बादशाह ने तोप के लिये घोड़े रखने की अनुमति नहीं दी अपितु जाँच जारी रखने तथा उसका परिणाम उसके समक्ष प्रस्तुत करने का आदेश दिया।[२]

कुछ व्यापारियों के विषय में सैनिकों को संदेह था कि वे अंग्रेजी सेना को रसद पहुँचाते हैं। बाद की घटनाओं की जाँच से सेना के अधिकांश संदेह एवं उनकी सूचनाओं की सत्यता की पुष्टि होती है किन्तु बादशाह जहाँ तक प्रजा की रक्षा एवं लूट-मार के निराकरण का सम्बन्ध है प्रजा की रक्षा के अतिरिक्त किसी बात की ओरध्यान न देता था। वह चाहता था कि लूट-मार की घटनाएँ किसी बहाने से भी न हों। शिवदयाल तथा शादीराम व्यापारियों ने १७ जुलाई १८५७ ई० को प्रार्थना की कि "उनकी दुकानें कश्मीरी द्वार के निकट हैं। वहाँ लोग बड़ा उत्पात मचाते हैं। कभी वे सैनिकों को तथा कभी शहर की पुलिस को लाकर सेवकों पर शत्रु को रसद पहुँचाने का अपराध लगाते हैं। हम लोग बादशाह के खानदानी दास हैं अतः हमारी दुकानों में बादशाह की ओर से ताला लगवा दिया जाय जिससे

---

१. जीवनलाल पृ० १८०-१८१।
२. ट्राएल पृष्ठ १९।

वे सुरक्षित रहें।" बादशाह ने मिर्जा मुगल को आदेश दिया कि वह प्राथियों की रक्षा करे। मिर्जा मुगल ने जिसे कदाचित् इन दुकानदारों के विषय में कुछ ज्ञान होगा कोतवाल को उसी दिन आदेश दिया कि प्राथियों की प्रार्थनानुसार दुकानों में ताले डलवा दिये जायँ और उनकी रक्षा की जाय।[1]

बादशाह के द्वार प्राथियों के लिए खुले रहते थे। जिन लोगों को किसी प्रकार का कष्ट पहुँचता वे तुरन्त बादशाह की सेवा में प्रार्थना-पत्र भेज देते। बादशाह के पास इतनी साधारण शिकायतों के पत्र पहुँचते थे जिन्हें पढ़कर आश्चर्य होता है, किन्तु बादशाह प्रत्येक दशा में उचित प्रबन्ध करने का प्रयत्न करता था। २३ मई १८५७ ई० को कप्तान दिल्दार अली खाँ का प्रार्थना-पत्र प्राप्त हुआ कि "दास के घर की रक्षा के लिए जो गारद नियुक्त हुई थी, चार-पाँच दिन हुए हटा ली गई। नगर के दुष्ट मुझे लूटना चाहते हैं अतः एक गारद रक्षा हेतु नियुक्त कर दी जाय।" बादशाह ने मिर्जा मुगल को आदेश दिया कि प्यादा रेजीमेन्ट नं० २० से एक गारद प्रार्थी के घर पर नियुक्त की जाय।[2]

इसी प्रकार मैगजीन के जमादार रजब अली का २४ मई १८५७ ई० का प्रार्थना-पत्र प्राप्त हुआ कि "हम लोग अपने परिवार को छोड़कर प्रातःकाल से सायंकाल तक मैगजीन में शाही आदेशानुसार कार्य किया करते हैं। नगर में अशान्ति के कारण हमारी प्रार्थना है कि शाही मुहर से पुलिस के अधिकारियों को आदेश दे दिया जाय कि वे अपने अपने इलाकों में मैगजीन के सेवकों के घरों की रक्षा का पूर्ण प्रबन्ध करें। खलासी लैन के निवासी इलाके के पुलिस अधिकारी का स्थानान्तरण नगर के बाहर चाहते हैं।"[3]

चाँद खाँ तथा गुलाब खाँ ने जो जयसिहपुर तथा शाहगंज के, जो पहाड़ गंज में है, निवासी थे, अपनी तथा मुहल्लेवालों की ओर से १९ जून १८५७ ई० को बादशाह को एक प्रार्थना-पत्र दिया जिसमें सैनिकों की शिकायत करते हुए लिखा कि "शाही सेना अजमेरी द्वार से निकलकर यहाँ घुस आती है और दुकान-

---

१. जकाउल्लाह, **तारीखे उरूजे अहदे सल्तनते इंग्लिशिया** पृ० ६६३।

२. **ट्राएल** पृ० १५।

३. **ट्राएल** पृ० ५।

दारों से बिना मूल्य चुकाये हुए जबर्दस्ती सामान ले जाती है। दीन दुखियों के घरों में घुसकर बिछौने, लकड़ियाँ छीन ले जाते हैं। जो लोग उन्हें रोकने का प्रयत्न करते हैं उन्हें हथियारों से घायल कर देते हैं।" बादशाह ने स्वयं मिर्जा मुगल को आदेश लिखा कि "वह ऐसे उपाय करे जिनसे लूट-मार करनेवाले ऐसा न करें तथा प्रजा पर अत्याचार न हो।"[1] इसी प्रकार जुगलकिशोर तथा शिव-प्रसाद व्यापारियों ने बादशाह से सैनिकों की शिकायत करते हुए प्रार्थना की "उनके घरों से सैनिकों का पहरा हटा लिया जाय क्योंकि नगर के दुष्ट, सैनिकों के परिवर्तन से लाभ उठाकर, प्रार्थियों के घर से धन लूट लेते हैं और कोतवाली की गारद का पहरा नियुक्त किया जाय।" बादशाह ने मिर्जा मुगल को गारद की व्यवस्था करने के लिए लिख दिया।[2]

देहली के आसपास के स्थानों में भी शान्ति के विषय में पूछताछ कराई गई और इसका प्रबन्ध हुआ। १८ मई १८५७ ई० को मौलवी जहूर अली, पुलिस अधिकारी नजफगढ़, के पास से प्रार्थनापत्र प्राप्त हुआ कि शाही आदेश समस्त ठाकुरों, चौधरियों, कानूनगोओं तथा पटवारियों को, जो नजफगढ़ में निवास करते हैं, समझा दिया गया है और उत्तम प्रकार से प्रबन्ध कर दिया गया है। शाही आदेशानुसार अश्वारोहियों तथा पदातियों को एकत्र करने का प्रयत्न किया जा रहा है और उन्हें यह बता दिया गया है कि उन्हें जिले के इस भाग की मालगुजारी से वेतन दिया जायगा। इस दास के आश्वासन का उस समय तक विश्वास न किया जायगा जब तक कि कुछ नये भर्ती किये हुए गाजी न पहुँच जायें। नगली ककरोला तथा दचाउ कलाँ और आसपास के ग्रामों के विषय में सेवक का निवेदन है कि "परिणाम के भय की चिन्ता किये बिना तथा अत्याचार की ओर प्रवृत्त होकर यहाँ के निवासियों ने यात्रियों को लूटना प्रारम्भ कर दिया है। शान्ति भंग करनेवालों तथा कानून की चिन्ता न करनेवालों के सम्बन्ध में दो प्रार्थनापत्र भेजे जा चुके हैं। मुझे आशा है कि कोई राजकुमार पर्याप्त सेना सहित इस सेवक के इलाके में शान्ति स्थापित करने हेतु भेज दिया जाय। उस समय यह दास उन कानून की चिन्ता न करनेवालों के विषय

---

१. ट्राएल पृ० ८।
२. ट्राएल पृ० ९।

में बता सकेगा और भविष्य में सुप्रबन्ध तथा अपराधों के रोकने के योग्य हो सकेगा। यदि इसमें विलम्ब हुआ तो मुझे भय है कि बहुत-से प्राण नष्ट हो जायँगे। इस इलाके के बहुत-से कर्मचारी धन की न्यूनता के कारण भाग गये। यदि कुछ धन प्रदान कर दिया जाय तो उसमें से कुछ भाग उन लोगों को दे दिया जाय जिनका उल्लेख हुआ है तथा शेष से अश्वारोही एवं पदाती शांति स्थापित रखने के लिए नौकर रखे जायँ।"

बादशाह ने मिर्जा मुगल को आदेश दिया कि "पदातियों की एक रेजीमेन्ट अधिकारियों सहित नजफगढ़ भेज दी जाय।"[१]

२३ जुलाई १८५७ ई० को बादशाह की ओर से रोहतक में घोषणा कराई गई कि "कोई किसी पर अत्याचार का हाथ न उठाये और सभी लोग मुख्य ज़मींदारों के, जो राज्य के हितैषी हैं, अधीन रहें। सिविल अमला तथा पर्याप्त सेवा आवश्यक प्रबन्ध हेतु शीघ्र भेजी जायेगी। बादशाह को अपनी प्रजा के हित की सर्वदा चिन्ता रहती है। अतः जो लोग उपद्रव करेंगे तथा अशान्ति फैलायेंगे उन सबको कठोर दंड दिये जायेंगे।"[२]

अशान्ति तथा अव्यवस्थित दशा से लाभ उठाकर देहली के आसपास के गूजरों ने भी लूट्-मार प्रारम्भ कर दी थी। उनकी रोकथाम के लिए १७ जुलाई १८५७ ई० को बादशाह ने मिर्जा मुगल बहादुर को लिखा कि "सैयिद हुसेन अली खाँ थानेदार पहाड़गंज के प्रार्थनापत्र से ज्ञात हुआ था कि अलीगंज, मल्लनजी हसनगढ़, तथा अलापुर के गूजरों के हाथों एक जमादार तथा कुछ सिपाही घायल हुए थे। वह प्रार्थनापत्र तथा एक विशेष आदेश तुम्हें भेजा गया था। आज महरौली के थानेदार के पत्र से ज्ञात हुआ कि वही गूजर वहाँ भी लूटमार कर रहे हैं। इस प्रकार के उपद्रव को शान्त करना परमावश्यक है अतः तुम्हें आदेश दिया जाता है कि तुम एक पैदल कम्पनी तथा ५० सवार उपर्युक्त गूजरों तथा उनके नम्बरदार की गिरफ्तारी के लिए तुरन्त भेज दो।

१. **ट्राएल** पृ० ५।
२. **ट्राएल** पृ० १९।

यदि वे गिरफ्तार हो गये तो उन्हें उनके अपराध का उचित दंड दिया जायगा और पूरे आदेश दिये जायँगे।"[१]

पुलिस द्वारा प्रबन्ध

बादशाह के कड़े आदेशों का प्रभाव भी हुआ और पुलिस के प्रबन्ध से लोग संतुष्ट भी होने लगे किन्तु लोग सैनिकों का नगर में प्रबन्ध पसन्द न करते थे। वे चाहते थे कि सेना छावनी में रहे। देहली उर्दू अखबार ने पुलिस के प्रबन्ध के प्रति संतोष प्रकट करते हुए ३१ मई १८५७ ई० को लिखा कि "कोतवाल शहर के गश्त तथा उसके प्रयास एवं प्रबन्ध की सभी प्रशंसा करते हैं, किन्तु तिलंगों की सेना का प्रबन्ध न होने के कारण छोटे-बड़े सभी शिकायत करते हैं और विवश हैं। इसमें संदेह नहीं कि सेना का छावनी में ठहरना अत्यावश्यक है, अन्यथा प्रजा नष्ट-भ्रष्ट हो जायगी। उनके कारण प्रजा बड़े कष्ट में हैं। कुछ थानेदार भी बड़ा प्रयत्न कर रहे हैं और सभी साधारण तथा विशेष व्यक्ति उन लोगों के सुप्रबन्ध की प्रशंसा करते हैं।"[२] १४ जून के एक संवाद से ज्ञात होता है कि कोतवाल की तथा थानेदारों की गश्त के कारण चोरी तथा नकब की रोकथाम का अच्छा प्रबन्ध हो गया है और इन बातों की शिकायत नहीं सुनी जाती।[३]

बादशाह के समक्ष अशान्ति तथा लूट-मार की जितनी भी शिकायतें प्रस्तुत होती थीं उनके अध्ययन से ज्ञात होता है कि महाजनों को शहर की पुलिस पर अधिक विश्वास था। शहर की पुलिस तथा सेना में इस विषय पर मतभेद भी रहता था। पुलिस, शहर के प्रबन्ध में सेना का हस्तक्षेप न चाहती थी। सेना सिविल प्रबन्ध में भी अपना हाथ रखना चाहती थी। महाजनों को शहर की पुलिस पर अधिक विश्वास था, इससे सेना की पुलिस के प्रति शंकाओं में भी वृद्धि होती होगी। सम्भव है कि सेना का विचार था कि पुलिसवाले

---

१. **ट्राएल** पृ० १५।
२. **देहली उर्दू अखबार** ३१ मई १८५७, पृ० ४।
३. **देहली उर्दू अखबार** १४ जून १८५७, पृ० ३।

अंग्रेजों से मिले हैं। प्रथम कोतवाल शहर मुईनुद्दीन हसन खाँ "खदंगे गदर" का लेखक अंग्रेजों का बहुत बड़ा हितैषी था और अपने अत्याचार के कारण शीघ्र पदच्युत किया गया किन्तु शान्ति स्थापित रखने तथा महाजनों को संतुष्ट करने के लिए बादशाह अधिकांश में पुलिस का ही पक्ष लेता था।

२५ जुलाई १८५७ ई० को मुबारक शाह कोतवाल ने बादशाह के नाम एक प्रार्थनापत्र लिखकर निवेदन किया कि "आज मध्याह्न में सूचना मिली है कि पदातियों की बहुत बड़ी संख्या अलोपी प्रसाद तथा रूरमल खत्रियों के घर में यूरोपियनों की खोज का बहाना करके घुस गयी। मैंने तुरन्त अपने अधीन अधिकारियों को इन दुष्टों की रोकथाम करने के लिए भेजा और इसी चिन्ता में अन्य आवश्यक सहायता भी भेजी। अधिकारी ने लौटकर बताया कि पल्टन के अधिकारी ने उसे भगा दिया और कहा कि मैं स्वयं शान्ति स्थापित कर लूँगा अतः सहायता की आवश्यकता नहीं। मुझे अभी ज्ञात हुआ है कि तलाशी में कोई संदिग्ध सम्पत्ति अथवा फिरंगी नहीं प्राप्त हुआ किन्तु घर के स्वामी की जो कुछ क्षति हुई होगी उसका अनुमान लगाना कठिन है। इसके अतिरिक्त मुझे ज्ञात हुआ है कि सैनिक उस घर के दो स्वामियों को पकड़ ले गये हैं और उन्हें बन्दी बना लिया है। इस मुकदमे में जो काररवाई हुई वह नियमानुसार तलाशी की प्रथा के विरुद्ध है। इन कार्यों से प्रजा को कष्ट तथा उस पर अत्याचार होता है। यदि मुकदमों में सूचना देनेवालों की सूचनाएँ विश्वास योग्य हों तो तलाशी प्रथानुसार चार या पाँच विश्वस्त व्यक्तियों तथा पुलिस के अधिकारियों के साथ ली जाय। इस प्रकार जो अपराधी न होगा उसपर किसी प्रकार न तो अत्याचार होगा और न उसका अपमान होगा।" बादशाह ने मिर्जा मुगल को आदेश दिया कि पल्टन के अधिकारी शीघ्र उसके पास भेज दिये जायँ और उन दीन निरपराधियों को मुक्त करा दिया जाय।[1]

वह चाहता था कि उसके समस्त अधिकारी ईमानदारी तथा सत्यता से कार्य करें और किसी प्रकार की अशान्ति न होने दें। उसने जंग बाज खाँ

---

१. ट्राएल पृ० १९।

पुलिस अधिकारी अलीपुर को १९ मई, १८५७ ई० को उसकी अलीपुर की नियुक्ति की सूचना देते हुए लिखवाया कि "तुम अपने कर्त्तव्यों का पूर्ण ईमानदारी, सत्यता तथा सावधानी से पालन करना और प्रत्येक दशा में पूर्ण कुशलता से प्रबन्ध करना और किसी प्रकार की लूट-मार अपने इलाके में न होने देना।[1]"

अन्य प्रबन्ध

डाक

डाक का सुप्रबन्ध अत्यावश्यक था। इसके बिना किसी प्रकार भी शासन का चलना असम्भव था। इतने शीघ्र डाक का प्रबन्ध हो भी कैसे सकता था? तार तथा डाक का प्रबन्ध अंग्रेज करते थे। हिन्दुस्तानी उनके डाक के प्रबन्ध को नष्ट तो कर सकते थे, तार काट सकते थे, किन्तु अपने लिए इन वस्तुओं का इतने शीघ्र प्रबन्ध करना सरल न था। देहली उर्दू अखबार ने २४ मई १८५७ ई० के अपने समाचार पत्र में इस ओर ध्यान आकर्षित कराते हुए लिखा "खेद है कि डाक का प्रबन्ध अभी तक यहाँ कुछ नहीं हुआ है। डाक का प्रबन्ध समस्त कार्यों की अपेक्षा अधिक आवश्यक है। कुछ प्रबन्ध आरम्भ हुआ था, किन्तु सवारों के नियुक्त न होने के कारण असफल रहा। कुछ धन भी हरकारे व्यर्थ हजम कर गये। यदि थोड़े रुपये तथा सवारों की भी सहायता हो जाय तो अभी हम इसका प्रबन्ध कर सकते हैं।"[2]

समाचारपत्र का यह प्रस्ताव प्रशंसनीय है, किन्तु सम्भवतः इस ओर शीघ्र ध्यान नहीं दिया गया। १४ जून को फिर इसी समाचारपत्र ने खेद प्रकट करते हुए लिखा "अजब तमाशा है कि प्रातःकाल से सायंकाल तक एक स्थान के समाचार विशेषकर शहर तथा किले के जितने व्यक्ति समाचार भेजते हैं, उनके विवरण भिन्न-भिन्न होते हैं। ऐसी अवस्था में दूर के तथा बाहर के स्थानों के विषय में क्या कहा जा सकता है? हमें बड़ा खेद है कि डाक का कुछ प्रबन्ध आज तक नहीं हुआ। इस कारण बड़ी हानि हो जाने का भय है।[3]"

---

१. **ट्राएल** पृ० ६।
२. **देहली उर्दू अखबार**, २४ मई १८५७ ई०, जिल्द १९ नं० २१ पृ० ४।
३. **देहली उर्दू अखबार**, १४, जून १८५७ ई०, पृ० १।

समाचारपत्र

जमालुद्दीन खाँ के समाचारपत्र प्रकाशित करने से सम्बन्धित प्रार्थनापत्र के उत्तर में बादशाह ने आदेश दिया कि "समाचारपत्र निकालने के विषय में तुम्हारा प्रार्थनापत्र स्वीकार हुआ। तुम्हें आज्ञा दी जाती है कि तुम अपना समाचारपत्र पूर्ण विश्वास से निकालो। तुम्हें इस बात का आदेश दिया जाता है कि तुम असत्य समाचारों के प्रति सचेत रहो और किसी प्रकार से ऐसे समाचार न प्रकाशित करो जिससे सम्मानित व्यक्तियों अथवा नगर निवासियों पर किसी प्रकार का आक्षेप हो।" इस आदेश से पता चलता है कि बादशाह समाचारपत्रों का प्रकाशन साधारण बात न समझता था और जनता के प्रति समाचारपत्रों का जो कर्त्तव्य है उससे भली भाँति परिचित था।[१]

---

१. ट्राएल पृ० ९।

अध्याय ४

हिन्दू मुस्लिम संघटन

देहली से अंग्रेजों के राज्य के अन्त के उपरान्त नगर में ऐसे लोगों की संख्या कम न थी जो उनके राज्य के पुनः स्थापित होने के लिए षड्यंत्र रचते थे। भारतवर्ष की स्वतंत्रता हिन्दू-मुस्लिम संघटन पर निर्भर थी। उसके भंग हो जाने के पश्चात् अंग्रेजों के लिए द्वार खुले थे। अपने हितैषियों द्वारा अंग्रेजों को हिन्दू मुस्लिम मतभेद उत्पन्न कराने की अधिक आशा होगी किन्तु बहादुर-शाह का प्रभाव इस क्षेत्र में सबसे अधिक दृष्टिगत होता है। वह हिन्दुओं तथा मुसलमानों को संघटित रखने में अन्त तक सफल रहा और उसने किसी साम्प्रदायिक झगड़े को सफल न होने दिया।

१९ मई को जामा मस्जिद में मुसलमानों ने जेहाद का झंडा उठाया। यह कारवाई धर्मपुर के निवासियों तथा नगर के कुछ अन्य नीच लोगों ने की थी। बादशाह इससे बड़ा क्रोधित हुआ और उसने उन लोगों को बहुत बुरा-भला कहा, कारण कि इस धर्मान्धता से हिन्दुओं के उत्तेजित हो जाने का भय था।[१]

२० मई को मौलवी मुहम्मद सईद ने बादशाह के दरबार में उपस्थित होकर निवेदन किया कि मुसलमानों को हिन्दुओं के विरुद्ध उत्तेजित करने के लिए जेहाद का झंडा बुलंद किया गया है। बादशाह ने उत्तर दिया, "ऐसा जेहाद पूर्णतः असम्भव है और यह विचार मूर्खतापूर्ण है। अधिकांश पूरबिये हिन्दू हैं। इसके अतिरिक्त इससे परस्पर विनाशक युद्ध छिड़ जायगा और इसका परिणाम शोचनीय होगा। यह उचित होगा कि सब लोग एक दूसरे

---

१. **जीवनलाल** पृ० ९८।

के प्रति सहानुभूति रखें।" बादशाह को बताया गया कि हिन्दू अंग्रेजों से मेल करना चाहते हैं और उन्हें मुसलमानों के प्रति कोई सहानुभूति नहीं और वे अपने आपको पृथक् कर रहे हैं। हिन्दू अधिकारियों के प्रतिनिधियों ने बादशाह से शिकायत की कि उनके विरुद्ध जेहाद की शिक्षा दी जा रही है। बादशाह ने उत्तर दिया, "जेहाद अंग्रेजों के विरुद्ध है। मैंने हिन्दुओं के विरुद्ध इसकी मनाही कर दी है।"[१] २१ मई को उसने घोषणा कराई कि हिन्दू तथा मुसलमानों को किसी प्रकार का झगड़ा न करना चाहिये।[२]

बादशाह के विचारों का प्रभाव जनता पर अवश्य हुआ होगा और लोगों ने समझ लिया होगा कि हिन्दू-मुस्लिम मतभेद उत्पन्न कराना आसान काम नहीं। मौलवियों, पंडितों तथा समाचारपत्रों ने संघटन के महत्त्व का बड़ा प्रचार किया और किसी प्रकार दोनों धर्मवालों को एक दूसरे से पृथक् न होने दिया। दोनों धर्म के नेता, लोगों को प्रोत्साहित करने में, एक दूसरे के आगे बढ़ जाने का प्रयत्न किया करते थे। जकाउल्लाह देहलवी ने व्यंगपूर्ण ढंग से लिखा है कि "हिन्दुओं के पंडित मुसलमानों के मौलवियों की अपेक्षा अंग्रेजों से शत्रुता करने में कुछ कम न थे। कई बार उन्होंने पत्रों को देख-भालकर युद्ध का शुभ मुहूर्त निकालकर तिलंगों को बतलाया और उन्हें विश्वास दिलाया कि यदि इस मुहूर्त में युद्ध करने जाओगे तो विजय पाओगे। वे उन मुहूर्तों में जाकर खूब लड़ें। पंडितों ने तिलंगों को विश्वास दिलाया था कि अंग्रेजी राज्य पुनः नहीं आयेगा। उन्हीं का राज्य होगा। एक विचित्र तमाशा चाँदनी चौक तथा बाजारों में यह देखने में आता था कि पंडितों के हाथ में पोथियाँ हैं और वे हिन्दुओं को धर्मशास्त्र के आदेश सुना रहे हैं कि अंग्रेज मलेच्छों से युद्ध करना चाहिये। जब युद्धक्षेत्र से तिलंगों की लाशें चार-पाइयों पर उनके सामने आतीं तो वे हिन्दुओं को उपदेश देते कि इन स्वर्ग-वासियों के समान स्वर्ग में चले जाओ, जिनके लिए न आरती की आवश्यकता है, न क्रिया-कर्म की।"[३]

---

१. **जीवनलाल** पृ० ९८।
२. **जीवनलाल** पृ० १००।
३. **तारीखे उरूजे अहदे सल्तनते इंग्लिशिया** पृ० ६७६

मौलवियों ने फतवे[१] प्रकाशित कराये और मुसलमानों को अंग्रेजी राज्य के विनाश हेतु कटिबद्ध हो जाने के लिए प्रोत्साहित किया। आलिमों ने वाज[२] कहने प्रारम्भ कर दिये और क्रान्तिकारियों को यह विश्वास दिलाने का प्रयत्न किया कि वे अजेय हैं। उन्हें कोई हानि नहीं पहुँचा सकता। उन्हें कोई नहीं मार सकता। लोग अपने-अपने स्वप्न प्रकाशित करने लगे जिनमें क्रान्तिकारियों की सफलता के विषय में भविष्य-वाणी की जाती थी। एक स्वप्न में बताया गया कि मुहम्मद साहब का आशीर्वाद क्रान्ति की सफलता के विषय में प्राप्त हो चुका है। देहली उर्दू अखबार ने एक समाचार इस प्रकार प्रकाशित किया—"एक बुजुर्ग ने स्वप्न में देखा है कि मानों मुहम्मद साहब हजरत ईसा से कहते हैं कि तुम्हारी उम्मत[३] ने बहुत सिर उठाया है और मेरे नाम के शत्रु हैं और मेरे धर्म का विनाश करना चाहते हैं। हजरत ईसा ने उत्तर दिया कि ये मेरी उम्मत नहीं। मेरे चलन पर नहीं। ये शैतान की उम्मत में हो गये हैं। फिर मुहम्मद साहब ने अन्तिम वाक्य कहा। तब हजरत ईसा ने मुहम्मद साहब की तलवार उनकी सेवा में प्रस्तुत करके कहा कि 'यह तलवार हुजूर की प्रदान की हुई है अतः उपस्थित है।' आपने उत्तर दिया हजरत अली[४] को दो। जब वह उनको देने लगे तो उन्होंने लेकर कहा कि हजरत हुसेन[५] को दो। अन्त में वह तलवार इमाम हुसेन को दे दी गई।"

कुछ आदमी शपथ खाकर कहते हैं कि जिस दिन सर्वप्रथम् तुर्क सवार यहाँ आये तो आगे-आगे साँड़नियाँ भी देखी गई जिनपर हरा वस्त्र धारण किये हुए सवार थे। जो व्यक्ति भी अंग्रेजों को पाता था खीरे ककड़ी के समान काट डालता था और बुरी तरह से टाँगें घसीटकर फेंक देता था।[६]

---

१. इस्लामी धर्मशास्त्र के अनुसार किसी कार्य के लिए निर्णय।

२. धार्मिक प्रवचन।

३. अनुयायी।

४. मुहम्मद साहब के भाई तथा जामाता और चौथे खलीफा (मृत्यु ६६१ ई०)।

५. हजरत अली के पुत्र तथा मुहम्मद साहब के नाती। इनका वध ६८० ई० में करबला में हुआ और मुहर्रम उन्हीं की स्मृति में मनाया जाता है।

६. **देहली उर्दू अखबार**, २४ मई १८५७ ई० जिल्द १९ नं० २१, पृ० २।

देहली को अंग्रेज़ों के हाथ से छीन लेने के लिए विभिन्न स्थानों से वहाबी[१] मुसलमान भी एकत्र होने लगे और उन्होंने अंग्रेजों से स्वयं युद्ध किया तथा अपने साथ अन्य मुसलमानों के जोश को बढ़ाने का प्रयत्न किया। ज़काउल्लाह देहलवी लिखते हैं, "देहली में जब विद्रोही सेना के सर्वोच्च अधिकारी बख़्त खां व गौस मुहम्मद खां तथा मौलवी इमाम खां रिसालदार एकत्र हुए और उनके साथ मौलवी अब्दुल ग़फ़्फ़ार तथा मौलवी सरफ़राज़ अली आये तो फिर वहाबियों का मजमा देहली में प्रारम्भ हुआ और मौलवी सरफ़राज़ अली जेहादियों के सेनापति और बख़्त खां उसका सहयोगी हुआ। जयपुर, हांसी, हिसार तथा भूपाल से भी जेहादी आये। तीन चार सौ जेहादियों का मजमा हो गया। इन वहाबियों ने एक विज्ञापन प्रकाशित किया कि समस्त मुसलमानों का कर्त्तव्य है कि जेहाद हेतु सशस्त्र हों। अधिकांश जेहादी भूखों मरते थे। उनके शरीर पर वस्त्र भी ठीक से न थे किन्तु बगल में तलवार अथवा कमर में कटार और कंधे पर तोड़ेदार बंदूक अवश्य थी।" उनकी शोचनीय आर्थिक दशा तथा जनता के सहयोग पर व्यंग करते हुए ज़काउल्लाह देहलवी लिखते हैं कि "बादशाह से ये जेहादी फरियाद करते कि भूखों मरते हैं तो वह कह देता खजाने में रुपया नहीं किन्तु उसने उनके लिए यह प्रबन्ध करा दिया कि नगर-निवासी दान की रोटियाँ खिलाया करें और पुण्य कमाया करें। नवाब मुहीउद्दीन खां उर्फ बुड्ढे साहब ने उनको २,००० रुपये दिये। शहर के मुसलमान थोड़े ही से इस 'जेहाद में सम्मिलित हुए।[२] मुहम्मद शरीफ देहली का प्रतिष्ठित चित्रकार अपनी समस्त धन-सम्पत्ति तथा घर, पत्नी के आभूषणों के अतिरिक्त दान करके जेहादियों में सम्मिलित हुआ और फिर जीवित नहीं आया।"[३]

समाचार पत्रों का सहयोग

पंडितों तथा मौलवियों ने अपने-अपने धर्मवालों का उत्साह बढ़ाने के सम्बन्ध

---

१. वहाबियों के विषय में परिशिष्ट ख देखिये।

२. सर सैयिद तथा उनके साथियों ने अंग्रेजों की सहानुभूति प्राप्त करने के लिए यह सिद्ध करने का विशेष प्रयत्न किया है कि नीच मुसलमानों के अतिरिक्त अन्य मुसलमान इस क्रान्ति से पृथक् रहे। (**अस्बाबे बगावते हिन्द**)।

३. **तारीखे उरूजे अहदे सल्तनते इंग्लिशिया** पृ० ६७५।

में विशेष प्रयत्न किया। समाचार-पत्रों ने हिन्दू तथा मुसलमान दोनों को जोश दिलाने के लिए लेख प्रकाशित किये। उन्होंने दोनों धर्मवालों को उनकी धर्म-कथाएँ याद दिलाकर संघटित मोर्चा प्रस्तुत करने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्हें हताश होने से रोका और निरन्तर बढ़ते रहने की शिक्षा दी। एक लेख में देहली उर्दू अखबार ने इस प्रकार लिखा—"ईश्वर में हर प्रकार की शक्ति है। हे देशवासियो ! अंग्रेजों की बुद्धि, उद्योग, सुशासन तथा राज्य के विस्तार एवं धन सम्पत्ति, खजाने तथा आय-व्यय को देखकर सम्भवतः तुम हताश होते हो कि इतना बड़ा राज्य किस प्रकार इतने शीघ्र नष्ट हो सकता है, किन्तु मुसलमान तथा हिन्दू सभी अपने ईमान तथा 'ज्ञान' एवं धर्म के प्रकाश से अपने हृदय को उज्ज्वल करें......'आदि पुरुष' अर्थात् ज़ाते क़दीम[1] के अतिरिक्त किसी को पूर्ण शक्ति तथा चिरस्थायित्व प्राप्त नहीं। अपनी धर्म कथा की पुस्तकों का अवलोकन करो कि किस प्रकार इसी हिन्दुस्तान में बहुत बड़े-बड़े राज्य हुए और समाप्त हो गये। रावण, सिंघल द्वीप का राजा, राक्षसों की सेना अपने साथ रखता था। यहाँ तक कि उसने एक बार राजा रामचन्द्र को जो सूर्यवंशी थे, पराजित किया। किन्तु शीघ्र ही जंगलियों की सेना द्वारा राजा रामचन्द्र ने उसका तथा उसकी सेना का समूल विच्छेदन किया। कंस, मथुरा पुरी का राजा कितना शक्तिशाली हुआ है कि उसने संसार को विजय किया और इन्द्र लोक पर चढ़ जाने की आकांक्षा करने लगा। यादव कुल तथा सूरसेन वंश में श्रीकृष्ण महाराज ऐसे उत्पन्न हुए कि शत्रुओं का चिह्न भी नाम के अतिरिक्त शेष न रहने दिया। इसके अतिरिक्त क्षत्रियों का वंश कितना वीर तथा साहसी था और अपने आपको ब्राह्मणों के समान समझता था। ईश्वर की लीला देखो कि परशुराम राजा ने उन्हें किस प्रकार नष्ट किया.....अतः जब तुम यह देखते हो कि किस प्रकार बड़े-बड़े राज्य कुछ समय बाद ईश्वर दूसरी जाति द्वारा नष्ट करा देता है तो तुम यह किस कारण नहीं समझते कि ईश्वर ने अपनी पूर्ण-शक्ति से परोक्ष से यह व्यवस्था की है कि उस कौम को जो १०० वर्ष के स्थायी राज्य के कारण ईश्वर के प्राणियों को तुच्छ तथा तुम्हारे भाई-बन्दों को 'काला आदमी, काला आदमी' कहकर तिरस्कृत तथा अनादृत करती थी, अपनी लीला दिखलाई है। अधिकांश देखा जाता है कि इसी चिन्ता तथा दुःख से तुम्हारे खाने-पीने तथा

---

१. ईश्वर।

सोने-बैठने में विघ्न पड़ गया है। ईश्वर तुम्हें शक्ति तथा सन्तोष प्रदान करे। तुम्हारे लिए यह आवश्यक है कि तुम भय को अपने हृदय से निकाल दो। भय तथा निराशा के कारण नगर छोड़कर भागना ईश्वर की पूर्ण शक्ति तथा रक्षा का तिरस्कार करना है। हे प्रिय भाइयो ! इस युद्ध में तुम यदि घबड़ाते हो और असन्तोष से कार्य करते हो तथा भय के कारण दहलते हो और हौल खाते हो तो तुम अपराधी ठहराये जाने के योग्य हो। यह तुम्हारे ईमान की कमज़ोरी का चिह्न है। दो हाथ तुम्हारे हैं। वही दो हाथ उनके, तुम्हारे जैसे हैं। तुममें से एक-एक वीर पुरुष है जो ईश्वर की कृपा से शत्रुओं के लिए शेर बबर है और संख्या में उनसे १०० गुना अपितु हज़ार गुना है।...हे वीर सैनिको, हे वीर तथा शेर तिलंगो ! जिस प्रकार प्राचीन इतिहासों में वीरों के कारनामे स्मरणीय हैं, उदाहरणार्थ हिन्दुस्तान के प्राचीन इतिहास में यदुवंशी भीम तथा अर्जुन स्मरणीय हैं, फारस के इतिहास में रुस्तम, साम तथा मुसलमानों के राज्य में अमीर तैमूर तथा चंगेज़ खां, हलाकू खां और नादिरशाह की सेनाएँ प्रसिद्ध हैं और लोगों को साहस दिलाती हैं, उसी प्रकार तुम्हारा यह युद्ध इतिहासों में लिखा जायेगा कि तुमने किस वीरता से ऐसे शक्तिशाली एवं अभिमान से परिपूर्ण राज्य के अभिमान को तोड़ा है। जिस राज्य को बड़े-बड़े बादशाह न ले सकते थे उसे तुमने छीन लिया है।"[१]

इसी प्रकार २८ जून १८५७ ई० के देहली उर्दू अखबार में यह प्रकाशित हुआ कि जिस प्रकार ईश्वर ने अंग्रेजों का भय उनके सेवकों के हृदय से उठा लिया और समस्त सेना तथा खजाने को बादशाह के चरणों में पहुँचा दिया तो अब क्या तुम्हें अपने ईश्वर की शक्ति पर भरोसा नहीं। तुम लोग गोरों की नित्य-प्रति तोपबाजी, शोरगुल तथा 'धुवाँ-धूं' से कुछ भय न करो। बिना मौत के कोई नहीं मर सकता। यदि गोरे एक दो तोप हमारी ले भी लें तो हमें चिन्ता न करनी चाहिये। तुम देखो कि किस प्रकार वे हज़ारों गोले चलाते हैं किन्तु ईश्वर की कृपा से बहुत थोड़े से लोगों के अतिरिक्त किसी को हानि न हुई।[२]

---

१. **देहली उर्दू अखबार** १४ जून १८५७ ई० पृ० २।

२. **देहली उर्दू अखबार** २१ जून १८५७ई० पृ० १। जकाउल्लाह ने लिखा है कि नगर में जब प्रथम बार पहाड़ी पर से गोले आने प्रारम्भ हुए तो नगर के कायर मनुष्यों के दस्त आने लगे किन्तु कुछ दिनों में वे गोलों के आने के ऐसे आदी हो

१९ जुलाई १८५७ ई० के देहली उर्दू अखबार में देशवासियों को अंग्रेजों के विरुद्ध जोश दिलाते हुए लिखा गया कि "हे भाइयो, वतनवालो, विशेष कर सेना-वालो, तुम्हारे लिए आवश्यक है कि सब हिन्दू-मुसलमान संघटित तथा एक दिल होकर परस्पर अपने को एक दूसरे की भुजाएँ समझें। इस समूह के विनाश-हेतु पूर्ण परिश्रम करें और जब तक उनके कष्ट पहुँचाने के भय से पूर्ण रूपेण मुक्त न हो जायें उस समय तक आराम तथा शान्ति को हराम समझें"।[1]

यद्यपि हिन्दू मुस्लिम संघटन का बहुत से लोग प्रयत्न कर रहे थे किन्तु बहादुरशाह संघटन का प्रतीक था। चारों ओर से निराश होकर भी वह हिन्दू मुस्लिम संघटन में जो शक्ति निहित है उसे बड़ा महत्त्व देता था। १२ सितम्बर को जब मुसलमान हिन्दुओं को दोषी बताते थे और हिन्दू मुसलमानों को, जिस समय देहली की स्वतंत्रता अन्तिम साँसें ले रही थी, तो वह हिन्दू और मुसलमानों में समझौता कराने ही का प्रयत्न कर रहा था और उसने घोषणा करा दी थी कि वह कल नगर के हिन्दू तथा मुसलमानों की संघटित सेना लेकर युद्धक्षेत्र में जायगा।[2] यह शुभावसर न आ सका किन्तु उसका प्रयत्न स्मरणीय रहेगा।

हिन्दू मुस्लिम मतभेद उत्पन्न कराने का प्रयत्न

अंग्रेजों ने मुसलमानों को बहकाने और उन्हें अपनी ओर मिलाने के लिए एक विज्ञापन छापा जिसमें इस्लामी धर्म-शास्त्र के अनुसार उनके इस युद्ध को हराम

गये कि पहाड़ी पर जब गोले छुटने का प्रकाश दिखाई पड़ता तो उसको टकटकी बाँधकर देख कर वे कहते कि, 'यह आया' 'वह आया' और ऐसे प्रसन्न होते कि जैसे बच्चे शबरात के लट्टुओं के छोड़ने से। नगर पर गोलों का प्रभाव इस कारण कुछ न होता था कि इसमें दो बड़े-बड़े उद्यान थे और बहुत से चौड़े-चौड़े मार्ग थे। कुछ घरों के प्रांगण बड़े लम्बे चौड़े थे। अधिकांश गोले खाली स्थान पर गिरते थे जहाँ न कोई मनुष्य होता था और न घर। सैकड़ों गोलों ने कदाचित् दस-बीस स्त्रियों तथा बालकों की हत्या की हो और दो-चार घरों की दीवारों तथा छतों को हानि पहुँचाई हो। **तारीखे उरूजे अहदे सल्तनते इंग्लिशिया** पृ० ७०१।

१. **देहली उर्दू अखबार** १९ जुलाई १८५७ पृ० १।

२. **जीवनलाल** पृ० २२९।

सिद्ध करते हुए लिखा कि मुसलमानों की सेना को हिन्दुओं की सेना ने जो मूर्ख है, बहका दिया है। वास्तव में कारतूसों में गाय की चरबी तथा अन्य हलाल किये हुए जानवरों की चरबी इस विचार से प्रयोग की जाती है कि सरकार को रूस तथा ईरान में युद्ध करना था। जब उसका वितरण निश्चय हुआ तब हिन्दुओं ने यह ढकोसला निकाला कि "हमको गाय की चर्बी का कारतूस देना चाहते हैं और मुसलमानों को सूअर की।" सेना ने जो मूर्ख होती है विद्रोह कर दिया और विप्लव मचा दिया। प्रजा को भी बहकाया। अतः नगर निवासियो ! तुम सचेत हो जाओ। सर्वप्रथम हमारा उद्देश्य हिन्दुओं की सेना को दण्ड देना है और जो उनकी सहायता करेंगे तथा साथ देंगे उन्हें भी दंड दिया जायगा। तुमको चाहिये कि शरा [1] के आदेशानुसार हमारा साथ देकर हिन्दुओं की हत्या करो [2]।

शहर के मुसलमान आलिम इस विषैले प्रचार से सचेत हो गये। वे समझ गये कि यदि अंग्रेजों ने मुसलमानों तथा हिन्दुओं में शत्रुता उत्पन्न करा दी तो बना बनाया काम बिगड़ जायगा। उन्होंने तुरन्त उसके विरोध में समाचार-पत्रों में लेख लिखे। तत्पश्चात् उस विज्ञापन का विरोध पुस्तक के रूप में छापकर बेचा गया। शहर के धनी लोगों से प्रार्थना की गयी कि वे उस पुस्तक को मोल लेकर दरिद्रों को बाँटें [3]। उपर्युक्त प्रचार का उत्तर देते हुए **'रद्दे इश्तहारे नसारा'**[4] में लिखा गया....."फिर स्वयं लिखते हैं कि चर्बी गाय की थी। कोई पूछे कि क्या इससे हिन्दुओं का धर्म नहीं बिगड़ता ? अब इनकी किस बात का विश्वास किया जाय। इसका विश्वास किस प्रकार हो कि सुअर की चर्बी नहीं। इसे भी छोड़ दीजिये कि थी अथवा न थी। मुसलमान सेना अपनी बुद्धिमत्ता से समझ गई कि आज यह अत्याचार हिन्दुओं पर है कल हम पर होगा और इसी प्रकार होता रहा है। यह जो लिखा है कि सर्वप्रथम हमें हिन्दुओं को दंड देना है तो इसका उत्तर यह है कि इसी का क्या विश्वास ? फिर यहाँ जो कुछ लिखा है वह किसी के समक्ष नहीं और इस पर हस्ताक्षर भी नहीं। समय पर अनुवादक की भूल बता दी जायगी, जिस प्रकार इंजील के अनुवादों तथा

---

१. **इस्लाम के सिद्धान्त।**
२. **देहली उर्दू अखबार,** ५ जुलाई १८५७ ई० पृ० १।
३. **देहली उर्दू अखबार** २३ अगस्त १८५७ ई० पृ० १।
४. ईसाइयों (अंग्रेजों) के **विज्ञापन का खंडन।**

इस्लाम की सत्यता के विरुद्ध लिखते समय कह दिया जाता है। जब राज्य के अधिकारियों से आमने-सामने इकरारनामे हुए और गवर्नरों तथा कौंसिल के सदस्यों के हस्ताक्षर हुए और मुहरें लगीं, फिर भी वचन से फिर गये तो इसका क्या विश्वास ? पंजाब तथा अवध के इकरारनामों पर क्या हुआ ? रियासत झाँसी तथा नागपुर की शक्ति बढ़ जाने पर किस प्रकार उन राज्यों का अपहरण कर लिया। अवध के ऋण की क्या दशा हुई ? हिन्द के राजसिंहासन से जो इकरारनामे हुए उनमें कौन से पूरे हुए ? इसी प्रकार विभिन्न पैतृक रियासतें उदाहरणार्थ बहादुरगढ़ आदि से कौन-कौन से कुशासन के बहाने बनाये गये और उद्देश्य था उनके राज्य का अपहरण। आज इसी बहाने से कि तुम से सेना तथा देश का प्रबन्ध नहीं हो सका, हमारे बादशाह को भी हुकूमत से, जो तुम्हारे बाप-दादा की न थी, पृथक् कर देना तुमने आवश्यक समझ लिया।

यह जो लिखा है कि 'हमारे साथ मिलकर हिन्दुओं की हत्या करो न कि हमसे बिना छान-बीन किये तथा बिना इमाम[1] के युद्ध करते रहो', उसका उत्तर यह है :—"वाह वाह ! क्या बात कही और क्या शरीअत का धोखा दिया........ शरीअत के आदेश हमें भली भाँति ज्ञात हैं.....हे भाइयो, मुसलमानों, इनके छल तथा धोखे में कभी न आना"।[2]

गो-वध निषेध

देहली का यह स्वतन्त्र राज्य अल्प समय तक ही स्थापित रह सका किन्तु इस बीच में सबसे अधिक प्रशंसनीय कार्य यह हुआ कि लोगों ने देख लिया कि भारतवर्ष के हिन्दू तथा मुसलमानों के संघटन में कितनी शक्ति निहित है। इसमें कितना बल है कि देखते-देखते ब्रिटिश सत्ता का जिसके विषय में यह प्रसिद्ध हो गया था कि इसका पतन असम्भव है, विनाश हो गया। इस अल्प समय ही में देहली को ऐसे महान पुरुष प्राप्त हो गये जिन्होंने केवल अंग्रेजी राज्य को उखाड़ने ही में योग नहीं दिया अपितु अकबर के समान उसे एक दृढ़ राष्ट्र बनाने का प्रयत्न किया। इन योद्धाओं में मौलाना फ़ज़्लेहक खैराबादी को, जिनकी विद्वत्ता तथा पांडित्य का लोहा भारतवर्ष के बाहर के मुसलमान भी मानते थे, सर्वोच्च स्थान प्राप्त है। उन्होंने बहादुरशाह

---

१. **धार्मिक नेता।**

२. **देहली उर्दू अखबार**, ५ जुलाई १८५७, पृ० २-३।

के राज्य के लिए एक विधान बनाया जिसकी प्रथम धारा यह थी कि बादशाह के राज्य में कहीं गाय जबह न की जाय।[१] जीवनलाल की डायरी में २८ जुलाई के विवरण में लिखा है कि "बादशाह ने हुक्म दिया कि जनरल तथा सेना के अधिकारियों के पास इस आशय के पत्र भेज दिये जायँ कि ईद के अवसर पर कोई गाय जबह न की जाय और चेतावनी दी गई कि यदि किसी मुसलमान ने ऐसा किया तो उसे तोप के मुँह से उड़ा दिया जायगा। यदि किसी मुसलमान ने गउ वध हेतु किसी को प्रोत्साहित किया तो उसकी भी हत्या की जायगी। हकीम एहसानुल्लाह खाँ ने इस आदेश पर रोष प्रकट करते हुए कहा कि 'मैं मौलवियों से परामर्श करूँगा।' बादशाह इस विरोध से अत्यन्त क्रोधित हुआ और दरबार विसर्जित करके अन्तःपुर में चला गया।[२]

मिसेज़ अल्डवेल ने, जो गवर्नमेंट पेनशनर अलेकज़ैंडर अल्डवेल की पत्नी थीं, बहादुरशाह के मुकदमे में गवाही देते हुए बताया कि जब सेना सर्वप्रथम (देहली) आई तो हिन्दुओं ने बादशाह से वचन ले लिया कि नगर में बैलों (गाय) का वध न होगा और इस वचन का पालन किया गया। मुझे विश्वास है कि विद्रोह के समस्त काल में देहली में किसी बैल (गाय) का वध नहीं हुआ। बकरीद में जब कि मुसलमान साधारणतः बैल (गाय) का वध करते हैं, बलवे की आशा की जाती थी किन्तु मुसलमानों ने इस अवसर पर ऐसा नहीं किया।[३]

खान बहादुर मुहम्मद जकाउल्लाह ने एक अन्य स्थान पर अपनी पुस्तक में लिखा है :—बादशाह का प्रथम आदेश जो निकला, वह यह था कि गाय ज़िबह नहीं की जायगी। ९ जुलाई को ढिंढोरा पिटवाया कि जो गाय जिबह करेगा वह तोप के मुँह से उड़ा दिया जायगा। बकरीद को गाय की कुरबानी का निषेध हुआ। यदि बादशाह को अधिकार होता तो वह क्यों हिन्दू राजा के समान आज्ञाएँ देता किन्तु तिलंगों के हाथ में वह विवश था जो उसने अपनी इच्छा तथा धर्म के विरुद्ध यह आदेश दिये।[४]

---

१. **तारीखे उरूजे अहदे सल्तनते इंग्लिशिया** पृ० ६८८।

२. **जीवनलाल** पृ० १७०।

३. **ट्राएल** पृ० ९४।

४. **तारीखे उरूजे अहदे सल्तनते इंग्लिशिया** पृ० ६६०।

खान बहादुर जकाउल्लाह अंग्रेजी शासन के बहुत बड़े पक्षपाती थे। उन्होंने राष्ट्र की इस आवश्यकता की ओर ध्यान नहीं दिया जिसे पौने दो सौ वर्ष पूर्व अकबर समझ चुका था और उसने इसी प्रकार के आदेश निकाले थे। मौलवी साहब को इस बात की स्मृति न रही कि वह किसके वश में था। वे यह भी भूल गये कि इस समय बख्त खाँ देहली में आ चुका था और कोर्ट में उसे पूर्ण अधिकार प्राप्त हो गया था। यदि बादशाह को तिलंगे विवश करके गऊ वध सम्बन्धी आदेश निकलवाते तो बख्त खाँ उन्हें रोक सकता था। जीवनलाल की डायरी के अनुसार बख्त खाँ ने बादशाह के आदेशानुसार गोवध निषेध सम्बन्धी आदेशों की घोषणा कराई।[१] बादशाह को तो विवश कह दिया जाय किन्तु मौलाना फ़ज़ले हक खैराबादी के साहस तथा वीरता के विषय में किसे सन्देह हो सकता है जो देहली पर अंग्रेजों की विजय के उपरान्त भी अपनी बात पर डटे रहे और जिन्होंने अन्त में काले पानी का दंड भोगा।[२] उन्हें किसने विवश किया था? जो अंग्रेजों से न डरा वह तिलंगों से कब भय कर सकता था? पता नहीं खान बहादुर जकाउल्लाह को यह भ्रम कैसे हुआ कि बादशाह ने यह आदेश अपनी इच्छा के विरुद्ध दिया। जीवनलाल के अनुसार उसने इस सम्बन्ध में हकीम एहसानउल्लाह खाँ के विरोध की भी जिसका वह सर्वदा पक्ष लिया करता था, चिन्ता न की। जहाँ तक इन आदेशों के इस्लाम के विरुद्ध होने का सम्बन्ध है उनके विषय में केवल इतना कहना पर्याप्त है कि मौलाना फ़ज़लेहक खैराबादी ने राज्य के लिए जो विधान बनाया उसकी प्रथम धारा गोवध निषेध ही के सम्बन्ध में थी।

इसी प्रकार मौलवी सैयिद कुतुब साहब ने बहादुरी प्रेस बरेली से राजाओं तथा प्रजा के नाम जो अपील प्रकाशित कराई उसमें भी गो-वध-निषेध को विशेष महत्त्व दिया। उसमें प्रकाशित किया गया कि 'समस्त हिन्दुओ! तुम्हें गंगा, तुलसी तथा शालग्राम की शपथ दी जाती है, और हे मुसलमानो! तुम्हें खुदा तथा कुरान की शपथ देकर, तुमसे कहा जाता है कि अंग्रेज दोनों के एक समान शत्रु हैं। उनके विनाश हेतु संघटित होना अत्यन्त आवश्यक है। इसी के द्वारा दोनों का जीवन तथा धर्म सुरक्षित रह सकेगा अतः तुम लोग संघटित होकर उनकी हत्या कर डालो। गाय

---

१. **जीवनलाल** पृ० १७०।

२. **सौरतुल हिन्दिया** पृ० ४१६-४७६।

का वध हिन्दू लोग अपने धर्म के लिए बड़ा अपमानजनक समझते हैं। इसके निषेध हेतु भारतवर्ष के समस्त मुसलमान सरदारों ने परस्पर यह संकल्प कर लिया है कि यदि हिन्दू अंग्रेजों की हत्या हेतु अग्रसर होंगे तो मुसलमान उसी दिन से गोवध बन्द कर देंगे और जो ऐसा न करेगा उसके विषय में समझा जायगा कि उसने कुरान त्याग दिया है। जो लोग गऊ का मांस खायेंगे उनके विषय में ऐसा समझा जायगा कि मानो उन्होंने सूअर का मांस खाया हो। यदि हिन्दू अंग्रेजों की हत्या हेतु कटिबद्ध न होंगे और उनकी रक्षा का प्रयत्न करेंगे तो वे ईश्वर की दृष्टि में उसी प्रकार पापी होंगे जिस प्रकार गऊ की हत्या द्वारा।[१] यह विज्ञापन इस बात का खुला प्रमाण है कि बहादुरशाह ने गोवध निषेध के सम्बन्ध में जो आदेश दिये वे न तो विवश होने के कारण थे और न किसी क्षणिक मस्तिष्क की लहर की वजह से, अपितु यह स्वतंत्रता के योद्धाओं की साम्प्रदायिकता को समाप्त करने के लिए सोची समझी तथा पूर्व निश्चित योजना थी जिसे सर्वप्रथम बहादुरशाह ने कार्यान्वित करके राष्ट्र की नींव दृढ़ कर दी। उसका राज्य समाप्त हो गया। वृद्धावस्था में उसको कालेपानी का दंड भोगना पड़ा, किन्तु हिन्दू तथा मुसलमान एवं राष्ट्र, अंग्रेजों द्वारा आश्रय प्राप्त साम्प्रदायिकता की जर्जर दीवारों के समूलोच्छेदन के समय बहादुरशाह तथा इस संग्राम के अन्य सैनिकों को कभी न भूलेगा। देश के विभिन्न भागों से साम्प्रदायिकता-विनाश-सम्बन्धी आदेश इस बात को भी सिद्ध करते हैं कि यह युद्ध किसी विशेष व्यक्ति के लिए नहीं अपितु राष्ट्र तथा भारतवर्ष की स्वतंत्रता के लिए था।

इस स्थान पर उन आदेशों का अध्ययन करना भी आवश्यक है जो बादशाह तथा सेनापित की ओर से निकाले गये और जिनकी मूल प्रतियाँ नेशनल आरकाइवज़् देहली में वर्तमान है। यह आदेश २८ जुलाई को सेनापति की ओर से निकाला गया और इसमें गोवध का पूर्णतया निषेध प्राप्य है।

वीर कोतवाल शहर को ज्ञात हो—

शहंशाह के आदेशानुसार यह आदेश दिया जाता है कि कोई भी मुसलमान शहर में ईदुज़्जुहा में गऊ का वध कदापि न करे। यदि कोई (उल्लंघन) करेगा तथा गाय की कुरबानी करेगा तो उसे दंड भोगना पड़ेगा।

---

१. ट्राएल पृ० १११।

६ जिल-हिज्जा (२८ जुलाई १८५७ ई०)[१]

अंग्रेजों के गुप्तचरों तथा उनके राज्य के आकांक्षियों ने इस आदेश के विरुद्ध मुसलमान जनता को अवश्य भड़काया होगा। कुछ कट्टर मौलवियों ने भी सम्भवतः उसका विरोध किया होगा किन्तु उस समय के समाचारपत्रों से पता चलता है कि अधिकांश मुसलमान इन बातों से प्रभावित नहीं हुए। अंग्रेजों के विरोध हेतु वे उसी प्रकार कटिबद्ध रहे और उनके षड्यंत्रों का भी खण्डन करते रहे।

शाही आदेश की घोषणा ढिंढोरा पिटवा कर की गयी। इसमें गऊ का वध करने-वालों तथा झूठा अपराध लगानेवालों दोनों को ही चेतावनी दी गई। बादशाह जहाँ यह चाहता था कि गो-वध न हो वहाँ यह भी चाहता था कि किसी को मिथ्या दोषा-रोपण करके दंड न दे दिया जाय। घोषणा इस प्रकार कराई गई—

"खल्क़ खुदा की, मुल्क बादशाह का, हुक्म फौज के बड़े सरदार का। जो कोई इस मौसम बकरीद में या उसके आगे पीछे गाय या बैल या बछड़ा या बछड़ी या भैंस या भैंसा लुका या छिपाकर अपने घर में जिबह और कुरबानी करेगा वह आदमी हुजूर जहाँपनाह का दुश्मन समझा जायगा और उसको मौत की सजा होगी। और जो कोई किसी पर इस बात की तोहमत और झूठा इल्जाम लगायेगा तो हुजूर से जाँच होगी, यानी अगर तोहमत का जुर्म साबित होगा तो उसको सजा होगी, नहीं तो जिसके ऊपर तोहमत लगायी गयी होगी उसको सजा मिलेगी और इसमें जिसका जुर्म और कुसूर साबित होगा वह बेशक तोप से बाँध कर उड़वा दिया जायगा।"[२]

इसी पृष्ठ पर इसी ढिंढोरा का दूसरा रूप इस प्रकार है—

"खल्क़ खुदा की, मुल्क बादशाह का, हुक्म फौज के बड़े सरदार का। जो कोई ईद के आगे पीछे, दिन को या रात को, या चुरा कर घर में गाय या बैल या बछड़ा या बछड़ी या भैंसा भैंस जिबह करेगा तो बादशाह का दुश्मन होगा और तोप पर उड़ा दिया जायगा और जो शख्स झूठ कहेगा कि किसी ने चुरा कर जिबह किया है उसकी रोक-

---

१. **प्रेस लिस्ट आफ म्युटिनी पेपर्स** १११ स (३१)। यह आदेश फारसी में है।
२. **प्रेस लिस्ट आफ म्युटिनी पेपर्स** १११ स (३१) यह घोषणा उर्दू में है।

थाम की जायगी, लेकिन बड़े सरदार से अगर कहे[1] कि उसकी रोकथाम होगी और बकरी बकरा भेड़ भेड़ी जो चाहे उसकी कुरबानी करे।"

सैयिद नज़रअली के २८ जुलाई के पत्र से जो उसने कोतवाल को लिखा पता चलता है कि इस आदेश की घोषणा करा दी गयी।[2]

बादशाह केवल ढिंढोरे पिटवा कर ही सन्तुष्ट नहीं हो गया अपितु उसने आदेश दिया कि कोई भी गाय भैंस का व्यापारी ६ दिन तक नगर में प्रविष्ट न होने पाये और मुसलमानों से गायें लेकर कोतवाली में बँधवा ली जायँ। आदेश इस प्रकार है।

"वीर मुबारक शाह खाँ कोतवाल शहर को ज्ञात हो–

क्योंकि तुमने कल शाही पत्र के प्राप्त होते ही समस्त नगर में ढिंढोरा पिटवा दिया और गाय के जिबह तथा गाय की कुरबानी का पूर्णतः निषेध करा दिया, अतः अब तुम्हें लिखा जाता है कि नगर के द्वारों पर इस प्रकार प्रबन्ध करो कि कोई भी गाय का व्यापारी आज से बकरीद के तीन दिन तक नगर में गाय तथा भैंस बेचने के लिए न ला सके और जिन मुसलमानों के घरों में गउएँ पली हों उन्हें लेकर कोतवाली में बँधवा दिया जाय और गायों की उनके घरों से रक्षा की जाय। यदि कोई खुल्लम खुल्ला अथवा छिपाकर पली हुई गौयों की अपने घर में कुरबानी करेगा तो यह बात उसकी मृत्यु का कारण बनेगी। ईदुज़्ज़ुहा के अवसर पर गऊ वध के सम्बन्ध में इस प्रकार का प्रबन्ध हो कि गाय बिकने के लिए भी न आये तथा पली हुई गऊओं का भी वध न हो; कोतवाली की ओर से जितनी भी चेष्टा की जायगी, वह हमारी प्रसन्नता का कारण बनेगी। अधिक लिखने की आवश्यकता नहीं।"[3]

७ जिलहिज्जा (२९ जुलाई १८५७ ई०) के उपर्युक्त आदेश से पता चलता है कि बादशाह गोवध-निषेध के सम्बन्ध में कितना उत्सुक था। उसने इस बात की ओर भी ध्यान न दिया कि इस आदेश के कुछ अंशों का पालन कठिन ही नहीं, पूर्णतया असम्भव है। नगर के नाकों पर गायों का आयात तो रोका जा सकता था, व्यापारियों का आगमन वर्जित हो सकता था किन्तु यह कहाँ सम्भव था कि मुसलमानों

---

१. यह वाक्य मूल आदेश में स्पष्ट नहीं।

२. **प्रेस लिस्ट आफ म्युटिनी पेपर्स** ६१ नं० २४५। यह आदेश फारसी में है।

३. **प्रेस लिस्ट**, १११ (सी) ४३।

के घरों की पली हुई समस्त गायें कोतवाली अथवा किसी एक सुरक्षित स्थान पर बँधवा दी जायँ। मुबारकशाह कोतवाल ने इस समस्या की ओर बादशाह का ध्यान आकर्षित करते हुए इसका समाधान इस प्रकार प्रस्तुत किया कि जिन मुसलमानों के घरों पर गायें हों उनसे मुचलके ले लिये जायँ। उसने बादशाह को ७ जिलहिज्ज को यह प्रार्थनापत्र लिखा।

"हजरत जहाँपनाह की सेवा में निवेदन,

संसार के बादशाह के गो-वध सम्बन्धी सावधानी के आदेशों के विषय में निवेदन है कि मुसलमानों के लिए जिनके घरों पर गायें पली हैं, जो यह आदेश दिया गया है कि उन्हें मँगवा कर ईदुज्जुहा के व्यतीत होने के समय तक कोतवाली में बँधवा दिया जाय तो कोतवाली में इतना स्थान नहीं कि पचास चालीस भी रासें खड़ी हो सकें। यदि नगर के समस्त मुसलमानों के घरों की पली हुई गायें मँगायी जायेंगी तो उनके लिए स्थान न हो सकेगा। इसके लिए एक बड़ा विस्तृत स्थान अथवा हाता होना चाहिये कि वे वहाँ छः दिन तक बन्द रहें, तो इस नमकख्वार की जानकारी में कोई ऐसा स्थान नहीं है। गायों का मँगाया जाना उनके स्वामियों को भी उचित अथवा लाभदायक न ज्ञात होगा। इस कारण कि बुद्धिमान तथा मूर्ख सभी प्रकार के लोग होते हैं, इसमें (गायों के) स्वामियों के विरोध का भी भय है और कहीं किसी अन्य प्रकार की बात खड़ी न हो जाय, अतः यदि आज्ञा हो तो थानेदार अपने अपने इलाके के मुसलमानों से जिन जिन लोगों के पास गायें हों मुचलके ले लें। जैसा आदेश हो उसका पालन किया जाय। ईश्वर समृद्धि के सूर्य की चमक में वृद्धि करे।[1]

फिदवी सैयिद मुबारक शाह खां कोतवाल
७ जिलहिज्जा (२९ जुलाई १८५७)

सुझाव बड़ा उचित था अतः बादशाह ने इसे स्वीकार कर लिया और तुरन्त समस्त थानेदारों को कोतवाल द्वारा आदेश हुआ[2] कि **"उन मुसलमानों के जिनके घरों में गायें हों, नाम लिख लिये जायँ और यह सूची तैयार करके उनसे मुचलके तथा आश्वासनपत्र लिखवा लिये जायँ कि वे न तो खुल्लमखुल्ला और न चोरी से गऊ**

---

१. **प्रेस लिस्ट** १११ (स) नं० ४४। यह पत्र उर्दू में है।

२. उत्तर उपर्युक्त पृष्ठ के दूसरी ओर फारसी में है।

वध करेंगे। जिन घरों में गायें बँधी हों वे उसी प्रकार बँधी रहें। उन्हें तीन दिन तक दाना-चारा उसी स्थान पर खिलाया जाय और उन्हें चरने के लिए लेशमात्र भी न छोड़ा जाय। उन्हें भलीभाँति समझ लेना चाहिये कि तीन दिन उपरान्त यदि सूची अथवा मुचलके के अनुसार गायें न मिलें और यदि किसी ने छिपाकर उन्हें जिबह कर दिया तो वह दण्ड का भागी होगा और जान से मार डाला जायगा। इस बात में बड़ी सावधानी बर्ती जाय। गायों के कोतवाली में बँधवाने अथवा उनके लिए पृथक् स्थान लेने की आवश्यकता नहीं।

७ जिलहिज्जा (२९ जुलाई १८५७ ई०)।

× × × ×

(कार्यालय की टिप्पणियाँ)

समस्त थानेदारों को पत्र लिखे गये
८ जिलहिज्जा (३० जुलाई १८५७ ई०)
नकल ली गई

× × × ×

२९ जुलाई के एक अन्य पत्र में भी सेनापति ने गोवध सम्बन्धी आदेश की ओर कोतवाल का ध्यान आकर्षित कराते हुए लिखा कि ईदुज़्जुहा के अवसर पर गाय का वध न होने पाये। गायों का बिकना बन्द करा दिया जाय। मुसलमानों के घरों में जो गायें हैं उनकी तीन दिन तक रक्षा की जाय और जो गऊ-वध करता हुआ पाया जाय उसे मृत्युदण्ड दिया जाय।[1] कोतवाल ने आदेश का पालन करते हुए थानेदारों को हुक्म दिया कि वे अपने-अपने इलाके के मुसलमानों की सूची प्रस्तुत करें।[2]

इन आदेशों द्वारा पता चलता है कि शाही आज्ञाओं के पालन की भी पूर्ण व्यवस्था की गयी और ऐसी दशा में, जब कि एक ओर से अंग्रेजी तोपें "धायँ धायँ" कर रही थीं, बहादुरशाह अपनी हिन्दू प्रजा के धर्म की रक्षा के लिए पूर्ण रूप से कटिबद्ध होकर राजनीतिक क्रान्ति के साथ-साथ सांस्कृतिक क्रान्ति का भी पथ-प्रदर्शन कर रहा था। कितना साहस था उस वृद्ध में, कितनी शक्ति थी उसकी कम्पित

---

१. **प्रेस लिस्ट आफ म्युटिनी पेपर्स** १२० : १४३। यह आदेश फारसी में है।
२. **प्रेस लिस्ट आफ म्युटिनी पेपर्स** १२० : १४४। यह आदेश उर्दू में है।

भुजाओं में ! जहाँ यह स्वीकार करना पड़ेगा वहीं यह भी मानना पड़ेगा कि कितने उदार थे वे मुसलमान, और कितना प्रेम था उन्हें अपने हिन्दू भाइयों से कि उन्होंने उस वृक्ष का ही समूल विच्छेदन स्वीकार कर लिया जिसके कारण उनके हिन्दू भाइयों के हृदय को ठेस लगती थी। इसका पता उस आदेश से चलता है जो उसी दिन कोतवाल को दिया गया कि गाय के कसाइयों के पास जो गाय की खाल अथवा चर्बी हो उसका लेखा तैयार कराया जाय और सूची शहंशाह की सेवा में प्रस्तुत की जाय। भविष्य में गोवध वर्जित होगा। जो लोग गायों का वध करते थे वे बकरी के कस्साबी का कार्य किया करें[१]।

२२ जुलाई १८५७ ई० को जे० आर० कालविन ने आगरे के किले से जो पत्र ब्रिगेडियर जनरल हैवलाक को लिखा उसमें हिन्दू मुसलमानों के संघटन पर विशेष रूप से आश्चर्य प्रकट किया। वह लिखता है, "देहली में हिन्दू तथा मुसलमान जिस प्रवृत्ति से आचरण कर रहे हैं वह अद्भुत है....ऐसा प्रतीत होता है कि मुसलमान अपने उद्देश्य की पूर्ति हेतु हिन्दुओं को खूब मार्गभ्रष्ट कर रहे हैं।[२]

---

१. **प्रेस लिस्ट आफ म्युटिनी पेपर्स** १११ : ४५। यह आदेश उर्दू में है।

२. **पार्लियामेंटरी पेपर्स** (नं० ४) पृ० १४०।

अध्याय ५

स्वाधीनता की रक्षा

अंग्रेजों की तैयारियाँ

जिस समय देहली में क्रान्ति का विस्फोट हुआ जनरल एनसन कमान्डर-इन-चीफ शिमला में विराजमान था। उसे सैनिकों के असंतोष का पूर्ण ज्ञान था किन्तु देहली में क्रान्ति के इस प्रकार प्रारम्भ हो जाने की उसे कोई आशंका न थी। उस समय कसौली, सबाथू तथा डगशाही में अंग्रजी रेजीमेंटें थीं। १२ मई १८५७ ई० को कैप्टेन बरनार्ड देहली की क्रान्ति के समाचारों को लेकर शिमला पहुँचा। उसी दिन तीनों यूरोपियन रेजीमेंटों को सावधान कर दिया गया। फीरोजपुर, जालन्धर, फुलवर तथा अम्बाले में विभिन्न तैयारियों के आदेश दे दिये गये। जटोगा की गोरखा पल्टन को फुलवर से अम्बाला पहुँचने का आदेश हुआ। नूरपुर तथा काँगड़े के भारतीय तोपखाने की कम्पनी को भी तोपखाना सहित नीचे उतरने का आदेश हुआ। गोरखों की सिरमूर बटालियन को देहरा से और सैपर माइनर को रुड़की से मेरठ की ओर प्रस्थान करने का आदेश हुआ। १४ मई को जनरल एनसन शिमला से स्थान करके १५ मई को प्रातःकाल अम्बाला पहुँच गया। १६ मई को उससे जो सेना एकत्र हो सकती थी उसे देहली के मार्ग पर कर्नाल भेज दिया किन्तु यूरोपियन सेना की संख्या इतनी कम थी कि वह शीघ्र आगे न बढ़ सकता था।[१] भारतीय सेना में क्रान्ति की लहर दौड़ चुकी थी अतः जनरल एनसन ने, सर जान लारेंस को लिखा कि "देहली के द्वार खुलवाये जा सकते हैं किन्तु इतने थोड़े से मनुष्य इतने बड़े नगर में जहाँ की गलियाँ सँकरी हैं तथा जहाँ असंख्य जन-समूह सशस्त्र है और कोने-कोन से परिचित है अत्यन्त भयंकर परिस्थिति में फंस जायेंगे।"[२] जनरल लारेंस देहली की विजय को साधारण बात

---

१. **स्टेट पेपर्स** भाग १ पृ० २७७-२७९

२. आर० बोस्वर्थ स्मिथ, **लाइफ आफ लार्ड लारेंस**, भाग २, पृ० २८।

समझता था किन्तु सैनिक शक्ति के बल पर सम्भवतः उसे तुरन्त ही पराजित होकर भागना पड़ता।

कर्नाल से सेना प्रस्थान करके पानीपत पहुँची। राजा झिन्द को पहिले ही से मिला लिया गया था और वह स्वयं वहाँ ८०० सैनिकों को लिए प्रतीक्षा कर रहा था। इस समय ब्रिटिश राज्य की सफलता केवल महाराजा पटियाला पर निर्भर थी। वे अंग्रेजों की रसद तथा यातायात के समस्त साधन रोक सकते थे। सिक्ख उनके संकेत पर क्रान्ति के अजेय सैनिक बन सकते थे। बहादुरशाह का पत्र महाराजा को प्राप्त हो चुका था। भारतवर्ष की क्रान्ति उन्हें पुकार रही थी। डगलस फारसेथ, अम्बाले का डिप्टी कमिश्नर, महाराजा का मित्र था। वह महाराजा की सेवा में उपस्थित हुआ और एकान्त में महाराजा साहब से स्पष्ट रूप से पूछा कि "महाराजा साहब, आप हमारे साथ हैं अथवा विरोध करेंगे?" महाराजा ने उत्तर दिया "जब तक मैं जीवित हूँ आपका हूँ।" महाराजा पटियाला तथा झिन्द के समस्त साधन अंग्रेजों की सेवा में समर्पित हो गये। नाभा ने भी ब्रिटिश साम्राज्य का साथ दिया।[१] एक ओर पंजाब की अंग्रेजों के प्रति यह निष्ठा थी, दूसरी ओर अमृतसर का डिप्टी कमिश्नर कूपर क्रान्ति के प्रारम्भिक महीनों का उल्लेख करते हुए लिखता है "पंजाब में भी, जहाँ लोग अब भी राजभक्त हैं, सिक्ख बटालियन के एक सूबेदार, अश्वारोही पुलिस के रिसालदार तथा बंदीगृह के एक दारोगा की मिस्टर मान्टगुमरी के आदेशानुसार हत्या परमावश्यक थी क्योंकि राज्य के प्रति कर्त्तव्यपालन में वे असफल रहे। यह इसलिए और भी आवश्यक था कि पंजाब का अधिकारीवर्ग आधे वहशी लोगों को अपने दृढ़ निर्णय से आतंकित तथा नतमस्तक कर सके।"[२]

अंग्रेजी सेना का देहली की ओर प्रस्थान

कमान्डर-इन-चीफ ने लेफिटनेन्ट हडसन को झिन्द के सवारों की सहायता से कर्नाल तथा मेरठ के मध्य में यातायात के साधन खुले रहने का आदेश दिया। उसे

---

१. **सिप्वाए वार इन इंडिया,** भाग २, पृ० १६१-१६३।

२. फ्रेडरिक कूपर, **दी क्राइसिस इन दी पंजाब** (लन्दन १८५८ ई०) भाग १, पृ० १५१-१५२।

गुप्तचर विभाग का अध्यक्ष नियुक्त किया गया। इससे पूर्व उसके ऊपर भ्रष्टाचार के दोष लगाये जा चुके थे किन्तु इस युद्ध के समय उसका महत्त्व कमान्डर-इन-चीफ ने भली भाँति समझ लिया। कर्नाल पहुँचने के दो दिन उपरान्त हडसन, कमान्डर-इन-चीफ की आज्ञा से मेरठ पहुँचा और वहाँ से जनरल विल्सन से मिलकर तथा आवश्यक पत्र प्राप्त करके कर्नाल वापस आ गया और समस्त कार्य लगभग ३६ घंटे में पूर्ण कर लिया। यह निश्चय हुआ कि अम्बाले से सेनाएँ प्रस्थान करके ३० मई को कर्नाल पहुँचें और वहाँ से बागपत में मेरठ की सेनाओं से मिलें।[१] वहाँ से दोनों सेनाएँ देहली पर चढ़ाई करें। जनरल एनसन २४ मई को अम्बाले से प्रस्थान करके २५ मई को प्रातःकाल कर्नाल पहुँच गया। २६ मई को उसे हैजा हो गया और २७ मई को उसकी मृत्यु हो गयी।[१] मेजर जनरल सर हेनरी बरनार्ड उसका उत्तराधिकारी बना और तोपों की प्रतीक्षा किये बिना वह विल्सन की सेना से मिलने के लिए अपनी सेना सहित चल पड़ा।[२] मार्ग में उन ग्रामीणों को जिन्होंने उन अंग्रेजों को, जो देहली से भागकर आये थे, कष्ट पहुँचाया अथवा

१. कीथ यंग लिखता है कि उसे बहुत कम लोग पसन्द करते थे और हिन्दुस्तानी सैनिक उससे घृणा करते थे (**देहली—१८५७**, पृ० २६–२७) एनसन ने मृत्यु के समय बरनार्ड से कहा, "तुम बता देना कि मुझे अपने कर्त्तव्यपालन की कितनी चिन्ता थी। (**सिप्वाए वार इन इंडिया**, भाग २ पृ० १६४),

२. जिन सेनाओं के लिए प्रस्थान करना निश्चय हुआ था वे इस प्रकार थीं—

प्रथम अम्बाला ब्रिगेड—ब्रिगेडियर हेलिफैक्स, ७५वीं मल्का की रेजीमेंट।	मलका की ७५वीं प्रथम बंगाल यूरोपियन, ९वें लान्सर के दो स्क्वाड्रन, हार्स आर्टिलरी का एक ट्रुप।
द्वितीय बंगाल ब्रिगेड—ब्रिगेडियर जोन्स, ६०वीं शाही इन्फैन्ट्री	द्वितीय बंगाल यूरोपियन ६०वीं हिन्दुस्तानी इन्फैन्ट्री, ९वें लान्सर के दो स्क्वाड्रन, चौथे बंगाल लान्सर का एक स्क्वाड्रन, हार्स आर्टिलरी का एक ट्रुप।
मेरठ ब्रिगेड—ब्रिगेडियर ए० विल्सन, शाही आर्टिलरी	विंग, ६०वीं शाही राइफिल्स दो स्क्वाड्रन, कराबाइनियर्स १ फील्ड बैट्री, १ ट्रुप हार्स आर्टिलरी, हिन्दुस्तानी सैपर्स १२० आर्टिलरीमेन।

मारा था, बन्दी बनाकर लाया जाता था। पूछताछ तथा दंड के बीच में जो समय मिल जाता उसमें गोरे उन्हें अत्यधिक कष्ट देते। वे उनके बाल खींचते, अपनी संगीनें उनके पेट में चुभोते थे और जबर्दस्ती उन्हें गाय का मांस खिलाते थे। इस प्रकार मार्ग के सभी निवासियों को आतंकित करते हुए वे ४ जून १८५७ ई० को देहली से १० मील दूर अलीपुर नामक स्थान पर पहुँच गये।[२]

हिण्डन का युद्ध

ब्रिगेडियर आर्कडेल विल्सन की अध्यक्षता में, २७ मई की रात्रि में, मेरठ की सेना ने छावनी से प्रस्थान किया और ३० मई १८५७ ई० को हिण्डन नदी के तट पर स्थित गाजियाबाद में, जो देहली से लगभग १० मील पर है, पहुँच गई। ग्रीद्ड ने, जो सेना का सिविल आफिसर था, लिखा है कि "मेरा विचार है कि हमने देहली की नाक पकड़ ली है। मुझे आशा है कि कल यमुना-तट तक सेना आदि के विषय में पता चलाया जायगा।'[३] उसके पत्र भेजने के उपरान्त सूचना मिली कि क्रान्तिकारी एक ऊँची पहाड़ी पर डटे हुए हैं और आक्रमण करने वाले हैं।[४] इधर अंग्रेजी सेना में बिगुल बजा उधर क्रान्तिकारियों ने गोलियाँ चलानी प्रारम्भ कर दीं। अंग्रेजी सेना का अग्रिम भाग बुरी तरह पराजित हुआ और सायंकाल के लगभग ४ बजे क्रान्तिकारियों की गोलियों की वर्षा के सामने से भाग खड़ा हुआ। ब्रिगेडियर विल्सन ने तुरन्त लोहे के पुल की ओर अंग्रेजी सेनाएँ पुल की रक्षा हेतु भेज दीं। क्रान्तिकारियों ने इस योग्यता से गोले चलाने प्रारम्भ किये कि अंग्रेज भी दंग रह गये। कुछ गोले अंग्रेजों के शिविर में भी गिरे और दोनों ओर से निरन्तर गोले चलते रहे। कैप्टेन ऐंड्रयूज तथा उसके चार सहायक क्रान्तिकारियों की तोप छीनने के प्रयत्न में मारे गये किन्तु ब्रिगेडियर विल्सन के अनुसार क्रान्तिकारी पराजित होकर भाग गये। सम्भवतः वे दूसरे दिन कड़ा आक्रमण करने के लिए

१. राबर्ट आफ कन्धार, **फार्टी वन इयर्स इन इंडिया** (लन्दन १८९८) पृ० ८३

२. **देहली १८५७**, पृ० ४०।

३. एच० एच० ग्रीद्ड, **लेटर्स रिटेन ड्युरिंग दि सीज आफ डेलही** (लन्दन १८५८) पृ० ४

४. इससे पता चलता है कि क्रान्तिकारियों ने किस प्रकार प्रत्येक स्थान की रक्षा का प्रबन्ध कर लिया था।

हट गये थे। विल्सन साहब ३१ मई १८५७ ई० को लिखते हैं कि "वे प्रातःकाल ही से हमारे विषय में पता लगाते हुए घूमते थे।"[1]

३१ मई को दिन में एक बजे के निकट क्रान्तिकारियों ने पुनः आक्रमण किया। वे हिण्डन के दूसरी ओर एक पहाड़ी पर एक मील तक फैले थे। यह स्थान पुल के सामने अंग्रेजों के शिविर से एक मील की दूरी पर था। क्रान्तिकारियों ने वहीं से गोलों की वर्षा प्रारम्भ कर दी। दो घंटे तक दोनों ओर से गोले चलते रहे। चुंगी के बाईं ओर के गाँव से अंग्रेजों ने एक कड़ा आक्रमण किया और क्रान्तिकारियों को पहाड़ी छोड़कर भागने पर विवश कर दिया किन्तु वे अपनी तोपें इत्यादि अपने साथ लेते गये। विल्सन साहब लिखते हैं कि "धूप के कारण हमारे आदमी तथा अधिकारी इतने व्याकुल हो गये थे कि हम लोग उनका पीछा न कर सके और दाहिनी ओर के एक गाँव में आग लगा कर जहाँ से क्रान्तिकारियों ने हमें बड़ा कष्ट पहुँचाया था, हम अपने शिविर को लौट आये।"[2]

जहीर देहलवी के विवरण से पता चलता है कि क्रान्तिकारी पराजित होकर न भागे थे। वह लिखता है कि "५ बजे के निकट मैं किले से सवार होकर जाता था। जब लाहौरी दरवाजे के छत्ते में पहुँचा तो मुझे सेना लौटती हुई मिली। आगे आगे तोपखाना था .... अश्वारोही तथा पदाती हँसते कूदते बाजा बजाते चले आते थे। किले के द्वार से निकलकर मैंने एक सवार से पूछा कि तुम इतने शीघ्र किस प्रकार लौट आये। उसने कहा कि हमारी विजय हो गई। गोरे युद्ध में भाग गये। हम वापस चले आये।" फिर मैंने पूछा "युद्ध किस प्रकार हुआ ?" उसने बताया कि "हिण्डन नदी के इस पार हम थे और उस पार वे थे। दोनों ओर से

१. ब्रिगेडियर विल्सन का पत्र ऐडजुटेंट जनरल आरमी हेड क्वार्टर के नाम, गाजीउद्दीन नगर, ३१ मई १८५७ ई० (**कलकत्ता गजट**, शनिवार दिसम्बर ५' १८५७), **पार्लियामेन्ट्री पेपर्स** (१८५७) पृ० ११६-११७; **स्टेट पेपर्स**, भाग १, पृ० २८४–२८५।

२. ब्रिगेडियर विल्सन का पत्र ऐडजुटेंट जनरल आरमी हेड क्वार्टर के नाम, गाजीउद्दीन नगर, १ जून १८५७ (**कलकत्ता गजट**, ५ दिसम्बर १८५७ ई०) **पार्लियामेंट्री पेपर्स** पृ० ११९-१२०; **स्टेट पेपर्स** भाग १, पृ० २८७-२८८; **लेटर्स रिटेन ड्यूरिंग दी सीज आफ डेलही** पृ० ६-१३।

तोपें चलती रहीं। हमारे तोपखाने ने बड़ा काम किया। आदमी आदमी के पीछे गोला लगा दिया। दूसरे, यह बात भी हुई कि गोरे धूप की तेजी तथा सूर्य की गर्मी सहन न कर सके। हम दूर से देखते थे कि वे नदी के जल के भीतर खड़े हैं और उनके घुटनों तक जल है। जब हमारे सवारों ने धावा किया तो वे कुलबुलाकर भाग खड़े हुए किन्तु अपनी तोपें आदि सब सामान अपनें साथ में ले गये ।[१]

सम्भवतः इस युद्ध में क्रान्तिकारियों की पराजय नहीं हुई, अन्यथा जहीर देहलवी इसके विषय में अवश्य लिखते किन्तु इसके उपरान्त क्रान्तिकारियों ने अंग्रेजों पर आक्रमण नहीं किया। वे समझ गयेहों गे कि इससे अधिक लाभ न होगा। इसके अतिरिक्त प्रथम जून को मेजर चार्ल्स रीड की अध्यक्षता में गोरखा पल्टन के पहुँच जाने के कारण क्रान्तिकारियों ने आक्रमण न करने का निश्चय कर लिया होगा। इस सेना से अंग्रेजों को बड़ी शक्ति प्राप्त हो गई अन्यथा वे अब इस योग्य न रहे थे कि क्रान्तिकारियों का कोई आक्रमण सहन कर सकते। ४ जून १८५७ ई० को जनरल बरनार्ड के आदेश प्राप्त हो गये और मेरठ की सेना बागपत के पास यमुना को पार करके ७ जून को अलीपुर पहुँच गई। ६ जून को अंग्रेजों की तोपें भी जो पीछे रह गई थीं, बाल बाल बचती हुई पहुँच गई।[२] गाजियाबाद तथा उस ओर का भाग अन्त तक क्रान्तिकारियों के ही हाथ मे रहा।

अलीपुर में अंग्रेजों की सेना के पहुँचने के समाचार पाते ही क्रान्तिकारियों ने अपनी तैयारियाँ भी प्रारंभ कर दीं। ३ जून को क्रान्तिकारियों ने बादशाह के दरबार में निवेदन किया कि हम नगर की रक्षा कर लेंगे। बादशाह ने पूछा कि "किन किन स्थानों से इनसे युद्ध किया जायगा ?" उन्होंने बताया कि पहाड़ी धीरज.............तथा सलीमपुर से। प्रत्येक स्थान पर जितनी सेना की आवश्यकता होगी उसकी व्याख्या कर दी जायगी। सम्भवतः कुछ क्रान्तिकारियों ने ७ जून को अंग्रेजों पर अलीपुर में भी आक्रमण कर दिया। ४०० जेहादियों ने भी उसी दिन बादशाह से निवेदन किया कि वे भी अंग्रेजों से युद्ध करने के लिए प्रस्थान करेंगे।[३]

---

१. जहीर देहलवी, **दास्ताने गदर** पृ० ८७-८८।

२. **फोर्टीवन इयर्स इन इंडिया** पृ० ८४, **लेटर्स रिटेन ड्युरिंग दी सीज आफ डेलही** पृ० २७-२८.

३. **जीवनलाल** पृ० ११२

बदली की सराय का युद्ध

क्रान्तिकारियों ने बदली की सराय में अपने लिए एक दृढ़ स्थान बना लिया था। सराय सड़क के बाईं ओर थी और उसका द्वार अत्यन्त दृढ़ था। सराय के दोनों ओर १५० गज की दूरी पर एक ऊँचे स्थान पर दो घर थे। यहाँ क्रान्तिकारियों ने अपनी बैट्रियाँ लगा रखी थीं और कुछ हल्की तोपें चढ़ा दी थीं। सराय के सामने कहीं कहीं भारी तोपें लगी थीं जिससे सामने के खुले मैदान में वे सबका सफाया कर सकते थे। तोपों का प्रभाव बढ़ाने के लिए उन्होंने थोड़ी थोड़ी दूर पर बड़े बड़े गमले रख दिये थे जिन्हें सफेद रँग से रंग दिया था। इससे उन्हें तोपें ऊँची-नीची करने तथा दूर निशाना लगाने में सुविधा होती थी। सराय के दाहिनी ओर एक छोटा-सा गाँव था जो कि पदातियों की रक्षा के लिए बड़ा उपयुक्त था। मार्ग के दोनों ओर अनेक स्थानों पर जल भरा था और भूमि दलदली थी। लगभग मार्ग के समानान्तर एक नहर बहती थी जिस पर कई पुल थे।[1]

८ जून को एक बजे रात्रि में ब्रिगेडियर होप ग्रांट ने दस घोड़ों के तोपखाने को और ९वें लैन्सर के तीन स्क्वाड्रन तथा झिन्द के ५० सवारों को लेकर प्रस्थान किया।[2] उसका विचार क्रान्तिकारियों के पिछले भाग पर आक्रमण करने का था। इसके साथ-साथ यह भी निश्चय हुआ था कि सर हेनरी बरनार्ड मुख्य सेना को लेकर सड़क की ओर से आक्रमण करे। प्रातःकाल अंग्रेजों की तोपें क्रान्तिकारियों पर गोला बरसाने के लिए आगे बढ़ीं। क्रान्तिकारियों के एक तोपखाने ने अंग्रेजों को बड़ी हानि पहुँचाई और अंग्रेजों की तोपें उनका प्रतिकार न कर सकीं। अंग्रेजी सेना के सिपाही रणक्षेत्र में काम आने लगे। उस समय जेनरल बरनार्ड ने आदेश दिया कि क्रान्तिकारियों की तोपों पर बन्दूक की बाढ़ मारी जाय। घमासान युद्ध होने लगा। क्रान्तिकारी बड़ी वीरता से लड़े और अंग्रेज संगीनों द्वारा आक्रमण करने लगे। मलका की ७५वीं रेजीमेंट ने सराय के द्वार पर आक्रमण करके उसे खोल लिया। यह देखकर क्रान्तिकारियों ने वहाँ रुकना उचित न समझा और पीछे हट गये। अंग्रेजी सेना आगे बढ़कर आजादपुर पहुँची। यहाँ से दो मार्ग जाते थे। एक सब्जी मंडी के पास से नगर को तथा दूसरा छावनी को।

---

१. **स्टेट पेपर्स**, इंट्रोडक्शन, पृ० ४४।

२. होप ग्रान्ट, **सिप्वाए वार** पृ० ६३-६४।

जनरल बरनार्ड छावनी के मार्ग पर सेना लेकर चला तथा ब्रिगेडियर विल्सन सब्जी मंडी की ओर बढ़ा। पहाड़ी पर क्रान्तिकारियों ने ध्वज-स्तम्भ (बावटा) पर तीन तोपें लगा रखी थीं जिनसे सर हेनरी बरनार्ड की सेना पर गोले बरसाये गये किन्तु अंग्रेजों ने तोपों पर अधिकार जमा लिया और वे हिन्दू राव की कोठी में पहुँच गये। ब्रिगेडियर विल्सन के साथ की सेना सब्जी मंडी के पास से गोलियाँ खाती हुई पहाड़ी की ओर बढ़ी। कश्मीरी द्वार से अंग्रेजी सेना के दोनों भागों पर क्रान्तिकारियों ने गोलियों की वर्षा की किन्तु अंग्रेजी सेना ने छावनी पर अधिकार जमा लिया।[1]

हिन्दू राव की कोठी पत्थर का विशाल भवन थी। उसके चारों ओर दीवार थी जिसमें द्वार लगे थे। इसके दक्षिण पश्चिम में पहाड़ी थी जिसकी असमतल भूमि यमुना-तट के साथ-साथ ढाई मील की लम्बाई में थी। हिन्दू राव की कोठी के नीचे थोड़ी दूर सड़क पर वह समाप्त हो जाती थी। यह पहाड़ी देहली से ६० फुट ऊँची थी। वह आक्रमण के लिए लाभदायक ही न थी अपितु रक्षा की दीवार भी थी। अंग्रेजी सेना ने पहाड़ी के मध्य में पुरानी छावनी के चारों ओर बाईं तरफ बढ़ते हुए अपने शिविर का प्रबन्ध किया। सर हेनरी बरनार्ड ने फतहगढ़ के स्थान पर शहरपनाह से १२०० गज की दूरी पर एक तोपखाना लगवाया। आस-पास के अन्य स्थानों को भी, तोपें लगाकर, दृढ़ कर दिया। अंग्रेजी सेना का यह स्थान केवल सब्ज़ी मंडी की ओर से कमजोर था। इधर बहुत-से घर तथा चहारदीवारी-सहित उद्यान थे जिधर से क्रान्तिकारी अंग्रेजी शिविर के दाहिनी ओर के भाग को कष्ट दे सकते थे और अम्बाले तथा पंजाब के मार्ग में विघ्न डाल सकते थे। अंग्रेजों की दाहिनी बैट्री के उपरान्त पहाड़ी का अन्त हो जाता था और फिर एक छोटी-सी पहाड़ी थी जिस पर चहारदीवारी सहित ईदगाह समतल भूमि पर बनी हुई थी।

१. मेजर जनरल सर एच० बरनार्ड का पत्र सेना के ऐडजुटेंट जनरल के नाम, दिनांक ८ जून व १२ जन १८५७ (**कल्कत्ता गजट** दिसम्बर ५,१८५७), **पार्लियामेन्ट्री पेपर्स** १८५७ पृ० १२२-१२४, **स्टेट पेपर्स** भाग १,पृ० २८९-२९२, **लेटर्स रिटन ड्यूरिंग दी सीज आफ डेलही** पृ० ३०-३२, **देहली—१८५७** पृ० ४७-४८; होप ग्रान्ट, **सिप्वाए वार** पृ० ६४-६५, **विथि हर मैजेस्टी नाइंथ लान्सर ड्यूरिंग दी इंडियन म्युटिनी**, पृ० ९
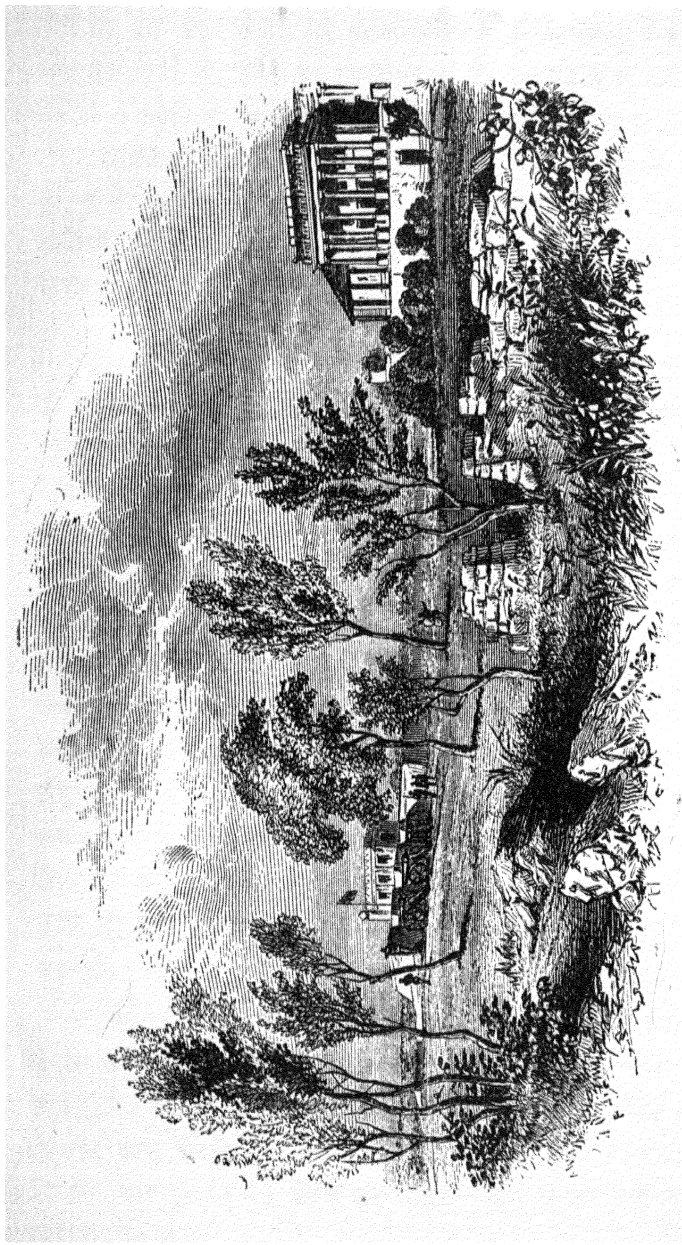
Hindoo Rao's House—Battery in front.

हिन्दू राव की कोठी

इसके निकट पहाड़ गंज तथा किशन गंज थे। पहाड़ी तथा शहरपनाह के मध्य में प्राचीन काल के भवन, वृक्ष तथा उद्यान आदि थे। देहली की शहरपनाह ७ मील की परिधि में थी। वह लगभग २४ फुट ऊँची थी। उसकी रक्षा के बुर्ज बड़ी अच्छी दशा में थे जिनपर १०-१२-१४ तोपें चढ़ी थीं। शहरपनाह के चारों ओर बड़ी चौड़ी खाई थी जो २४ फुट गहरी थी। नगर के पूर्व की ओर यमुना नदी है। वर्षा में जिस समय यह युद्ध हुआ इसका जल शहरपनाह तक पहुँच जाता था। नदी के सामने से किसी प्रकार का अवरोध नहीं डाला जा सकता था। 'कई सप्ताह तक घेरा डालनेवाले स्वयं घिर गये थे।' वे नगर-विजय का प्रयत्न नहीं कर सकते थे अपितु अपनी रक्षा का प्रयत्न करते थे। क्रान्तिकारियों का तोपखाना कभी बन्द नहीं हुआ। भवनों के चारों ओर गोले चलानेवाले बैठे रहते थे। उन्होंने अंग्रेजों पर आक्रमण कभी भी बन्द नहीं किया। नित्य अंग्रेजों को कड़ी धूप में क्रान्तिकारियों के आक्रमण को रोकने के लिए उद्यत रहना पड़ता था।

बदली की सराय के युद्ध में क्रान्तिकारियों की पराजय हुई किन्तु वे इससे हताश नहीं हुए। समाचार-पत्र लोगों को निरन्तर प्रोत्साहित करते रहते थे। मिर्जा मुगल ने घोषणा की कि वह अपने स्थान पर दृढ़ है। जहीर देहलवी के विवरण से पता चलता है कि क्रान्तिकारियों की पराजय विश्वासघात तथा भ्रम के कारण हुई। इसका समर्थन जीवनलाल ने भी किया है। जहीर देहलवी लिखता है कि "एक दिन पाँच बजे सायंकाल मैं घोड़े पर सवार किले से घर आता था तो किले के छत्ते में मुझे दो सवार नीली वर्दी के मिले और उनकी नीली झंडियाँ थीं। मुझे उनकी वेश-भूषा से ऐसा ज्ञात हुआ कि वे सम्भवतः किसी रिसाले के अफसर होंगे। मुसलमान थे। क्योंकि इस वर्दी का कोई अन्य सवार मैंने पहले नहीं देखा था अतः मुझे संदेह हुआ कि सम्भवतः ये नये सवार हों। मैंने पूछा कि तुम किस रिसाले के सवार हो? उन्होंने कहा "चौथे रिसाले के।" मैंने कहा कि "चौथा रिसाला तो यहाँ कोई नहीं।" सवारों ने उत्तर दिया कि "चौथा रिसाला तो यहाँ अंग्रेजों के अधीन आया है।" मैंने पूछा "अंग्रेजों की सेना कहाँ है?" उसने उत्तर दिया "अलीपुर में।" मैंने पूछा कि "तुम अलीपुर से किस प्रकार चले आये?" उसने उत्तर दिया "मैं छिपकर अपने भाई सैनिकों को सूचना देने आया हूँ कि धावे के समय, हम तुमसे मिल जायँगे। ऐसा न हो कि तुम हमको आता देखकर गोरों के संदेह में गराब मारकर उड़ा दो। जरा इस बात का ध्यान रखना।" फिर सवारों ने

मुझसे पूछा कि "सेना के अधिकारी किस ओर हैं?" मैंने उन्हें अधिकारियों का पता बतला दिया। संक्षेप में, वे तो उधर को गये और मैं अपने घर को चल दिया..... चार घड़ी रात शेष थी कि तोप चलनी प्रारम्भ हो गई। सुना जाता है कि क्रान्तिकारियों की बड़ी तोपों ने बड़ा काम दिया और अंग्रेजी सेना को बड़ी हानि पहुँचाई। प्रातः-काल से अंग्रेजों की सेना ने बड़ी तोपों पर धावा मारा। उनके पास नीली झंडियाँ तथा नीली वर्दियाँ थीं। उनको यह धोखा हुआ कि सम्भवतः यह वही चौथा रिसाला है जिसके लिए सायंकाल में सूचना प्राप्त हुई थी कि युद्ध के समय वे उनसे मिल जायँगे। क्रान्तिकारियों ने उन पर गोली नहीं चलाई और वहाँ 'युद्ध धूर्तता का नाम है' के सिद्धान्त पर आचरण हो रहा था। ये धोखा खा गये और जब उन्हें षड्यंत्र का ज्ञान हुआ तो क्रान्तिकारियों ने तीन तोपों में गोले डाले। वे लोग निकट आ गये थे। जब गोले चले तो सवार तथा घोड़ों की यह दशा थी कि जिस प्रकार रुई धुनते समय रुई के सूत उड़-उड़कर भूमि पर गिरते हैं उसी प्रकार सवार तथा घोड़े उड़-उड़कर गिरे और गोरे पराजित हुए किन्तु सेनापति के ललकारने पर दोनों सेनाएँ गुंथ गई। बल्लम तथा संगीनों का युद्ध होने लगा और क्रान्तिकारियों से तोपें छीनकर उन्हीं पर गोले बरसाने प्रारम्भ कर दिये। दोनों ओर के पदातियों में बाढ़ें चलने लगीं......... दो घंटे तक घोर युद्ध होता रहा। ....८ बजे के निकट मैं किले में अपनी नौकरी पर जाता था तो जौहरी बाजार के फाटक से सड़क पर बहुत से घायल आते हुए दिखाई पड़े.........एक घायल को देखा कि उसका हाथ कुहनी पर से उड़ गया था और कटे हुए बाहुओं से रक्त गिरता चला आता था। और वह अपने पाँव से चला आता था। दो-एक पुरबिये उससे कहते हुए आते थे कि "हम तुमको हाथों पर उठाकर डेरे में पहुँचा दें" तो वह कहता था कि "नहीं मेरे पास न आओ।[१]"

जहीर देहलवी को किले से लौटते समय २००-२५० सवार मिले। उन्होंने उसे बताया कि "हमको कल चौथे रिसाले के दो सवार धोखा दे गये। हम धोखे में रहे और गोरों ने आकर हमारी तोपों पर अधिकार जमा लिया। तत्पश्चात् दोनों ओर की पल्टनें युद्ध करती रहीं और डेढ़ घंटे तक बंदूक तोप का युद्ध होता रहा। हमारी सेना पराजित होने लगी और पिछले पाँव हटती जाती थी और बंदूकें

---

१. जहीर देहलवी, **दास्ताने गदर** पृ० ८९-९३ ।

चलाती जाती थी। हम घोड़चढ़ी तोपों के गोले मारते जाते थे तथा पीछे हटते जाते थे कि इसी बीच में लखनऊवाला रिसाला ताजा दम हमारे सहायतार्थ पहुँच गया और कहा कि "तुम बीच से मैदान छोड़ो; हमें उन पर धावा करने दो।" हमने मैदान दे दिया और वह रिसाला अंग्रेजों से युद्ध करने लगा और हाथों-हाथ लड़ाई होने लगी। दोनों ओर से तमंचा चल रहा था। एक ने एक के सीने पर तमंचा रख दिया, एक ने एक के मुँह पर रख दिया। निरंतर फायर होते थे। पूरे एक घड़ी भर इस प्रकार का घमासान युद्ध होता रहा। तत्पश्चात् कुछ सवार घायल हुए। कुछ मारे गये। थोड़े से सवार बचकर आये हैं और घोड़चढ़ी तोपखाने ने यह काम दिया कि पीछे हटकर महलदार खाँ के बराबर जो त्रिपुलिया है उसमें तोपें लगा दीं और पल्टनें दो बगिया में छिपकर खड़ी हो रहीं। त्रिपुलिया के तीनों द्वारों के भीतर तोपें लगी हुई थीं और दोनों ओर से क्रान्तिकारियों ने मार्ग रोक रखा था। अब अंग्रेजी सेना आती तो किस ओर से? अन्त में अंग्रेजी तोपखाने ने आकर युद्ध किया और निशानेबाजी होने लगी। आखिर में एक गोला अंग्रेजी सरकार की ओर से ऐसा आया कि तोप के मुँह पर लगा और तोप के सामने का भाग टूट गया। तोप नष्ट हो गई। यह तोप नगर में भेजी गयी। दूसरी तोप के पहिये पर गोला पड़ा और वह पहिया भी नष्ट हो गया। उस पर दूसरा पहिया चढ़ाकर उसे भी नगर में भेज दिया गया। तीसरी तोप के मुँह में गोला जाकर फंस गया। तीनों तोपें नगर में भेज दी गई।

जब तोपें बन्द हो गई तो अंग्रेजी सेना ने पीछा किया और गोला फेंकनेवाले और तोपखाने के रक्षक सवार पीछे हट गये। अंग्रेजी सेना इस बात से असावधान कि पल्टनें घात में छिपी हुई खड़ी हैं, निर्भय होकर दो पंक्तियों में चली आती थीं कि एकबारगी उद्यानों की दीवार के पीछे से खड़े होकर दोनों ओर से बाढ़ें झोंक दी गई। उस समय सेना की यह दशा हुई जैसे कबूतरों को छर्रा मार दिया गया हो। बहुत से मनुष्य नष्ट हुए और क्रान्तिकारियों का पीछा छोड़कर उल्टे पुरानी छावनी की ओर चल दिये। क्रान्तिकारियों ने नगर में प्रविष्ट होकर द्वार बन्द कर लिये। इसी बीच में पहाड़ी के मोर्चों की सेना ने जो देखा कि सेना नगर में प्रविष्ट हो गई तो वह भी पहाड़ी पर शिविर छोड़कर नगर में आ गई। अंग्रेजी सेना ने छावनी में पहुँचकर क्रान्तिकारियों के समस्त सामान तथा बने-बनाये मोर्चे पर अधिकार जमा लिया और डेरों, खेमों आदि में आग लगा दी। तोपों का मुँह

देहली की ओर फेर दिया। उधर पुरबियों ने नगर में प्रविष्ट होकर बड़ी बड़ी तोपें मैंगजीन से खींचकर नगर के बुर्जों पर चढ़ा दीं। अब मैदान का तो युद्ध समाप्त हो गया। मोर्चाबन्दी तथा गढ़बन्दी का युद्ध होने लगा......प्रातःकाल से बिगुल बजने प्रारम्भ हो जाते और क्रान्तिकारियों की सेना लाहौरी दरवाजे के बाहर उपस्थित हो जाती और गोलियाँ चलनी प्रारम्भ हो जातीं।"[१]

क्रान्तिकारियों की जो सेना, इस समय देहली में थी, उसका ठीक अनुमान लगाना कठिन है। अंग्रेजों के इतिहासों में प्रत्येक मोर्चे पर कई कई हजार सैनिकों की उपस्थिति दिखाई गई है और क्रान्तिकारियों की सेना को अंग्रेजी सेना का कई कई गुना बताया जाता है किन्तु उस समय देहली में जो सेनाएँ उपस्थित थीं, वे निम्नांकित हैं—

देहली की तीनों रेजीमेंटें,

मेरठ का तीसरा अश्वारोहियों का रिसाला।

और दो रेजीमेंटें।

देहली का भारतीय तोपखाना।

कुछ कम्पनियाँ, अलीगढ़, हाँसी और सिरसे के कुछ अश्वारोही तथा पदाती।

रुड़की के थोड़े से सैपर-माइनर

मथुरा से दो कम्पनियाँ, फीरोजपुर से बिना हथियारों की कुछ कम्पनियाँ, ग्वालियर के पैदल तथा अम्बाले के बहुत से भागे हुए तिलंगे, देहली के चारों ओर १०० मील के भीतर जो पदाती अवकाश पर आये थे वे तथा देहली के नजीबों की पल्टन, कस्टम के चपरासी, पुलिस के बर्कन्दाज तथा इसी प्रकार के अन्य लोग, कुछ जेहादी।

जो तिलंगे बिना हथियारों के आते थे उनको देहली की मैंगजीन से अस्त्र-शस्त्र प्राप्त हो जाते थे। जकाउल्लाह देहलवी ने लिखा है कि "देहली के गुंडे उत्पात मचाना जानते थे किन्तु रणक्षेत्र में अस्त्र-शस्त्र चलाने से उनके प्राण निकलते

---

१. जहीर देहलवी, **दास्ताने गदर** पृ० ९४–९५।

थे। नगरों के निवासी अधिकांश बोदे तथा कायर होते हैं, विशेष रूप से इस नगर के। इस नगर का पानी कायरता उत्पन्न करने के लिए प्रसिद्ध है।"[१]

गुरीला युद्ध

विभिन्न स्थानों के क्रान्तिकारियों को एक सूत्र में बाँधने के लिए योग्य सेना-नायकों की बड़ी आवश्यकता थी। उनमें अनुशासन की बड़ी कमी थी।[२] युद्ध का संचालन अधिकांश अंग्रेज स्वयं करते थे। भारतीय अफसर अपने सेना-नायकों के आदेशों का पालन करते थे। अतः इन पल्टनों के साथ जो साधारण अधिकारी होंगे उन्हें भी अभियानों के संचालन का विशेष ज्ञान न होगा। जो शाहजादे कर्नल आदि बनाये गये थे, उन्होंने रणक्षेत्र कभी देखा भी न था अतः सैनिकों की अत्यन्त वीरता के बावजूद भी सफलता न प्राप्त होती थी, परन्तु क्रान्तिकारियों ने अपनी स्वतन्त्रता की रक्षा का दृढ़ संकल्प कर लिया था अतः वे एक स्थान की पराजय से निराश होनेवाले न थे। उन्होंने निरंतर आक्रमण करके अंग्रेजों के छक्के छुड़ा दिये और एक प्रकार का गुरीला युद्ध छेड़ दिया। छावनी पर बराबर गोलों की वर्षा होती रहती थी और अंग्रेज यह समझने पर विवश हो गये थे कि देहली की विजय साधारण कार्य नहीं।

९ जून को मध्याह्नोत्तर में क्रान्तिकारियों ने हिन्दू राव की कोठी पर बड़े जोर का आक्रमण किया। अंग्रेजों के सौभाग्य से उनके सहायतार्थ गाइड कोर वहाँ पहुँच गया था। इस सेना के आक्रमण से क्रान्तिकारियों को पीछे हटना पड़ा।[३] १० जून को ५०० क्रान्तिकारी दो हलकी तोपें तथा कुछ अश्वारोही अजमेरी द्वार की ओर से लेकर इस आशय से निकले कि वे अंग्रेजी सेना के दाहिने भाग को चकरायें तथा पिछले भाग पर आक्रमण करें। मेजर रीड दो तोपें, सिरमूर की ७ कम्पनियाँ, १५० गाइड्स तथा ६०वीं राइफिल की दो कम्पनियाँ लेकर युद्ध

१. **तारीखे उरूजे अहदे सल्तनते इंग्लिशिया** पृ० ४८१, ४८२, **जीवनलाल** पृ० १०६

२. हडसन का पत्र अपनी पत्नी के नाम, १० जून १८५७, **ट्वेल्व इयर्स आफ ए सोलजर्स लाइफ़ इन इंडिया** (लन्दन १८५९ ई०) पृ० ३० ।

३. **होप ग्रान्ट** पृ० ६६, **फ़ारेस्ट** भाग १ पृ० ८०, **ग्रीद्ड** प० २० ।

करने को अग्रसर हुआ। छः बजे के निकट क्रान्तिकारियों से युद्ध प्रारम्भ हुआ। क्रान्तिकारियों को आशा थी कि गोरखे हमसे मिल जायँगे। जब गोरखे निकट आये तो क्रान्तिकारियों ने उनसे कहा कि "हम तुम पर गोले नहीं मारते। तुमसे कहते हैं कि हमसे आकर मिल जाओ।" गोरखों ने उत्तर दिया कि "हम तुमसे मिलने के लिये आये हैं।" जब गोरखे २० कदम पर पहुँचे तो उन्होंने क्रान्तिकारियों पर गोलियों की वर्षा प्रारम्भ कर दी किन्तु जैसे ही वे अजमेरी द्वार की ओर बढ़े उन पर तोपों के गोले पड़ने लगे। क्रान्तिकारी भी विजय की आशा न देखकर लौट गये।[१]

११ जून को उन्होंने पुनः हिन्दू राव की कोठी पर आक्रमण किया किन्तु मेजर रीड तथा गोरखे इसकी रक्षा पर रात-दिन कटिबद्ध रहते थे और क्रान्तिकारियों को पीछे हटना पड़ा। ६०वीं राइफिल की दो कम्पनियाँ तथा गाइड्स के पदाती भी उनके अधीन थे। यह कोठी क्रान्तिकारियों की भारी तोपों के सामने थी। उनके गोले गोलियों से वह छलनी हो गई थी। रीड साहब शत्रुओं से युद्ध करने के अतिरिक्त किसी अन्य समय पहाड़ी से नीचे न उतरते थे।[२] क्रान्तिकारियों में काले खाँ जो पहले अंग्रेजी सेना में २८ रु० मासिक वेतन पर नौकर था बड़ी कुशलता से अंग्रेजों के मोर्चों पर गोलों की वर्षा करता था।[३] पूरे नगर में उसकी योग्यता की धूम थी। क्रान्तिकारियों के निशाने की हडसन ने भी भूरि-भूरि प्रशंसा की है।[४] दो बजे के निकट अंग्रेजों ने कश्मीरी दरवाजे पर गोलों की वर्षा प्रारम्भ कर दी। शाही तोपखाने ने उन्हें सफलता न मिलने दी। अंग्रेज हताश हो गये। अंग्रेजी सेना के २००० सैनिकों को कश्मीरी दरवाजे की ओर बढ़ने का आदेश हुआ था। दो क्रान्तिकारी सवार तुरन्त नगर में पहुँचे और उन्होंने सुरक्षित सेना के भेजने का आग्रह किया कारण कि शाही सवारों पर कड़ा आक्रमण किया जा रहा था। सुरक्षित सेना तुरन्त चल पड़ी किन्तु अंग्रेज सेना भाग चुकी थी।[५]

---

१. **फारेस्ट** भाग १, पृ० ८१।

२. **स्टेट पेपर्स** भाग १, पृ० ४४३।

३. **जीवनलाल** पृ० ११९-१२०.

४. हडसन का पत्र उसकी पत्नी के नाम, १० जून १८५७ ई० **ट्वेल्व इयर्स आफ़ ए सोल्जर्स लाइफ़ इन इंडिया**, पृ० २०१।

५. **जीवनलाल** पृ० १२०।

१२ जून को क्रान्तिकारियों ने अंग्रेजी सेना के बायें भाग पर आक्रमण करने का संकल्प किया। ध्वज-स्तम्भ (बावटा) से थोड़ी दूर दो हलकी तोपें तथा ७५वीं पल्टन की कुछ कम्पनियाँ नदीतट पर स्थित सर थ्योफिलस मेटकाफ की कोठी में रहती थीं। क्रान्तिकारियों की एक सेना वृक्षों की आड़ में छिपती हुई भूमि के लहरियादार होने के कारण पहाड़ी पर चढ़ गई और अंग्रेजों की सेना को सूचना न हुई। उन्होंने अचानक ध्वज स्तम्भ (बावटा) पर नियुक्त सेना पर आक्रमण कर दिया। ७५वीं रेजीमेंट के सेनानायक कप्तान फाक्स तथा बहुत से सैनिकों एवं तोपचियों की हत्या कर दी। वे तोपों पर अधिकार जमाने वाले ही थे कि ७५वीं पल्टन ने क्रान्तिकारियों पर आक्रमण कर दिया। क्रान्तिकारी अंग्रेजों के शिविर में गोलियों की वर्षा करने लगे। कुछ क्रान्तिकारी अंग्रेजों के शिविर में घुस गये किन्तु अंग्रेजों की सहायतार्थ अन्य सेना पहुँच गई अतः उन्हें लौटना पड़ा। अभी अंग्रेज इस भयंकर आक्रमण से सँभलने भी न पाये थे कि क्रान्तिकारियों ने सब्जी मंडी की ओर से हिन्दू राव की कोठी पर आक्रमण कर दिया। वास्तव में दोनों आक्रमणों का एक साथ होना निश्चय हुआ था किन्तु अंग्रेजों के सौभाग्य से दोनों आक्रमण एक साथ न हो सके और इस सेना को भी पीछे हटना पड़ा।[1]

अंग्रेजों द्वारा रात्रि में तीव्र आघात का प्रयत्न

कुछ अंग्रेजों का विचार था कि यदि बदली की सराय के उपरान्त तुरन्त देहली पर आक्रमण कर दिया जाता तो देहली विजय हो जाती किन्तु क्रान्तिकारियों की वीरता, गढ़बन्दी तथा तीव्र आक्रमणों को देखकर यह धारणा मिथ्या ही प्रतीत होती है। यदि अंग्रेज ऐसी भूल कर देते तो वे अवश्य पराजित होते। बरनार्ड इसे भली भाँति समझता था किन्तु युवक अधिकारी तथा इंजीनियर इसके पक्ष में थे। बरनार्ड यह भी समझता था कि देहली के बाहर इस प्रकार अधिक समय तक प्रतीक्षा करना भी सम्भव नहीं। ११ जून को इंजीनियरों ने रात्रि में देहली पर आक्रमण करने की एक योजना बनाई जिसके अनुसार रात्रि में साढ़े तीन बजे लाहौरी द्वार तथा काबुली द्वार पर एक साथ आक्रमण करके क्रान्तिकारियों को नगर से किले में भगा देना, तदुपरान्त किले पर अधिकार जमा लेना निश्चय हुआ।

---

१. **स्टेट पेपर्स**, पृ० २९३-२९६; **फारेस्ट** भाग १, पृ० ८३-८७।

योजना देखने में तो बड़ी अच्छी थी किन्तु वास्तव में वह शेखचिल्ली की डींग से अधिक न थी किन्तु बरनार्ड ने उसे स्वीकार कर लिया। रात्रि के १२ बजे के उपरान्त तक समस्त तैयारियाँ हो गईं। जब सब लोग तैयार हुए तो कहा जाता है कि ब्रिगेडियर ग्रेव्ज के यूरोपियन दस्ते के अनुपस्थित होने के कारण आक्रमण त्याग देना पड़ा।[1] ब्रिगेडियर ग्रेव्ज ने बताया कि वह आदेश भली भाँति समझ न सका किन्तु आक्रमण न करने का रहस्य दूसरा ही है। जीवनलाल के अनुसार बादशाह को ११ जून को ज्ञात हुआ कि अंग्रेजों का विचार रात्रि में कुदसिया बाग पर आक्रमण करने का है। क्रान्तिकारियों ने २१००० सैनिक रात भर तैयार रखे। इस तैयारी की सूचना अंग्रेजों को अवश्य प्राप्त हुई होगी और यह आक्रमण त्याग दिया गया होगा।[2]

१३ जून को बरनार्ड ने लार्ड कैनिंग को लिखा, "देहली इतना दृढ़ स्थान है और मेरे साधन इतने कम हैं कि अचानक आक्रमण अथवा व्यवस्थित आक्रमण दोनों केवल कठिन ही नहीं असम्भव हैं। अचानक आक्रमण के लिए, जो मेरा विचार है, मैं जान पर खेलकर कोई बात उठा न रक्खूंगा। यदि मैं सफल हुआ तो सब कुछ ठीक है किन्तु पराजय घातक होगी, कारण कि मेरे पास कोई ऐसी सुरक्षित सेना नहीं जिस पर निर्भर हो सकूं। अवश्य ही आप लोग देहली की कठिनाइयों का अनुमान भली भाँति नहीं कर रहे हैं।"[3]

यद्यपि सेनापति सावधानी से कार्य करना चाहता था किन्तु विल्बर फोर्स, ग्रीद्ड, हडसन आदि अचानक तीव्र आक्रमण के पीछे इस प्रकार चिपटे थे कि उन्हें कुछ सूझता ही न था। अधिकारियों ने अनेक बार युद्ध सम्बन्धी परामर्शदात्री समितियाँ बैठायीं किन्तु अनुभवी सैनिक-अधिकारियों ने दृढ़तापूर्वक अचानक आक्रमण का विरोध किया और यह योजना त्याग दी गई। बरनार्ड ने सर जॉन लारेंस को इस विषय में १८ जून को लिखा कि "मुझे पूर्ण विश्वास है कि विजय उतनी ही घातक होगी जितनी कि पराजय।"[4] हडसन ने, जो तुरन्त आक्रमण का समर्थक था, १९ जून को अपनी पत्नी

---

१. **सिप्वाए वार इन इंडिया** भाग २, पृ० ५२६-५२८।

२. **जीवनलाल** पृ० १२०।

३. **सिप्वाए वार इन इंडिया** भाग २, पृ० ५२९-५३०।

४. **सिप्वाए वार इन इंडिया** भाग २, पृ० ५३७।

को लिखा, "विलम्ब तथा प्रगति का पूर्ण अभाव हताश किये देता है। हमारे ऊपर निरन्तर आक्रमण हुए हैं। सबका परिणाम तो एक ही हुआ किन्तु हम उसी प्रकार घिरे हुए हैं जिस प्रकार कि विद्रोही। प्रत्येक में हमारी ओर बहुमूल्य प्राणों की हानि होती है। यदि उन सब को जोड़ा जाय तो तुरन्त आक्रमण में हानि इससे कम होगी। नगर पर तुरन्त आक्रमण की हमारी योजना प्रथम रात्रि में भय तथा आज्ञाओं के उल्लंघन के कारण असफल हुई। यह वही व्यक्ति है जिसकी वजह से देहली हाथ से निकल गयी। अब मूर्खता के कारण इस पर पुनः अधिकार नहीं हो रहा है।"[१]

क्रान्तिकारियों द्वारा निरन्तर आक्रमण

१५ जून को क्रान्तिकारियों ने मेटकाफ की कोठी पर इस आशय से आक्रमण किया कि अंग्रेजों की सेना के बायें अंग को हानि पहुँचायें[२]। १७ जून को प्रातःकाल अंग्रेजों ने देखा कि हिन्दू राव की कोठी के दाहिनी ओर ईदगाह में कुछ सैनिक मोर्चे बना रहे हैं। यदि वे अपना मोर्चा बनाकर तोपें लगा देते तो उनके गोले सीधे अंग्रेजी शिविर पर पड़कर उसको छलनी बना देते। आज वे अत्यन्त तीव्र गति से गोले चला रहे थे। एक गोला राव की कोठी में भी आकर गिरा जिससे दस सैनिक घायल हुए •तथा मारे गये। अंग्रेजी सेना चारों ओर से क्रान्तिकारियों के मोर्चे पर अधिकार जमाने के लिए बढ़ी। रीड किशनगंज में प्रविष्ट हो गया किन्तु क्रान्तिकारियों ने भी उसके सैनिकों की खूब खबर ली परन्तु उनका मोर्चा, जो अभी बनकर तैयार न हुआ था, नष्ट हो गया। रीड ने गाँवों में आग लगवा दी और जिस लकड़ी से वे मोर्चा बनाते थे उसे नष्ट कर दिया।[३]

१८ जून को देहली में नसीराबाद की दो रेजीमेंटें छः तोपें लेकर पहुँच गई।[४] १९ जून को क्रान्तिकारी नई स्फूर्ति से सब्जी मंडी की ओर से होते हुए अंग्रेजों के

---

१. **ट्वेल्व इयर्स आफ ए सोल्जर्स लाइफ इन इंडिया** पृ० २०७–२०८।

२. **सिप्वाए वार इन इंडिया** भाग २, पृ० ५४५।

३. मेजर रीड का पत्र डिप्टी ऐडजुटेंट जनरल के नाम, दिनांक १८ जून १८५७, **स्टेट पेपर्स** भाग १, पृ० ३००-३०१, **सिप्वाए वार इन इंडिया**, भाग २, पृ० ५४८-५४९; **देहली–१८५७**, पृ० ६६, **फारेस्ट** भाग १, पृ० ८७-८८

४. **जीवनलाल**, पृ० १२४

दाहिनी ओर उद्यानों में पहुँच गये और थोड़ी देर के लिए लुप्त होकर नजफगढ़ की नहर की ओर प्रकट हुए। उनकी सूचना मिलते ही सर्वप्रथम अंग्रेजी तोपखाना अग्रसर हुआ। उद्यानों में से क्रान्तिकारियों ने खूब गोले बरसाये। क्रान्तिकारियों का यह तोपखाना ऐबट की बैट्री के नाम से प्रसिद्ध था। इन तोपों के गोलों की वर्षा से अंग्रेजों का तोपखाना छिन ही जानेवाला था कि गाइड्स के सवारों का एक दस्ता पहुँच गया। तोपखाने के अधिकारी टाम्ब्ज़ ने इस गाइड्स के दस्ते के अधिकारी डेले को ललकारा कि "यदि तुम आक्रमण न करोगे तो मेरी तोपें छिन जायँगी।" उसके आक्रमण से क्रान्तिकारी उसकी ओर बढ़े जिसके कारण तोपखाना बच गया किन्तु दिन डूबते ही क्रान्तिकारियों ने अंग्रेजी सेना के एक अंग को पराजित कर दया। अँधेरे में घोर युद्ध हुआ और अंग्रेज लौट गये।

यदि क्रान्तिकारी रात्रि में इस स्थान को दृढ़ कर लेते तो पंजाब का मार्ग बन्द हो जाता और अंग्रेजों के पास न रसद पहुँच पाती और न सैनिक सहायता ही। वे क्रान्तिकारियों के आक्रमण को सहन न कर पाते। अंग्रेजों को अपने शिविर में रात भर नींद न आयी किन्तु क्रान्तिकारियों ने इस स्थान को दृढ़ न किया। वे समझे कि हमें विजय प्राप्त हो गई। दूसरे दिन प्रातःकाल अंग्रेजों ने फिर इस स्थान पर आक्रमण किया किन्तु वहाँ एक छोटी सी रक्षक सेना के अतिरिक्त कुछ न था जिस पर अंग्रेजों ने सुगमतापूर्वक विजय प्राप्त कर ली। अंग्रेज अभी वापस भी न हुए थे कि क्रान्तिकारियों ने पुनः उसी स्थान पर पहुँचकर गोलों की वर्षा प्रारम्भ कर दी किन्तु अंग्रेजों ने उन्हें भी भगा दिया और इस स्थान को अत्यन्त दृढ़ बना लिया। बरनार्ड को इन आक्रमणों ने पूर्णतः हताश कर दिया[१]।

२३ जून का युद्ध

तीन दिन तक कोई युद्ध न हुआ। २३ जून को प्लासी के युद्ध को १०० वर्ष पूरे होते थे। क्रान्तिकारी बड़े उत्तेजित थे। वे इस दिन ब्रिटिश राज्य की समाप्ति

---

१. बरनार्ड का पत्र ऐडजुटेंट जनरल को, २३ जून १८५७ ई० (**स्टेट पेपर्स** भाग १, पृ० ३०२), **देहली १८५७** पृ० ७०-७३, **होप ग्रान्ट**, पृ० ६९-७२, **नाइन्थ लान्सर,** पृ० २३-२४, **फारेस्ट,** भाग १, पृ० ८९-९२।

की आशा कर रहे थे। ज्योतिषियों ने भी इस बात का आश्वासन दिलाया था कि शुभ मुहूर्त उसी दिन है[1]। जालन्धर तथा फुलवर से तीन पदातियों की रेजीमेंटें तथा अश्वारोहियों का छठा रिसाला भी आ गया था। अंग्रेजों ने भी पूर्ण रूप से तैयारी प्रारम्भ कर दी थी। मेजर उल्फर्टस के सेना सहित देहली पहुँचने के समाचार प्राप्त हो चुके थे। सर हेनरी बरनार्ड ने मेजर उल्फर्टस को आदेश दिया कि वह तुरन्त शिविर की ओर प्रस्थान करे। अभी उसकी सेना का पिछला भाग पहुँचा भी न था कि शहरपनाह से गोलों की वर्षा होने लगी। उसी समय क्रान्तिकारियों ने अंग्रेजी सेना के दाहिने भाग पर तोपें मारनी प्रारम्भ कर दीं। सब्जी मंडी से निकलकर हिन्दू राव की कोठी से क्रान्तिकारियों ने मेजर रीड के एक मोर्चे पर अत्यधिक तीव्र आक्रमण किया। रीड लिखता है, "मध्याह्न में १२ बजे शत्रुओं ने मेरे मोर्चे पर तीव्र आक्रमण किया। इससे अधिक अच्छी तरह कोई भी युद्ध न कर सकता था। उन्होंने राइफिल गाइड्स तथा मेरे सैनिकों पर बार-बार आक्रमण किये। एक बार मैं समझा कि मेरी पराजय हो गई। नगर से जो भारी तोपें वे लाये थे उन्होंने उनसे इस प्रकार हमारे ऊपर गोलों की वर्षा की कि मेरी स्थिति डावाँडोल कर दी।" थोड़ी देर उपरान्त अंग्रेजों को सहायता प्राप्त हो गई और क्रान्तिकारियों को सब्जी मंडी से हटाने का प्रयत्न किया जाने लगा। क्रान्तिकारियों ने गलियों, दीवारों तथा छतों से गोलियों की वर्षा की। बहुत से क्रान्तिकारी अंग्रेजी सेना के दाहिनी ओर सब्जी मंडी तथा बागों में गये और हिन्दू राव की कोठी के पीछे तथा अंग्रेजों के मोर्चों पर उन्होंने तीन बार आक्रमण किया। अंग्रेजी सेना सब्जी मंडी में तीन बार उनके पीछे गई। क्रान्तिकारियों ने घरों में घुसकर घरों के द्वार बन्द करके आक्रमण करना प्रारम्भ कर दिया। जैसे ही अंग्रेजी सेना हटती, वे घरों से निकल-निकलकर फिर आक्रमण करने लगते। यूरोपियन तथा सिक्ख सेनाएँ, जो ३० मील की यात्रा करके आज प्रातःकाल आई थीं, शत्रुओं का आक्रमण रोकने के लिए बुलाई गईं। दिन भर युद्ध होता रहा। सायंकाल सेनाएँ अपने-अपने शिविर में चली गईं। जालंधर की सेनाओं ने इस युद्ध में बड़ा काम किया।[2]

---

१. राबर्ट्स, पृ० ७९४–९५।

२. **देहली १८५७**, पृ० ७८-७९, **राबर्ट्स**, पृ० ९५–९६, **नाइन्थ लान्सर**, पृ० २८, **फारेस्ट** भाग १, पृ० ९३-९६, **सिप्वाए वार** भाग २, पृ० ५५४-५५७।

अंग्रेजों को नई सहायता प्राप्त होना तथा आक्रमण में तेजी

अंग्रेजों को इसके उपरान्त २६ जून तथा तीसरी जुलाई के मध्य में पंजाब से सैनिक सहायता प्राप्त हो गई और अच्छे योद्धाओं की संख्या ६,६०० तक पहुँच गई। नई सेना के आ जाने से नगर पर अचानक आक्रमण करके विजय कर लेने की बात पुनः प्रारम्भ हो गई किन्तु १ तथा २ जुलाई को बरेली की सेना पहुँच जाने से उन्हें यह योजना त्याग देनी पड़ी।[1] ३० जून को क्रान्तिकारियों ने सब्जी मंडी तथा हिन्दू राव की कोठी की सेना पर पुनः एक तीव्र आक्रमण किया और अंग्रेजों को बड़ी हानि पहुँचाई।

अंग्रेजों का भारतीयों के प्रति व्यवहार

यद्यपि अंग्रेजों के अस्तित्व का आधार भारतीयों पर था किन्तु वे उस समय भी उनके साथ सौजन्यपूर्ण व्यवहार न करते थे। बैरों के लड़के गोलों की वर्षा के मध्य में गोरों को भोजन पहुँचाते थे और मर जाने का भय भी नहीं करते थे। गोरे अपने काले सेवकों से बड़ी कठोरता का व्यवहार करते थे। जब ये बालक अपने प्राण तथा अपने सिर के भार को बचाकर गोरों के पास भोजन ले जाते तो वे यह कहते "ब्वाय! तुम्हारे लिए भला हुआ कि तुमने हमारा भोजन नष्ट नहीं किया।"[2]

३ जुलाई को मध्याह्नोत्तर में क्रान्तिकारी अंग्रेजी सेना के दाहिनी ओर उद्यानों तथा आसपास के स्थानों पर एकत्र हो गये। अंग्रेजी सेना को इस आक्रमण की सूचना मिल चुकी थी किन्तु क्रान्तिकारियों ने अंग्रेजी सेना पर आक्रमण न किया और अलीपुर की ओर बढ़ गये। अलीपुर अंग्रेजों की सेना के पिछले भाग से एक पड़ाव की दूरी पर था। वहाँ पहुँच कर उन्होंने पंजाबी सवारों के एक दस्ते को पराजित कर दिया। अंग्रेजों को यह पता न चल सका कि वे कर्नाल की ओर बढ़ना चाहते हैं अथवा देहली लौटेंगे। दूसरे दिन प्रातःकाल वे देहली की ओर लौटे।[3] वे बड़े विस्तृत क्षेत्र में फैले थे। मेजर कोक इनसे युद्ध करने के लिए नियुक्त हुआ था किन्तु उसके आक्रमण से क्रान्तिकारियों पर अधिक प्रभाव न हुआ और वे नगर

---

१. **सिप्वाए वार** भाग २, पृ० ५५६-५५७, **फारेस्ट**, भाग १, पृ० ९६-९८।
२. **देहली १८५७**, पृ० ९६।
३. **सिप्वाए वार इन इंडिया** भाग २, पृ० ६०२-६०६।

में वापिस चले गये। जिस समय मेजर कोक की सेना नहर के किनारे वृक्षों के नीचे विश्राम कर रही थी और तोपखाना शिविर को भेजा जा चुका था, लगभग ८०० क्रान्तिकारी सवारों ने उन पर कई बार आक्रमण करके उन्हें बुरी तरह परेशान किया।[1] हडसन ने अपनी पत्नी को ५ जुलाई को लिखा कि "कल जो कुछ हुआ, उससे मैं संतुष्ट नहीं।"

बरनार्ड की मृत्यु तथा रीड की नियुक्ति

जनरल एनसन की मृत्यु के उपरान्त बरनार्ड सेनापति नियुक्त हुआ था। वह स्वयं भारत के युद्ध के ढंग से परिचित न था अतः उसे दूसरों के परामर्श पर निर्भर होना पड़ता था। इसमें उसे बड़े कष्ट का सामना करना पड़ता था। एक मास के घोर परिश्रम, निराशा तथा असफलताओं ने उसे रुग्ण कर दिया। ५ जुलाई को उसे हैजा हो गया। जनरल रीड ने प्रातःकाल उससे भेंट की थी। उस समय उसे कुछ न हुआ था किन्तु रविवार को १० बजे दिन से उसके अन्तिम समय के विषय में कानाफूसी होने लगी और थोड़ी देर के बाद उसकी मृत्यु हो गई। उसके स्थान पर जनरल रीड नियुक्त किया गया[2]। उसने कार्य का भार सँभालते ही एक पुल के अतिरिक्त नहर के सब पुल नष्ट करा दिये। ८ जुलाई को उसने नजफगढ़ की झील के पुल को भी नष्ट करा दिया। इससे अंग्रेजों के शिविर का पिछला भाग भी दृढ़ हो गया।

क्रान्तिकारियों द्वारा तीव्र आक्रमण

९ जुलाई को क्रान्तिकारियों की एक सेना नगर के बाहर निकली। क्रान्तिकारी नगर की तोपों से तथा नगर के बाहर मैदानी तोपखानों से निरन्तर गोलों की वर्षा करने लगे। वे युद्ध करते हुए अंग्रेजी सेना के तोपखाने तक पहुँच गये

---

१. **देहली—१८५७,** पृ० १०४-१०५, **ग्रीफिथ्स,** पृ० ७४-८२, **फारेस्ट** भाग १, पृ० ९८-१०० ।

२. बरनार्ड के पुत्र ने बताया कि उसका पिता मृत्यु के समय यही कहता था "ग्रान्ट से कहो सब अश्वारोहियों को ले जाय। रीड से कहो कि उसके सहायतार्थ मैंने ६०वें रिसाले को भेज दिया है।" (**होप ग्रान्ट,** पृ० ७८), **देहली—१८५७** पृ० १०७—१०८, **ग्रीद्ड** पृ० ९४—९५, **सिप्वाए वार** भाग २, पृ० ५६७-५६८, **फारेस्ट** भाग १ पृ० १००-१०२ ।

जो भारतीयों के अधीन था। क्रान्तिकारियों ने उन्हें ललकारा कि "अपनी तोपें तैयार करके हमारे साथ देहली चलो" किन्तु उन्होंने अपने भाइयों का साथ देना स्वीकार न किया और यूरोपियन सैनिकों को बुलवा लिया। क्रान्तकारियों को पीछे हटना पड़ा। सब्जी मंडी में क्रान्तिकारी घरों तथा उद्यानों से गोले चला रहे थे। जो अंग्रेजी सेना उनसे युद्ध करने के लिए नियुक्त थी उसे बड़ी कठिनाई का सामना करना पड़ रहा था किन्तु मेजर रीड द्वारा प्रेषित सेना की सहायता पहुँच जाने के उपरान्त भी अंग्रेजी सेना की कठिनाई में किसी प्रकार की कमी नहीं हुई। मकान की छतों की सीढ़ियों पर संगीनों द्वारा घोर युद्ध हुआ। सायंकाल क्रान्तिकारियों की सेना नगर में लौट गई।[1]

भारतीय सैनिकों के प्रति अंग्रेजों की कठोरता

बदली की सराय के युद्ध में चौथे तथा नवें इर्रेगुलर (अवैध) रिसाले के कुछ भागों पर पूर्ण विश्वास नहीं किया गया। सिक्ख तथा पंजाबी उनकी खुल्लम खुल्ला कटु आलोचना करते थे। जब नवें रिसाले का दूसरा तथा १७वें अवैध रिसाले का एक बाजू देहली में आया तो यह निश्चय हुआ कि इसे पंजाब को उलटा लौटा दिया जाय। चौथे रिसाले के केवल १०० सवार रह गये थे। एक सवार भी उनमें से कल के युद्ध में न भागा था किन्तु अन्तिम समय में उनसे घोड़े तथा तलवारें ले ली गईं और अर्दली नियुक्त कर दिया गया।[2]

पुनः घोर युद्ध

पाँच दिन उपरान्त पुनः एक घोर युद्ध हुआ। १४ जुलाई को प्रातःकाल से ही क्रान्तिकारियों ने नगर के बाहर निकल कर हिन्दू राव की कोठी तथा सब्जी मंडी के मोर्चों पर गोलों की वर्षा प्रारम्भ कर दी। अंग्रेजी सेना ने पहाड़ी पर से तोपें

---

१. मेजर जनरल टी. रीड्ज का पत्र कर्नल आर० जे० एच० वर्च के नाम दिनांक १४ जुलाई १८५७ (**स्टेट पेपर्स** भाग १ पृ० ३१५); **सिप्वाए वार** भाग २, पृ० ५७४-५८२; **ग्रीवृड** पृ० १०४-१०६, **देहली–१८५७**, पृ० ११७-११९; **फारेस्ट** भाग १, पृ० १०२-१०६।

२. **राबर्ट्स** पृ० १०५।

चलाईं किन्तु उससे क्रान्तिकारियों पर कोई प्रभाव न हुआ। ३ बजे तक वे अंग्रेजों के मुकाबले में डटे रहे। ३ बजे के उपरान्त अंग्रेज अपनी सेनाएँ चारों ओर से एकत्र करके क्रान्तिकारियों पर टूट पड़े। सायंकाल तक विभिन्न स्थानों पर घोर युद्ध होता रहा। रात्रि में क्रान्तिकारी नगर में वापस चले गये।[1]

जनरल रीड का त्यागपत्र

१७ जुलाई को जनरल रीड ने सेनापति के पद से त्यागपत्र दे दिया। वह बहुत समय से रुग्ण था। १२ दिन के ही युद्ध ने उसके स्वास्थ्य को किसी कार्य के योग्य न रखा। वह ब्रिगेडियर विल्सन को अपने पद के कार्य का भार सौंप कर अपने स्वास्थ्य की रक्षा के लिए शिमले चला गया।[2] दो सेनापतियों की मृत्यु हो चुकी थी। तीसरे सेनापति की यह दुर्दशा तथा स्टाफ के चीफ़ ऐडजुटेंट जनरल, क्वार्टर मास्टर जनरल तथा अन्य अधिकारियों का घायल पड़ा होना[3] क्रान्तिकारियों की दृढ़ता का बहुत बड़ा प्रमाण है। लगभग ५ सप्ताह में क्रान्तिकारियों ने कोड़ियों आक्रमण करके अंग्रेजों के छक्के छुड़ा दिये थे। नगर को अचानक आक्रमण करके विजय कर लेने की भी योजनाएँ बनाई गईं किन्तु वे असफल रहीं। जुलाई के प्रारम्भ से ही जो अधिकारी अचानक आक्रमण करने के लिए गला फाड़-फाड़कर चिल्ला रहे थे वही पहाड़ी छोड़कर अन्य स्थानों को जाकर आक्रमण करने के लिए परामर्श देने लगे। समस्त उत्तरी भारत में क्रान्ति की अग्नि धधक रही थी किन्तु मुख्य इंजीनियर बेयर्ड स्मिथ के मतानुसार पहाड़ी छोड़कर चले जाने का विचार त्याग दिया गया। उसने कहा, "देहली से हट जाना हमारे लिए घातक होगा। यह हमारा कर्त्तव्य है कि देहली की मजबूत पकड़ जो हमारे हाथ में है उस पर दृढ़ रहें। यह बात हमारे हित में है कि पंजाब से हमारा यातायात खुला हुआ है। पंजाब में शान्ति है। वहाँ की सहायता से हमें लाभ पहुँचता रहेगा। देहली छोड़ देने से

---

१. **ग्रीफ़िथ्स** पृ० १००-१०५, **होप ग्रान्ट** पृ० ८२, **देहली १८५७** पृ० १२८-१२९, **सिप्वाए वार** भाग २, पृ० ५८३-५८५, **फ़ारेस्ट** भाग १, पृ० १०६-१०८।

२. **स्टेट पेपर्स** भाग १, पृ० ३२९, **देहली १८५७** पृ० १३५, **ग्रीद्ड** पृ० १२५, **फ़ारेस्ट** भाग १ पृ० १०९।

३. **सिप्वाए वार** भाग २, पृ० ५८७।

पंजाब से हमारा सम्बन्ध समाप्त हो जायगा और फिर हमारी सहायता के द्वार बन्द हो जायँगे[1]।

नये सेनापति का क्रान्तिकारियों के तीव्र आक्रमण द्वारा स्वागत

क्रान्तिकारियों ने नये सेनापति का स्वागत १८ जुलाई को एक कड़े आक्रमण द्वारा किया। मध्याह्न में निकल कर उन्होंने विभिन्न स्थानों से अंग्रेजी सेना पर आक्रमण किया। इस आक्रमण के उपरान्त अंग्रेज इंजीनियरों ने सब्ज़ी मंडी के मोर्चों को बहुत ही दृढ़ कर दिया और क्रान्तिकारियों के उस ओर से आक्रमण का मार्ग पूर्णतः बन्द कर दिया। उन्होंने आस-पास के अन्य मोर्चों को भी मजबूत कर लिया[2]। २३ जुलाई को प्रातःकाल क्रान्तिकारियों ने कश्मीरी दरवाजे से निकलकर लुडलो कैसिल तथा उसके आस-पास के स्थानों पर अधिकार जमाकर अंग्रेजी सेना के मोर्चों पर गोलों की वर्षा प्रारम्भ कर दी और सायंकाल तक विभिन्न स्थानों से आक्रमण करते रहे।[3] २७ जुलाई तक क्रान्तिकारी साधारण आक्रमण करते रहे किन्तु २८ जुलाई को रोहतक के मार्ग से इस आशय से चले कि नजफगढ़ की झील के नाले पर एक अस्थायी पुल बनायें। इस पुल के बनाने के लिए उनके पास लकड़ियाँ भी थीं। मध्याह्नोत्तर में क्रान्तिकारियों ने बुसी में पुल तैयार कर लिया था किन्तु जल की बाढ़ के कारण पुल बह गया।[4] क्रान्तिकारी वापस चले गये।[5] उसी समय पदातियों की एक सेना नगर के बाहर निकल आई। दोनों सेनाओं ने मिलकर किशनगंज के पास से अंग्रेजों के मोर्चे के दायें भाग पर आक्रमण किया। रात भर तोपें तथा बन्दूकें चलती रहीं। दूसरी अगस्त के दस बजे तक युद्ध बड़ी तीव्र गति से चलता रहा और ४ बजे क्रान्तिकारियों की सेना वापस आई।

---

१. **ग्रीद्ड** पृ० १२५, **देहली १८५७** पृ० १३६, **ग्रीफिथ्स** पृ० १०५-१०८, **फ़ारेस्ट** भाग १ पृ० १०९-१११, **सिप्वाए वार** भाग २ पृ० ५९०।

२. **सिप्वाए वार** भाग २, पृ० ५९२।

३. **ग्रीफिथ्स** पृ० १०९-११०; **सिप्वाए वार** भाग २, पृ० ५९३।

४. **फ़ारेस्ट** भाग १, पृ० १११-११२।

५. **देहली उर्दू अखबार**, २ अगस्त १८५७ ई० पृ० ४। वास्तव में वर्षा के कारण यह योजना असफल रही।

२२ जुलाई १८५७ ई० को जे० आर० कालविन ने ब्रिगेडियर जनरल हैवलाक को लिखा कि देहली पर अधिकार जमाने के विषय में किसी प्रकार का उचित कदम नहीं बढ़ाया गया है। शत्रु के पास सामान तथा गोले-बारूद के अपार साधन हैं। उन्होंने दीवारों तथा बुर्जों से दृढ़तापूर्वक उनका प्रयोग किया है। हमारी अत्यन्त दृढ़ गढ़बन्दी पर, जो सर टी० मेटकाफ की कोठी से हिन्दू राव की कोठी तक फैली है और जिसके सामने नगर की पश्चिमी दीवार के साथ-साथ पत्थर के बने हुए मकान हैं, वे समय पर बड़े कड़े छापे मारते रहे हैं। उन छापों में उन्हें निरन्तर पराजय हुई है और उनको बहुत बड़ी हानि उठानी पड़ती है किन्तु विद्रोही सेना के दस्तों द्वारा उन्हें बराबर ताजी सहायता प्राप्त होती रहती है। शिविर में यह मत है कि हम लोगों के लिए अपनी ५,००० की सेना लेकर उन पर टूट पड़ना सुरक्षित नहीं अपितु हमें उनको लगातार पराजय द्वारा थका देना चाहिये। इस उद्देश्य से शिविर द्वारा मुझ से आग्रह किया गया है कि मैं देहली की ओर समस्त सेनाएँ इस कारण भेजूँ कि यदि विद्रोह का सिर वहाँ कुचल दिया जाता है तो सब कुछ ठीक हो जायगा।[१]

आदर्श बकरीद

नगर में १ अगस्त १८५७ ई० को आदर्श बकरीद मनाई जा रही थी जब कि हिन्दू तथा मुसलमान गले मिलकर यह सिद्ध कर रहे थे कि दोनों धर्मवालों में कोई मतभेद नहीं। दोनों एक हैं। भारतवर्ष एक प्रगतिशील राष्ट्र बन सकता है जिसमें साम्प्रदायिकता का कोई स्थान न होगा। गऊ-बध बन्द करके उस दिन मुसलमानों ने पुनः फिरंगियों के विनाश का दृढ़ संकल्प किया। राबर्ट्स लिखता है कि प्रथम अगस्त को प्रातःकाल मस्जिद तथा मन्दिर उपासकों से भरे हुए थे और उत्कृष्ट प्रयास की सफलता के लिए प्रार्थनाएँ की जा रही थीं[२]। मध्याह्नोत्तर में क्रान्तिकारी नारे लगाते हुए रणक्षेत्र में पहुँचे और अपनी वीरता का प्रदर्शन करने लगे।

---

१. गवर्नर जनरल आफ इंडिया इन-कौंसिल का पत्र ईस्ट इंडिया कम्पनी के कोर्ट आफ डाइरेक्टर्स के नाम, दिनांक ९ सितम्बर १८५७ (नं० २४३) संलग्न पत्र १९ **पार्लियामेंट्री पेपर्स** (१८५७) पृ० १४०।

२. **राबर्ट्स** पृ० ११०।

क्रान्तिकारियों के सफल आक्रमणों की भारतीय समाचार-पत्रों में धूम

३ अगस्त १८५७ ई० को सादिकुल अखबार देहली में प्रकाशित हुआ कि "हजारों की संख्या में चारों ओर से गोरे खिचकर आये किन्तु न गोरों की वीरता यहाँ काम आती है और न उनका सौभाग्य। जहाँ-तहाँ वे काफिर गाजर के समान काटे गये और प्रत्येक खेत पर मूली के समान छाँटे गये। कुछ थोड़े-से जो अलीपुर के मैदान में शेष हैं उनके विषय में भी सुन लेना कि दैवी कोप की झाड़ू से साफ कर दिये जायँगे और बादशाह का समस्त भारतवर्ष पर अधिकार हो जायगा।[१] ९ अगस्त, १८५७ ई० को देहली उर्दू अखबार में प्रकाशित हुआ कि ईश्वर को धन्य है कि तीन दिन से जो विजयी सेना काफिरों के विनाश हेतु नगर के बाहर गई है, वह नित्यप्रति विजय प्राप्त करके नये मोर्चे बनाती जाती है और रात्रि में भी बाहर ही रहती है। कल रात्रि में कई बार गोरों ने आक्रमण किया किन्तु ईश्वर की कृपा से सेना ने समस्त गोरों की हत्या कर दी। अब आशा है कि शीघ्र सफाई हो जायगी[२]।

क्रान्तिकारियों के बारूद के कारखाने का विनाश

७ अगस्त को क्रान्तिकारियों के बारूद बनाने के कारखाने में, जो चूड़ीवालों के मुहल्ले में शमरू की बेगम के घर में था, आग लग गई। ४९४ मनुष्य नष्ट हो गये। केवल १३ मनुष्य बच सके। नगर में हाहाकार मच गया।[३] 'सादिकुल अखबार में १० अगस्त १८५७ ई० को प्रकाशित हुआ कि शुक्रवार को ४ बजे सायंकाल चक्की की गर्मी से बारूद के कारखाने में आग लग गई। ६०९ श्रमिक जल गये। उस समय कयामत का दृश्य प्रस्तुत था। इधर तो मुहल्ले वालों को अपने-अपने घरों के उड़ने की चिन्ता, उधर गरीबों के मरने का दुःख था। बहुत से लोगों ने उस दिन भोजन न किया। यद्यपि पुलिस ने आग बुझाने का बड़ा प्रयत्न किया किन्तु दो दिन तक उसमें आग लगी रही। इस हानि से क्रान्तिकारियों को बड़ा धक्का पहुँचा। अंग्रेजी सेना को अभी तक नगर में अधिकार जमाने में कोई सफलता न मिल सकी

---

१. **सादिकुल अखबार** ३ अगस्त १८५७ ई० पृ० ४।
२. **देहली उर्दू अखबार** ९ अगस्त १८५७ ई० पृ० ३।
३. **जीवनलाल** पृ० १८५।

थी। क्रान्तिकारियों का विश्वास था कि यह काम किसी गुप्तचर का है। वे समझते थे कि इसमें हकीम एहसनुल्लाह खाँ का हाथ है[1] किन्तु बादशाह उसका बड़ा पक्षपाती था, अन्यथा वे उसकी अवश्य हत्या करके अपनी हानि का बदला ले लेते। गुप्तचरों के विस्तृत जाल ने उनको हताश कर दिया। इसके उपरान्त उनके आक्रमणों में वह उत्साह न रहा जो इसके पूर्व था। उनमें परस्पर मतभेद एवं द्वेष बढ़ने लगा। एक दूसरे को अपराधी ठहराता था। नगर वाले भी सेना के नगर में निवास के कारण बड़े कष्ट में थे और वे अधिक दिन तक इस दशा में नहीं रह सकते थे।

१. **सादिकुल अखबार,** १० अगस्त १८५७ ई० पृ० ४।

अध्याय ६

षड्यन्त्र तथा द्वेष

देहली उस समय इतनी बड़ी क्रान्ति के लिए केन्द्रीय स्थान बनने के उपयुक्त न था। यद्यपि मुगल बादशाह बहादुरशाह, जिसके प्रति भारतवर्ष के एक बहुत बड़े भाग को श्रद्धा थी, यहाँ निवास करता था किन्तु पिछले १५० वर्ष से बादशाह के दरबार से सम्बन्धित अधिकारी भोग-विलास के आदी हो चुके थे। बहुत से लोग अपने आराम को क्षण भर के लिए भी भंग न होने देना चाहते थे। यदि योजना के अनुसार क्रान्ति का विस्फोट समस्त स्थानों से एक साथ होता तो इसकी सफलता में अधिक कठिनाई न होती किन्तु अधिक दिनों तक किसी युद्ध का संचालन अंग्रेजों के अद्भुत साधनों के कारण देहली से सम्भव न था। बादशाह के प्रति क्रान्तिकारियों में अथवा क्रान्तिकारियों के प्रति बादशाह का संदेह उत्पन्न करा देना अंग्रेजों के लिए कठिन न था। नगर की जनसंख्या में सभी प्रकार के लोग थे। व्यापारी तथा अन्य उद्योग-धंधेवाले बहुत समय तक अपने कार्य स्थगित नहीं रख सकते थे। जब नगर को अंग्रेजों ने घेर लिया तो वे कुछ ही समय उपरान्त व्याकुल हो उठे। गुप्तचरों तथा षड्यंत्र-कारियों ने इस स्थिति से बड़ा लाभ उठाया और नैराश्यपूर्ण वातावरण उत्पन्न करा दिया। जो लोग बड़ी वीरता तथा साहस से सब कुछ सहन कर रहे थे उन्हें भी षड्यंत्रकारियों ने हताश कर दिया। बादशाह को भी अंग्रेजों से सन्धि करने के लिए विवश किया जाने लगा।

उत्तराधिकारी का प्रश्न

२८ सितम्बर १८३७ ई० को अकबरशाह की मृत्यु के उपरान्त अबुल मुजफ्फर सिराजुद्दीन मुहम्मद बहादुरशाह पादशाहे गाजी बादशाह हुआ। उसका जन्म १७७४ ई० में हुआ था। बन्दूक चलाने, बाण फेंकने, तलवार चलाने तथा घुड़सवारी में वह दक्ष था। वह अच्छा कवि भी था। अपनी प्रजा के कष्टों को देखता था किन्तु

खेद प्रकट करने के अतिरिक्त कुछ कर न सकता था।[1] वह समस्त संसार के दुःख हर लेना चाहता था किन्तु अंग्रेजी राज्य में उसका ही अस्तित्व निश्चित न था तो वह दूसरों की सहायता किस प्रकार करता। उसके अधिकारों को घटाने का नित्य प्रति प्रयत्न हुआ करता था। उसके पिता अकबरशाह की पेंशन में वृद्धि का जो आश्वासन दिलाया गया था उसका नाना प्रकार के बहानों से खण्डन कर दिया गया था।

१८४९ ई० में वली अहद शाहजादा दारा बख्त की मृत्यु हो गई। लार्ड डलहौजी बादशाही का चिह्न भी मिटा देना चाहता था। अब मिर्जा फखरुद्दीन फतहुलमुल्क की बादशाह के उत्तराधिकारी होने की बारी थी। वह अंग्रेजों का बहुत बड़ा पक्षपाती था।[2] बहादुरशाह जीनतमहल द्वारा उत्पन्न पुत्र जवाँबख्त को अपना उत्तराधिकारी बनाना चाहता था। फखरुलमुल्क के चरित्र में भी दोष बताये जाते थे किन्तु अंग्रेजों ने मनमानी शर्तों पर सौदा पटा लिया और फखरुलमुल्क को बहादुरशाह का उत्तराधिकारी स्वीकार कर लिया। किले में इस पर बड़ा असन्तोष प्रकट किया गया किन्तु वे कर ही क्या सकते थे। १० जुलाई १८५६ ई० को मिर्जा फखरुद्दीन की हैजे के कारण मृत्यु हो गई। दूसरे दिन अंग्रेजी एजेंट सर टामस मेटकाफ बादशाह की सेवा में उपस्थित हुआ। बादशाह ने मिर्जा जवाँबख्त को अंग्रेजों द्वारा अपना उत्तराधिकारी स्वीकार कर लिये जाने का आग्रह किया। इसके साथ-साथ बादशाह ने अन्य शाहजादों की ओर से एक प्रार्थनापत्र भी प्रस्तुत किया जिसमें लिखा था कि उन्हें जीनतमहल के पुत्र के उत्तराधिकारी बनाये जाने में कोई आपत्ति नहीं किन्तु दूसरे दिन बादशाह के ज्येष्ठ पुत्र मिर्जा कुरेश अथवा मिर्जा कोयाश ने एजेंट को एक प्रार्थनापत्र भेजा जिसमें लिखा था कि "बादशाह ने शाहजादों को वेतन-वृद्धि तथा धन प्रदान करने का आश्वासन दिलाकर उस पत्र पर हस्ताक्षर करा लिये हैं। उन्हें यह भी धमकी दी गई कि यदि वे उक्त उत्तराधिकारी को स्वीकार न करेंगे तो उन्हें कुछ न मिलेगा। मुझसे भी इन बातों को स्वीकार कराने का प्रयत्न किया गया। मुझे अपने पिता के आदेशों का पूर्णतः पालन स्वीकार था और मैंने सब बातें स्वीकार कर ली थीं किन्तु जब मुझे यह ज्ञात हुआ कि बेगम जीनतमहल

---

१. **दास्ताने गदर** पृ० १८-२७।
२. **सिप्वाए वार** भाग ३ पृ० १३-१४।

के षड्यंत्र के कारण मेरा पिता मेरे अधिकार-हरण के हेतु उद्यत है तो मेरे पास अब ब्रिटिश सरकार से प्रार्थना करने के अतिरिक्त कोई अन्य उपाय नहीं।....सबसे ज्येष्ठ होने के अतिरिक्त मैं हाजी हूँ और कुरान शरीफ का हाफिज भी हूँ। मेरी योग्यता के विषय में भेंट के समय सब कुछ ज्ञात हो जायगा।"[१]

अंग्रेजों को शाही मामलों में हस्तक्षेप करने का सुअवसर प्राप्त हो गया। बादशाह के अधिकार समाप्त करने की चेष्टा में लार्ड कैनिंग लार्ड डलहौजी से पीछे न था। उसने मिर्जा कुरेश के अधिकार को स्वीकार कर लिया किन्तु बादशाही की उपाधि को भी समाप्त कर दिया। सरकार का निम्नांकित निर्णय देहली के एजेंट के पास भेजवा दिया—

(१) यदि एजेंट बादशाह के पत्र का उत्तर देना आवश्यक समझे तो बादशाह को इस बात की सूचना दे दे कि गवर्नर जनरल मिर्जा जवाँबख्त को उत्तराधिकारी स्वीकार नहीं कर सकता।

(२) मिर्जा मुहम्मद कुरेश को यह आशा न दिलाई जाय कि उसे उन्हीं शर्तों पर उत्तराधिकारी स्वीकार किया जायगा जिन शर्तों पर मिर्जा फखरुद्दीन को स्वीकार किया गया था। बहादुरशाह के जीवनकाल में उत्तराधिकारी के सम्बन्ध में बादशाह अथवा राजवंश के किसी अन्य व्यक्ति से कोई पत्र-व्यवहार न किया जाय।

(३) बादशाह की मृत्यु के उपरान्त मिर्जा कुरेश को सूचना दे दी जाय कि सरकार उसे कुटुम्ब का नेता उन्हीं शर्तों पर स्वीकार करती है जो मिर्जा फखरुद्दीन के साथ हुई थीं, केवल उसे बादशाह की उपाधि के स्थान पर शाहजादे की उपाधि प्राप्त होगी। यह सूचना उसे किसी संधि अथवा इकरारनामे के रूप में न दी जाय, कारण कि सरकार का इस प्रकार का कोई उद्देश्य नहीं, अपितु यह सूचना सरकार के अन्तिम निर्णय के रूप में दी जाय।[२]

बेगम जीनतमहल

जीनतमहल से बादशाह ने वृद्धावस्था में विवाह किया था। वह बादशाह को बड़ी प्रिय थी और बादशाह उससे अत्यधिक प्रभावित था। वह अपने पुत्र मिर्जा

---

१. **सिप्वाए वार** भाग ३, पृ० २८।

२. **सिप्वाए वार** भाग ३, पृ० ३२।

जवाँबख्त को बादशाह का उत्तराधिकारी बनाना चाहती थी। वह जानती थी कि यदि बहादुरशाह की मृत्यु के उपरान्त उसका पुत्र बादशाह न हुआ तो उसकी दशा बड़ी शोचनीय हो जायगी। मुग़ल वंश की भारतवर्ष में ऐसी ही प्रथा रही है, वह इसे न भुला सकती थी। उसे यह आशा न थी कि बहादुरशाह अधिक समय तक जीवित रह सकेगा अतः वह मिर्ज़ा जवाँबख्त के लिए हर समय षड्यंत्र रचती रहती थी। मिर्ज़ा फ़खरुद्दीन की मृत्यु के उपरान्त उसे बड़ी आशाएँ हो गयी होंगी किन्तु मिर्ज़ा कुरेश को गवर्नर जनरल द्वारा उत्तराधिकारी स्वीकार कर लिये जाने के उपरान्त उसकी समस्त आशाएँ समाप्त हो गयीं अतः राजप्रासाद में अंग्रेजों की सबसे बड़ी शत्रु बेगम ही ज्ञात होती थी।

क्रान्तिकारियों के देहली पहुँच जाने के उपरान्त उसने समझ लिया होगा कि उसका स्वप्न अवश्य सफल हो जायगा किन्तु बाद में मिर्ज़ा इलाही बख्श हकीम एहसनुल्लाह आदि ने उसे विश्वास दिला दिया होगा कि अंग्रेजों को ही सफलता प्राप्त होगी। अतः इसमें आश्चर्य न होना चाहिये कि वह उनके षड्यंत्र में सम्मिलित हो गई। मिर्ज़ा इलाही बख्श को सम्भवतः सबसे अधिक द्वेष बेगम के प्रति ही था क्योंकि उसके जामाता तथा बादशाह के उत्तराधिकारी मिर्ज़ा फ़खरुद्दीन की अकस्मात् मृत्यु में बेगम का हाथ बताया जाता था। बेगम तथा बादशाह से बदला लेने का सबसे बड़ा साधन यही हो सकता था कि वह अंग्रेजों से मिलकर उनके साथ विश्वासघात करे। बेगम ज़ीनतमहल तो जवाँबख्त के लिए सब कुछ करने पर उद्यत थी ही अतः मिर्ज़ा इलाहीबख्श के लिए उसको फाँस लेना कठिन न था और उसे ही अपना पक्षपाती बनाकर उसने बाद में बादशाह को भी अपने वश में कर लिया और उसे जनरल बख्तखाँ के साथ देहली के बाहर न जाने दिया तथा समस्त शाहजादों का विनाश करा दिया।

१६ मई को क्रान्तिकारियों ने हकीम एहसनुल्लाह खाँ तथा महबूब अली खाँ का अंग्रेजों के नाम एक पत्र बादशाह की सेवा में प्रस्तुत किया जिसमें लिखा था कि "इस स्थान पर शीघ्र आओ तथा मिर्ज़ा जवाँबख्त को वली अहद बना दो। हम जितने तिलंगे तथा सवार किले में हैं, उन्हें गिरफ्तार करा देंगे।[१]" यद्यपि हकीम ने इस पत्र को जाली बता दिया किन्तु क्रान्तिकारी बेगम ज़ीनत महल को अपना विरोधी ही समझते रहे। जिन-जिन षड्यंत्रों में उन्हें हकीम की सहायता का पता चलता

१. **प्रेस लिस्ट** ३९, पृ० ५ अ।

था उनमें वे बेगम का भी हाथ पाते थे।[१] ८ अगस्त को उसने बादशाह से साफ़-साफ़ कह दिया कि क्रान्तिकारियों का संदेह है कि वह भी अंग्रेजों से मिली हुई है।[२] मौलाना फ़ज़्लेहक़ ख़ैराबादी ने बेगम की निन्दा करते हुए लिखा है कि वह अंग्रेज़ों की उस समय भी आज्ञाकारिणी तथा मित्र थी, जब वह मल्का थी ।[३]

शाहज़ादे

उत्तराधिकारी की समस्या मुग़लकालीन भारतीय इतिहास में सर्वदा बड़ी जटिल रही। अकबर के उपरान्त इस प्रश्न पर गृह-युद्ध की प्रथा-सी बन गई थी। कम्पनी के शासनकाल में भी यह समस्या बराबर उठती रहती थी। प्रत्येक शाहजादे को अपने बादशाह होने का इतना विश्वास होता था कि वे प्रत्येक बात में शपथ लिया करते थे कि 'ईश्वर मुझे राजसिंहासन न प्रदान करे।[४]' मिर्ज़ा फ़खरुद्दीन की मृत्यु के उपरान्त यद्यपि बादशाह के ८ पुत्रों ने लिखकर दे दिया था कि मिर्ज़ा जवाँबख़्त को बादशाह का उत्तराधिकारी नियुक्त कर दिया जाय किन्तु यह स्वीकार करना कठिन है कि उन्होंने स्वेच्छा से ऐसा किया होगा।

क्रान्तिकारियों ने शाहजादों को सेनाओं का अधिकारी नियुक्त करने का आग्रह इस कारण किया था कि वे समझते थे कि उनके आदेशों का सभी लोग पालन करेंगे और सैनिकों में किसी प्रकार का मतभेद उत्पन्न न होगा किन्तु शाहज़ादे इस कार्य के योग्य न सिद्ध हो सके। शासन-प्रबन्ध तथा सेना का संचालन उनके लिए सम्भव न था। वे जनता का भी सहयोग न प्राप्त कर सके। धन का एकत्र करना तथा उसका उचित वितरण अशान्ति के समय कोई सरल कार्य न था और यदि शाहज़ादे इस बड़े कार्य को न कर सके तो कोई आश्चर्य न होना चाहिये। उन पर लूटमार, अत्याचार, कुशासन तथा व्यभिचार सभी प्रकार के दोष लगाये जाते थे। बादशाह उन्हें कड़ी चेतावनी भी देता था किन्तु अधिक सफलता न होती थी। एहसानुलहक ने ४ जुलाई १८५७ ई० को बादशाह की सेवा में एक प्रार्थना-पत्र प्रस्तुत किया जिसमें लिखा था "मिर्ज़ा अबूबक्र साहब, शाहज़ादी फ़रखुन्दा ज़मानी

१. जीवनलाल पृ० १०७, १९०।
२. जीवनलाल पृ० १९०।
३ सौरतुल हिन्दिया पृ० ३८१।
४. तारीख उरूजे अहदे इंगिलशिया पृ० ३७८।

के घर में जो बहराम खाँ के तिराहे पर है दुर्भावनाओं से जाया करते हैं और मदिरा-पान के उपरान्त जिस प्रकार के आचरण की आशा की जा सकती है उसे करते हैं। कल मध्याह्न के पूर्व वे शाहज़ादी के घर पर आये और दिन भर मदिरापान करते रहे और संगीत सुनते रहे। सूर्यास्त के डेढ़ घंटे के उपरान्त वे जाने के लिए तैयार हुए किन्तु संयोगवश गली के द्वार की चाभी चौकीदार के पास थी। उसके तुरन्त न पहुँचने के कारण मिर्ज़ा को विलम्ब हो गया। मिर्ज़ा को जल्दी थी अतः उन्होंने सेवक पर जो अपने द्वार पर अपने मित्रों सहित बैठा था पिस्तौल चलाई, यद्यपि इसका कोई कारण न था। मिर्ज़ा ने बड़े अपशब्द कहे और सेवक के घर में प्रविष्ट होकर उसे लूट लेना चाहा। सेवक ने द्वार बन्द कर लिया। मिर्ज़ा ने द्वार पर तलवार के कई वार किये और अपने सेवकों को दीवारों तथा द्वार पर पत्थर बरसाने का आदेश दिया। उन्होंने सेना को भी घर लूट लेने का आदेश दिया। फ़ैज़ बाजार का चौकीदार वहाँ पहुँच गया। मिर्ज़ा ने उसे भी अधमरा कर डाला।[1]" यद्यपि इस प्रकार के प्रार्थना-पत्रों में अतिरंजना भी हो सकती है किन्तु बादशाह शाहजादों का पक्ष कभी न लेता था और उसने ५ जुलाई को यह आदेश दे दिया था कि उसने शाहजादों को अपमानित कर दिया है और वे साधारण लोगों के समान समझे जायँ।[2] शाहज़ादों की कायरता का सबसे बड़ा प्रमाण यह है कि ६०००-७००० सहायकों की उपस्थिति में उन्होंने हुमायूं के मकबरे में अंग्रेजों द्वारा अपनी जीवन सुरक्षा का आश्वासन न मिलने पर भी अपने आपको बन्दी बनवा लिया और अपने सहायकों के आग्रह पर भी युद्ध की अनुमति न दी।

शाहज़ादों के विषय में मौलाना फ़ज़लेहक खैराबादी ने लिखा है कि "उन्हें न तो कभी युद्धक्षेत्र ही का अनुभव हुआ था और न कभी तलवार भाला चलाने का अवसर प्राप्त हुआ था। उन्होंने बाज़ारी लोगों को अपना मित्र तथा विश्वासपात्र बना लिया था। वे अनुभवशून्य थे और भोग-विलास, अपव्यय तथा दुराचार में तल्लीन रहते थे। वे दरिद्र हो चुके थे किन्तु फिर धनी बन गये। जब धनी हो गये तो भोग-विलास में व्यस्त हो गये। लोगों से सैनिकों के प्रबन्ध के बहाने पर्याप्त धन एकत्र करते थे और उसमें से एक कौड़ी भी किसी सैनिक पर व्यय न करते थे। जो कुछ वसूल करते थे उसे स्वयं खा जाते थे। यहाँ तक भी ठीक था किन्तु वेश्याओं तथा

१. ट्राएल पृ० १२।
२. जीवनलाल पृ० १३९।

बाजारी लोगों ने उन्हें युद्ध संचालन के योग्य ही न रखा था.....जब किसी अयोग्य को कोई बड़ा कार्य सौंप दिया जाता है तथा शक्तिहीन पर भार लाद दिया जाता है तो ऐसा ही होता है। वे रात सोकर तथा दिन बदमस्त होकर गुज़ारते हैं। जब जागते तथा सचेत होते तो असावधान और हैरान फिरते।[1]"

जनरल बख्त खाँ तथा मिर्जा मुगल

जनरल बख्त खाँ[2] तथा बरेली की सेना के पहुँचने के समाचार मंगलवार ७ ज़ीक़ाद (२९ जून १८५७ ई०) को प्राप्त हुए। बादशाह ने उसी दिन मिर्ज़ा मुग़ल को पत्र लिखा कि "आज नदी बहुत चढ़ आयी है और सूचना मिली है, कि बरेली की सेना कल आ जायगी। पुल के प्रबन्धक को दृढ़ आदेश दे दिये गये हैं कि वह जितनी भी नावें एकत्र कर सकता हो एकत्र कर ले और इस सेना को नदी के पार उतार दे। नौकाओं द्वारा सेना थोड़ी-थोड़ी करके पार उतर सकेगी, एक साथ नहीं अतः तुम सेना के अधिकारियों के नाम यह आदेश निकाल दो कि 'न तो कोई सैनिक और न कोई अन्य अधिकारी नौकाओं से पार उतरते समय प्रबन्धक अथवा मल्लाहों के साथ दुर्व्यवहार अथवा अत्याचार करे, कारण कि पुल की मरम्मत के कठोर आदेश भी दिये जा चुके हैं। एक दो दिन की असुविधाएँ वे प्रसन्नतापूर्वक सहन कर लें"।[3]

३०जून को बादशाह ने अपने ससुर समसामुद्दौला नवाब अहमद कुली खाँ बहादुर को बरेली की सेना के सेनापति के स्वागतार्थ जाने का आदेश दिया। १ जुलाई को समसामुद्दौला बहादुर, जनरल मुहम्मद बख्त खाँ को अपने साथ लाया। बख्त खाँ ने अभिवादन किया और समस्त स्थानों के प्रबन्ध के विषय में निवेदन किया। बादशाह सुनकर बड़ा प्रसन्न हुआ। ढाल, तलवार तथा ४००० रुपये नकद मिठाई खाने के लिए दिये और सिपहसालार बहादुर की उपाधि प्रदान करके सेना का समस्त प्रबन्ध बख्त खाँ को सौंप दिया। सब अफ़सरों को आदेश दिया कि वे उसकी आज्ञाओं का

---

१. फजलेहक खैराबदी, **सौरतुल हिन्दिया** पृ० ३६३, ३६५।
२. सम्भवतया वह सुल्तानपुर (अवध) का मूल निवासी था—**जीवनलाल** पृ० १४६
३. **ट्राएल** पृ० ५३, **प्रेस लिस्ट** ६९ नं० ३४।

पालन करते रहें।[१] बख्त खाँ को कमाण्डर-इन-चीफ़ तथा मिर्ज़ा मुग़ल को ऐडजुटेंट जनरल नियुक्त किया। मुहम्मद बख्त खाँ ने बादशाह से निवेदन किया कि "यदि किसी शाहजादे ने लूट-मार की तो वह उसके नाक कान कटवा लेगा।" बादशाह ने कहा, "तुम्हें पूर्ण अधिकार है, जो उचित समझो करो"।[२]

१ जुलाई १८५७ ई० को मिर्ज़ा मुग़ल तथा मिर्ज़ा अब्दुल्लाह ने निवेदन किया कि पुल पूर्णरूप से तैयार हो गया है अतः बरेली एवं अन्य स्थानों से आयी हुई सेनाओं को जो नदी के उस पार पड़ी हुई हैं, रात्रि में नदी पार करने की अनुमति प्रदान कर दी जाय कारण कि दिन में अंग्रेज निरन्तर गोले बरसाया करते हैं। यदि आज्ञा हो तो इन सेनाओं को अजमेरी द्वार के बाहर ठहरा दिया जाय। बादशाह ने आदेश दिया कि इन्हें तुर्कमान द्वार के बाहर ठहरा दो।[३]

बादशाह को अपने नये सिपहसालार से बड़ी आशाएँ थीं और इसमें संदेह नहीं कि वह बड़ा ही वीर सैनिक तथा योग्य प्रबन्धक था किन्तु दरबार तथा शाहजादों के षड्यंत्र का वह भी मुकाबला न कर सका। बादशाह ने उसका ध्यान पाँच बातों की ओर विशेष रूप से आकर्षित कराया। (१) शत्रुओं के मोर्चों के तोड़ने का विशेष प्रयत्न करना चाहिये तथा धर्म के दुश्मनों को पराजित करना चाहिये। (२) जो सवार तथा सिपाही किले के भीतर तथा नगर में ज़बर्दस्ती घुस आये हैं, उनके लिए ऐसा उपाय किया जाय कि वे शहरपनाह के बाहर ठहरें और लूट-मार तथा प्रजा को कष्ट पहुँचाने से उन्हें रोका जाय। (३) ऐसा उपाय किया जाये कि प्राचीन तथा

---

१. **देहली उर्दू अखबार** १२ जुलाई १८५७ पृ० ३। **जीवनलाल** पृ० १३४ **उरूजे अहदे सल्तनते इंग्लिशिया** पृ० ६८१। ज़काउल्लाह ने जीवनलाल के आधार पर लिखा है कि बख्त खाँ ने भी अपनी वंशावली तैमूर के वंश तक भिड़ाई। जब बादशाह ने उससे कहा कि तुम बड़े वीर हो तो उसने कहा कि आप मुझे उस समय वीर कहियेगा जब मैं पहाड़ी पर अंग्रेजों का बिल्कुल विनाश कर दूँ। बादशाह पर उसने कुछ ऐसा जादू किया कि वह उसके कहने में आ गया। उसको पुत्र की उपाधि दी और समस्त सेना तथा नगर पर उसको आधा बादशाह बना दिया। **जीवनलाल** पृ० १३४, १३८।

२. **जीवनलाल** पृष्ठ १३४-१३५।

३. **ट्राएल** पृष्ठ ५३।

नवीन सेवकों का वेतन शीघ्र बँट जाय। (४) लगान की वसूली तथा थानों का प्रबन्ध पल्टन द्वारा किया जाय। (५) शहर के अधिकांश दुष्ट, तिलंगों का भेष बदलकर शरीफ़ों तथा भले आदमियों के घरों में यह बहाना करके घुस जाते हैं कि वे शत्रुओं को रखे हैं अथवा रसद या समाचार पहुँचाते हैं और उनकी धन-सम्पत्ति लूट लेते हैं। इस विषय में पूर्णतः छानबीन करके उन्हें उचित दण्ड दिया जाय।[1]

सिपहसालार ने दूसरे दिन ही नाकाबन्दी तथा शत्रुओं के पास रसद न पहुँचने की व्यवस्था हेतु पल्टनें लगा दीं। सैनिकों का प्रबन्ध भी आरम्भ कर दिया। युद्ध के लिए जो सेना जाती थी उसमें भी अनुशासन दृष्टिगत होने लगा। देहली उर्दू अखबार अपने १२ जुलाई के अंक में लिखता है, "जो सूरत तथा उठान उनके कार्यों की है उससे ऐसा ज्ञात होता है कि ईश्वर की कृपा से यह सेना तथा नगर की प्रजा का बड़ा सौभाग्य है कि यह उच्च पदाधिकारी राज्य व्यवस्था तथा शासन प्रबन्ध के लिए नियुक्त हुआ। जो जो अफसर जिस जिस कार्य के योग्य थे उनके लिए उसी प्रकार के कार्य नियमानुसार तथा राज्य के हित की दृष्टि से निश्चित किये। जो अधिकारी कौंसिल में सम्मिलित किये जाने के योग्य थे उन्हें कौंसिल में सम्मिलित किया।

अफ़सरों, सैनिकों तथा प्रजा से बड़ा सौजन्यपूर्ण व्यवहार करते हैं। उनके सुप्रबन्ध से इस सप्ताह में जो युद्ध हुआ उसमें बहुत गोरे मारे गये और शत्रुओं की बहुत बड़ी भीड़ लूटी और मारी गयी। बहुत ऊँट लूट में प्राप्त हुए। एक दिन शत्रुओं की रसद पर भी अधिकार जमा लिया गया। पूर्ण विश्वास है कि यदि इसी प्रकार इन्हीं का शासन प्रबन्ध रहा तो देश तथा प्रजा के हित सम्बन्धी कार्य भली भाँति सम्पन्न होंगे। उनके साथ जेहादी भी बड़ी संख्या में आये हैं। वे बड़े ही परिश्रमी तथा योग्य हैं"।[2]

बख्त खाँ ने सेना के प्रबन्ध के साथ-साथ एक विज्ञापन प्रकाशित कराया जिसका उद्देश्य यह था कि अंग्रेजी राज्य के पेंशन पानेवाले तथा माफ़ीदार संतुष्ट हो जायें

---

१. **देहली उर्दू अखबार** १२ जुलाई १८५७ पृ० ३।
२. **देहली उर्दू अखबार**, १२ जुलाई १८५७ ई० पृ० ३।

और विश्वासघात तथा शत्रुओं को सहायता पहुँचाना समाप्त कर दें। विज्ञापन इस प्रकार है।

"यह बात सब पर स्पष्ट तथा विदित है कि बहुत से पेंशन पानेवाले, माफ़ी की भूमि के स्वामी आदि जो इस शहर तथा आसपास के स्थानों में रहते हैं, यदि उन्हें इस बात की शंका हो कि अंग्रेजों का राज्य समाप्त हो जाने के कारण उनकी जीविका का साधन बन्द हो जायेगा और इस विचार से वे अंग्रेजों के हितैषी बनकर षड्यंत्र रचते हों, समाचार अथवा रसद पहुँचाते हों तो आश्चर्य नहीं। अतः यह आम हुक्म दिया जाता है कि वे समस्त लोग संतुष्ट रहें। विजय के उपरान्त प्रमाण मिल जाने तथा पुराने और नये दस्तावेज़ों के अवलोकन के पश्चात् जो जिसका होगा वह निश्चित किया जायेगा और अशान्ति के कारण जितने दिनों तक बन्द रहा है, वह भी उन्हें प्रदान किया जायगा। अतः इस आदेश की सूचना पा लेने के पश्चात् जो व्यक्ति किसी प्रकार के समाचार अथवा रसद आदि अंग्रेजों को पहुँचायेगा, वह व्यक्ति सरकारी आदेशानुसार भारी दण्ड का भागी होगा। इस कारण कोतवाल शहर को आदेश दिया जाता है कि तुम अपने अपने इलाके के जागीरदारों, माफ़ीदारों तथा पेंशनदारों को सूचना दे दो और उनसे सूचना पत्र के पीछे प्राप्ति के हस्ताक्षर कराके शीघ्र वापस भेज दो[1]।"

बख्त खाँ ने नमक तथा शक्कर पर जो कर लगाया गया था उसे इस कारण क्षमा कर दिया कि ग़रीबों को कष्ट न हो।[2] ऐसे अवसर पर जब कि धन की अत्यन्त आवश्यकता थी और मालगुज़ारी भी वसूल नहीं हो रही थी, कर क्षमा कर देना उसका बहुत बड़ा कारनामा है।

बादशाह द्वारा बख्त खाँ का आदर सम्मान तथा उसकी योग्यता से दरबार के अन्य लोगों, विशेष रूप से मिर्ज़ा मुग़ल को बड़ी ठेस पहुँची होगी। अभी तक मिर्ज़ा मुगल ही सर्वेसर्वा था, किन्तु वह समझ गया होगा कि बख्त खाँ के सामने वह कुछ न कर सकेगा। उसने दूसरे ही दिन २ जुलाई को बादशाह से शिकायत की कि आज एक प्रार्थनापत्र नगर-निवासियों की ओर से प्राप्त हुआ है, जिसमें यह लिखा

१. **देहली उर्दू अखबार** १२ जुलाई १८५७।
२. **जीवनलाल** पृ० १५२।

है कि कोतवाल ने उन्हें आदेश दिया है कि वे सशस्त्र तथा संघटित होकर बरेली की सेना के अधीन तैयार रहें। इस बात का पता नहीं चलता कि इस आदेश से क्या तात्पर्य है अतः इस विषय में जिस प्रकार के आदेश की आवश्यकता हो वह दिये जायें जिससे उनका पालन हो सके।[1] जीवनलाल ने सम्भवतः इसी आदेश के विषय में लिखा है कि जनरल ने घोषणा करा दी थी कि समस्त दुकानदार सशस्त्र रहें। जिन लोगों के पास अस्त्र-शस्त्र न हों, उन्हें अस्त्र-शस्त्र बिना मूल्य के प्रदान होंगे। जो सैनिक लूटता पाया जाय उसके हाथ काट दिये जायँ[2]।

इस घोषणा में स्पष्ट रूप से पुलिस द्वारा जो आदेश लोगों को दिया गया वह सर्वदा सशस्त्र एवं तैयार रहने का था किन्तु शाहज़ादों तथा अमीरों ने उसके विरुद्ध बादशाह के कान भरने प्रारम्भ कर दिये। ज़काउल्लाह ने लिखा हैं कि बख्त खाँ ने भी कमाण्डर-इन-चीफ़ की नकल उतारी कि आज मैगज़ीन को देखता है और नियमित रूप से उसमें सामान रखने का आदेश देता है। कल नगर के रईसों को पुलिस द्वारा अपने पास उपस्थित होने का आदेश देता है। रईसों ने इस बात से असन्तुष्ट होकर बादशाह से शिकायत की कि "यदि बख्त खाँ को हमें बुलाना था तो पत्र द्वारा बुलाया होता न कि पुलिस के पदातियों द्वारा।" बादशाह ने बख्त खाँ से इसका उत्तर माँगा तो उसने कहा, "मैंने तो पुलिस द्वारा यह सूचना दी थी कि वे सशस्त्र रहा करें।"

३ जुलाई को बादशाह ने बख्त खाँ को आदेश दिया कि वह सेना के वेतन का और जिन लोगों की धन-सम्पत्ति लुट गई है, उनको तावान देने का और न्यायालय व पुलिस तथा माल के विभागों का प्रबन्ध करे और आदेश दे दिया कि सेना शाहज़ादों से कोई सम्बन्ध न रखे[3]।" इस आदेश द्वारा शाहज़ादे, बख्त खाँ के और भी शत्रु हो गये होंगे। मिर्ज़ा मुग़ल द्वारा जो आदेश दिये गये होंगे तथा धन प्राप्त किया गया होगा उसकी भी पूछताछ की गई होगी। उस पर धन के अपहरण का अपराध

---

१. ट्राएल पृ० ११।
२. जीवनलाल पृ० १३५।
३. तारीखे उरूजे अहदे सल्तनते इंग्लिशिया पृ० ६८१।

भी लगाया गया होगा जिसकी सफाई में ११ जुलाई १८५७ ई० को मिर्ज़ा मुग़ल ने बादशाह को लिखा कि "सेवक ने कोई ऐसा आदेश नहीं निकाला है जिसके विषय में बादशाह को सूचना न दे दी हो। कम से कम हकीम को सर्वदा सूचना कर दी जाती है। जहाँ तक सेना में रुपये के वितरण का सम्बन्ध है बिन्दी महाजन से शपथ देकर पूछ लिया जाय कि सेवक अल्प धन तथा एक लाख रुपये का कोई मूल्य नहीं समझता और यह कि सेवक ने क्या कभी कोई अपहरण किया है[१]।"

बादशाह शाहज़ादे के प्रार्थनापत्र से सन्तुष्ट न हुआ और उसने आदेश दिया कि "तहकीकात जारी रहे"।[१]

मिर्ज़ा मुग़ल के पास इसके अतिरिक्त कोई उपाय न था कि वह अमीरों से मिलकर षड्यंत्र रचे और बादशाह के आदेशों के पालन में बाधाएँ डाले। १२ जुलाई को मिर्ज़ा मुग़ल ने बादशाह को लिखा कि "आपके आदेशानुसार आपकी इच्छा सेना के सरदारों को बता दी गई। कल बख्त खाँ जनरल बहादुर भी दास के पास आये थे। आपकी इच्छा उनसे सुनकर मैंने उसे पुनः सेना के समस्त अधिकारियों को अपनी योग्यतानुसार समझा दिया किन्तु वे उसे स्वीकार नहीं करते। दास उनकी प्रार्थना आपकी सेवा में भेजता है[२]।"

बादशाह को किसी प्रकार संतुष्ट होते हुए न देखकर मिर्ज़ा मुग़ल ने बख्त खाँ के सैनिक प्रबन्ध में भी हस्तक्षेप करना तथा उसको अयोग्य सिद्ध करने का प्रयत्न प्रारम्भ कर दिया[३]। बादशाह तथा बख्त खाँ में मतभेद उत्पन्न कराने के लिए बख्त खाँ के पास बादशाह के नाम से जाली पत्र प्रेषित किया गया जिसमें उसके कार्यों की आलोचना की गई। बादशाह ने बख्त खाँ को बताया कि उसनेइस प्रकार का कोई पत्र नहीं लिखा। २० अगस्त १८५७ ई० को बख्त खाँ पर अपराध लगाया गया कि वह अंग्रेजों से मिला हुआ है। साक्षी बादशाह के समक्ष प्रस्तुत किया गया किन्तु जब उससे प्रश्न किया गया तो वह कोई उत्तर न दे सका और अन्त में उसने कहा

१. ट्राएल पृ० १३।
२. ट्राएल पृ० ५४।
३. जीवनलाल पृ० १४६।

कि वह मिर्ज़ा मुग़ल से भेंट करने आया था।"[1] २३ अगस्त को यह प्रयत्न किया गया कि बख़्त खाँ को दरबार में प्रविष्ट न होने दिया जाय।[2]

१७ जुलाई १८५७ ई० को मिर्ज़ा मुग़ल ने एक प्रार्थना-पत्र में निवेदन किया कि "बादशाह को ज्ञात होगा कि मुहम्मद बख़्त खाँ के आने के पूर्व प्रतिदिन युद्ध का संचालन बिना किसी रुकावट के उत्तम प्रकार से होता था। बरेली के जनरल के आने के उपरान्त कई युद्ध हुए। आज दास सेना को तैयार करके आक्रमण हेतु नगर के बाहर निकला किन्तु उपर्युक्त जनरल ने विघ्न डालकर पूरी सेना को व्यर्थ खड़ा रखा। वह जानना चाहता था कि उन्हें किसने बाहर निकलने की अनुमति दी है और यह कहकर कि "सेना उसकी अनुमति के बिना बाहर नहीं जा सकती", उसे लौटा दिया। कोई खुला हुआ शत्रु भी इस प्रकार की कार्रवाई न करेगा कि सेना आक्रमण हेतु अग्रसर हो और कोई हस्तक्षेप करके उसे लौटा दे। यदि सेना का समस्त अधिकार तथा प्रबन्ध उपर्युक्त जनरल को सौंप दिया गया हो तो सेवक को लिखित आदेश प्राप्त हो जाय जिससे वह सेना के कार्यों में हस्तक्षेप न करे और वह सेना के अधिकारियों को सूचना दे दे कि वे उपर्युक्त जनरल के अधीन हैं। आदेशों को उलट देने के कारण छोटे बड़े सभी अधिकारियों को बड़ा तीव्र नैराश्य होगा। यदि इसके विपरीत सेना पर सेवक का अधिकार रखा जाता है तो उपर्युक्त जनरल हस्तक्षेप न करे। उसे अपनी रेजीमेंट पर पूर्ण अधिकार है।"[3]

बादशाह ने इस प्रार्थनापत्र का कोई उत्तर न दिया। इसी बीच में सेना ने भी बादशाह को एक प्रार्थनापत्र दिया कि "बख़्त खाँ तोपखाने का अफ़सर था। वह इसी काम को जानता है। युद्ध क्षेत्र में युद्ध करने के योग्य नहीं। वह गवर्नर के पद के योग्य नहीं। न वह बादशाह से शिष्टता का व्यवहार करता है और न राजकोष बादशाह की भेंट के लिये लाया है। मिर्ज़ा मुग़ल को सेना के समस्त प्रबन्धों का जो अधिकार दिया गया था वह उसके योग्य था अपितु वह गवर्नर जनरल होने के योग्य है। समस्त सेना चाहती है कि वह हमारा सेनापति नियुक्त हो।" बादशाह ने यह प्रार्थना-पत्र बख़्त खाँ के पास भेज दिया कि वह इसका उचित उत्तर लिखे।

---

१. **जीवनलाल** पृ० २०१।
२. **जीवनलाल** पृ० २०४।
३. **ट्राएल** पृ० ५५।

इस प्रार्थना-पत्र का उत्तर बख्त खाँ ने यह दिया कि "सेना को तीन भागों में विभाजित होना चाहिये। एक भाग में देहली तथा मेरठ की रेजीमेंट, दूसरे भाग में वह सेना हो जो उस के साथ आयी है। तीसरे भाग में शेष सेना।" बादशाह ने मिर्जा मुग़ल को बुलाकर बख्त खाँ का यह उत्तर सुना दिया।[1]

मिर्जा मुगल तथा सैनिकों के प्रार्थना-पत्र के अध्ययन से ज्ञात होता है कि सैनिकों के प्रार्थना-पत्र में भी मिर्जा मुगल का हाथ था। बख्त खाँ ने भी भली भाँति समझ लिया होगा कि क्रान्ति का संचालन बिना अधिकारों के विभाजन के सम्भव नहीं अतः उसने सेना के तीन भाग करके, अपने पास केवल बरेली का भाग रख लिया।[2] किन्तु इसके उपरान्त लोग अन्य पल्टनों से बख्त खाँ की सेना में पहुँचने लगे होंगे। यह देखकर २६ अगस्त को मिर्जा मुगल ने कोतवाल को आदेश दिया कि वह इस बात की घोषणा करा दे कि लोग अपनी-अपनी पल्टनों में वापस चले जायँ अन्यथा उन्हें दंड दिया जायगा।[3]

१९ जुलाई १८५७ ई० को मिर्जा मुगल ने बादशाह को लिखा कि कल से रात दिन युद्ध के लिए घोर प्रयत्न हो रहा है। यदि अलीपुर की ओर से कुछ सहायता प्राप्त हो जाय तो ईश्वर की कृपा से अन्तिम विजय प्राप्त हो जायेगी, अतः बरेली के जनरल को सहायता करने का हुक्म दे दिया जाय। उसे सेना लेकर अलीपुर की ओर बढ़ कर उस ओर से काफिरों पर आक्रमण करने का आदेश प्रदान किया जाय, जब कि दास अपनी सेना लेकर इस ओर से आक्रमण करेगा। इस प्रकार दोनों सेनाएँ मिलकर एक दो दिन में दुष्ट काफिरों को नरक में भेज देंगी[4]।

हकीम एहसनुल्लाह खां

हकीम एहसनुल्लाह खां को प्रारम्भ ही से क्रान्तिकारियों पर विश्वास न था। वह समझता था कि अंग्रेज अवश्य विजय प्राप्त करेंगे और उसने बादशाह

---

१. तारीखे उरूजे सल्तनते इंग्लिशिया पृ० ६८४
२. जीवनलाल पृ० १५२
३. प्रेस लिस्ट १११ डी नं० ४१
४. ट्राएल पृ० ५६

की ओर से एक पत्र आगरे के लेफ्टिनेन्ट गवर्नर को लिखवा दिया था।[१] क्रान्तिकारियों को भी इन लोगों पर संदेह था।[२] बादशाह का एक अन्य मुख्य कर्मचारी महबूब अली खाँ हकीम एहसनुल्लाह का बहुत बड़ा सहायक था। १५ मई १८५७ ई० को क्रान्तिकारियों ने दोनों पर अंग्रेजों से षड्यंत्र रचने का दोष लगाया। महबूब अली खाँ ने शपथ खाई कि 'हम किसी प्रकार का षड्यंत्र नहीं रचते।' १६ मई १८५७ ई० को क्रान्तिकारियों ने हकीम एहसनुल्लाह तथा महबूब अली खाँ का अंग्रेजों के नाम जो पत्र बादशाह के समक्ष प्रस्तुत किया उसे हकीम एहसनुल्लाह खाँ तथा महबूब अली खाँ ने देखकर कहा कि "यह जाली है और किसी ने हमारी जाली मुहरें भी लगा दी हैं।"[३]

२६ मई को पता चला कि इस्लाम गढ़ (सलीम गढ़) के बुर्ज पर जो तोप लगी थी उसमें किसी ने कंकड़ भर दिये। क्रान्तिकारियों का संदेह हकीम एहसनुल्लाह खाँ तथा महबूब अली खाँ पर था। उन्होंने बादशाह के समक्ष उनकी हत्या करना निश्चय कर लिया किन्तु उनके शपथ लेने तथा बादशाह के समझाने से वे शान्त हो गये।[४] इसके उपरान्त महल के अनाज के गोदाम में गोलियाँ तथा बारूद प्राप्त हुए। क्रान्तिकारियों का संदेह हकीम एहसनुल्लाह खाँ, महबूब अली खाँ तथा बेगम जीनतमहल पर हुआ। बादशाह ने इस बार भी क्रान्तिकारियों को समझा कर शान्त किया।[५] जीवन लाल ने अपनी दैनिक-वृत्त की पुस्तक में ४ अगस्त के विवरण में लिखा है कि उस दिन अंग्रेजों से पत्रव्यवहार के अपराध पर क्रान्तिकारियों ने हकीम की हत्या करनी चाही, किन्तु वह उस समय घर पर उपस्थित न था और इस प्रकार वह बच गया।[६] ७ अगस्त को चूड़ीवालों के मुहल्ले में शमरू बेगम की कोठी में क्रान्तिकारियों का बारूद का जो कारखाना था, उसमें आग लग गई।[७] क्रान्तिकारियों को विश्वास था कि यह काम एहसनुल्लाह खाँ का है।

१. **जीवनलाल** पृ० ८३
२. **जहीर देहलवी**, **दास्ताने गदर** (लाहौर) पृ० ६७–६८
३. **प्रेस लिस्ट** ३९, पृ० ५ अ, **जीवनलाल** पृ० ८४–८५
४. **जीवनलाल** पृ० १०३
५. **जीवनलाल** पृ० १०७
६. **जीवनलाल** पृ० १८०
७. **जीवनलाल** पृ० १८५, **सादिकुल अखबार**, १० अगस्त १८५७ पृ० ४

वे हकीम के घर पर पहुँच गये। हकीम बादशाह के पास था। उसने उसे छिपा दिया और मिर्जा मुगल को आदेश दिया कि वह जाकर हकीम के घर की रक्षा करे। मिर्जा ने हकीम की सम्पत्ति की रक्षा का कुछ प्रबन्ध किया किन्तु रात्रि में क्रान्तिकारी राजप्रासाद में पहुँच गये और हकीम एहसनुल्लाह खाँ को उनको सौंप देने का आग्रह किया। बादशाह ने उसे इस शर्त पर दे दिया कि उसकी हत्या न की जाय।[१] बादशाह हकीम का बड़ा हितैषी था। ८ अगस्त को उसने अपने पुत्रों को आदेश दिया कि वे हकीम को छुड़ाने का जिस प्रकार सम्भव हो प्रयत्न करें।[२] उसने ८ अगस्त[३] तथा ९ अगस्त[४] को इस सम्बन्ध में आदेश भी दिये।

९ अगस्त १८५७ ई० को बादशाह ने मिर्जा मुगल को लिखा कि "मैं सेना को अपनी संतान के समान समझता हूँ किन्तु खेद है कि उसने मेरी वृद्धावस्था पर कोई ध्यान नहीं दिया। मेरे स्वास्थ्य की रक्षा हकीम एहसनुल्लाह खाँ के हाथ में है। मेरे स्वास्थ्य में परिवर्तन के विचार से वे हकीम के द्वार से पहरे हटा लें और जब कभी वह मेरी चिकित्सा हेतु आना जाना चाहे उस पर कोई रोक-टोक न की जाय। यदि उसके विरुद्ध कोई संदेह हो तो उसका लिखित प्रमाण प्रस्तुत करें, तब उन्हें उसको दंड देने का अधिकार होगा। उसके घर से जो कुछ सम्पत्ति लूट ली गई है, वह बादशाह की है अतः यह आवश्यक है कि उस धन-सम्पत्ति का पता लगा कर हमारे पास भेज दी जाय।" बादशाह ने उसकी रक्षा के लिए केवल इतना ही नहीं किया अपितु उसने यह धमकी दी कि "यदि इन आदेशों का पालन न किया जा सके तो मुझे ख्वाजा साहब भेज दिया जाय। वहाँ मैं मुजाविर (रक्षक) के रूप में जीवन व्यतीत करूँगा। यदि यह भी सम्भव न हुआ तो मैं किसी अन्य स्थान को चला जाऊँगा। जिन लोगों का विचार है कि वे मुझे रोक सकेंगे वे इसका भी प्रयत्न कर लें। मैं अंग्रेजों के हाथ से न मारा गया तो सैनिकों द्वारा मार डाला जाऊँगा। इसके अतिरिक्त प्रजा पर जो अत्याचार हो रहा है वह वास्तव में मुझ पर हो रहा है। तुम सब लोग इसकी रोक-थाम करो अन्यथा मैं हीरा खाकर सो रहूँगा।"[५] उसी दिन बादशाह

---

१. **जीवनलाल** पृ० १८६
२. **जीवनलाल** पृ० १८०
३. **प्रेस लिस्ट** नं० ५७. (२९२)
४. **प्रेस लिस्ट** नं० ६० (५२५)
५. **ट्रायल** पृ० २२

ने मिर्जा मुगल को आदेश दिया कि हकीम के घर से पहरा हटा लिया जाय। क्रान्ति-कारियों के बहुत से अधिकारियों ने भी सम्भवतः बादशाह को प्रसन्न करने के लिये कह दिया कि "हम संतुष्ट हैं कि हकीम का इस घटना से कोई सम्बन्ध नहीं।"[१] १० अगस्त को उसे मुक्त भी कर दिया गया[२] और बादशाह इस बात का प्रयत्न करता रहा कि जो धन सम्पत्ति हकीम के घर से लुटी है, वह उसे वापस मिल जाय।[३]

यद्यपि बहादुर शाह को विश्वास था कि हकीम निर्दोष है और क्रान्तिकारी उस पर व्यर्थ संदेह करते हैं किन्तु बाद में बादशाह को भी ज्ञात हो गया होगा कि क्रान्तिकारियों का संदेह निराधार न था और हकीम एहसनुल्लाह निरन्तर क्रान्ति को असफल बनाने की चेष्टा करता रहता था। बहादुर शाह के मुकदमे में वह अंग्रेजों का मुख्य गवाह था। महबूब अली खां की मृत्यु जून ही में हो गई अन्यथा उसके विषय में भी सिद्ध हो जाता कि वह भी अंग्रेजों से मिलकर षड्यंत्र रचा करता था। सम्भवतः हकीम एहसनुल्लाह खाँ को बेगम जीनतमहल से पूर्ण सहायता प्राप्त होती रहती थी और उसी ने बहादुरशाह को प्रभावित कर दिया था कि हकीम उसका बहुत बड़ा हितैषी है।

मौलाना फजलेहक खैराबादी ने हकीम एहसनुल्लाह के विषय में लिखा है कि वास्तव में वह नसारा (अंग्रेजों) का सहायक तथा उनका अत्यधिक विश्वास-पात्र था और नसारा (अंग्रेजों) के शत्रुओं का बहुत बड़ा विरोधी था।[४]

मिर्जा इलाही बख्श

मिर्जा इलाही बख्श, बादशाह का समधी, भी अंग्रेजों का बहुत बड़ा हितैषी था। बादशाह को उस पर बड़ा विश्वास था। वह सर्वदा बादशाह को यही समझाने

---

१. जीवनलाल पृ० १९१

२. जीवनलाल पृ० १९१

३. जीवनलाल पृ० १२२, सादिकु[illegible] अखबा[illegible], १७ अगस्त १८५७–पृ० ४

४. फजलेहक खैराबादी सौरतुल हिन्दिया (बिजनौर १९४७ ई०) पृ० ३६२

का प्रयत्न किया करता था कि अंग्रेजों से संधि कर लेने में ही उसका हित है। २४ जुलाई को उसने बादशाह को चेतावनी दी कि यदि वह अंग्रेजों से संधि की वार्ता न करेगा तो इससे उसे बड़ी हानि होगी।[१] सम्भवतः उसे इस बात का पूर्ण ज्ञान था कि नगर में कौन कौन लोग अंग्रेजों के हितैषी हैं। जीवनलाल के विषय में जब क्रान्तिकारियों को पूर्ण विश्वास हो गया कि वह अंग्रेजों को समाचार पहुँचाता रहता है तो मिर्जा इलाही बख्श ने ही उसकी रक्षा की। जीवनलाल लिखता है कि "जब मैं बन्दी बना लिया गया था तो लाला श्याम लाल ने मिर्जा इलाही बख्श को लिखा कि यह जीवनलाल की सहायता करने का समय है, कारण कि वह अंग्रेजों का सेवक तथा मिर्जा अंग्रेजों का हितैषी है।" मिर्जा के बच्चे की मृत्यु हो गई थी, किन्तु वह शीघ्रातिशीघ्र उसे दफ़न करके जीवनलाल की रक्षा को पहुँच गया[२]। मुंशी रजब अली जो अंग्रेजों का मुख्य गुप्तचर था, के दूत, मिर्जा इलाही बख्श के पास आकर निवास करते थे और वह उनकी सहायता किया करता था[३]। मिर्जा इलाही बख्श ही ने बादशाह को क्रान्तिकारियों के साथ देहली के बाहर न जाने दिया[४]।

गुप्तचर

किले के अतिरिक्त नगर में भी अंग्रेजों के हितैषियों की कमी न थी। मुईनुद्दीन हसन खां, जीवनलाल, चुन्नी आदि यद्यपि अपने आपको क्रान्तिकारियों का हितैषी सिद्ध करते थे किन्तु उन्होंने अंग्रेजों को समाचार पहुँचाने का एक विस्तृत जाल फैला रखा था। बादशाह के अधिकारी उनके सहायक थे। अंग्रेजों की ओर से हडसन गुप्तचर विभाग का अध्यक्ष था। धूर्तता में उसका कोई मुकाबला न कर सकता था। देहली उर्दू अखबार लिखता है, "यह ईश्वर की विचित्र लीला है कि कभी कभी सुना जाता है कि अधिकांश हिन्दू-मुसलमान इसी युग तथा काल में अंग्रेजों के नमक ख्वार तथा उनसे सम्बन्धित हैं और धर्म तथा ईमान के विरुद्ध कार्य करते हैं। उनके विषय में सुना जाता है कि वे गुप्त रूप से

---

१. जीवनलाल पृ० १६४–१६५

२. जीवनलाल पृ० १८९–१९०

३. तारीखे उरूजे अहदे सल्तनते इंग्लिशिया पृ० ६४७

४. खदंगे गदर पृ० ७१ सिप्वाए वार इन इंडिया, भाग ३, पृ० ६४४

उनके शुभाकांक्षी हैं तथा उनकी विजय चाहते हैं और उन्हें समाचार पहुँचाते रहते हैं। वे हृदय से उनकी ओर से प्रयत्नशील हैं। सब हिन्दू मुसलमानों के लिए आवश्यक है कि इन बातों की खोज की चेष्टा करें और ऐसी बातों की छान-बीन करते रहें। और उन्हें उचित दंड दें जिससे लोग शिक्षा ग्रहण करें।[१]

अंग्रेजों की आवश्यकताओं की वस्तुएँ तथा अन्य सामग्री भी देहली से भेजी जाती थीं। १४ जून १८५७ ई० को काबुली द्वार के १३ नानबाइयों की अंग्रेजों को रोटी पहुँचाने के अपराध में हत्या करा दी गई[२]। ६ जुलाई को तीन जासूसों की बख्त खाँ के शिविर में हत्या कराई गई। दो आदमी अंग्रेजों के शिविर में मदिरा ले जाते हुए पकड़े गये[३]। क्रान्तिकारियों को विश्वास था कि नगर के अधिकांश व्यापारी तथा महाजन अंग्रेजों से मिले हुए हैं। लोग निरन्तर जासूसी के कारण बन्दी बनाये जाते[४] और उन्हें दंड दिया जाता किन्तु क्रान्तिकारी यह जाल तोड़ने में सफल न हो सके।

पल्टनों का पारस्परिक विरोध

उचित नेतृत्व के अभाव तथा दरबारी षड्यंत्र एवं पारस्परिक द्वेष का प्रभाव सेना पर भी पड़ना आवश्यक था। उनके त्याग तथा बलिदान की भावनाओं में कमी आने लगी। जो धन प्राप्त होता था उसे केन्द्रीय स्थान पर एकत्र करने और उसके उपरान्त उचित रूप से सैनिकों में वितरण करने की कोई व्यवस्था न थी। मेरठ के सैनिक देहली के विषय में अधिक न जानते थे। देहली वाले सम्भवतः जो कुछ प्राप्त करते उसमें से मेरठ के सैनिकों को कुछ न देते थे। इस कारण दोनों पल्टनों में द्वेष उत्पन्न हो जाना स्वाभाविक था।[५] शाहजादे तो कर्नल आदि बने घूमते थे। वेतन का प्रबन्ध हकीम एहसनुल्लाह तथा महबूब अली खाँ के सुपुर्द था। उनको इससे अधिक और किस बात में प्रसन्नता हो सकती थी कि सैनिकों

---

१. **देहली उर्दू अखबार १९ जुलाई** १८५७ ई० पृ० १
२. **जीवनलाल** पृ० १२१
३. **जीवनलाल** पृ० १४१
४. **प्रेस लिस्ट** १०३ (नं० ९८), १०३ (नं० ३५४, ३५६), ११० (नं. २७२)
५. **जीवनलाल** पृ० ८६
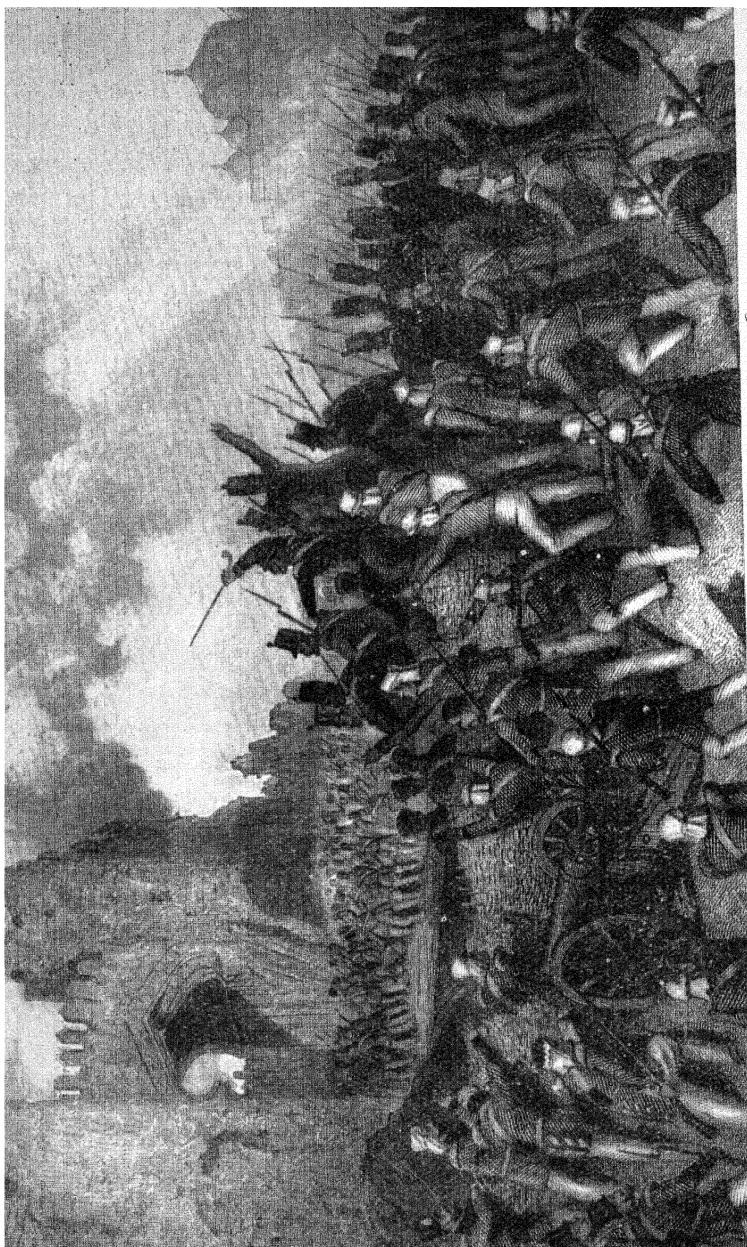
कश्मीरी द्वार पर अंग्रेज़ों का आक्रमण

का पारस्परिक मतभेद बढ़े ताकि क्रान्ति शीघ्र असफल हो। वे ऐसे आदेश देते तथा वेतन के विषय में ऐसे नियम बनाते थे कि सैनिकों में खुल्लम खुल्ला झगड़ा भी होने लगता था।[1]

जो सेनाएँ बाहर से आती थीं वे सर्वप्रथम बड़ा उत्साह प्रदर्शित करती थीं किन्तु दो-चार दिन ही में दोषपूर्ण वातावरण के कारण उनकी भी वही दशा हो जाती।[2] यह प्रसिद्ध था कि देहली का जल पीकर तथा चाँदनी चौक का एक चक्कर लगाकर कोई भी युद्ध करने के योग्य नहीं रहता। बरेली तथा नीमच की सेनाओं ने सर्वप्रथम बड़ी वीरता का प्रदर्शन किया किन्तु इन पल्टनों में भी शीघ्र मतभेद उत्पन्न हो गया। मिर्जा मुगल, बख्त खाँ के मार्ग में रोड़ा अटकाने को उद्यत ही रहता था। ३० जुलाई को बरेली तथा नीमच की सेना के अधिकारियों में कुछ झगड़ा हो गया किन्तु बख्त खाँ ने दोनों को शान्त कर दिया। बरेली तथा नीमच की पल्टनों के सेनापतियों में अभियानों के संचालन के विषय में भी मतभेद होने लगा था और नीमच की सेनाएँ बरेली की सेनाओं पर झगड़ा करने का दोष लगाती थीं। २२ जुलाई १८५७ ई० को बख्त खाँ ने बादशाह द्वारा यह आदेश प्राप्त कर लिया कि सेना की परेड कराई जाय और प्रत्येक सैनिक से शपथ ले ली जाय कि वह अन्त तक अंग्रेजों से युद्ध करता रहेगा और कायरों को अपने घर लौट जाने की अनुमति दे दी जाय।[5] पता नहीं यह परेड सम्भव हो सकी अथवा नहीं किन्तु सैनिक जिस उच्च उद्देश्य को लेकर उठे थे उसे वे देहली के वातावरण में भूल गये और पारस्परिक द्वेष तथा शत्रुता के कारण उन्होंने अपने पाँव में स्वयं कुल्हाड़ी मार ली।

---

१. **जीवनलाल** पृ० १०५।
२. **जीवनलाल** पृ० १७४।
३. **जीवनलाल** पृ० २०७।
४. **जीवनलाल** पृ० २०९।
५. **जीवनलाल** पृ० १६१-१६२।

अध्याय ७

स्वाधीनता का अन्त

अंग्रेजी सेना पर क्रान्तिकारियों के आक्रमण

नजफगढ़ का युद्ध

७ अगस्त को ब्रिगेडियर निकल्सन अंग्रेजी सेना के शिविर में पहुँचा।[1] १४ अगस्त को उसकी सेना भी पहुँच गई।[2] उसके पहुँच जाने से अंग्रेजों का उत्साह बहुत बढ़ गया। उसके पीछे-पीछे अंग्रेजी तोपखाना भी पंजाब से रवाना हो चुका था। २४ अगस्त को क्रान्तिकारियों की एक सेना १८ तोपें लेकर देहली से इस तोपखाने पर अधिकार जमाने का संकल्प करके चली। दूसरे दिन ब्रिगेडियर निकल्सन के अधीन एक सेना ने क्रान्तिकारियों से युद्ध करने के लिए प्रस्थान किया और ४ बजे के निकट भापरोला ग्राम के पास पहुँच गया। क्रान्तिकारी नजफगढ़ की झील के पुल से नजफगढ़ तक लगभग दो मील में फैले थे। निकल्सन ने अपनी सेना द्वारा क्रान्तिकारियों पर आक्रमण किया और कई बार बड़ी वीरता का प्रदर्शन किया किन्तु वे सफल न हो सके।[3] २६ अगस्त को क्रान्तिकारियों ने जनरल निकल्सन के शिविर पर पुनः आक्रमण किया किन्तु इस आक्रमण का भी अधिक प्रभाव न हुआ।[4]

क्रान्तिकारियों की पराजय

६ सितम्बर को अंग्रेजों को जितनी सहायता की आशा थी वह सबकी सब

---

१. **देहली–१८५७** पृ० १८३।

२. **देहली–१८५७** पृ० २०१।

३. **स्टेट पेपर्स** पृ० ३५९, ३६३। **देहली—१८५७** पृ० २३०-२३५ **ग्रीद्ड** पृ०२१९-२२४; **होप ग्रान्ट** पृ०११३, **ग्रीफिथ्स** पृ०१२३–१२८, **राटन**, पृ०२०५-२०८

४. **देहली–१८५७** पृ० २४१।

पहुँच गई।[1] उनमें तोपखाना भी था जिसमें तोपों के अतिरिक्त बहुत-सा गोला-बारूद भी था।[2] पंजाब के चीफ कमिश्नर के आफीशियेटिंग सिक्रेटरी ने गवर्नमेंट आफ इंडिया के सिक्रेटरी को २ सितम्बर को देहली में अंग्रेजी सेना की स्थिति के विषय में लिखते हुए सूचना दी कि प्रथम सितम्बर के समाचारों से पता चलता है कि क्रान्तिकारी इस समय बिना नेता के हैं। वे छोटे-छोटे दलों में विभाजित हैं। उनके पास युद्ध की कोई संघटित योजना नहीं। उनके पास युद्ध के लिए गोला-बारूद पर्याप्त रूप से नहीं। उनके पास धन भी नहीं। इस बात का पूर्ण अनुमान लगाया जाता है कि वे हमारे आक्रमण का मुकाबला न कर सकेंगे। पहली रेजीमेंट जो नगर में प्रविष्ट होगी वह सबका सफाया कर देगी।[3]

सितम्बर के आरम्भ ही से अंग्रेज इंजीनियरों ने देहली पर आक्रमण करने के लिए मोर्चे तैयार करने प्रारम्भ कर दिये थे। ७ सितम्बर को सायंकाल अँधेरे में चुपचाप प्रथम बैट्री मोरी दरवाजे से ७०० गज की दूरी पर बनाई गई। क्रान्तिकारियों ने रात्रि में उन पर गोलियाँ चलाई किन्तु यह समझकर कि कुछ लोग झाड़ी में से लकड़ियाँ काट रहे हैं उन्होंने गोलियाँ चलानी बन्द कर दीं। यदि वे उसी समय सावधान हो जाते तो सम्भवतः अंग्रेजों को अपना काम अधूरा ही छोड़कर लौट जाना पड़ता। रात्रि में अंग्रेजी सेना ने घोर परिश्रम करके प्रातःकाल तक मोर्चे में एक तोप चढ़ा दी। क्रान्तिकारियों ने यह देखकर उस पर गोलों की वर्षा प्रारम्भ कर दी। उनके गोलों की वर्षा से अंग्रेजों की सेना की बड़ी बुरी दशा हो गई किन्तु अंग्रेजी सेना अपने काम में लगी रही और बैट्री तैयार करके शहरपनाह को बड़ी हानि पहुँचाई और मोरी द्वार का बुर्ज भूमि पर गिरा दिया।[4]

---

१. अंग्रेजों तथा क्रान्तिकारियों की सेना के विषय में परिशिष्ट 'क' देखिये। **राबर्ट्स** पृ० ११६।

२. गवर्नर जनरल आफ इंडिया इन कौंसिल का पत्र कोर्ट आफ डाइरेक्टर के नाम **पार्लियामेंट्री पेपर्स** (नं० ४) पृ० १९९।

३. पंजाब के चीफ कमिश्नर के आफीशियेटिंग सिक्रेटरी का पत्र सिक्रेटरी गवर्नमेंट आफ इंडिया के नाम, दिनांक ७ सितम्बर १८५७ **पार्लियामेंट्री पेपर्स** १८५७ नं० ४ पृ० ५२७।

४. **देहली—१८५७**, पृ० २६७-२७०, **ग्रीद्ड** पृ० २५५-२५६, **एट मंथ्स कैम्पेन** पृ० ५२, **राटन** पृ० २३२-२३७।

८ सितम्बर को अंग्रेजों ने लुडलो कैंसिल पर अधिकार जमा लिया जो नगर से ६०० गज की दूरी पर था और एक बैट्री लुडलो कैंसिल के समक्ष कश्मीरी द्वार से ५०० गज की दूरी पर स्थापित की गई।[१] १० सितम्बर को तीसरी बैट्री कस्टम की कोठी में तैयार की गई। उसी दिन चौथी बैट्री कुदसिया बाग में एक प्राचीन भवन की शरण लेते हुए तैयार की गई।

११ सितम्बर को अंग्रेजों ने गोलों की वर्षा प्रारम्भ कर दी। कश्मीरी द्वार से क्रान्तिकारियों ने उनका उत्तर दिया किन्तु वे अधिक देर तक गोले न चला सके। बुर्ज तथा शहरपनाह में दरारें पड़ गईं। १२ सितम्बर को तीसरी बैट्री का भी प्रयोग हुआ और चारों बैट्रियों से गोलों की वर्षा होने लगी। अंग्रेजों की ओर से रात-दिन गोले चलाये जाते थे। क्रान्तिकारी अपनी तोपों को बैट्रियों के सामने खुले मैदान में ले गये। शहरपनाह में छेद करके प्रत्येक तोप के मुकाबले में एक तोप लगा दी और प्रत्येक बैट्री पर बड़ा तीव्र आक्रमण किया। इस प्रकार प्रत्येक बैट्री की बुरी तरह खबर ली। उनके गोलों तथा गोलियों ने बहुत से अंग्रेज सिपाहियों की जान ले ली।[२] इसी समय क्रान्तिकारियों को बाहर से रसद मिलनी बन्द हो गई थी। वे हताश हो चुके थे किन्तु फिर भी स्वाधीनता की रक्षा हेतु डटे रहे।

१३ सितम्बर को अंग्रेजी सेना के अधिकारी दूसरे दिन एक साथ आक्रमण करने की तैयारी करते रहे। १४ सितम्बर को सूर्योदय के पूर्व अंग्रेज सैनिक लुडलो कैंसिल में एकत्र हुए। केवल रीड के साथ की सेना, जो हिन्दू राव की कोठी से किशनगंज तक का सफाया करनेवाली थी, अनुपस्थित थी किन्तु उन्हें आक्रमण का आदेश न हुआ। इसका कारण यह था कि क्रान्तिकारियों ने वह दरार, जिसमें से अंग्रेजों ने आक्रमण करके नगर में प्रविष्ट होना निश्चय किया था, भर दी थी; अतः अंग्रेजी सेना को पुनः गोलियाँ चलाने का आदेश हुआ। क्रान्तिकारियों की तोपों की गर्जना बन्द न हुई थी। वे उसी प्रकार से अंग्रेजों की तोपों का उत्तर दे रहे थे। अंग्रेजी सेना को योजनानुसार अग्रसर होने का आदेश दिया गया। क्रान्तिकारियों ने उन पर गोलियों की वर्षा प्रारम्भ कर दी किन्तु अंग्रेजों की सेना बढ़ती चली गई। क्रान्तिकारियों की गोलियों तथा पत्थरों की वर्षा ने उन्हें बड़ी हानि पहुँचाई और उनके

१. **राटन** पृ० २४०-२४६, **देहली** १८५७ पृ० २७०, **ग्रीफिथ्स** पृ० १४५।

२. **ग्रीद्ड** पृ० २५९-२७०, **राटन** पृ० २४९-२५६, **होप ग्रान्ट** पृ० ११४-११५, **ग्रीफिथ्स** पृ० १४६, **देहली** १८५७—पृ० २७१-२७२, **राबर्ट्स**, पृ० ११९-१२०।

लिए सीढ़ियाँ लगाकर दीवार पर चढ़ना कठिन हो गया किन्तु प्राणों पर खेलकर कुछ अंग्रेज सैनिक दीवार पर चढ़ गये जिनमें प्रथम निकल्सन था। अंग्रेजों की सेना का एक भाग कश्मीरी द्वार की ओर बढ़ा और बड़ी कठिनाई से उस पर अधिकार जमा लिया और अंग्रेजों की सेना का वह भाग द्वार के भीतर प्रविष्ट हो गया। जो अंग्रेजी सेना किशनगंज तथा पहाड़गंज की ओर से बढ़ रही थी उस पर क्रान्तिकारियों ने किशनगंज के घरों तथा उद्यानों के भीतर से गोलियों की वर्षा की। दो घंटे तक युद्ध होता रहा और क्रान्तिकारियों ने अंग्रेजी सेना के छक्के छुड़ा दिये।

निकल्सन ने एक सेना अजमेरी द्वार से, एक काबुली द्वार से भेजी तथा कैम्बेल को सेना देकर नगर के भीतर जामा मस्जिद तक जाने का आदेश दिया। अंग्रेजों की सेना को जो काबुली द्वार से नगर में प्रविष्ट होने का प्रयत्न कर रही थी, क्रान्तिकारियों के आक्रमण के कारण, जिनमें से कुछ ने एक-एक इंच भूमि के लिए युद्ध करना निश्चय कर लिया था, पीछे हटना पड़ता था। निकल्सन भी सहायतार्थ पहुँच चुका था किन्तु उसके सीने में भी गोली लगी और अंग्रेजों की सेना काबुली द्वार में पुनः लौट आयी।

कैम्बेल की सेना सर थ्योफिलस मेटकाफ के पथ-प्रदर्शन के कारण नगर के ऐसे भागों से होती हुई, जहाँ से क्रान्तिकारियों के आक्रमण का बहुत कम भय था, जामा मस्जिद के निकट पहुँच गई किन्तु जो सेनाएँ उसके सहायतार्थ पहुँचनेवाली थीं उनके न पहुँचने के कारण वह अपनी सेना गिर्जाघर में लौटा ले गया। अंग्रेजी सेना को प्रत्येक मोर्चे पर अत्यधिक हानि उठानी पड़ी। उनके लिए कार्य इतना सरल न था जैसा उनका विचार था। सेनापति विल्सन हताश हो गया। वह पहाड़ी पर लौट जाने की योजना बनाने लगा किन्तु कुछ उत्साही अधिकारियों ने इसका विरोध किया। निकल्सन यद्यपि मर रहा था किन्तु उसने विल्सन की योजना का विरोध करते हुए कहा कि, "ईश्वर को धन्य है कि मुझमें इतनी शक्ति है कि यदि आवश्यकता पड़ेगी तो मैं विल्सन को गोली मार दूँगा।"[1]

---

१. **राटन** पृ० २६८-२८८; **एट मंथ्स कैम्पेन** पृ० ६०-७०, **ग्रे.फ़िथ्स** पृ० १५५-१७५, **होप ग्रान्ट** पृ० १२०-१३१, **स्टेट पेपर्स** भाग १ पृ० ३७१-३७४, **ग्रीव्ड** पृ० २७१-२७२, **देहली १८५७** पृ० २८२-२८६, **फ़ारेस्ट** पृ० १३६-१४९, **सिप्वाए वार इन इंडिया**, भाग ३ पृ० ५८४-६१८, **नाइन्थ लान्सर** पृ० १४५-१४७, **राबर्ट्स** पृ० १२५-१३३.

१४ सितम्बर के कार्य की जाँच की जाय तो पता चलेगा कि अंग्रेजों की सेना की बहुत बड़ी हानि हुई और कार्य पूरा न हो सका किन्तु उन्हें नगर में ऐसा स्थान प्राप्त हो गया जहाँ से वे अपने कार्य को आगे बढ़ा सकते थे । छः घंटे के युद्ध में ६६ अधिकारी मारे गये तथा ११०४ सैनिकों की हत्या हुई ।

क्रान्तिकारियों की आश्चर्यजनक युक्ति

क्रान्तिकारियों ने १४ सितम्बर को रात्रि में खाली दुकानों तथा मार्ग में मदिरा की बोतलें ढेर कर दीं । मदिरा देखकर गोरों को किसी बात की सुध-बुध नहीं रहती । दूसरे दिन जब उन्होंने बोतलें देखीं तो वे उन पर टूट पड़े और मदिरा पी-पीकर अचेत हो गये । सम्भवतः क्रान्तिकारियों ने इस युक्ति का प्रयोग नगर से बाहर निकल जाने के लिए किया था, अन्यथा यदि वे इस अवसर से लाभ उठाकर अंग्रेजी सेना पर टूट पड़ते तो अवश्य ही उनका विनाश हो जाता । विल्सन जब कभी सेना के कुकर्मों पर ध्यान देता तो वह काँप उठता था । उसने आदेश दे दिया कि शेष बोतलें नष्ट कर दी जायँ ।[1]

अंग्रेजों का देहली पर अधिकार

१५ सितम्बर को किले, सलीमगढ़ तथा नगर पर अंग्रेजी सेना ने गोले बरसाये । अंग्रेजों की सेना ने लूट-मार प्रारम्भ कर दी । १६ सितम्बर को किशनगंज के आस-पास के स्थानों पर, जहाँ से क्रान्तिकारियों ने अंग्रेजों की एक सेना को पराजित करके पीछे हटा दिया था, अपने अधिकार में कर लिया । १७ तथा १८ सितम्बर को अंग्रेजी सेना किले तथा चाँदनी चौक के बहुत निकट पहुँच गई । १८ सितम्बर को ग्रेट हेड ने लाहौरी द्वार पर आक्रमण किया किन्तु द्वार के भीतर की एक तोप के गोलों तथा घरों की छतों पर से गोलियों की बाढ़ द्वारा उनका स्वागत किया गया । गोरे निरन्तर अपने साथियों को मरता देखते थे किन्तु कुछ न कर सकते थे, अतः उन्होंने गलियों में युद्ध करने से मना कर दिया । १९ सितम्बर को अंग्रेजी सेना काबुली तथा लाहौरी दरवाजे के आगे बढ़ी । यद्यपि क्रान्तिकारियों की सेना का बहुत

---

१. **सिप्वाए वार इन इंडिया**, भाग ३, पृ० ६१८-६१९ ।

बड़ा भाग नगर से चल दिया था, किन्तु अंग्रेजी सेना को इंच-इंच भर भूमि के लिए युद्ध करना पड़ता था।

२० सितम्बर को प्रातःकाल ब्रिगेडियर जोंस के दस्ते ने लाहौरी दरवाजे पर अधिकार जमा लिया। उसे आदेश प्राप्त हुआ कि वह अपनी सेना को विभाजित करके एक भाग चाँदनी चौक में भेजे जो जाकर जामा मस्जिद पर अधिकार प्राप्त करे। ब्रेड ने जामा मस्जिद पर अधिकार जमा लिया। उसने जनरल से किले पर आक्रमण करने की प्रार्थना की। इसी बीच में जोंस अजमेरी द्वार में प्रविष्ट हुआ। एक सेना ईदगाह की ओर गई तो उसे ज्ञात हुआ कि देहली द्वार के बाहर क्रान्तिकारियों का शिविर रिक्त है। लेफ्टिनेंट हडसन ने लपक कर उसे अपने अधिकार में कर लिया और उसके सवारों ने घायल तथा रुग्ण सैनिकों की हत्या कर दी।

ब्रेड की प्रार्थनानुसार जनरल विल्सन ने किले पर आक्रमण करने के लिए एक सेना भेजी। शाहजहाँ का किला आज रिक्त था। तैमूर का वंश उसमें से भाग रहा था। शीघ्र ही उसके द्वार को उड़ा दिया गया[1]। किले के छत्ते में जो तिलंगों का चिकित्सालय था उसमें वे घायल पड़े थे जो सेना के साथ न जा सकते थे। अंग्रेजों की सेना ने अपनी गोलियों से उन्हें संसार के कष्टों से मुक्ति दिला दी। शाहजादे अपने घरों की रक्षा हेतु बड़े-बूढ़ों तथा घर के फालतू आदमियों को छोड़ गये थे। उनकी भी हत्या कर दी गई। अंग्रेजों ने उस पुल के द्वार पर जो किले तथा सलीमगढ़ के मध्य में था इस आशय से लपक कर अधिकार जमाया कि क्रान्तिकारियों को नगर से भागने न दें किन्तु वे दो दिन पूर्व जा चुके थे। जामा मस्जिद, किले तथा सलीमगढ़ में अंग्रेजी सेना ने अड्डे जमा लिये। देहली के निवासियों को भी, जो क्रान्तिकारियों की सेना से परेशान ो गये थे शीघ्र ज्ञात हो गया कि कायरता की मौत किसे कहते हैं।

बहादुरशाह का प्रभाव

जीवनलाल तथा अंग्रेजों के गुप्तचरों के विवरणों से ज्ञात होता है कि बादशाह अधिकारहीन तथा बेगम और उसके सहायकों के हाथ में कठपुतली था, किन्तु

---

१. **राटन** पृ० ३०३-३१६, **देहली–१८५७** पृ० २९०-२९८, **होप ग्रान्ट** पृ० १२९-१३१; **ग्रीद्ड** पृ० २७८-२८५, **सिप्वाए वार** भाग ३, पृ० ६२५-६३५।

वास्तव में वही देहली के क्रान्तिकारियों को एक सूत्र में बाँधे था। अशान्ति तथा कठिन समय में उसके राज्य त्याग कर फकीर बन जाने की धमकी का बड़ा प्रभाव होता था। सम्भवतः उतना प्रभाव किसी अन्य बादशाह के कठोर आदेशों का भी न होता। उसकी निराशा से क्रान्तिकारियों में नई स्फूर्ति उत्पन्न हो जाती और वे पहले से अधिक जान तोड़कर परिश्रम करते थे। २५ अगस्त को जब सैनिक भूख से व्याकुल होकर उसके पास फरियाद ले गये तो उसने शाही आभूषण लाकर उनके सामने रख दिये और कहा "इन्हें ले जाओ और अपनी भूख भूल जाओ।" कौन-सा हृदय इस पर न पिघल जाता? किस अधिकारी पर इसका प्रभाव न होता? उन्होंने वही उत्तर दिया जो उन्हें देना उचित था। उन्होंने कहा "हम शाही आभूषण स्वीकार नहीं कर सकते। हमें इस बात से बड़ा सन्तोष है कि आप हमारे लिए तन-मन-धन सब कुछ न्योछावर करने के लिए उद्यत हैं।"[१] पहली सितम्बर को सम्भवतः क्रान्तिकारियों ने धन के अभाव तथा जनता द्वारा धन न प्राप्त होने के कारण नगर को लूट लेने की धमकी दी। बादशाह ने दृढ़तापूर्वक कहा "लूटने की कोई आवश्यकता नहीं। मैं अपने घोड़े, हाथियों तथा सोने चाँदी के आभूषणों को बेचकर तुम्हें धन दूंगा। यदि मैं ऐसा न कर सकूं तो तुम सब नगर छोड़कर जा सकते हो। मैंने तुम्हें कदापि नहीं बुलाया था। यदि तुम नगर को लूटना चाहते हो तो पहले मेरी हत्या कर दो। तत्पश्चात् तुम्हारे जी में जो आये करो।"[२] इस प्रकार वह अपनी प्रजा के लिए चट्टान बनकर खड़ा हो जाता था और उसे किसी प्रकार की हानि नहीं होने देता था। यदि वह न होता तो सम्भवतः क्रान्तिकारी उचित नेतृत्व के अभाव में इतने दिन भी देहली को स्वाधीन नहीं रख सकते थे। प्रजा की कितनी शोचनीय दशा हो जाती, इसका अनुमान नहीं हो सकता।

जब क्रान्तिकारियों की सेना के अधिकारियों का पारस्परिक द्वेष बहुत बढ़ने लगा तो वह प्रत्येक को समझाता तथा धमकाता था। शाहजादों को पूर्णरूप से अपने नियंत्रण में रखता था और उन्हें प्रजा की धन-सम्पत्ति पर हाथ साफ करने न देता था। उसकी सबसे बड़ी सफलता यह थी कि हिन्दुओं तथा मुसलमानों में अंग्रेज गुप्तचरों के षड्यंत्र के बावजूद किसी प्रकार का मतभेद उत्पन्न न हो सका।

---

१. **जीवनलाल** पृ० २०७।

२. **जीवनलाल** पृ० २१६।
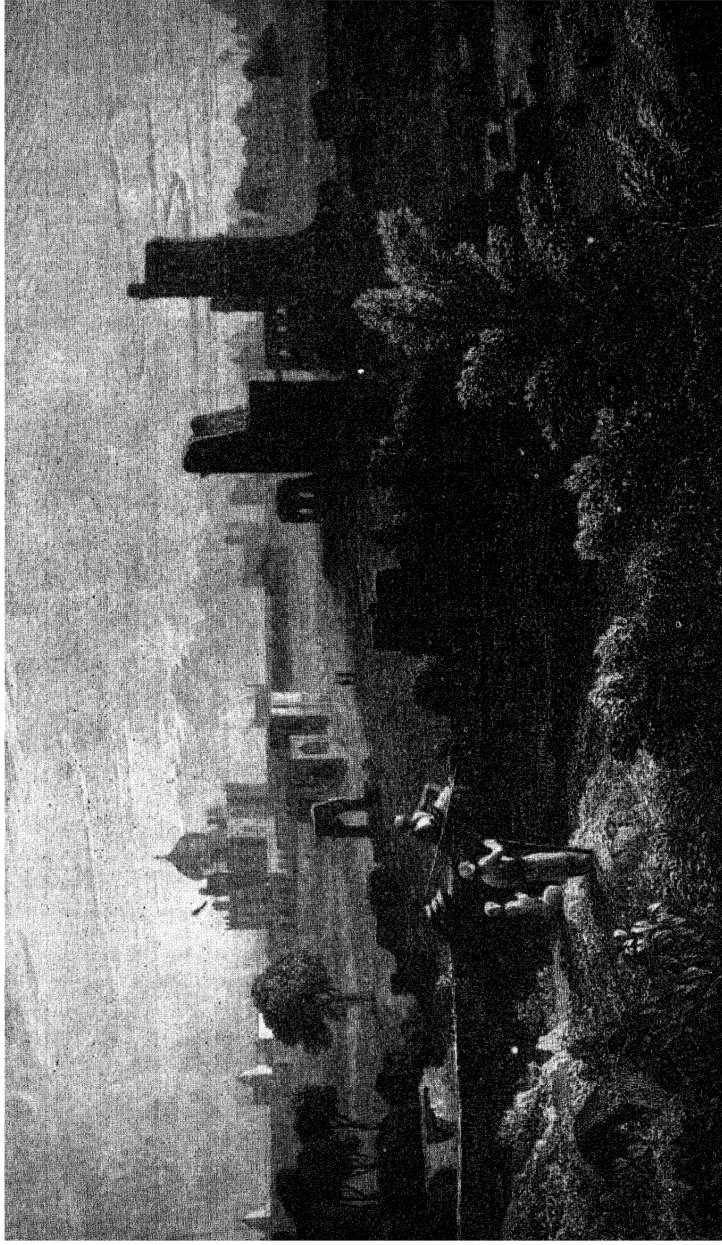
हुमायूँ का मक़बरा जहाँ बादशाह् बन्दी बनाया गया

अगस्त के अन्त में जब क्रान्तिकारी निराश होते जाते थे तो वह ऐसे आदेश देता था जिनसे उनका उत्साह बहुत बढ़ जाता। सम्भवतः उसने इसी समय प्रजा तथा सेना के लिए एक सविस्तार आदेश इस प्रकार दिया—

(१) सेना के लिए यह परमावश्यक है कि वह बादशाह के आदेशों के पालन का पूर्ण रूपेण प्रयत्न करती रहे और स्वामिभक्ति, परिश्रम तथा शत्रु के विनाश में कोई कसर उठा न रखे। इसी को बादशाह की प्रसन्नता तथा अपनी उन्नति का साधन समझे।

(२) प्रत्येक अश्वारोही तथा पदाती अपने अधिकारी की आज्ञाओं का पालन करे। छोटा अफसर बड़े अफसर के आदेशों का पालन करे और प्रत्येक अफसर अपनी-अपनी सेना का अपने समय पर प्रबन्ध आवश्यक समझे और अपने अफसर की आज्ञा के विरुद्ध कोई कार्य न करे।

(३) समस्त सिपाहियों तथा सरदारों के लिए यह अनिवार्य है कि धर्म के शत्रुओं तथा राज्य पर अधिकार जमाने का प्रयत्न करनेवालों की हत्या करने, उन्हें बन्दी बनाने एवं पराजित करने में किसी प्रकार की शिथिलता, असावधानी तथा टाल-मटोल न करें। इसी में समस्त प्राणियों का कल्याण है।

(४) जो सिपाही तथा अफसर अच्छी सेवा करेगा उसे बादशाह द्वारा पुरस्कार दिया जायगा और उसके पद तथा वेतन में वृद्धि की जायगी। जो कोई इस युद्ध में मारा जायगा उसके परिवार का पालन-पोषण बादशाह की ओर से भली भाँति किया जायगा। उसके पुत्र अथवा किसी सम्बन्धी को वेतन-वृद्धि सहित सेवा प्रदान की जायगी।

(५) जो धर्म के शत्रुओं की किसी प्रकार सहायता करेगा अथवा इस राज्य का अहित चाहेगा या रसद पहुँचायेगा तो ईश्वर तथा रसूल (मुहम्मद साहब) के समक्ष पापी होगा और अपने अपराध के अनुसार दंड भोगेगा।

(६) पहाड़ी में कुछ काफ़िर शरण लिये हुए हैं और अत्यधिक विजयी सेना के बावजूद अभी तक पहाड़ी पर विजय प्राप्त नहीं हुई है तथा काफ़िरों का विनाश नहीं हो सका है। उस पर अधिकार न होने के कारण शासन प्रबन्ध सम्बन्धी अधिकांश कार्य स्थगित हैं और एक प्रकार से देश का शासन-प्रबन्ध तथा प्रजा की देखभाल

उसी पर निर्भर है अतः शत्रुओं का विनाश करनेवाले वीरों को चाहिये कि वे तन-मन-धन से इस युद्ध में लग जायँ और इस प्रकार प्रयत्नशील हों तथा परिश्रम करें कि धर्म के शत्रुओं का पूर्णरूपेण विनाश हो जाय और इस विजय तथा पराक्रम एवं वीरता की प्रसिद्धि समस्त संसार में हो जाय। इस प्रकार वे बादशाह की हर तरह की कृपा के पात्र होंगे।

(७) जो सवार जिस रेजीमेंट में तथा जो तिलंगे जिस पल्टन में पहले से नौकर तथा भर्ती थे उसी प्रकार अपनी-अपनी रेजीमेंट तथा पल्टन में सम्मिलित रहकर अपने अफसरों की आज्ञाओं का पालन करते रहें और इधर-उधर परेशान न हों, कारण कि इसमें अव्यवस्था तथा कुशासन का भय है। यदि कोई अफसर अथवा सैनिक अपनी रेजीमेंट अथवा पल्टन से किसी अन्य पल्टन में जाय तो उसकी सूचना तुरन्त शाही कार्यालय में की जाय। उसे दंड दिया जायगा।[1]

बहादुरशाह क्रान्तिकारियों को निरन्तर प्रोत्साहित करता रहता था। यदि वह उनके समक्ष निराशाप्रद शब्द कहता तो उसका उद्देश्य, क्रान्तिकारियों को उत्तेजित करना होता था। इस युद्ध ने दो अंग्रेज सेनापतियों को मौत के घाट उतार दिया था और एक सेनापति त्यागपत्र देकर चल दिया था। चौथा सेनापति भी हर समय दुखी तथा चिन्तित रहता था। ऐसी अवस्था में बहादुरशाह जैसा वृद्ध यदि कभी-कभी निराश हो जाता था तो उसे दोषी नहीं ठहराया जा सकता। उसे ईश्वर पर पूर्ण विश्वास था। वह समझता था कि वह एक उच्च उद्देश्य के लिए कटिबद्ध हुआ है अतः व्याकुल होकर भी वह ईश्वर ही को पुकारता।

दुश्मन अज़ हर तरफ़ हुजूम आवुर्द
या अलीये वली बराये खुदा।
फौजे ग़ैबी पये मदद बेफ़िरस्त,
अज़तु ख्वाहद हमीं ज़फ़र ब दुआ।[2]

---

१. प्रेस लिस्ट ९४ (१)।
२. सादिकुल अखबार, अगस्त १७, १८५७ पृ० ४।
देहली उर्दू अखबार, अगस्त १७, १८५७ ई०।

(अर्थ)

शत्रु ने प्रत्येक दिशा से घेर लिया है,
हे इमाम हजरतअली ईश्वर के लिये।
सहायतार्थ दैवी सेना भेजिये,
ज़फ़र तुझसे यही प्रार्थना करता है।

अगस्त के अन्त तथा सितम्बर में वह सेना तथा अन्य लोगों को स्वयं एवं कोर्ट द्वारा अत्यधिक प्रोत्साहन दिलाने लगा था। वृद्धावस्था के कारण वह स्वयं युद्धक्षेत्र में न जा सकता था किन्तु युद्ध के विषय में निरन्तर प्रश्न किया करता था।

५ सितम्बर को जब बख्त खाँ ने अंग्रेजों के तोपखाने के पहुँच जाने तथा कश्मीरी द्वार पर आक्रमण की सूचना बादशाह को दी तो बादशाह ने उससे प्रश्न किया, "तुम लोग अंग्रेजों से युद्ध करने की क्या व्यवस्था कर रहे हो ? यदि तुमसे युद्ध करना सम्भव न हो तो नगर के द्वार तुरन्त खोल दो।" जनरल ने उत्तर दिया, "मैं मैगजीन को नगर के बाहर ले जा रहा हूँ। मैं अंग्रेजों के गोलों की वर्षा का मुकाबला ४० तोपों से करूँगा जिसके लिए मैं बैट्रियाँ तैयार कर रहा हूँ।" उसने बताया कि "इसके अतिरिक्त मैं २,००० सवार तैयार कर रहा हूँ जो अंग्रेजी सेना को रसद का पहुँचना रोक देंगे।" बादशाह ने पूछा कि "बारूद कितना है" और एक आवश्यक पत्र फ़र्रुखाबाद के नवाब के पास इस आशय से भेजा कि वह तुरन्त २,००० मन गंधक भेज दे।[1]

७ सितम्बर को डुग्गी पिटवाई गई कि "समस्त हिन्दू तथा मुसलमान अस्त्र-शस्त्र सहित युद्ध के लिए तैयार रहें। आक्रमण की निश्चित तिथि इस कारण नहीं बतायी जाती कि सम्भव है शत्रु को सूचना हो जाय।"[2] १२ सितम्बर को डुग्गी पिटवाई गई कि बादशाह स्वयं अंग्रेजों पर आक्रमण करने के लिए प्रस्थान करेगा और समस्त नगरवासियों से आशा की गई कि वे उसकी सेना में सम्मिलित हों। हिन्दुओं तथा मुसलमानों से युद्ध करने की शपथ भी ली गई।[3]

---

१. जीवनलाल पृ० २२२। गंधक की कमी से क्रान्तिकारियों को बड़ी हानि हुई।
२. प्रेस लिस्ट १६, नं० २०।
३. जीवनलाल पृ० २२९।

१३ सितम्बर १८५७ ई० को मिर्ज़ा मुग़ल सेनापति ने देहली के कोतवाल को पत्र लिखा कि ज्ञात हुआ है कि आज रात्रि में अंग्रेज सामान्यरूप से आक्रमण करनेवाले हैं अतः तुम शहर भर में डुग्गी पिटवा करके सूचना करा दो कि समस्त निवासियों के लिए चाहे वे हिन्दू हों अथवा मुसलमान, आवश्यक है कि वे अपने धर्म की रक्षा हेतु कश्मीरी द्वार की दिशा में एकत्र हो जायँ और अपने साथ लोहे के खूंटे तथा कुल्हाड़ियाँ लेते आयें।[1]

किले में षड्यंत्र

जनता से भी युद्ध में सहयोग का आग्रह किया जाता था। सैनिक अपनी आर्थिक कठिनाइयों तथा पारस्परिक द्वेष एवं शत्रुता के बावजूद जितना भी सम्भव था प्रयत्न करते थे किन्तु किले में षड्यंत्र अपनी चरम सीमा को पहुँच चुका था। बेगम जीनतमहल, हकीम एहसनुल्लाह खाँ तथा मिर्जा इलाहीबख्श के हाथ में कठपुतली थी। वह बादशाह के कान भरती रहती थी। २० जुलाई १८५७ ई० को बादशाह की ओर से सन्धि के वार्तालाप का प्रयत्न किया गया किन्तु उत्तरी पश्चिमी प्रान्त का लेफ्टिनेंट गवर्नर समझ गया कि यह केवल जाल है। २१ अगस्त को बेगम जीनत-महल ने मिस्टर ग्रीद्ड के पास कहलवाया कि यदि समस्त स्त्रियों तथा बच्चों की रक्षा का आश्वासन दिलाया जाय तो वह अपने प्रभाव का प्रयोग करेगी। उसको लिख दिया गया कि महल की स्त्रियों से कोई बात नहीं की जा सकती;[2] किन्तु शीघ्र ही उसे इस कार्य के लिये दूसरा अधिकारी मिल गया। वह था हडसन। हडसन जैसा भ्रष्ट व्यक्ति अपने लिए सब कुछ उचित समझता था। ज़ीनतमहल ने उसे घूस देकर अपना काम निकाल लिया और उससे अपने, बादशाह के, अपने पुत्र के तथा अपने पिता के जीवन का आश्वासन ले लिया और बादशाह के लिए सर्वदा के लिए लांछन की सामग्री एकत्र कर दी। इसके उपरान्त हडसन ने जिस कथित वीरता का प्रदर्शन किया, वह केवल नाटक था।[3]

---

१. **ट्रायल** पृ० १२७, इसी प्रकार का एक अन्य आदेश प्रेस लिस्ट १११ डी नं० १७३ में ह।

२. ब्रिगेडियर जनरल नील का पत्र गवर्नर जनरल के नाम, कानपुर दिनांक ४ सितम्बर १८५७। **पार्लियामेंट्री पेपर्स** नं० ४ पृ० १९४। **स्टेट पेपर्स** भाग १, पृ० ३६५।

३. राइस होम्स, **इंडियन म्युटिनी** (लन्दन १९०४) पृ० ६१४-६१७, **सटर्डे रिव्यू**।
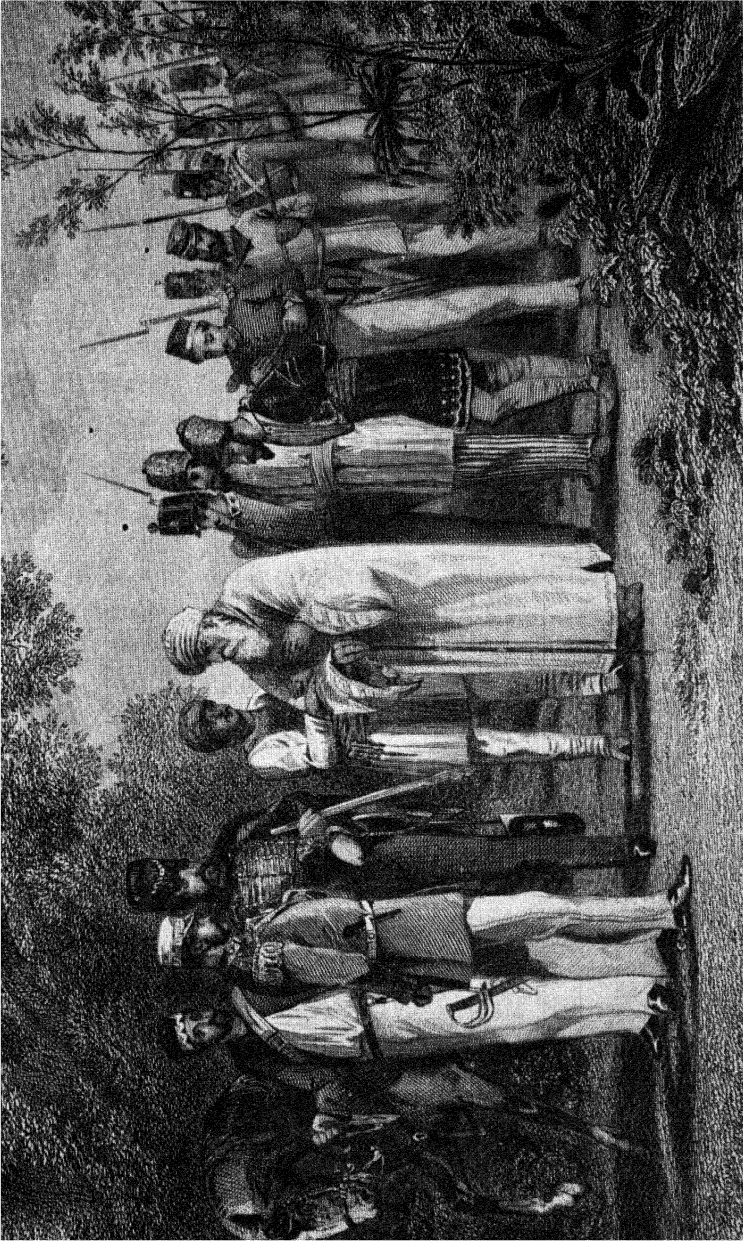
बादशाह् के बन्दी बनाये जाने का एक काल्पनिक चित्र

अंग्रेजों के नगर में प्रविष्ट हो जाने के उपरान्त किले के षड्यंत्रकारियों ने बहादुरशाह की बुद्धि भ्रष्ट कर दी। मिर्जा इलाहीबख्श ने बादशाह को समझाया कि "यदि आप सेना के साथ चले जायेंगे तो आपको बड़े कष्ट भोगने पड़ेंगे और आपकी अवश्य पराजय होगी। यदि आप विद्रोही सेना से पूर्णतः पृथक् हो जायेंगे तो विजयी अंग्रेजों को यह विश्वास हो जायेगा कि आपको सेना ने अपने साथ रखने पर विवश कर रखा था और आपको जब अवसर मिला तो आप उन दगाबाज नमकहरामों से पृथक् हो गये। अपने आपको अंग्रेजों को समर्पित कर देने में आपके पुलाओ की रकाबी कहीं नहीं गई।"[1] बादशाह निराश हो चुका था। बेगम जीनतमहल अन्तःपुर में तथा मिर्जा इलाहीबख्श अन्तःपुर के बाहर एक ही प्रकार का राग अलापते थे। अन्त में बादशाह ने मिर्जा इलाहीबख्श तथा अपनी बेगम की बात स्वीकार करना निश्चय कर लिया। मुंशी रजबअली, अंग्रेजों का मुख्य गुप्तचर, मिर्जा इलाहीबख्श का बड़ा मित्र था। उसके परामर्श से मिर्जा ने बादशाह को हुमायूँ के मकबरे में चलने की राय दी।

बादशाह का बन्दी बनाया जाना

१९ सितम्बर की रात्रि में बादशाह ने हुमायूँ के मकबरे में शरण लेने का संकल्प कर लिया। जनरल बख्त खाँ ने बादशाह को समझाया कि "सामान तथा रसद की कमी के कारण यदि अंग्रेजों ने देहली पर अधिकार जमा लिया तो क्या हुआ। अभी तो समस्त देश बादशाह के अधिकार में है। यदि हुजूर हमारे साथ चलें तो हुजूर के नाम तथा व्यक्तित्व के प्रभाव से हमको अवश्य युद्ध में विजय प्राप्त होगी।" बादशाह ने बख्त खाँ को बिदा किया और कहा—"तुम हमसे हुमायूँ के मकबरे में भेंट करना।'

दूसरे दिन बख्त खाँ बादशाह, उसके पुत्र, बेगम जीनतमहल तथा उसके अमीरों से हुमायूँ के मकबरे में मिला तो उन लोगों ने उसके साथ जाना स्वीकार न किया। बादशाह को समझा दिया गया था कि यदि वह समस्त दोष क्रान्तिकारियों पर डालकर अंग्रेजों से दया की भिक्षा माँगेगा तो अवश्य अंग्रेज उसे क्षमा कर

---

१. **सिप्वाए वार इन इंडिया**, भाग ३ पृ० ६४४, **उरूजे अहदे सल्तनते इंग्लिशिया** पृ० ६४७, **खदंगे गदर** पृ० ७१। **सिप्वाए वार इन इंडिया**, भाग ३, पृ०६४४ मौलाना फ़जलेहक लिखत हैं, "बगम तथा वजीर न बादशाह को फुसलाया था कि अंग्रेज विजय के उपरान्त उससे अच्छा व्यवहार करेंगे और उसको उत्कृष्टता तथा राज्य प्रदान कर देंगे।" **सौरतुल हिन्दिया** पृ० ३७५

देंगे। किन्तु षड्यंत्र रचने वालों को शीघ्र ज्ञात हो गया कि यह उनकी भूल थी। स्वाधीनता हेतु युद्ध करते हुए प्राण त्याग देने के लिए उन्होंने अपनी पूर्व-निश्चित योजनानुसार, बादशाह को कार्य न करने दिया। जकाउल्लाह देहलवी ने लिखा है कि "जब हडसन बहादुरशाह को बन्दी बनाने के लिए पहुँच गया तो उस समय उसे सूझी कि यदि मैं सेना के साथ चला जाता तो मैं राज्य करता किन्तु वह बख्त खाँ को बिदा कर चुका था। अब सोचने का समय न रहा था। वह दो घंटे तक सोच विचार में रहा। जीनतमहल के आग्रह तथा विश्वासघाती परामर्शदाताओं के परामर्श से वह अपने आपको समर्पित कर देने पर विवश कर दिया गया था।"[1]

मिर्जा इलाहीबख्श ने बादशाह के हुमायूँ के मकबरे में पहुँचने की सूचना मुंशी रजब अली को भेज दी। मुंशी जी ने हडसन को सब हाल बता दिया। हडसन ने जनरल कमांडिंग को इस बात की सूचना दे दी और उससे पूछा कि "क्या उसका विचार बादशाह के पीछे सेना भेजने का नहीं है? बादशाह के अधीन इतनी बड़ी सेना होने के कारण हमारी विजय व्यर्थ है और हम लोग घेर लिये जानेवालों की अवस्था में हो जायँगे न कि घेरा डालनेवालों की।" जनरल विल्सन ने उत्तर दिया कि वह एक भी यूरोपियन नहीं दे सकता। तत्पश्चात् उसने अवैध सेना का एक खंड भेजना स्वीकार किया किन्तु बाद में उसे भी मना कर दिया, यद्यपि चैम्बरलेन ने इसका समर्थन किया।

इस बीच में दूत निरन्तर आ रहे थे और अन्य दूतों में से एक जीनतमहल की ओर से भी था और उसने बादशाह को कुछ शर्तों पर आत्म-समर्पण के लिए तैयार करने का प्रस्ताव रखा था। किन्तु इन शर्तों को स्वीकार न किया गया। समझौते की बातचीत जोरों पर चल रही थी। बीच में अंग्रेजों के कुतुब की ओर बढ़ने के झूठे समाचार बड़ी धूर्तता से प्रसारित किये गये। जो सूचना प्राप्त होती वह जनरल विल्सन तक पहुँचा दी जाती थी। अन्त में उसने हडसन को आदेश दिया कि वह बादशाह को उसके जीवन का तथा उसे व्यक्तिगत रूप से किसी प्रकार अपमानित न किये जाने का आश्वासन दे दे। इसके अतिरिक्त वह जो अन्य शर्तें करना चाहे करे। हडसन २१ सितम्बर को अपने ५० आदमियों को लेकर हुमायूँ के मकबरे की ओर रवाना हो गया।

---

१. तारीख़े उरूजे अह्दे सल्तनते इंग्लिशिया पृ० ६४९।
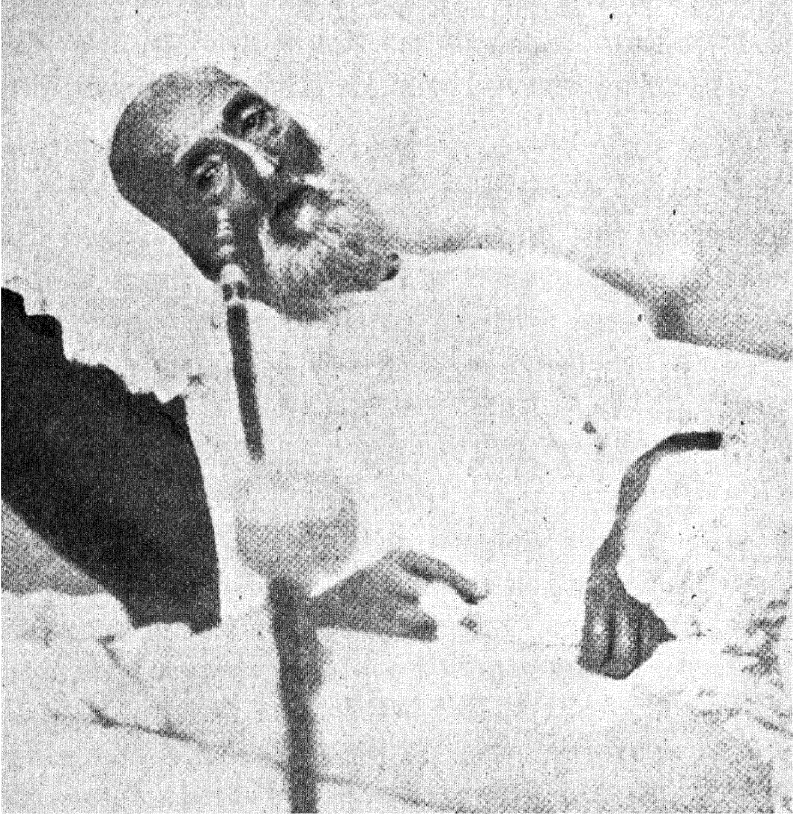
बहादुरशाह मृत्यु शय्या पर

उसने अपने आदमियों को मकबरे के द्वार के निकट के खँडहरों में छिपा दिया और अपने दो दूत जीनतमहल के पास बादशाह, उसके पुत्र तथा उसके पिता के प्राणों की रक्षा का आश्वासन दिलाने के लिए भेजे। दो घंटे तक हडसन अत्यन्त विकट दुबिधा में रहा और निर्णय की प्रतीक्षा करता रहा। इस प्रकार की दुबिधा का उसने कभी सामना न किया था। तत्पश्चात् दूतों ने आकर कहा कि बादशाह अपने आपको केवल हडसन को समर्पित करेगा और इस शर्त पर कि वह अपने मुँह से सरकार का आश्वासन सुनाये। हडसन ने फाटक के सामने सड़क के बीच में पहुँचकर कहा कि वह अपने बन्दियों को पकड़ने तथा आश्वासन को पुनः सुनाने को तैयार है।

शीघ्र ही एक जुलूस धीरे धीरे निकलने लगा। आगे आगे जीनतमहल बन्द देशी सवारी में थी। जैसे ही वह निकली मौलवी ने उसके नाम की घोषणा की। उसके पीछे बादशाह पालकी में आया। हडसन ने आगे बढ़कर उससे उसके अस्त्र शस्त्र माँगे। अस्त्र-शस्त्र देने के पूर्व बादशाह ने पूछा "क्या हडसन बहादुर तुम्ही हो और क्या तुम दूत द्वारा दिया हुआ आश्वासन दुहराओगे ?" हडसन ने उत्तर दिया "हाँ" और कहा "सरकार ने यदि आप अपने आप को चुपके से बन्दी बना दें तो आपके जीवन तथा जीनतमहल के पुत्र के जीवन का आश्वासन दिया है" और उसके साथ साथ उसने अत्यन्त महत्त्वपूर्ण ढंग से कहा कि "यदि रक्षा का कोई प्रयत्न किया गया तो मैं बादशाह को कुत्ते के समान गोली मार दूंगा।" वृद्ध पुरुष ने तत्पश्चात् अपने अस्त्र शस्त्र दे दिये जिन्हें हडसन ने, खुली हुई तलवार हाथ में लिये हुए अपने अर्दली को दे दिया।[1]

हडसन द्वारा बादशाह के जीवन का आश्वासन बहुत समय तक विवादास्पद रहा किन्तु हडसन ने इस विषय पर जो उत्तर दिया उससे पता चलता है कि उस समय भी देहली में बड़ी शक्ति थी। अंग्रेज फूंक-फूंककर कदम रखते थे। यदि बादशाह ने षड्यंत्रकारियों द्वारा मार्गभ्रष्ट होकर आत्म-समर्पण न कर दिया होता अथवा देहलीवाले हताश न हो गये होते तो अंग्रेजों को सफलता मिलनी कठिन थी। हडसन ने १२ फरवरी १८५८ ई० को कानपुर से अपने भाई को लिखा कि 'मैं देखता हूँ कि बहुत से लोगों का विचार है कि मैंने वृद्ध बादशाह

---

१. ट्वेल्व इयर्स आफ ए सोल्जर्स लाइफ इन इंडिया पृ० ३०४–३०६.

को बन्दी बनाने के उपरान्त उसे उसके जीवन का आश्वासन दिया था। कृपया इसका खंडन कीजिये। उसे दो दिन पूर्व आश्वासन दे दिया गया था ताकि वह विद्रोही सैनिकों का साथ छोड़कर देहली के निकट किसी स्थान को चला जाय।[१] जनरल विल्सन उसका पीछा करने के लिए सेना भेजना स्वीकार न करता था तथा अधिक संकट से बचना चाहता था। इस पर मैंने उसके जीवन की रक्षा करने की आज्ञा इस कारण माँगी कि इसके अतिरिक्त उसे अपने अधिकार में करने का कोई उपाय न था। इससे पूर्व मैंने इस सम्बन्ध में उससे कुछ न कहा था। लोग बादशाह के चारों ओर एकत्र हो रहे थे। उसका नाम खतरे की घंटी बन जाता जो समस्त भारतवर्ष को जगा देता। दक्षिण में राजपूताना के राजा विद्रोह के लिए उठ खड़े होने पर विवश कर दिये जाते और फिर वह सार्वलौकिक हो जाता। क्या इन सबसे मुक्ति प्राप्त कर लेना अच्छा न था और एक ९० वर्ष के वृद्ध को जीवनदान देकर इन उपद्रवों से अपने आपको सुरक्षित कर लेना अच्छा न था? यह बात भी याद रखनी चाहिये कि उस समय हमारे पास शत्रु से युद्ध करने के लिए अधिक साधन न थे। बड़ी कठिनाई से कुछ दिन उपरान्त एक थोड़ी सी सेना कर्नल ग्रीद्ड के अधीन आगरे को भेजी जा सकी और मुझे यह भली भाँति ज्ञात था कि देश से सहायतार्थ सेना आने में कई मास लगेंगे। यह अब स्पष्ट हो गया है कि देश से, सेना आने में अब भी महीनों की देर है। यह फरवरी मास है। बादशाह सितम्बर में बन्दी बनाया गया था। आजतक कमांडर-इन-चीफ इंगलिस्तान से आये हुए सैनिकों में से एक भी देहली तक नहीं भेज सका है और समस्त रुहेलखंड, समस्त अवध, मध्य भारत, बुन्देलखंड तथा बिहार के बहुत बड़े भाग अब भी शत्रु के हाथ में हैं। क्या यह बुद्धिमत्ता होती कि इस बात के साथ साथ उन्हें संघटित होने का इतना दृढ़ प्रलोभन प्रदान किया जाता? क्या यह बुद्धिमत्ता होती कि उत्तर-पश्चिम के युद्ध-प्रिय लोगों के हाथ में एक पवित्र तथा स्वर्ग से उतरा हुआ बादशाह होता जो राजसिंहासन से वंचित कर दिया गया है और बिना घरबार के मारा मारा फिरता है किन्तु एक पूरी विद्रोही सेना उसका साथ दे रही है? मैं अब उसके लिए दोषी ठहराया जाता हूँ किन्तु यह जानते हुए कि उसको अधिकार में करने का कोई अन्य उपाय न था

---

१. यह आश्वासन हडसन ने घूस लेकर दिया था। राइस होम्स, **इंडियन म्युटिनी** (लन्दन १९०४) पृ० ३१४-३१७, **सटर्डे रिव्यू**।

ज़ीनत महल वृद्धावस्था में

मैं अपवाद सहन करके संतुष्ट हूँ। बाद में स्वीकार करना पड़ेगा कि जब २१ सितम्बर १८५७ ई० को वृद्ध बादशाह अपने राजप्रासाद में बन्दी बनाकर पहुँचा दिया गया तो विद्रोह की जड़ पर सबसे बड़ा प्रहार हुआ।[1]"

शाहजादों की हत्या

बादशाह को बंन्दी बना लेने के उपरान्त हडसन ने शाहजादों को बन्दी बनाने का निश्चय किया। उस समय मिर्जा मुगल, मिर्जा खिज्र सुल्तान, मिर्जा अबू बक्र तथा बहुत बड़ी संख्या में अन्य लोग हुमायूँ के मकबरे में छिपे थे। जनरल विल्सन ने बड़ी कठिनाई से अनुमति देते हुए कहा, "किन्तु मुझे उनके कारण परेशान न करना।" हडसन ने उत्तर दिया कि "आपको बादशाह के मामले में अपने ही आदेशों से परेशानी हो रही है कारण कि मैं उसे देहली में जीवित लाने के स्थान पर उसका शव ही लाता"। इस प्रकार अनुमति पाकर वह अपने अधीन अधिकारी मैकडुवेल तथा १०० चुने हुए सैनिक लेकर हुमायूँ के मकबरे की ओर रवाना हो गया।[2] मैकडुवेल लिखता है कि "हम लोग ८ बजे प्रातः शनैः शनैः रवाना हुए। हम मकबरे से आधे मील की दूरी पर रुक गये।[3] हडसन कहता है कि "मैंने शाही वंश की एक तुच्छ संतान[4], जिसे जीवनदान का आश्वासन देकर मिला लिया गया था, तथा अपने काने मौलवी रजब अली को शाहजादों के पास गिरफ्तारी की सूचना देने के लिए भेजा और कहला दिया कि मैं उन्हें जिन्दा या मुर्दा ले जाऊँगा।" उस समय वहाँ लगभग ६००० सशस्त्र शाही सेवक आदि उपस्थित थे। आधे घंटे के उपरान्त दूतों ने आकर कहा कि "शाहजादे यह जानना चाहते हैं कि उन्हें जीवन-दान प्राप्त होगा अथवा नहीं।" हडसन ने कहलवाया "बिना शर्त के समर्पण।"[5] मैकडुवेल लिखता है कि "हम बड़ी दुबिधा में थे। हम लोग उन्हें जबर्दस्ती गिरफ्तार करने का साहस न कर सकते थे, अन्यथा हम सब नष्ट कर दिये जाते।

---

१. ट्वेल्व इयर्स आफ ए सोल्जर्स लाइफ इन इंडिया, पृ० ३१४-३१६।
२. ट्वेल्व इयर्स आफ ए सोल्जर्स लाइफ इन इंडिया, पृ० ३००।
३. ट्वेल्व इयर्स आफ ए सोल्जर्स लाइफ इन इंडिया, पृ० ३१०।
४. मिर्जा इलाही बख्श।
५. ट्वेल्व इयर्स आफ ए सोल्जर्स लाइफ इन इंडिया, पृ० ३०१।

हम अंधविश्वासियों के आग्रह का शोर सुनते थे जो वे शाहजादों से हमारे विरुद्ध युद्ध करने के सम्बन्ध में कर रहे थे ।[1] हमारे साथ केवल १०० मनुष्य थे और हम देहली से ६ मील दूर थे[2] । दो घंटे के वाद-विवाद के उपरान्त शाहजादों ने अपने आपको हडसन के सुपुर्द कर दिया और पूछा "क्या हमारा जीवन सुरक्षित है ?" हडसन ने कहा "कदापि नहीं" और उन्हें एक गारद की रक्षा में नगर की ओर भेज दिया।"

तत्पश्चात् हडसन शेष सवारों को लेकर मकबरे की ओर गया जहाँ छः-सात हजार शाही सेवक भरे पड़े थे। हडसन ने उन्हें हथियार रख देने का दृढ़तापूर्वक आदेश दिया। आशा के विरुद्ध उन लोगों ने तुरन्त आज्ञापालन किया और ५०० तलवारें, उससे अधिक बन्दूकें, बैलों तथा रथों के अतिरिक्त, एकत्र हो गईं। हडसन अस्त्र-शस्त्र तथा पशुओं को बीच में रखकर एक सशस्त्र गारद की रक्षा में छोड़कर, देहली की ओर चल दिया। वह कहता है "मैं समय पर पहुँच गया कारण कि एक बहुत बड़ी भीड़ इक्ट्ठा हो गई थी और गारद की ओर मुड़ रही थी। मैं उनके बीच में घोड़ा दौड़ाता हुआ चला गया और कुछ शब्दों में भीड़ से अपील की कि 'ये लोग कसाई हैं। इन्होंने निस्सहाय स्त्रियों तथा बालकों की हत्या की है और अब सरकार ने उनके लिए दंड भेजा है। मैंने अपने एक आदमी से एक कड़ाबीन लेकर एक एक करके जान बूझकर उनके गोली मार दी।[3] उनके शव नगर में ले जाकर कोतवाली में फेंक दिये गये जो २४ सितम्बर की प्रातःकाल तक पड़े रहे और फिर सफाई के विचार से हटा दिये गये।[4]"

अंग्रेजों के अत्याचार

अंग्रेजों की सेना ने नगर में प्रविष्ट होने के उपरान्त लूट मार तथा हत्याकांड प्रारम्भ कर दिया। जो कोई उनके सामने पड़ता उसको गोली मार दी जाती, घरों

---

१. यह शाहजादों की कायरता का बहुत बड़ा प्रमाण है।

२. **ट्वेल्व इयर्स आफ ए सोल्जर्स लाइफ इन इंडिया** पृ० ३१०-३११।

३. सीजिंग ए कारबाइन फ्राम वन आफ माई मेन, आई डेलिबरेटली शाट देम वन आफ्टर ऐनअदर। **ट्वेल्व इयर्स आफ़ ए सोल्जर्स लाइफ इन इंडिया** पृ० ३०२.) इससे पूर्व हडसन ने उनके वस्त्र उतरवा लिये थे।

४. **स्टेट पेपर्स** भाग १, पृ० ३६९, **ट्वेल्व इयर्स आफ ए सोल्जर्स लाइफ इन इंडिया** पृ० ३०२.

محمڈن ربلین

THE

MAHOMEDAN REBELLION;

ITS

PREMONITORY SYMPTOMS,

THE

OUTBREAK AND SUPPRESSION;

WITH

AN APPENDIX.

COMPILED BY W. H. CAREY.

ROORKEE.

PRINTED AT THE DIRECTORY PRESS.

1857.

क्रान्ति के विषय में रुड़की से १८५७ में प्रकाशित 'मुहमेडन रिबेलियन'
(सर सैयद की मुहर तथा उनका लेख पुस्तक के ऊपर उर्दू में है)

में आग लगा दी जाती। देहली के अधिकांश मनुष्य नगर छोड़कर चल दिये। शहर खाली हो गया। बहुत से शाहजादे सेना के साथ भाग गये किन्तु दिल्ली के आस-पास जितने शाहजादे मिले वे चुन चुनकर मार डाले गये। वृद्ध, लँगड़े, रुग्ण सभी फाँसी पर लटका दिये गये। झज्झर के अब्दुर्रहमान खाँ, बल्लभ गढ़ के राजा नाहर सिंह, फर्रुख नगर के अहमद अली खाँ को विभिन्न तिथियों पर फाँसी दे दी गई। उनकी फाँसी के दिन नगर के सब द्वार बन्द हो जाते थे और सेना की एक कम्पनी बाजा बजाती हुई कोतवाली के सामने फाँसी के पास आकर खड़ी होती थी। अंग्रेज फाँसी के समय खूब प्रसन्न होते थे। कोतवाली तथा त्रिपुलिया के मध्य में जो हौज था उसके तीन ओर फाँसियाँ खड़ी की गई थीं। उनमें एक बार में १०, १२ व्यक्तियों को फाँसी लग सकती थी। जिस रोज फाँसी पाने-वाले अधिक होते थे उस दिन उनमें से एक टोली को फाँसी दे दी जाती थी और दूसरी टोली प्रतीक्षा किया करती थी। शहर के कुछ बड़े आदमी अलवर भाग गये किन्तु वे वहाँ भी बन्दी बना लिये जाते थे। उनमें से कुछ को गुड़गाँव का मजिस्ट्रेट वृक्षों से लटका कर फाँसी दे देता था। कुछ लोग देहली भेज दिये जाते थे और उन्हें फाँसी दे दी जाती थी।

गोरे फाँसी के समय लोगों का तड़पना बड़े आनन्द से देखते थे। मेटकाफ के नाम से लोग काँपते थे। एक बार मिसेज गार्स्टिन के पास एक सुनार कुछ चीजें बेचने आया। मिसेज गार्स्टिन को उनका मूल्य कुछ अधिक ज्ञात हुआ। उसने सुनार से कहा—"मैं तुझे मेटकाफ साहब के पास भेज दूँगी।" वह इस बात को सुनकर अपना सामान छोड़कर ऐसा भागा कि फिर कभी नहीं दिखाई पड़ा।

नगर में तीन दिन तक खुली लूट-मार होती रही। उसके उपरान्त प्राइज एजेन्सी का विभाग स्थापित हुआ। उसका यह कर्तव्य था कि हर प्रकार का लूट-मार का माल एक स्थान पर एकत्र करे और फिर बड़े सस्ते मूल्य पर नीलाम हो। क्रान्तिकारियों के देहली में प्रविष्ट होने के उपरान्त लोगों ने अपनी धन सम्पत्ति भूमि में गाड़ दी थी या कोठरियों के द्वार निकलवा कर उनको ईटों से बन्द करवा दिया था। अब उस धन का पता लगा लगाकर उसे खुदवाया जाने लगा। घरों की खुदाई द्वारा ऐसी धन-सम्पत्ति भी प्राप्त हो गई जिसकी सूचना घर के स्वामियों को भी न थी।

देहली के मन्दिरों तथा मस्जिदों की बड़ी दुर्दशा की गई। जब देहली में हिन्दू बसाये गये तो उन्हें अपने समस्त मंदिरों को पवित्र कराना पड़ा। जामा मस्जिद में सिक्ख सेना की बारिक बनवाई गई। सुअर मारकर पकवाये गये। अन्य मस्जिदों में भी कुत्ते तथा गधे बँधवाये जाते थे। कुछ लोगों का प्रस्ताव था कि जामा मस्जिद को धराशायी कर दिया जाय। कुछ लोगों का मत था कि इसे गिरजा बना दिया जाय।[१] लार्ड लारेंस की जीवनी में अंग्रेजी सेना की लूट-मार तथा हत्याकांड का बड़ा विशद विवरण दिया गया है। उसके पढ़ने से पता चलता है कि सितम्बर से दिसम्बर १८५७ ई० तक देहली में अंग्रेजी सेना का राज्य था और लूट-मार की खुली स्वतन्त्रता थी। सम्भवतः देहली अपने पूरे इतिहास में इस बुरी तरह कभी न लूटी गई होगी। सभ्यता के नेताओं की बर्बरता प्राचीन तथा मध्यकालीन आक्रमणकारियों से भी बाजी ले गई। इसमें सन्देह नहीं कि अन्त में लारेंस ने देहली के बचाने का बड़ा प्रयत्न किया। जकाउल्लाह ने ठीक ही लिखा है कि 'यदि देहली को लारेंसाबाद कहा जाय तो उचित होगा'।[२]

बहादुरशाह का जिस प्रकार सम्भव होता अपमान किया जाता था। गोरों ने अपना दिल बहलाने के लिए किले के लाहौरी द्वार पर बहादुरशाह का एक चित्र बनाया था जिसके गले में फाँसी डाली थी। बादशाह के अपराध की जाँच के लिए एक सैनिक कमीशन नियुक्त हुआ। उसकी कारवाई २७ जनवरी १८५८ ई० से प्रारम्भ हुई। उस पर ब्रिटिश शासन के विरुद्ध विद्रोह तथा अंग्रेजों की हत्या का अपराध लगाया गया।[३] जकाउल्लाह देहलवी लिखते हैं कि "इस कमीशन का इजलास दीवाने खास में होता था जिसमें बहादुरशाह बन्दियों के समान आता था। वह कभी छोटे से पलंग पर बैठता और कभी लेटता। जहाँ उसने ४ मास तक राजपाट किया था वहाँ उसके अपराधों की गवाही देने के लिए कुछ चपरासी तथा चोबदार आते थे और उसे बन्दी कहकर

---

१. आर बास्वर्थ स्मिथ, **लाइफ आफ लार्ड लारेंस** पृ० २३८-२६६, मिसेज कूपर लैंड, **'ए लेडीज इस्केप फ्राम ग्वालियर'** पृ० २६९, **उरूजे अहदे सल्तनते इंग्लिशिया** पृ० ७०१-७३० ।

२. **उरूजे अहदे सल्तनते इंग्लिशिया** पृ० ७२९ ।

३. **ट्रायल** पृ० ८ ।

सम्बोधित करते थे।"[१] बहादुरशाह स्वयं तो कुछ ही दिनों का मेहमान था, उसे अपनी बचत की क्या चिन्ता होती किन्तु जिन लोगों के परामर्श से उसने जनरल बख्त खाँ के साथ जाना स्वीकार न किया था, और जिन लोगों ने उसे बहुत कुछ आशाएँ दिलाईं थीं उन्हीं के सिखाये हुए वाक्य उसने अपनी बचत में दुहराये किन्तु उसका बयान स्वीकार न किया गया। "वह अपने दो पुत्रों जवाँबख्त तथा अब्बासशाह और दो पत्नियों जीनतमहल तथा ताजमहल के साथ बर्मा को भेज दिया गया। ताजमहल कलकत्ते से लौट आई। जब बादशाह देहली से एक डोली में बैठकर गोरों के पहरे में भेजा गया तो मार्ग में उन लोगों के घरों में विलाप होता था जो उसके पूर्वजों की प्रदान की हुई भूमि से अब तक भोजन पाते थे। बहादुरशाह का ७ नवम्बर १८६२ ई० को ८९ वर्ष की अवस्था में निधन हो गया। अब बर्मा में उसकी कब्र का चिह्न भी नहीं किन्तु अब तक उसकी कविताएँ स्मरणीय हैं। भारतवर्ष में बहुत से स्थानों पर उसकी गजलें महफिलों में गाई जाती हैं। गदर की इन बातों की भी बहुत दिनों तक देहली में चर्चा होती रही कि जब हिन्दू उसके पास फरियाद लेकर जाते कि मुसलमान हमको सताते हैं तो वह मुसलमानों को आदेश देता कि तुम हिन्दुओं को मत सताओ। जैसे तुम मेरी एक आँख हो वैसे ही मेरी दूसरी आँख हिन्दू हैं।"[२]

१. तारीखे उरूजे अहदे सल्तनते इंग्लिशिया पृ० ७३१।

२. तारीखे उरूजे अहदे सल्तनते इंग्लिशिया पृ० ७३८।

संकेत-सूची

खदंगे ग़दर	*Two Native Narratives of the Mutiny in Delhi.*
ग्रीफिथ्स	*A Narrative of the Siege of Delhi with an Account of the Mutiny at Feerozepore in* 1857 by Griffiths, C. S.
ग्रीद्ड	*Letters written during the Siege of Delhi* by Greathed, H. H.
जीवनलाल	*Two Native Narratives of the Mutiny in Delhi.*
ट्राएल	*Trial of the King of Delhi.*
देहली	*Delhi*-1857 by Norman & Mrs. Keith Young.
नाइन्थ लान्सर	*With H. M. 9th Lancers during the Indian Mutiny* by Anson, H. S.
पार्लियामेंट्री पेपर्स	*Further Papers Relative to the Mutinies in the East Indies presented to both the Houses of Parliament by Command of Her Majesty*, 1857.
प्रेस लिस्ट	*Press List of Mutiny Papers* 1857 by Mitra, S. M.
फारेस्ट	*A History of the Indian Mutiny* by Forrest, G. W.
राबर्ट्‌स	*Forty one Years in India by Roberts of Kandhar.*
स्टेट पेपर्स	*Selection from the Letters, Despatches and other State Papers* by Forrest.
सिप्वाए वार इन इंडिया	*A History of the Sepoy War in India* by Kaye, J. W.
हुडसन	*Twelve years of a Soldier's Life in India.*
होप ग्रान्ट	*Incidents in the Sepoy War* 1857-58

परिशिष्ट क

देहली में अंग्रेजी सेना की स्थिति, सितम्बर २, १८५७

प्रभावशाली

यूरोपियन पल्टन	**समस्त श्रेणी**	**देशी पल्टन**	**समस्त श्रेणी**
तोपखाना ...	५४९	तोपखाना ...	६२५
मल्का की ६वीं ड्रागून रक्षक	१३४	सैंपर्स और माइनर्स ...	७५८
,, ,, ९वीं लेंसर्स ...	४०२	प्रथम पंजाब अश्वारोही	१४३
,, ,, ८वीं पदाती ...	१४३	द्वितीय ,, ,, ...	१०५
,, ,, ५२वीं लाइट इन्फैन्ट्री	५२९	५वीं ,, ,,	१२९
,, ,, ६०वीं राइफिल्स ...	२५२	गाइड अश्वारोही	२९१
,, ,, ६१वीं रेजीमेंट ...	४६८	हडसन हार्स	२७८
,, ,, ७५वीं रेजीमेंट ...	५०४	सिरमूर पल्टन	२१७
प्रथम फुसीलियर ...	४३७	कमायूँ पल्टन	३०७
द्वितीय फुसीलियर ...	४७८	गाइड पदाती	२७८
		चौथी सिक्ख पदाती	४१०
कुल यूरोपियन	३,८९६	प्रथम पंजाब पदाती	६५०
		द्वितीय ,, ,,	७०४
		कुल हिन्दुस्तानी	४,८९५

सब श्रेणी तथा शस्त्रों की प्रभावशाली सेना, ८,७९१

नोट :—इस संख्या में तोपों के लश्कर, तोपखाने के सईस, पंजाबी सैंपर्स तथा माइनर्स की नई कंपनियाँ, काफी बड़ी संख्या में पदाती टुकड़ियों के देशी रंगरूट, तथा कैप्टेन हडसन्स हार्स जिसका अधिक भाग बिना सिखाया हुआ था, सम्मिलित है।

सब श्रेणियों तथा शस्त्रों के घायल तथा रुग्ण

यूरोपियन १,२३० हिन्दुस्तानी १,१३४ योग २,३६४

एच० एन० नार्मन-लेफ्टिनेन्ट
सेना के असिस्टेंट ऐडजुटेन्ट-जनरल
पार्लियामेंट्री पेपर्स पृ० २५८

"पल्टन की संख्या तथा स्थान, जहाँ से उन्होंने विद्रोह किया और देहली पहुँचे"

रजब अली खाँ, प्रधान सेनापति के मीर मुंशी द्वारा तैयार किया गया, अगस्त १४, १८५७

संख्या	छावनी जहाँ से पल्टन ने विद्रोह किया	देहली पहुँचने की तिथि	अश्वारोही	पदाती	तोपखाना	विवरण
१	मेरठ	१८५७ मई ११	३ सेनाएँ, तृतीय रेजीमेंट अश्वारोही	२ रेजीमेंटें पदाती, ११वीं तथा २०वीं एन. आई. (हिन्दुस्तानी पदाती)	कुछ नहीं	
२	देहली	,, ११	कुछ नहीं	३ रेजीमेंटें पदाती, ३८वीं, ५४वीं तथा ७४वीं एन. आई.	६ तोपें, हार्स लाइट फील्ड-बैट्री	
३	झाँसी	जून १४	४०० सवार, चतुर्थ इर्रेगुलर अश्वारोही	१ रेजीमेंट पदाती, हरीयाना बटेलियन	कुछ नहीं	
४	मथुरा	,, ५	२०० सवार ,, ,, ,,	१ कम्पनी, ४४वीं एन. आई. १ कम्पनी ६७वीं एन. आई.	कुछ नहीं	
५	लखनऊ	,, २०	एक समय १०० तथा दूसरे समय ४०० सवार	एक समय ४५० तथा दूसरे समय १०० पदाती	कुछ नहीं	
६	नसीराबाद	,, १९	५०० सवार, मालवा तथा ग्वालियर पल्टन	२ रेजीमेंटें पदाती, १५वीं तथा ३०वीं एन. आई	६ तोपें हार्स आर्टीलरी	

संख्या	छावनी जहाँ से पल्टन ने विद्रोह किया	देहली पहुँचने की तिथि	अश्वारोही	पदाती	तोपखाना	विवरण
७	जलंधर	जून २२	२८०, षष्ठ लाइट इन्फैन्ट्री	३ रेजीमेंटें पदाती, तृतीय, ३६वीं तथा ६१वीं एन. आई.	१ तोप, हार्स आर्टीलरी राजा नाभा से ली गई	
८	फीरोजपुर	„ २४	कुछ नहीं	३०० पदाती निःशस्त्र, ४५वीं तथा ५७वीं एन. आई.	कुछ नहीं	
९	बरेली	जुलाई १	८ रेजीमेंटें इर्रेगुलर अश्वारोही	४ रेजीमेंटें पदाती, ७८वीं, २८वीं, २९वीं तथा ६८वीं	६ तोपें, हार्स लाइट फील्ड-बैट्री, तथा १ स्टेशन गन	३५ हाथी, ७०० बछेड़े बाबूगढ़ से; ४०० तख्तों से भरी गाड़ियाँ आदि, २ कोष-वाहक गाड़ियाँ, ऊँट, पालकियाँ, बग्घियाँ आदि।
१०	झाँसी	„ ६ और २५	१४वीं इर्रेगुलर अश्वारोही २५ जुलाई को पहुँचे	१ रेजीमेंट पदाती, १२वीं एन. आई. ६ जुलाई को पहुँचे	३ तोपें, बुलक लाइट फील्ड-बैट्री	२ हाथी
११	ग्वालियर	जून २	४०० सवार ग्वालियर पल्टन	कुछ नहीं	कुछ नहीं	
१२	नीमच	जुलाई ३१	१ रेजीमेंट बंगाल अश्वारोही	४ रेजीमेंटें पदाती, ७२वीं एन. आई., ५वीं तथा ७वीं ग्वालियर की पल्टन तथा कोटा की पल्टन	९ तोपें, आर्टीलरी, कोटा तथा ग्वालियर आर्टीलरी	५० हाथी

संख्या	छावनी जहाँ से पल्टन ने विद्रोह किया	देहली पहुँचने की तिथि	अश्वारोही	पदाती	तोपखाना	विवरण
१३	बनारस	अगस्त ६	२०० सवार, १३ इर्रेगुलर	३०० पदाती, लोधियाना की सिक्ख रेजीमेंट	कुछ नहीं	
१४	अलीगढ़	जून १२	कुछ नहीं	१ रेजीमेंट पदाती, ९वीं एन. आई.	कुछ नहीं	
१५	आगरा	,, १२	कुछ नहीं	२ रेजीमेंटें पदाती, नि:शस्त्र, ४४वीं तथा ६७वीं	कुछ नहीं	
१६	रोहतक	,, १४	कुछ नहीं	१ रेजीमेंट पदाती, ६०वीं एन. आई.	कुछ नहीं	
१७	झज्झर	मई १८	३०० सवार	कुछ नहीं	कुछ नहीं	
१८	बादशाह द्वारा भर्ती की हुई नई सेना की टुकड़ियाँ	जून १३	४०० सवार	१,६०० पदाती	कुछ नहीं	
१९	टोंक से गाजी अथवा जेहादी मुसलमान	अगस्त ६	३० सवार	१,४७० पदाती	कुछ नहीं	
२०	उमराव बहादुर, कामूना के दूंदे खाँ के पौत्र	,, ७	४० सवार	१,००० पदाती	कुछ नहीं	
२१	इलाहाबाद	जून २७	१०० सवार, १३वीं इर्रेगुलर	कुछ नहीं	कुछ नहीं	

कुल अश्वारोही	कुल पदाती	कुल तोपें	
रेगुलर अश्वारोही १ रेजीमेंट तथा ५२० आदमी	नेटिव इन्फैन्ट्री (हिन्दुस्तानी पदातियों की सेना) २४ रेजीमेंटें तथा १,३५० आदमी	हार्स लाइट फील्ड बैट्री २७ तोपें बुलक " " " ३ "	यह तालिका कुछ परिवर्तित की गई है ताकि अधिक से अधिक ठीक सूचना संकलित हो सके। विद्रोहियों की अनुमानित पूर्ण संख्या थी ४,००० अश्वारोही, तथा १२,००० पदाती। शेष १०० अश्वारोही तथा ३,००० पदाती अनुशासनहीन सैनिक थे, जिनका कोई भी महत्त्व नहीं। उनकी घटती बढ़ती संख्या का विवरण संभव नहीं किन्तु यह अनुमान ठीक है और इसमें कुछ अतिशयोक्ति ही है।
इर्रेगुलर्स २ " २,३०० "	विभिन्न ३,०७० "		
बिभिन्न — ७७० "	— ——	——	
योग ३ रेजीमेंटें तथा ३,५९० आदमी	योग २४ रेजीमेंटें तथा ४,४२० आदमी	योग ३० तोपें	

कमिश्नर्स आफिस, अम्बाला, अगस्त २८, १८५७ **पार्लियामेंट्री पेपर्स** पृ० २५५-२५६।

परिशिष्ट ख

वहाबी

यह आन्दोलन मुहम्मद बिन अब्दुल वह्हाब, अरब-निवासी (१७०३–१७८६ ई०) ने प्रारम्भ किया था। इस आन्दोलन का यह नाम यूरोपियनों ने रखा था। अरब में यह मुवह्हेदून के नाम से प्रसिद्ध है। इनका मत है कि ईश्वर के अतिरिक्त मुहम्मद साहब अथवा किसी अन्य इमाम, पैगम्बर आदि से सहायता माँगना एकेश्वर-वाद के सिद्धान्त के विरुद्ध है। केवल कुरान की शिक्षा पर आचरण करना चाहिये। अन्य बातें पाखंड हैं।

भारतवर्ष में सैयद अहमद साहब ने इस आन्दोलन को चलाया। उनका जन्म १७८६ ई० में राय बरेली जिले में हुआ था। उन्होंने अपनी शिक्षा का केन्द्र पटने में बनाया। १८२४ ई० में उन्होंने एक सेना लेकर पेशावर से पंजाब के सिक्खों के विरुद्ध जेहाद (धर्मयुद्ध) का आन्दोलन प्रारम्भ किया। १८३० ई० में सैयद अहमद ने पेशा-वर पर अधिकार जमा लिया, किन्तु १८३१ ई० में एक सिक्ख सेना ने इनकी हत्या कर दी। बाद में इनके अनुयायी भारतवर्ष में मुसलमानों के राज्य की पुनःस्थापना तथा अंग्रेजों से युद्ध के प्रचार में बड़ा उत्साह प्रदर्शित करने लगे। १८५७ ई० की क्रान्ति में भारतवर्ष की अन्य जनता के साथ इन लोगों ने भी बड़े उत्साह से भाग लिया। पटने की क्रान्ति में इनका बहुत बड़ा हाथ था। अन्य स्थानों पर भी इन लोगों ने बड़ी वीरता से युद्ध किया।

परिशिष्ट ग

ग्रन्थ-सूची

समकालीन समाचार-पत्र तथा पत्रिकाएँ

फारसी

१. **सिराजुल अखबार देहली** (नेशनल आरकाइव्ज देहली)

उर्दू

१. **तिलिस्मे लखनऊ**, लखनऊ (नेशनल आरकाइव्ज देहली)
२. **देहली उर्दू अखबार**, देहली (नेशनल आरकाइव्ज देहली)
३. **सादिकुल अखबार**, देहली (नेशनल आरकाइव्ज देहली)
४. **सिहरे सामरी**, लखनऊ (अलीगढ़ विश्वविद्यालय)

अंग्रेजी

१. **बंगाल हरकारु तथा इंडिया गजट**, कलकत्ता (नेशनल लाइब्रेरी कलकत्ता)
२. **हिन्दू पैट्रिअट**, कलकत्ता (नेशनल लाइब्रेरी कलकत्ता)
३. **इंगिलश मैन, कलकत्ता** (नेशनल लाइब्रेरी कलकत्ता)
४. **फ्रेन्ड आफ इंडिया**, सीरामपुर (नेशनल लाइब्रेरी कलकत्ता)
५. **हिन्दू इन्टेलिजेन्सर**, कलकत्ता (,, ,, ,,)

अंग्रेजी पत्रिकाएँ

१. **कलकत्ता रिव्यू**
२. **जर्नल आफ एशियाटिक सुसाइटी बंगाल**
३. **जर्नल आफ राएल एशियाटिक सुसाइटी ग्रेट ब्रिटेन तथा आयरलैंड**

बहादुरशाह के कार्यालय के कुछ मुख्य पत्र
(प्रेस लिस्ट आफ़ म्युटिनी पेपर्स)

३९—	किसी गुप्तचर की डायरी। ११ मई से १६ मई तक (उर्दू)
१८ नं० १	६ जुलाई, १८५७ ई०। मुल्लाओं की अंग्रेजों के विरुद्ध जेहाद की घोषणा (उर्दू)।
१११ (सी) नं० ३१	२८ जुलाई, १८५७ ई०। सेनापति का कोतवाल को आदेश। वह बादशाह के इस आदेश की घोषणा करा दे कि जो कोई गऊ-वध करेगा उसे मृत्युदंड-दिया जायगा। (उर्दू)
१११ (सी) नं० ३२	२८ जुलाई १८५७ ई०। कोतवाल का चाँदनी चौक के थानेदार को पत्र। सेनापति के इस आदेश की घोषणा कर दी जाय कि जो कोई ईदुज़्ज़ुहा में ग़ाय अथवा भैंस का वध करेगा उसे मृत्यु दंड दिया जायगा। (उर्दू)
१११ (सी) नं ४३	२९ जुलाई १८५७ ई०। बादशाह का कोतवाल को पत्र। कोई गाय का व्यापारी ७ जिलहिज्जा से १३ जिलहिज्जा तक नगर में प्रविष्ट न होने पाये और मुसलमानों की समस्त गायें लेकर कोतवाली में बँधवा ली जायँ। जो कोई गऊ-वध करेगा उसे मृत्यु-दंड दिया जायगा। (फारसी)
१११ (सी) नं० ४४	२९ जुलाई १८५७ ई०। सैयिद मुबारकशाह कोतवाल का बादशाह को पत्र। कोतवाली में इतना स्थान नहीं कि समस्त मुसलमानों की गायें वहाँ बाँधी जा सकें, अतः मुसलमानों से मुचलके और जमानतें ले ली जायँ तथा बादशाह का उत्तर। (उर्दू)
१११ (सी) नं० ४५	२९ जुलाई १८५७ ई०। सेनापति का कोतवाल को आदेश। गो-वध-निषेध सम्बन्धी आदेश का उल्लेख करते हुए नगर में गायों तथा भैंसों की खाल तथा चर्बी का लेखा तैयार करने के विषय में। (उर्दू)।

१२० नं० १४३	२९ जुलाई १८५७ ई०। सेनापति का कोतवाल को आदेश। ईदुज्जुहा के अवसर पर गो-वध-निषेध के सम्बन्ध में। (उर्दू)
५७ नं० ५३९–५४१	कोर्ट आफ म्युटिनियर्स का संविधान। (उर्दू)
५७ नं० ३५२	कोर्ट के सदस्यों की प्रार्थना कि शाहजादों को राज्य के कार्य में हस्तक्षेप की अनुमति न होनी चाहिये। (उर्दू)
५७ नं० ७०	१० जुलाई १८५७ ई०। सेनापति का पत्र, कोर्ट के सदस्यों के नाम, गोला-बारूद के सम्बन्ध में। (उर्दू)
५७ नं० ७०	८ सितम्बर १८५७ ई०। कोर्ट का बादशाह की ओर से अधिकारियों को पुरस्कार का आश्वासन। (उर्दू)
५७ नं० ४२९	९ सितम्बर १८५७ ई०। कोर्ट का बादशाह की ओर से अधिकारियों को पुरस्कार का आश्वासन। (उर्दू)
५७ नं० ४३१-३३	९ सितम्बर १८५७ ई०। कोर्ट का बादशाह की ओर से अधिकारियों को पुरस्कार का आश्वासन। (उर्दू)
५७ नं० ४३७	९ सितम्बर १८५७ ई०। कोर्ट का बादशाह की ओर से अधिकारियों को पुरस्कार का आश्वासन।
५७ नं० ४३९, ४४३-४४४, ४४५	९ सितम्बर १८५७ ई०। कोर्ट का बादशाह की ओर से अधिकारियों को पुरस्कार के आश्वासन से सम्बन्धित पत्र।
५७ नं० ४७०	१० सितम्बर १८५७ ई०। कोर्ट के अधिकारियों तथा अन्य लोगों को आदेश कि वे अंग्रेजों का विरोध करें।
५७ नं० ४८८	११ सितम्बर १८५७ ई०। कोर्ट द्वारा पुल के निर्माण की स्वीकृति।
५७ नं० ४८९	कोर्ट का कश्मीरी द्वार को दृढ़ करने से सम्बन्धित आदेश।
६० नं० ७७१	महाजनों की कोर्ट के विरुद्ध बादशाह से शिकायत।

५७ नं० २९२	९ सितम्बर १८५७ ई०। बादशाह का हकीम एहसनुल्लाह खाँ की मुक्ति के सम्बन्ध में आदेश।
६० नं० ५२५	९ सितम्बर १८५७ ई०। एहसनुल्लाह खाँ की मुक्ति के सम्बन्ध में।
१६ नं० २०	७ सितम्बर १८५७ ई०। बादशाह का देहली के हिन्दुओं तथा मुसलमानों को अंग्रेजों से युद्ध करने का आदेश।
१११ (ई) नं० १७३	१३ सितम्बर १८५७ ई०। हिन्दुओं तथा मुसलमानों से धर्म के नाम पर अंग्रेजों से युद्ध करने का आग्रह।
९४ नं० १	बादशाह का सेना के नाम आदेश।
९४ नं० ३	सैनिकों की शिकायतें।
९४ नं० ६ अ	सैनिकों की शिकायतें।
१०३ नं० २१२	सैनिकों के लिए स्वेच्छा से अपना घर देना।

अरबी

सौरतुल हिन्दिया

मौलाना फजलेहक खैराबादी

मौलाना फजलेहक खैराबादी का जन्म १७९७ ई० में हुआ था। वे अपने समय के बहुत बड़े विद्वान् थे। उनके शिष्य बहुत बड़ी संख्या में भारतवर्ष में फैले हुए थे। मौलाना अबुल कलाम आजाद के पिता भी मौलाना फजलेहक खैराबादी के शिष्य थे। बहादुरशाह के दरबार में इनका बड़ा सम्मान किया जाता था और इन्हें बड़ा अधिकार प्राप्त था। क्रान्ति में भाग लेने के अपराध में इन्हें भी काले पानी का दंड भोगना पड़ा और वहीं इनकी मृत्यु हुई। **सौरतुल हिन्दिया** में देहली तथा लखनऊ की क्रान्ति का संक्षिप्त विवरण है। क्रान्ति के कारणों पर भी प्रकाश डाला गया है। अंग्रेजों के अत्याचार की भी चर्चा की गई है। वे जीनतमहल तथा हकीम एह-सनुल्लाह दोनों को विश्वासघाती समझते थे। इन लोगों का बहादुरशाह पर जो प्रभाव था, उसके ये विरोधी थे। इस पुस्तक की रचना मौलाना ने अंडमान में की थी। कहा जाता है कि मौलाना फजलेहक ने यह पुस्तक अपने पुत्र मौलाना अब्दुलहक खैराबादी के पास विभिन्न कागज के टुकड़ों तथा कपड़ों पर कोयले आदि से लिखकर भेजी थी। मौलाना अब्दुलहक ने इसका संकलन तैयार किया और इसकी पांडुलिपि कुछ विशेष लोगों को दे दी। कुछ पुस्तकालयों में इसकी पांडुलिपियाँ मिल जाती हैं। मौलाना अब्दुलहक ने इसकी एक प्रतिलिपि मौलाना अबुल कलाम आज़ाद के पिता के पास भी मक्के में भेजी थी।

मौलाना अब्दुश्शाहिद खाँ शिर्वानी ने मूल पुस्तक तथा इसका उर्दू अनुवाद भूमिका सहित बिजनौर से १९४७ ई० में प्रकाशित कराया और मौलाना अबुल कलाम आजाद ने २१ अगस्त १९४६ ई० को इसका प्राक्कथन लिखा। मौलाना अबुल कलाम ने उर्दू अनुवाद को संतोषजनक बताया है।

फारसी

समकालीन

ग़ालिब, असदुल्लाह खाँ **दस्तम्बो** (बरेली १८७१)

समें क्रान्ति के कष्टों तथा अंग्रेजों के अत्याचार का संक्षिप्त विवरण है।

गालिब उर्दू के प्रसिद्ध कवि थे। समय पर वे प्रत्येक दरबार में पहुँच जाते थे। क्रान्ति के समय बहादुरशाह के दरबार में भी उपस्थित रहते थे। क्रान्ति के उपरांत अपने अंग्रेज मित्रों की सहायता से अंग्रेजी सेना के अत्याचार से मुक्ति प्राप्त करने में सफल हुए। अन्त में रामपुर दरबार में भी सलाम करने जाने लगे। वे बड़े अपव्ययी थे, अतः धन जहाँ से भी मिल जाता वहीं से प्राप्त कर लेते थे। उनके पत्रों में भी कहीं कहीं क्रान्ति का उल्लेख है। **दस्तम्बो** तथा इन पत्रों के आवश्यक उद्धरणों का संकलन, हसन निजामी की पुस्तक **गालिब के रोजनाम्चे** में प्राप्य है।

उर्दू

समकालीन

अब्दुस्सत्तार

तरजुमये वाकेआते अज़फ़री (मद्रास १९३७ ई०)

वाकेआते अज़फ़री मिर्जा अली बख्त बहादुर मिर्जा जहीरुदीन अज़फ़री गुरगानी ने फारसी में लिखी थी। यह उसी पुस्तक का अनुवाद है। इस पुस्तक से देहली के किले के समकालीन जीवन पर बड़ा अच्छा प्रकाश पड़ता है।

कौकब देहलवी, तफ़ज़्ज़ुल हुसेन खाँ

फ़ुगाने देहली (लाहौर १९५४)

इस पुस्तक में देहली की तबाही के विषय में समकालीन उर्दू कवियों की कविताएँ हैं जिनमें से कुछ बड़ी मार्मिक हैं। यह संग्रह सर्वप्रथम देहली से १८६३ में प्रकाशित हुआ था।

गालिब, असदुल्लाह खाँ

उर्दूये मुअल्ला (आगरा १९१४)
ऊदे हिन्दी (लखनऊ १९१३)
खुतूते गालिब (गुलाम रसूल मेहर संस्करण लाहौर)
नादिराते गालिब (कराँची १९४९)
मकातीबे गालिब (रामपुर)

जकाउल्लाह देहलवी

तारीखे उरूजे अहदे सल्तनते इंग्लिशिया हिन्द (देहली १९०४)

यह पुस्तक प्रधानतः "के" की "सिप्वाए वार आफ इंडिया" पर आधारित है। देहली तथा किले के विषय में अधिकांश, जीवनलाल तथा मुइनुद्दीन हसन खाँ की डायरी के आधार पर लिखा है। कहीं कहीं लेखक ने

अपनी जानकारी के आधार पर भी थोड़ा-बहुत लिखा है और यही अंश इस पुस्तक के बहुमूल्य भाग हैं। यदि वे चाहते तो देहली के विषय में जो कुछ उन्होंने स्वयं देखा था उसके आधार पर बहुत कुछ लिख सकते थे किन्तु ब्रिटिश शासन-काल में यह सम्भव न था। इसके अतिरिक्त वे सर सैयद अहमद खाँ के दृष्टिकोण के समर्थक थे अतः उन्होंने भी यह सिद्ध करने का प्रयत्न किया है कि साधारण मुसलमान जनता का इस क्रान्ति से कोई सम्बन्ध न था।

जहीर देहलवी, सैयद जहीरुद्दीन हुसेन

दास्ताने गदर (लाहौर)

सैयद जहीरुद्दीन हुसेन, जहीर देहलवी, बहादुरशाह का बहुत बड़ा विश्वासपात्र था। देहली की पराजय के उपरान्त वह भी देहली छोड़ कर भाग गया और विभिन्न दरबारों में सेवाएँ करता रहा। देहली की क्रान्ति का उसने अपनी पुस्तक में बड़ा विशद विवरण दिया है। सम्भवतः वह भी हकीम एहसनुल्लाह खाँ तथा दरबार के अन्य षड्यंत्रकारियों की टोली में सम्मिलित था। उसकी पुस्तक से पता चलता है कि उसे क्रान्तिकारियों से सहानुभूति न थी। इसका यह भी कारण हो सकता है कि यह पुस्तक भी ब्रिटिश शासन-काल में लिखी गई। जकाउल्लाह के समान जहीर देहलवी को उन पुस्तकों का सम्भवतः ज्ञान न था जो अंग्रेजों ने इस विषय पर लिखी थीं। इस प्रकार यह पुस्तक अपनी श्रेणी की अन्य पुस्तकों से भिन्न है। क्रान्ति के विषय में इस पुस्तक द्वारा बहुत कुछ प्रामाणिक ज्ञान प्राप्त होता है। क्रान्ति के दमन तथा अंग्रेजों के अत्याचार का भी इस पुस्तक में मार्मिक विवरण प्राप्य है।

मुईनुद्दीन हसन खाँ तथा जीवनलाल

दोनों अंग्रेजों के गुप्तचर थे और क्रान्तिकारियों के समक्ष उनके हितैषी बनते थे। दोनों ने अपनी

डायरी चार्ल्स थ्योफिलस मेटकाफ़ को दे दी थी। सम्भवतः यह डायरियाँ उर्दू में थीं। इनका अनुवाद अंग्रेजी में चार्ल्स थ्योफ़िलस मेटकाफ ने **"टू नेटिव नैरेटिव्ज आफ़ दी म्युटिनी इन डेलही"** के नाम से प्रकाशित किया। हसन निजामी ने थ्योफिलेस मेटकाफ की पुस्तक का उर्दू अनुवाद **"गदर की सुबह व शाम"** के नाम से प्रकाशित किया। मूल पुस्तक अब अप्राप्य है।

सर सैयद अहमद खाँ **सरकशीये जिला बिजनौर** (आगरा १८५८)
अस्बाबे बगावते हिन्द (आगरा १९०३)

सर सैयद अहमद खाँ क्रान्ति के समय बिजनौर में सदर अमीन थे। उन्होंने उस समय अंग्रेजों की रक्षा का बड़ा प्रयत्न किया और बिजनौर की क्रान्ति के दमन में अंग्रेजों का बड़ा हाथ बटाया। **सरकशीये जिला बिजनौर** में बिजनौर की क्रान्ति का उल्लेख है। क्रान्ति के विस्फोट के उपरान्त ही अंग्रेजों ने इस बात को सिद्ध करने का विशेष प्रयत्न प्रारम्भ कर दिया था कि यह मुसलमानों का विद्रोह है। १८५७ ई० में ही डब्लू. एच. केरी ने **मुह-मेडन रेबेलियन** की रचना की जो रुड़की से प्रकाशित हुई। सम्भवतः सर सैयिद ने इस पुस्तक का विशेष अध्ययन किया था। अलीगढ़ विश्वविद्यालय में ९५४.४०८३ सी, १९ एम नं० की इस पुस्तक पर पुस्तक का नाम सर सैयद के हाथ का लिखा हुआ है तथा उनकी मुहर है।

बहादुरशाह के मुकदमें में इस क्रान्ति को मुसलमानों का विद्रोह विशेष रूप से सिद्ध किया गया। बारकपुर तथा बरहामपुर की क्रान्ति में हिन्दुओं को विद्रोही सिद्ध किया गया था। तत्पश्चात् मुसलमान विद्रोही सिद्ध किये जाने लगे। सर सैयिद अहमद खाँ ने इस प्रचार के विरुद्ध मुसलमानों की ओर से मोर्चा लिया। क्रान्ति

के उपरांत जिस प्रकार मुसलमानों का दमन किया जा रहा था, उसे देखकर तथा ब्रिटिश सत्ता को भारतवर्ष में चिरस्थायी समझकर मुसलमानों की रक्षा का उनके निकट इसके अतिरिक्त कोई अन्य उपाय न था कि वे मुसलमानों को ब्रिटिश शासन का भक्त सिद्ध करें। **'अस्बाबे बगावते हिन्द'** सर सैयिद ने इसी उद्देश्य से लिखी। उन्होंने अन्य लेखों द्वारा भी मुसलमानों को अंग्रेजी शासन का भक्त सिद्ध किया। मुसलमानों को पूर्ण रूप से कुचल देने के उपरान्त जब हिन्दुओं की बारी आयी तो चार्ल्स थ्योफिलस मेटकाफ़ ने **"टू नेटिव नैरेटिव्ज आफ़ म्युटिनी इन डेलही"** की भूमिका में लिखा "प्रचलित विचार यही है कि मुसलमानों ने इसे भड़काया और हिन्दुओं को साथ देने का प्रलोभन प्रदान किया, किन्तु मुसलमान षड्यंत्र रचने में बड़े खराब होते हैं। उनके तरीके बड़े भद्दे होते हैं। वे अतिशीघ्र हिंसा पर उद्यत हो जाते हैं। क्रान्ति को सफल बनाने में जिन बातों की आवश्यकता होती हैं उनमें से बहुत-सी आवश्यक बातें उनमें नहीं पाई जातीं। इसके विपरीत हिन्दुओं में षड्यंत्र रचने की विशेष योग्यता होती है। उनमें सहनशीलता होती है। वे परिणाम को पहले से देख लेते हैं। अवसर तथा शस्त्र को सावधानी से जाँचने, समय को चुनने तथा स्थिति से लाभ उठाने की उनमें योग्यता होती है। वे अपने लक्ष्य को कभी नहीं भूलते। भाग्य के प्रत्येक पाँसे से वे लाभ उठा लेते हैं। षड्यंत्र के ये बहुमूल्य गुण हैं जो उनमें नहीं पाये जाते।" इससे पता चलता है कि ब्रिटिश शासन-काल में किस प्रकार समय-समय पर कभी हिन्दुओं की तो कभी मुसलमानों की पीठ ठोंकी जाती थी और पारस्परिक शत्रुता तथा द्वेष में वृद्धि के साधन एकत्र किये जाते थे।

उर्दू

बाद के, किन्तु समकालीन अंग्रेजी ग्रन्थों के अनुवाद अथवा समकालीन सूचना के आधार पर।

कन्हैया लाल	तारीखे बगावते हिन्द	(लखनऊ १९१६)
नजीर अहमद	मसायबे गदर	(लखनऊ १८९३)
नासिर नजीर फिराक	लाल किले की एक झलक	(दिल्ली १९३२)
राशिदुल खैरी	गदर की मारी शाहजादियाँ	
	दिल्ली की आखरी बहार	
हसन निजामी	गदर की सुबह व शाम	(देहली १९२६)
	गदर देहली के अखबार	(देहली १९२३)
	गालिब का रोजनामचा	(देहली)
	गिरफ्तारशुदा खुतूत	(देहली १९२३)
	देहली की आखरी साँस	(देहली १९२५)
	देहली की जाँ कनी	(देहली १९२५)
	बहादुरशाह का मुकदमा	(देहली ५वाँ संस्करण)
	बहादुरशाह का रोजनामचा	(देहली १९३५)
	बेगमात के आँसू	(देहली)
	बेचारे अंग्रेजों की बिपता	(देहली)
	मुहासरये देहली के खुतूत	(देहली १९२५)
हैरत देहलवी	चिरागे देहली	

हिन्दी

नागर, अमृतलाल	आँखों देखा गदर (लखनऊ १९५७) विष्णु भट्ट गोडशे वरसईकर की मराठी पुस्तक "**माँझा प्रवास**" का हिन्दी अनुवाद।
सुन्दरलाल	भारत में अंग्रेजी राज्य (इलाहाबाद १९३८)

ENGLISH WORKS.

Alexander Duff. *The Indian Rebellion, Its Causes and Results, in a series of letters.* (London)

Anon. *History of the siege of Delhi by an Officer who served there.*

Anson, H. S. *With H.M. 9th Lancers During the Indian Mutiny.* (The letters of Brevet Major O.H.S. G. Anson) (London 1896)

Argyll, Duke of *India Under Dalhousie and Canning.* (London 1865)

Arnold, Edwin. *The Marquis of Dalhousie's Administration of British India.*

Ball, Charles. *The History of the Indian Mutiny.* 2 Vols. (London and New York)

Basu, B.D. *The Consolidation of the Christian Power in India.* (Calcutta 1927)

Bell. *Retrospects and Prospects of Indian Policy.*

Bonham, John *Oude in* 1857, Some Memories of the Indian Mutiny. (London)

Bourchier, G. *Eight Months Campaign.* (London 1858)

Browne, J.C. *The Punjab and Delhi in* 1857. (London 1861)

Buckle, G.E. *The Life of Benjamen Disraeli.* Vol. IV. (London 1916)

Campbell, G. *Memories of My Indian Career,*
Tenure of land in India.

Carey, W.H. *The Mahomedan Rebellion ; its Premonetory symptoms, the Outbreak and Suppression.* (Roorkee 1857)

Cooper, Frederic *The Crisis in the Punjab from the 10th of May until the Fall of Delhi.* (London 1858)

Coopland, Mrs. A Lady's Escape from Gwalior.

Dunlop, R.H.W. *Service and Adventure with the Khakee Ressallah.* (London 1858)

Dutt, Romesh. *The Economic History of India in the Victorian Age.* (London 1950)

Edwards, William. *Personal Adventures During the Indian Rebellion.* (London 1859)

Fitchett, W.H. *The Tale of the Great Mutiny.* (London 1901)

Forgett *Real Danger in India.*

Forrest, G.W. *A History of the Indian Mutiny.* (London 1904)
Selections from the Letters Despatches and other State Papers, preserved in the Military Department of the Government of India. (1857-58) (London 1893)

Grand, J.L. *Western India.* (London 1857)

Grant, Hope *Incidents in the Sepoy War* 1857-58. (London 1873)

Greathed, H.H. *Letters written During the siege of Delhi* (London 1858)

Griffiths, C.J. *A Narrative of the siege of Delhi with an Account of the Mutiny at Ferozepore in* 1857. (London 1910)

Gubbins, Martin Richard. *An Account of the Mutinies in Oudh and the siege of Lucknow.* (London 1858)

Hall, D.G.E. *The Dalhousie-Phayre Correspondence* 1852-1856. (London 1932)

Hansard. *Parliamentary Debates* (Relevant volumes)

Hodson, G.H. *Twelve years of a soldier's life in India being extracts from the letters of the late Major W.S.R. Hodson B.A.*

Holloway, John *Essays on the Indian Mutiny*. (London)

Holmes, J.R. *History of the Indian Mutiny*. (London 1904)

Hutchinson, G. *Narrative of the Mutinies in Oude*. (London)

Innes, Mcleod *Lucknow and Oude in the Mutiny*. (London 1895)

Irving Graham, G. F. *Article in the Edinburgh Review for April* 1868 *on Lord Cannings Administration in India and part of a minute By Sir John Lawrence on the Trial of the King of Delhi*. (Ghazeepore 1863)

Joyace Michael. *Ordeal at Lucknow*, The Defence of the Residency. (London)

Kaye, J.W. *Memorials of Indian Government*, Being a selection from the papers of Henry St. George Tucker. (London 1853)

A History of the sepoy War in India 1857-1858. (London 1870-1876)

Leasor, James *The Red Fort*, An account of the siege of Delhi in 1857. (London 1956)

Lucky, Edwards. *Fiction connected with the Indian Outbreak of* 1857 *exposed*.

Mackenzie, A.R.D. *Mutiny Memoirs being personal Reminesences of the Great Sepoy Revolt of* 1857. (Allahabad 1891)

Malleson. *Kayes and Malleson's History of the Indian Mutiny* of 1857-58. (London 1889)

Red Pamphlet or *The Mutiny of the Bengal Army*. (London 1857)

The Indian Mutiny of 1857. (London 1894)

Mande, F.C. *Memories of the Mutiny with the Personal Narrative Of John Walter Sherer*. (London 1894)

Mariam, J.F. *A Story of the Indian Mutiny of* 1857. (Benares 1896)

Marshman, J.C. *Memoirs of Major General Sir Henry Havelock*. (London 1860)

Martin, W. *Why is the English Rule Odious to the Natives of India.*

Mead, H. *The Sepoy Revolt, Its Causes and Its Consequences* (London 1857).

Meedley, J.G. *A year's Campaigning in India from March* 1857 *to March* 1858 (London 1858)

Mitra, J. M. *Press List of Mutiny Papers* 1857 (Calcutta 1921)

Muir, W. *Records of the Intelligence Department of the Government of the N.W.P. of India During the Mutiny of* 1857.

Mutter, Mrs. *My Recollections of the Sepoy Revolt* (1857-58) (London)

Norman (H.W.) and Mrs. Keith Young. *Delhi*—1857. The Siege Assault and Capture as Given in the Diary and Correspondence of the late Colonel Keith young, C.B. Judge Advocate General Bengal. (Edinburgh 1902)

Oliver, J. Jones *Recollection of a Winter Campaign in India* 1857-1858. (London 1859)

Palme Dutt, R. *India To-Day.* (Bombay 1949)

Peile, Mrs Fany *The Delhi Massacre,* A Narrative of a Lady (Calcutta 1870)

Privately, H.Y. *Life and services of Major General W.H. Greathed.* (London 1879)

Raikes, C. *Notes on the Revolt in the N. W. P. of India.* (London 1858)

Roberts of Kandahar. *Forty One Years in India* (London 1898)

Robertson, H.D. *District Duties During the Revolt* in the *N.W.P. of India with Remarks on the subsequent Investigations during* 1858-59 (London 1859)

Rotton, J.F.W. *Chaplain's Narrative of the Siege of Delhi.* (London 1858)

Russel, W.H. *My Diary in India.* (London 1860)

Savarker *The Indian War of Independence,* 1857. (Phoenix Publication Bombay)

Sedgwick, F.R. *The Indian Mutiny* 1857. (London 1908)

Sewell, R. *The Analytical History of India from the Earliest Times to the Abolition of the Honourable East India Company in* 1858. (London 1870)

Sherer, J.W. *Daily life During the Indian Mutiny—Personal Experiences Of* 1857. (London 1910)

Sieveking, I.G. *A Turning point in the Indian Mutiny* (London 1910)

Sleeman, W.H. *A Journey through the Kingdom of Oude* 1849-1850. (London 1858)

Smith, George *The Life of Alexander Duff.* (London 1879)

Smith, R. Bosworth *Life of Lord Lawrence (Smith Elder, & Co.,*1883)

Strong, Herbert *Duty and Danger in India.* (London)
Stories of the Indian Mutiny. (London)

Temple, Richard *Lord Lawrence.* (London 1889) *Men and Events of My Time in India* (London 1882)

Thackey,Edward *Reminiscence of the Indian Mutiny and Afghanistan* (London 1916) *Two Indian Campaigns in* 1857-58.

Thompson, E. *The Other Side of the Medal.* (London 1926)

Thompson, M. *The Story of Cawnpore.* (London 1859)

Trevelyan, G. *Cawnpore.* (London 1894)

Vibart, H.M. *Richard Baird Smith,* The Leader of the Delhi Heroes in 1857, Private Correspondence of the Commanding Engineer during the siege and other interesting letters. (West Minister 1897)

Warner, D.L. *The Life of the Marquis of Dalhousie* (London 1904)

White *Complete History of the Great Sepoy War.*

Wilberforce, R.G. *An Unrecorded chapter of the Mutiny being* the personal reminiscences compiled from a diary and letters written on the spot. (London 1894)

Wood, E. *The Revolt in Hindustan.* (London 1908)

× × × ×

Government Gazette N.W.P. 1856-1857-1858.

History of the Indian Revolt and of the Expeditions to Persia, China and Japan. (London 1859)

Official Reports of the Districts of N. W. P.

Parliamentary Papers (Mutinies in the East Indies) several Volumes.

Trial of the King of Delhi.

— २ —

[illegible]

सेनापति का कोतवाल को गोवध-निषेध के सम्बन्ध में पत्र

७

حضرت جہاں پناہ سلامت

[illegible]

कोतवाल का बादशाह के नाम गोवध-निषेध के सम्बन्ध में पत्र

कोतवाल का थानेदारों के नाम पत्र मुसलमानों से मुचलके के सम्बन्ध में

خلق خدا کی ملک بادشاہ کا حکم فوج کے

بڑے سردار کا جو کوئی اس موسم بقرا عید مین

یا اسکی آگے پیچھے گائے یا بیل یا بچھڑا یا بچھڑی

یا بھینس یا بھینسا لوکا یا چھپا کر اپنے گھر مین

ذبح کرے گا اور قربانی کریگا تو وہ آدمی حضور جہان پناہ کا

دشمن تصور کیا جاویگا اور اسکو موت کی سزا ہوگی

اور جو کوئی کسی پر اس بات کا اتہام اور بہتان کریگا تو اس بات کی

تحقیقات ہوگی اور اس مین جسکا جرم اور قصور

ثابت ہوگا وہ بے شک توپ سے باندھ کر اڑوا دیا جاویگا

یعنی اگر تہمت کا جرم [illegible] تو اسکو سزا [illegible] نہیں جسکی اوپر تہمت لگائی [illegible] اسکو سزا دی جاوے گا

गोवध-निषेध सम्बन्धी घोषणा

गोवध-निषेध सम्बन्धी घोषणापत्र

गोवध-निषेध सम्बन्धी आदेश

حضرت جهان پناه سلامت

[illegible]

कोर्ट के अधिकारियों का प्रार्थना-पत्र शाहज़ादों के हस्तक्षेप के विरोध में

बादशाह का सैनिकों को आदेश

हिन्दू तथा मुसलमानों से स्वाधीनता की रक्षा-हेतु अपील
(१३-९-१८५७)

[illegible]

एक जासूस की डायरी पृ० १ अ (११ मई १८५७)

एक जासूस की डायरी पृ० १ ब (११ मई से १८ मई तक)

[illegible]

एक जासूस की डायरी पृ० २ अ (११ मई १८५७)

[illegible]

एक जासूस की डायरी पृ० २ ब (१२ मई १८५७)

[illegible]

एक जासूस की डायरी पृ० ३ ब (१४ मई १८५७)

[illegible]

एक जासूस की डायरी पृ० ४ अ (१५ मई १८५७)

[illegible]

एक जासूस की डायरी पृ० ५ ब (१७ मई १८५७)

طلسم لکھنؤ

عنوانِ صحیفہ حمدِ حق ہے | زیبائشِ اوّل ورق ہے | پھر نعت ہے سید البشر کے | جسنے مجھے ہین خبر کے

نمبر ۲۶ | ۱۹ شہر جمادی الاول ۱۲۷۳ سنہ ہجری مطابق ۱۶ ماہ جنوری ۱۸۵۷ عیسوی از روز جمعہ | جلد ۱

اشتہار

اس اخبار کی طبع کا ہر جمعی کو دستور ہی ✦ اور خبر کی تصحیح کا التزام تا مقدور ہی ✦ مدح و ذم کا اندازہ نہین رکہا ✦ بات سچ لکھنی سے قلم کو باز نہین رکہا ✦ یہ قیمت ماہواری ہی ✦ پیشگی ہی ✦ جو لوگ بعد سال تمام عنایت فرمائین ✦ رسم مرحمت فرمائین ✦ اگر مطبع محمدی مین خاکسار محمد یعقوب کی پاس زر مرقوم آئیگا ✦ انشاء اللہ تعالی بروز جمعہ صحیفۂ اخبار خدمت مین بہیجا جائیگا ✦ اگر درمیان مین موقوف کرنا منظور ہو ✦ دوسری پرچی کی روانگی سی پہلی رقم کر بہیجئے ✦ ورنہ حسبِ دستور اخبار جاری رہیگا ✦ اور زرِ قیمت دینا پڑیگا ✦

قطعہ تاریخ آغاز

جلوہ فرما ہوا جو یہ اخبار | ...
مصرعِ تاریخِ آغازش عنایت نوشتم | گوہر معنی نمایان از طلسم لکھنؤ است
۱۲۷۳

لکھنؤ

لکھنؤ مین سنیچر آیا ہی ✦ چورون نی ہنگامہ مچایا ہی ✦ جو ہاتھ لگی جاتا ہی ✦ انکہ جسکی بگڑی غائب ہی ✦ شعر میر صاحب ... تمام لو دستار ✦ کوئی بیچاری سید خلیل احمد نام تہا جن ... انکا اعزاز و اکرام تہا ✦ ملازم بادشاہ تہی ✦ تنخواہ تہی ✦ جب سے سلطنت نہ رہی ✦ شہر بگڑا چور ... کسی مین حالت نہ رہی ✦ مدار ایک نوکر قدیم تہا سب کاموں کا اور سپردار و مدار تہا ✦ مدت کا نمکخوار تہا ✦ باوجودیکہ دروازی پر تہانا تہا ✦ لیکن قسمت کی گردش سی انکا ال چوری جاتا تہا ✦ ایکدن وہ کتی چور حرام خور اپنی ساتھ لایا ✦ جو کچھ بچنی سی باقی تہا وہ سب اوٹھایا ✦ کچھ پشمینہ کپڑی سب کتابین ایک گٹھری بہت خوب تہی ہر ساعت ... بقول مشہور نوکر قدیم تہا گھر مین چلا گیا ✦ سب کچھ لی گیا ✦ ... رسم ہی کہ ... کہتا ہی کہ یہ شقاوت شب کا ... ہر کیف ... آبرو کی خوف سی وہ مال ... جان پر بن گئی

اور صاحبزادی کو سلطنت دی جاوی تو زیبا ہی : اور انگریزی اخبار سے
واضح ہوا : کہ مرزا ولیعہد بہادر کا سرکار کمپنی پر قرضہ وغیرہ کی بابت نالش
کرنیکا ارادہ ہی : جام جہان نما و صبح صادق سے

فیض آباد

فیض آباد سی ایک آشنای ہمدم کا خط آیا : یہہ حال مفصل لکھا پایا : کہ ایک
شخص مسلمان میس زادگان ملک دکن سی سات آٹھہ آدمی ہمراہ لیکی سرای
فیض آباد مین مقیم تہی : اُنکو فقیر قرار دیکی انگریزون سی مستعد جہاد بیخوف
تہی : ہر گلی کوچی مین مع ہمراہیان خاص ہتہیار باندہی پہرتی تہی : اکثر
مردمان پولیس یہہ حال دیکہہ کی براہ تعرض کہتی تہی : رفتہ رفتہ خبر ہوئی
کہ بلوی کا ارادہ رکہتی ہین : ہمراہیون کو ہر وقت آمادہ رکہتی ہین : سپاہیان
سرکار نی تاکید و ہشیار کی : ہتہیار لے لینی مین تکرار کی کہا کہ یا سب سلاح دیدو
یا اسیوقت اپنا رستہ لو : جواب دیا کہ ہم نہ ہتہیار دینگی : نہ کسی سی
جہگڑا فساد مول لینگی : الغرض کوتوال صاحب اور تہرن برن صاحب
کمشنر نی سنا : استفسار حال کیلیئی طلب کیا : اُنکو انکار ہوا : تقاضا مین
اصرار ہوا : آخر صاحب موصوف خود تشریف فرما ہوئی : بہت فہمایش
کی مگر وہ ایک نہ شنوا ہوئی : ناچار ایک کمپنی پلٹن کی حفاظت کا کام کیا :
ریورٹ اس مضمون کا بمقام ہیڈ ریسٹ کہ فیض آباد سی پانچ کوس ہی ڈپٹی
کمشنر بہادر کی نام کیا : صاحب بہادر یہہ حال سنتی ہی سوار ہوئی : مقام
واردات پر وہ عالی وقار ہوئی : ہنگام طلوع آفتاب جمیع صاحبان والا
جناب رونق افزا ہوئی : حاکمانہ تاکید ناصحانہ سمجہایا مگر وہ کج فہم بر سر آتش ذرا
ہوئی : حاکم سی مقابلہ آسان جانا : اس شعر کا مضمون نہ پہچانا : ؎ ہر کہ
با فولاد بازو پنجہ کرد : ساعد سیمین خود را رنجہ کرد : افسر پلٹن نی سرای مین
جیسی قدم بڑہایا : شاہ صاحب کی طرف سی ایسی ایک تلوار استقبال کو
کی افسر کا ہاتہ چہوٹتا ہوا زخم کاری کہایا : ڈپٹی کمشنر بہادر نی حکم دیا کہ تلنگا
ایک ایک کو جانی نہ دینا : پلٹن کی تلنگی مسلح تہی : اوس دم چار آدمی گولیون کی

ضرب سی بیجان گئی : اور شاہ صاحب مع چار آدمی زخمی ہوئی : گرفتار
پنجۂ بلا و رنجی ہوئی : اوسوقت ظاہر کیا کہ اہل ہنود اور مسلمانون کی موافقت
سی انگریزون کی ساتہہ مستعد جہاد تہی : صرف یہی فساد تہی : لیکن جب
اسباب کی تلاشی ہوئی بہت سی اہل اسلام کی خطوط بمضمون شراکت نظر آئی :
ایک خط بہی کسی ہندو کا نہ نکلا ناحق اونکی نام تباہی : سچ ہی کہ جب انسان
خاکی بنیان پر آفت آتی ہی : سب فہم و فراست گم ہو جاتی ہی : کیفیت
راست براست بی کم و کاست کہہ سنائی : اور صحائف اخبار سی یہہ خبر پائی :
کہ یہہ وہی شاہ صاحب ہین جنہون نی گہسیاری منڈی مین مانکا جہی سی جال
پہیلایا تہا : کوتوال صاحب نی بانی فساد سمجہ کی زجر و توبیخ اوٹہوایا تہا : اب
وہان جاکی شور و شر مچایا : آخر یہہ نتیجہ پایا : کہ قیدیون کی سلسلی مین گرہی
تہی : ساری مشیخت جاتی رہی : پہلی یہان خوب دعوت ہوئی : پہر وہان
بہی سزای بغض و عداوت ہوئی : بہلا بُری کامون مین بہلائی کہان :
خرقۂ فریب و مکر مین پارسائی کہان : سچ ہی جنکی مزاجون مین جہالت
ہوتی ہی : انجام کار اونکو افعال زشت سی ندامت ہوتی ہی : سابق میر علی
امیر علی نی بہی جہاد کی نیت کی تہی : باوجود ممانعت شاہ ملایک سپاہ مردم
کثیر کی جمعیت کی تہی : آخر وہی ہوا کہ میان ساہ تباہ ہوئی : مفت جان سی
گئی : جب مقابل سپاہ ہوئی : لوگ بادشاہ عالیجاہ کو بدنام کرتی تہی :
کہ اپنی شر کو باز رکہین آپنا بندوبست ہنوز ناحق الزام دہرتی تہی : بہلا وہ
تو از خود حامی کثیر تہا : مستعد جنگ صغیر و کبیر تہا : یہہ شاہ صاحب تو اکیلی تہی : صرف
پانچ سات آدمیون کی ہمیلی تہی : اور کارپردازان سرکار انگریزی کی اوہ نظام
ہین کہ شرق سی غرب تک بکنام ہین : وہ بہی اس ضعیف ہتکہ جہالت کو
بغیر لڑی بہڑی نہ ٹال سکی : بزور فہمایش ضد و عناد
اوسکی دل سی نہ نکال سکی : مگر واہ رے عملداری انگریز
بہادر کہ جہان ذرا سی جہگڑی بکہیڑی کا نشان
پایا : فوراً جس طرح بنا اوس بنیاد کو خاک مین ملایا :

सिहरे सामरी लखनऊ, ९ मार्च १८५७ पृ० ६ (मौलवी अहमदुल्लाह शाह का विवरण)

مہاراجہ گوالیار

مہاراجہ ممدوح اس نیت سے کلکتے گئے ہین کہ اپنی ریاست کو ضبطی سے بچایئن نواب گورنر جنرل بہادر سے ملاقات فرما کے وصل شاہد مراد سے دل کی امیدین پایئن فقط ہر اگر ضبطے کا حکم جاری ہو چکا ہی تو مہاراجہ صاحب اگر برہنہ پاس ہی جایئن گے خالی پھر آیئن گے کچھہ بس نہ پایئن گے اور اگر ابہی یہ لوگ گرگ مضمون تراشی ہی نئی رنگ کی نقاشی ہی تو کالی بھی کی پوجاریون کی نوسب بہاگ جاگین گے یہ بیت پڑہا کینگے کو وی بہر بہر کی پرشاد دین گے دہر مثل ہی کہ آب نادیدہ موزہ کشیدہ

چشمۂ فیض

روس

صاحب سلطان الاخبار تحریر فرماتے ہین خبر تحقیق سناتی ہین کہ اندرون اہل روس شوکت مانوس جو اس جنگ کی بانی مبانی ہین بذریعہ صناعان انگلستانی آمادہ اجرای گردونہ دخانی ہین آہنی سڑک کی طیاریان ہین رستی صاف اور وسیع ہونی کی خواستگاریان ہین بلکہ بیشتر جگہہ آسانی سے کہ بن چکی ہین بہادران میدان وغا کی دلون مین لڑائی بہڑائی کی ٹہن چکی ہین اسکی سوا شہنشاہ روس کی کاربردازان بی منوس نی حدود روس سی ایران تک اور ایران سی افغانستان تک ہزارون کنوئین بڑی بڑی بنائی ہین آسایش و آرام فوج و لشکر کی واسطی راہ ہای دشوار گذار کی بندوبست ٹہرائی ہین

سلطان الاخبار

ایران

چشمۂ فیض حقیقت مین ابر گوہر بار کا نقشا ہی تازہ بتازہ مضمون برساتا ہی شاہ ایران نی امیر دوست محمد خان کو تحریر کی کہ باس مذہب سمجہ کی راستی آمیز تقریر کی کہ اگر آپ روپی کو ایمان سی عزیز جانتی ہین اس شعر کی مضمون کو بجا مانتی ہین ~ ای زر تو خدا نئی ولیکن بخدا ستار عیوب قاضی الحاجاتی تو طرف ثانی سی جسقدر آپ کو ملتا ہی اوس سی دگنا تگنا ہم سی لیجیی مگر ایمان کو جہنڈی کی نیچی آکی دیم لیجیی دیکہیی امیر ممدوح کیا جواب دیتی ہین کسطرف سی نقد اتحاد لیتی ہین اب یہ ہو کہ ایرانی کڑوڑ دو کڑوڑ روپیا دینی کا وعدہ کرین اور وہ لالچ مین آکی لاکہہ روپی ماہواری سی بہی جایئن زنہار الی رہین اور دہر کی دونون طرف سی ندامت اوٹہایئن مگر امیر صاحب دانا ہین آدہی کو چہوڑ کی ساری کو نہ دوڑین گے ای دوراندیش سمجہ آپ معقول دین گے اسمین شبہ نہین کہ ایرانی ہندوستان کو ولایت زرخیز سمجہ کی یورش کرتی ہین اور اونکی سرداران لشکر ظفر پیکر بہی غنیمت کا دم بہرتی ہین شاید اونکو سکندر کا قول یاد ہی اسی خیال سی ہر ایک شاہ ہی کہ جو سردار ہندوستان مین حکمرانی کرتا ہی تخت خلافت پر جہانبانی کرتا ہی چند مدت کی بعد اوسکی سلطنت ضعیف ہو جاتی ہی فوج و سپاہ رعایا سب نحیف ہو جاتی ہی تب کسی اور ولایت کا بادشاہ او پر حملہ آور ہوتا ہی فتحیاب ہو کی مالک اورنگ و افسر ہوتا ہی مگر یاد رہی کہ اقبال عدو مالی سرکار کمپنی انگریز بہادر پایندہ ہی اونکی عدل پروری نصفت گستری کی برکت سی فضل داور ہی ~ اور کچہہ پسر رقیب کا نہین چلتا ہی ~ ہنوز کی نام کو لکہہ لکہہ کی جلا دیتی ہین کہتی ہین کہ ایک گہوڑا آتش رخش ستم سی ہمراہ لشکر ایران ہی اوسمین یہہ کمال کی علامت عیان ہی کہ جو رستہ صاف ہوا وہ ہر کو جاتا ہی لشکر دشمن کا سراغ بتاتا ہی اور وقت جنگ اسطرح ہنہناتا ہی کہ فتح و شکست کا حال سب پر کہل جاتا ہی یہہ گہوڑا دانہ گہاس کہانی کی وقت کسیکو ہمراز کرتا نہین کسیکے سامنی بول و براز کرتا نہین بجا ہی تب زیب و زین ہے ہر قدم سبک رفتار صبا کا ہمنشین ہی

چشمۂ فیض

راج گڑہ

راو موتی سنگہ صاحب رئیس راج گڑہ شدت بیماری سی ایام سحر کے طرح گرفتار ہو کر ملک عدم کو جانی والے ہین سوا اونکو بچانی لی دی کی یہہ چند ریاستین وسیع باقی ہین سو اون پر بہی شاید حضرت عزرائیل کرم فرمانی والی ہین

ایضاً

सिहरे सामरी लखनऊ, ९ मार्च १८५७ पृ० ७ (महाराजा ग्वालियर का विवरण)

دہلی اردو اخبار

قیمت اخبار دو روپیہ [illegible]

نمبر [illegible] بتاریخ ۱۷ ماہ مئی ۱۸۵۷ء مطابق ۲۲ ماہ رمضان المبارک [illegible] ہجری روز [illegible] — جلد ۱۹

قل اللہ ثم ذرہم [illegible] الاول لا ابتداء لہ

صدق اللہ العلی العزیز اللطیف الکریم الرحیم [illegible] فان شئ
کتاب المبین کالمستقیم لا یحیطون بشئ من علمہ الا بما شاء وسع کرسیہ [illegible]
قل اللہم مالک الملک تؤتی الملک من تشاء وتنزع الملک ممن تشاء وتعز من
تشاء وتذل من تشاء بیدک الخیر انک علی کل شئ قدیر ۔ یعنی ہو القادر
المقتدر العظیم الجلیل القہار ہے سبحانہ لہ الملک ولہ الحمد فوق حمد الحامدین
الحق ہو الذی دل علی ذاتہ بذاتہ وتنزہ عن مجانسۃ مخلوقاتہ وجل عن ملائمۃ
کیفیاتہ لا تدرکہ العیون ولا تحیط بہ الظنون والصلوۃ والسلام علی سید المرسلین
محمد خاتم النبیین وافضل المرسلین وآلہ الطاہرین واصحابہ اجمعین لا سیما الخلفاء
الراشدین اجمعین فوق صلوۃ المصلین الی یوم الدین آمین یا رب العالمین
— ہر چند مضمون صداقت مشحون تولج اللیل فی النہار وتولج النہار فی اللیل
اور مشاہدہ روز مرہ آسمان بے ستون و نور و ظلمت روز و شب و ابر و باد
و طلوع و غروب مہر و ماہ و روئیدگی دانہ و گیاہ و بالیدگی اشجار و اثمار
و صحت و مرض انسان و حیوان و موت و حیات ہر ذی روح و جان وغیرہا
امورات بے پایان و ہستی ثبوت قدرت و اقتدار وجود ذی جود واجب الوجود
کے شاہد عدل و ہستی صاحبان ادراک و بصیرت و ایقان و عرفان کے
کافی و وافی ہیں ولنعم ما قال القائل وفی کل شئ لہ آیۃ تدل علی انہ واحد ملک
قدیر لا یرد قضاءہ حکیم علیم خالق الامر ناصر [illegible] اور قصص عمومی ملاحظہ
نمرود و فرعون و ثمود و ابرہہ وغیرہ اور سوانح قریب بغداد [illegible] وغیرہ ملوک اولی العزم
جبرہ و قہرہ مصداق مضمون عبرت مشحون بیک گردش چرخ نیلوفری
نہ نادر بجا ماندہ نہ نادری ہر وقت اور ہر آن اور ہر لمحہ ہستی عبرت افزا [illegible]

وعدہ موعود کے ہر شخص کے لئے [illegible] بلکہ ہیبت قہر عظیمہ
بعد سال کے ہستی کی یاد دہی اور عبرت ہم غافلوں کے کہ قدیر و قدرت
حضرت قادر علی الاطلاق سے کور و کر نہ یعنی بے بصیرت ہو گئے ہیں چابک
تنبیہ و تادیب جانا چاہئے نمایان ہوا یعنی حکام ظاہر استحکام جنکے
استقلال حکومت و انتظام کے زوال کا نہ انکو خیال تھا اور نہ کسی اہل عقل کو
وہم و گمان کبھی ہو سکتا تھا ایک طرفۃ العین میں وہ نمایاں ہو گیا کہ دو دو آ
سے تصدیق مضامین سبحانہ ما اعظم شانہ ہو اللہ وحدہ لا شریک لہ الملک
ولہ الحکم یمحوا اللہ ما یشاء ویثبت وعندہ ام الکتاب الحمد للہ فاطر السموات
والارض سبحانک لا علم لنا الا ما علمتنا انک انت العزیز الحکیم رب المشرق
والمغرب [illegible] سبحان اللہ رب العرش عما یصفون وہو القاہر فوق عبادہ الا
لہ الخلق والامر ولہ ملک السموات والارض سبحانہ وتعالی عما یقولون علوا کبیرا
فتعالی اللہ الملک الحق لا الہ الا ہو رب العرش العظیم عالم الغیب والشہادۃ الکبیر
المتعال اذا قضی امرا فانما یقول لہ کن فیکون فسبحان الذی بیدہ ملکوت
کل شئ والیہ ترجعون ظاہر و آشکار ہے ولنعم ما قیل کیفیۃ المرء لیس المرء یدریہا
فکیف کیفیۃ الجبار فی القدم ہو الذی انشا الاشیاء مبتدعا فکیف
یدرک مستحدث النسم یعنی مجملی از مفصل و مختصری از مطول سانحہ عبرت افزا
اور واقعہ حیرت زا ہی مرقوم ہے کہ ابھی تک بہت لوگوں کو یہ خیال ہے کہ آیا یہ واقعہ
واقعی ہے یا [illegible] عالم رویا [illegible] خواب
المختصر روز دوشنبہ ۱۶ تاریخ شہر رمضان الذی انزل فیہ القرآن فیہ
لیلۃ القدر سنہ رواں مطابق ۱۱ مئی [illegible] کو [illegible] ساعت موسم گرما اور
وقت کچہری [illegible] تھی صاحب مجسٹریٹ [illegible]

देहली उर्दू अखबार, १७ मई १८५७ पृ० १ (११ मई के देहली के समाचार)

[illegible]

देहली उर्दू अखबार, १७ मई १८५७ पृ० ३ (११ मई के देहली के समाचार)

بہانا نکالو نہیں کہا بے اذن حضور کے حضرت جہاں پناہ سے
خانہ کھیر پر تشریف لیجاوین گے تو بیتاب منتظر ہاتھ مین لیگے
تو سلطان جانا پلٹن اور توپون اور سوار دکنا واسطے عدد
زمانیون کے پر مستعد رہے وہان کے رعایا بھی بندگان [illegible]
مہیا اور طیار ہین

خاص شہر دہلی

اب رعایا بسبب لوٹ مار کے بہت تنگ و حیران و سرگردان
ہے کیا شہر کے خود اور کیا باہر والے بیشتر لوٹ مار کرتے ہین اور
تہانجات کے عملداری اور اطراف حشر و نشر نسبت سابق کے نہین ہے
انکے اعانت و مدد کے لئے سپاہ ضرور ہے — خلف شیخ
ولی محمد سوداگر یعنے شیخ محمد ابراہیم کے ان سے گھوڑے کھل
گئے ایک گھوڑا بہت مشکل سے ایک آدمی نے چھڑایا غرض
ہر ایک عزت دار و مالدار کے لئے آجکل بڑی مشکل ہے
ایک ملازم سرکار نے ایک عورت کا مال بھی کئی ہزار کا چھینے مین کر
لے لیا اور کوٹھی پر کپلے بھی گئے انجام یہہ ہوا کہ صوبہ دار نے
پلٹن کے قید کیا کرنیل جمس سکنر کے کوٹھی استعار [illegible] گئے
کہ بیان سے باہر ہے —
ایک آدمی کے گھر مین گھس کر گولیون سے چند سپاہیون نے
مار ڈالا وقس علے ہذا شہر بہت لٹتا ہے بہت لوگون نے
یہہ افعال اختیار کئے ہین کہ تلنگون کے صورت بنا کے شہر کو لوٹنا شروع
کیا اس طرح سے کہ بندوقین وغیرہ اسباب و آلات میگزین اور
کوٹھیون سے انگریزون کے لوٹ اپنی تئین تلنگون کی بھیس مین ظاہر
کر کے لوٹنا شروع کیا چنانچہ پانچ آدمی کل گرفتار ہوئے انجام کو ظاہر
ہوا کہ کوئی نوکر ہے [illegible] صاحب کا اور ایک اہیر اور ایک چمار
ہر جو [illegible] چہاونی مین بنا تہا اور دو اور چمار کوے [illegible]
سو اپنی تئین جس پلٹن کے سپاہی ہونا ظاہر کیا تہا اسکے پلٹن مین
پہنچ گئے جب جھوٹ اور فریب ظاہر ہوا تو صوبہ دار اور سپاہیون
نے خوب جوتے مارے اور قید مین
ایک عرضی حضور مین گذری کہ سپاہی نکلین شہر کے رعیت کو
لوٹتے ہین حضور سے کوتوال شہر کو حکم ہوا کہ گرفتار
[illegible] مین آرہے اور افسرونکو بہت فہمائش ہوئے غرض
اعمال و افعال خلائق کے یہہ سزا خداوند تعالے کے طرف سے ہے

چاہیئے کہ جھوٹ اور حسد اور کینہ اور خدا سے [illegible] اور حرام [illegible]
خونریزی وارد ہونے لگے تھے اوسکا یہہ نتیجہ اور مکافات ہے
منتقم حقیقی کیطرف سے اگرچہ مصداق [illegible] خشک و تر کی
کے ساتھ گیلے بھی جلتے ہے اللہ تعالے سے رحم اور فضل
اور امن و امان کی دعا لازم ہے

نواب اعتماد الدولہ بہادر

سنا گیا کہ جناب نواب اعتماد الدولہ سید حامد علی خان بہادر بھی شرف
دربار گہربار سلطانی ہوئے از روئے مرحمت حضور نے حکم [illegible]
صادر ہوا ہے کہ پانسو آدمی کے بہرتی کرین اور زبان
مبارک سے ارشاد ہوا کہ اس بہرتی مین شیخ سید مغل پٹہان
قوم شریف جلیل و جری ہون نیچ قوم نہون

رہتک

وہان کو سپاہ اور توپین مع ایک شاہزادہ والا تبار بھیجے گئے یعنے
غالباً وہان ایک خزانہ بھی ہے باقبال خداوندگان والا قدر
ترفتح یاب آتے ہین اگر ہر ضلع مین انتظام عمل مین آوے
تو جلد تحصیل بھی جاری ہو جاوے اور بندوبست اور رعب بھی
قرار واقعی عمل مین آوے کہتے ہین کہ فصل بھی خوب ہوئی ہے
اور غلہ اور روپیہ زمیندارون پاس موجود ہے

العہدۃ علی الراوی

سنا گیا کہ بربادی رعایا اور ظلم و زیادتی مفسدین اور بے
انتظامی شہر اور مظلومی اہل شہر سنکر حضرت حضور اقدس
ظل سبحانی نے ایک تحریر پر تاثیر بدین مضمون جاری فرمائی
کہ اکثر اہل سیف و اہل زور رعایائے شہر اور نمک پروردگان
شاہی کو ستاتے ہین اور نہایت تکلیف دیتے ہین پہلے اس
سے اہل فرنگ حسب دلخواہ اپنے جو احکام چاہتے تھے جاری کرتے
تھے اور رعایائے عزیز با دولت ہمیشہ پریشان حال اور حیران
رہتی تھے اب تم لوگ اونہین ستاتے ہو اور لوٹتے ہو اگر ایسا ہی
تمہارا حال ہے تو خیر آخری وقت مین ما بدولت کو کچھہ ملک و مال
سے غرض نہین بطرف خواجہ صاحب حضور [illegible] سدھارین گے
کہ رعایائے حضور بھی سب ہمرکاب اپنے آقا بے ولی نعمت کے چلے جائینگے

देहली उर्दू अखबार, २४ मई १८५७ पृ० ३ (अंग्रेजों की दुर्दशा)

देहली उर्दू अखबार, जुलाई ५, १८५७
(हिन्दू मुस्लिम मतभेद उत्पन्न करने के प्रयत्नों का विफल करना)

۴

اخبار مقامات مختلفہ

زبانی معتبر آنیوالون پورب کے منکشف ہوا کہ بنارس مین وہان کی راجہ کا انتظام دورہ در بخوبی ہوگیا اور کانپور مین نواب محمد علیخان بہادر عرف ننھی نواب نے روہیلون لنگان سی اپنا بندوبست کرلیا اور سپاہ کو وعدہ کیا کہ ہم بعد نظم دہلی کو برائے شرف ملازمت حضور اقدس چلینگے اور آلہ آباد مین جب سے انگریز بھاگ گئی کوئی حاکم مقرر نہین ہوا کہتے ہین کہ مقامات مذکورہ بالا ہی کیا بلکہ تمام پورب مین دیندار لوگون نے فرنگیون اور اونکی زن و بچہ کو چن چن کر قتل کیا اور ایک انگریز نام کو باقی نہین رکھا لکہنؤ مین درمیان پلٹن بہون کی انگریزون نے بہانہ سنانی مژدہ لندن جمیع درمیان سلطنت اور اعیان ریاست کو بلاکر مقید کرلیا اور آپ بھی اوسی مین قید ہین باہر گورونکا پہرہ ہی کوئی شہر کا کالا آدمی اندر جانی نہین پاتا لیکن باشندے وہانکے اس تدبیر مین ہین کہ کسطرح بہی ان گورونکو سنگوالیجئی اور مصطفی شاہ برادر شاہ اودھ کو بادشاہ بنانا دیکھیے میرٹھ مین کل تین سو گورہ مع چند افسران انگریز بمقام دمدمہ محصور ہین کوئی متنفس شہر تک نہین نکلتا اور کچہری دربار کا کیا ذکر ہی نواب ولیداد خان بہادر والی مالاگڈہ حضرت ظل سبحانی خلیفۃ الرحمانی کیطرف سے ادنکے جوار مین بادیا تہانہ اور تحصیل بٹہائی جاتی ہین سنا گیا کہ اس اثنا مین دو سو گوری بعاونت قوم جٹ نواب صاحب بہادر سے برسر مقابلہ آئی تہی مگر اقبال شاہی سے محمد اسمعیل خان بہادر رسالہ دار فوج نی اونکو شکست دیکے ہین کہ بروقت مفرور کی گورون منہ زور نی [illegible] گانو پہونکدیے گاوں سے لوگون کو بڑے تکلیف ہوئی آگرہ مین گورہ اور فرنگی اور کرسٹان قلعہ کی اندر گہری ہوئے ہین موہن سی لاٹ گورنری کا لا آدمی ایک نہین رکھا تہا سوائے [illegible] گورنر کلکتہ نے اوسکو عہدہ سی برطرف کیا کہ کالی آدمی کو [illegible] چہوڑ دیا بلکہ اور [illegible] کرسی مین راجہ [illegible] اور راجہ جنید اور دیگر راجہ و نوابون کی سپاہ زیر حکم چند افسران انگلشیہ کے ہوئی ہی مگر اون لوگونکا قول ہے کہ ملک کا ہم بندوبست بخوبی کردینگے لیکن لڑائی مین دین کا ساتھ دینگے اور یہی کلام اور ارادہ تمام افواج ہندوستانی امراء و روساء کا ہی دیکہی آئندہ پردۂ غیب سے کیا جلوہ دکہاتا ہی ⁂

خبر دہلی

آجکل دہلی مین جو سالہای سال سے اوجڑی دیار کہلاتی تہی سپاہ کے بہت رونق اور کثرت ہے اور بباعث بارش گو غنیم جن کیطرف سے جو خوف ضایع ہونیکا تہا خدای تعالی کی عنایت سے یعنی تہوڑی دبازار صبح و شام ہزارون آدمی پہرتا ہی اور دشمنونکی گولا سے بال بال بچتا ہی واقعی یہہ قول بجا ہی ع دشمن چہ کند چو مہربان باشد دوست ⁂ بہرکیف اوسکی مہربانی درکار ہے اور اوسی سی سبکا بیڑہ پار ہے اور ہمارا کیا منہہ جو اوسکا شکر ادا کر سکین اور ہم لوگونکا کیا ذہن اور قیاس ہے کہ حقیقت اوسکی پا سکین وہی ہر ابتدا کی انتہا کہو جانتا ہی ہ نیاید زما جز نظر کردنی ⁂ دگر نشنیے باز یا خوردنی دیکہو اوسکی ادنی عنایت کہ سولہوین رمضان المبارک گزشتہ ہجری کو پانچ ترکسواران فرشتہ منش نے انگریزونکا راج پاٹ ہند سے اوٹہا دیا گویا تختہ حکومت اولٹ دیا اور ہماری حضرت قدر قدرت بہادری طالع از سر نو تخت شاہی پر بیٹہی ازانجا کہ آسایش رعایای ہند منظور خدا ہی اسلئی منتظم دوران جناب محمد بخت خان بہادر جنرل کو کہ نصفت اور عدالت اور تدبیر و انتظام مین اپنا ثانی نہین رکہتی ہمارا حاکم شفیق بنایا اور جناب موصوف نی حضور سے خلعت فاخرہ سپر و شمشیر پاتی ہی شہر کا انتظام بخوبی کردیا اب کوئی کسی پر زبردستی نہین کرتا ہی بلکہ اولٹا سرکش غریب کے ہاتہہ مین تیار دیکہکر ڈرتا ہی اور تمام سپاہ کا بہی بندوبست بخوبی ہوگیا جیسا تہا ویسا شہزادہ سید مبارک شاہ خان صاحب کوتوال گشت در روزہ مین مصروف ہین دکاندار دکانین کہولتی جاتی ہین باہر سے غلہ بافراط چلا آتا ہی اور حال لڑائی کا یہہ ہے کہ پرسون کی روز جناب جرنیل صاحب ہمراہ علی پور گورونکا محاصرہ کیا تہا سو طرفین سی مقابلہ ہوا انگریزی سپاہ نے داد شجاعت نہ دی آخر کار گوری بہاگ نکلے اور لشکر منصور نے جب کوئی حریف مقابل نپایا تو فتح کر کے اور کچہہ چہکڑے رسد کے اپنی قبضہ مین کرکے قصد بازگشت کیا سنا گیا گورہ اس لڑائیمین بہت مارے گئے اور کچہہ گورہ کہ کل کے دن مقبرہ منصور کے جانب اوتر آئی تہی سو اونکی دفعیہ کے لئے فوج تہوڑی سی کہ بہت سون پرجا ہے مع چند توپ روانہ ہوئی

جمیل المطابع میں بحکم حضور [illegible] سید جمیل [illegible] طبع کیا

सादिकुल अखबार, जुलाई ६, १८५७ (देहली के विविध समाचार)

सादिकुल अखबार, जुलाई २७, १८५७, पृ० २

(अंग्रेजों के विरुद्ध एक कविता)

अनुक्रमणिका

आ

ख

ग

ध

न

प

य

ह